



I SSN 2229-547X VI DEHA

बिदेह १४२ य अंक १५ नवम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ७१ अंक १४२)



१ अंकमे अङ्कित:-

१. संगीतकीय संदेश

२. गद्य

—



२.१.१. बिहारी कथा- संस्मरण

जाति- एक श्रम : टैट बूट भाग ३ २



जगदीश सा मय-

२.२.१. गवेषण के भाग - वक्ता श्री लाल २



बाय लाल भाग ३ भाग - टिप्पण

बैथिनीक चरित्रक लेखन ३ कथाव अतिरिक्त- दार्शनिक लेखनका : सिमिया ४ नरेंद्र
कथाव सा-टीकाक आचार ये ठप्प अछि लेखी फलामेक कछ प्रस्ता-अवधिमेक अथवा परिवर्तनक
कछ मद



२.३.१. जगदीश सा मय 'अति' - १. अतिरिक्त साहित्यिक अतिरिक्त गद्य २. अतिरिक्त



आचार गद्य २. उम शक्ति-गद्य संपाद (एपिग्राफ)





—



२.४.१. अशित सिंघे- गखव सरोषा (लंछाकौ) २.
बैसल्लः : किये बैसि नहि सकय लयवा



उदय कयाव सा- बैरुत किछ



२.३. खगदोष सा भव- गखव सरोषा



२.६. गजेन्द्र ठाकुर अगोदरीय सहित छठी आखरा गखव सरोषा (लंछाकौ)



२.१. झुझाजी- गखव सरोषा (लंछाकौ)



२.१.१. बैरुत लोपसि गखव सरोषा (लंछाकौ) २.
गखव सरोषा (लंछाकौ)



आनीय अलछाव-

३. १७



३.१. कामिनी कायायनी- संग दिथ प्रदियन अहिना



३.२. दुख लोपद योद्ध-छीसगछी



३३. प्रदीप झाव ठीकव- लकवा में कहर



३४. आ संक्रमे- गखव १-२



३५. गलगे ग्रंथ- लता जी रंकराम कहे छथि



३६. बाख्खदेर पाँचव



३७. अपनीग झाव साथी



३८. भावछद्म सा-आखूक छैथी

8. बिबिवा कवा-संगीत १



ज्याति सा टोपवी २



वाङ्मय मिसे (चित्रमय बिबिवा)

३.



उमेश मण्डल (बिबिवाक रसगति/ बिबिवाक खीर-खर/ बिबिवाक खिलगी)

5. रीवाता श्रुते



अमिता मिसे- हाथी छोले भोज खाए

6. भाषाीक बला-बला -मासक मैथिली

7. अरु ज्ञा सा- तर्जुन: भाषाशास्त्रीय योगदान / VI DEHA MAI TH I LI SAMSKRIT EDUCATION (cont d.)



बिदेह मैथिली पोथी डाउनलोड साइट



VI DEHA MAI TH I LI BOOKS FREE DOWNLOAD SITE

बिदेह अ-पत्रिकाक सब्दा प्रवाण अंक (ब्रैल, तिरहुता आ देवनागरी मे) पी.डी.एफ. डाउनलोडक लेल नीचाँक लिंकपव उपाय अछि । All the old issues of Videha e journal (in Braille, Tirhuta and Devanagari versions) are available for pdf download at the following link.

बिदेह अ-पत्रिकाक सब्दा प्रवाण अंक ब्रैल, तिरहुता आ देवनागरी कएये Vi deha e journal's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

बिदेह अ-पत्रिकाक पहिल ३० अंक

बिदेह अ-पत्रिकाक ३०म सँ आगाँक अंक



↑ बिदेह आर.एस.एस.फीड एनीमेटेबल अगन साइट/ रीलोडपव नगाडु ।



रीलोड "लेआउट" पव "एड गाडजेट" मे "होड" सेलेक्ट कए "होड यू.आर.एल." मे [ht t p://www.vi deha.co i n/i ndex.xml](http://www.videha.co.in/index.xml) ठाँगप केनासँ सेहो बिदेह होड थानु कए सकैत



डी। गुगल बीडवमे पढ़ौ लेन <http://reader.google.com/> पब जा क२ Add a Subscription ईंठन लिंक कक ओ खोली खुन <http://www.videha.co.in/index.xml> पोस्ट कक ओ Add ईंठन दरोड।



[Join official Videha facebook group.](#)



[Join Videha google groups](#)



बिदेह रेडियो: मैथिली कथा-कविता आदिक पहिल पोडकास्ट साइट

<http://videha123radio.wordpress.com/>

मैथिली देरनागरी वा मिथिलाक्षरमे नहि देखि/ लिखि पारि बहल डी, (cannot see/write Maithili in Devanagari / Mithilakshara follow links below or contact at ggajendra@videha.com) तँ एहि हेतु नीचाँक लिंक सत पब जाड। संगहि बिदेहक सुँत मैथिली भाषापाक/ बचना लेखक नर-प्रवाण अंक पढ़ू।

<http://devanaagari.net/>

<http://kaulonline.com/uninagari/> (एतए रीँअमे ऑनलाइन देरनागरी ठाँग कक, रीँअस काँपी कक ओ रडि डाक्यूमेन्टमे पोस्ट कए रडि फाइलकेँ सेर कक। विशेष जानकारीक लेन ggajendra@videha.com पब सम्पर्क कक।) (Use Firefox 4.0 (from WWW.MOZILLACOM) / Opera / Safari / Internet Explorer 8.0 / Flock 2.0 / Google Chrome for best view of 'Videha' Maithili e-journal at <http://www.videha.co.in/>.)

Go to the link below for download of old issues of VI DEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Book/ paintings/ photo files. बिदेहक प्रवाण अंक ओ ऑडियो/ रीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ हफाँटे सतक फाइल सत (डिजाइन, रीड स्वथ साव ओ दूरस्थित मंत्र सहित) डाउनलोड करौक हेतु नीचाँक लिंक पब जाड।

VI DEHA ARCHIVE बिदेह आर्काइव



जातिवीर्य पुरि महाकरि रिन्यापति। भावत ओ लगानक माँठमे पसबन मिथिलाक धवती



प्राचीन कालसँ महाण प्रकय ओ महिना लोकनिक कर्मभूमि बहन अछि । मिथिलाक महाण प्रकय ओ महिना लोकनिक छि मिथिला बने से देखु ।



सोबी-सैकबक पानरुषी कानक मुर्ति, एहिमे मिथिलासँबसे (१२०० वर्ष पुरक) अतिरिक्त अकित अछि । मिथिलाक भावत आ लपानक मष्टिमे पसबन एहि तबहक अन्त्या प्राचीन आ नर स्थापन, छि, अतिरिक्त आ मुर्तिकनक हेतु देखु मिथिलाक खोज

मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित सूचना, सम्पर्क, अवस्था संगहि बिदेहक सर्च-गजल आ नुज सर्चि आ मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित रेसमाष्ट सभक समग्र सँकलनक लेन देखु बिदेह सूचना सर्चि अवस्था

बिदेह ज्ञानरुतक डिस्कमन हलकामाव जाड ।

“मैथिल आब मिथिला” (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय ज्ञानरुत) पब जाड ।

संपादकीय

१) सभसँ पहिल गजलक भाषा देखु । भाषा मल कही एहन तँ ले छै की कोला गजलकाव स्वतंत्रता केव नामाव गजलमे हिन्दी भाषाक प्रयोग केन छथि । एठाँस अ वैश्व दैरौक गप्प थिक जे जँ अगल भाषामे कोला नै, ले हो तँ ओकरा लेन जा सकैए ।

२) भाषा देखलाक बाद र्याकवापव आड । र्याकवा मल वदीह, काहिया आ रँहव ।

३) र्याकवा देखलाक बाद समग्र गजल दोष आ गजल विशेषताकेँ देखु ।

४) गजल दोष आ गजल विशेषताकेँ देखला बाद भारणाकेँ देखु । एठाँस हम अ योष पाछा चारै जे कारा मात्र कागजपव नीखन नै, ले हेरौक चाली रँकि अगल जीरनक कर्म अगुथानीत हेरौक चाली । मल जँ केओ दलितकेँ सतरे छथि दूदा ओ अगल गजलमे दलितकेँ पुजा करै छथि तँ हमरा हिमारेँ अ दुषित भारणा लेन ।

३.) जँ कथित वचामे रँहव काहिया वदीह ले छै तँ ओ गजल ले लेन दूदा ओ वचो पद्य तँ छै तँ ओ वचो पद्यमे कगमे केहन छै तकवो बिरेछो कक । एठाँस हम अ जकव कहए चारै जे जँ कोला कारामे भारणा ले छै खाली र्याकवा छै तँ ओकरा नै, बिनाम मानन जाए, कोला दिकत ले दूदा जँ कोला कारामे र्याकवा छै दूदा दुषित भारणा छै तँ ओकरा अगवाव मानन जाए । सगे-संग हम जहो कहए चारै जे जहि कारामे ल र्याकवा छै आ भारणा सेहो दुषित छै ओकरा महाअगवाव मानन जाए ।

ए किछ समग्र निर्देनिक संग अम अगल एकवा बिनाम दए बहन छी । अहाँ सभ नग जँ कोला आब गप्प हूँ तँ छिप्पी कगमे सूचित कएन जाए ।

ए विशेषाकेँ पढ़ेत कान दुष्टी गप्प योष बाखु---



१) पहिन जे ए रीशेयाकमे रहुत बाम एहना आनेथ सत अछि जे की बिदेहक आन-आन अक ओ अनटिहाव आखवपव प्रकाशित भ चुकन अछि । हुदा हम एकबा एठा मात्र ए उद्योगसँ देनहु जे पाठक नग एके संगे एहन मुठना भेटै जे की गजनक समान्य गप्प रूमरौ जेन आन ठाम ले रौआए पड़ । ज मात्र नरे आनेथ हम दिति ए त रहुत मंतर जे रहुत बाम जानकारी ए रीशेयाक ले आरि सकेत । हुदा आरि हमर ए रिग्रास अछि जे गजनपवहक प्रायः-प्रायः सत जानकारी एक संगे पाठकले भेटैतहि ए प्रयासमे हमरा लोकनि कते सफल छी मे मात्र पाठक कहि सके छथि ।

२) ए रीशेयाकले पठित कान रहुत रैव पाठकले ए नगतहि जे रहुत बाम तथा दोहवाउन गेन छै । पाठकले एहो नगतहि जे सत आलोचक मात्र एके पक्ष रा तथाके रौबेमे घोषाउछ कए बहन छथि । ए सन्दर्भमे हमर अन्तर अछि जे ए मात्र ए दुआले भ बहन छै कावा गजन रियगव पहिन रैव एते मात्रामे आलोचना-समीक्षा-समालोचना एके ठाम प्रस्तुत कएन गेन छै त ए तबहक दोहवार मंतर ।

बिदेहक ए "गजन आलोचना-समालोचना-समीक्षा" रीशेयाक राठसँ छहलेत कानमे अहाँक नजरि रहुत बाम दुआधवाउ रहुक खुनन गेन देखरामे भेटैत । कतो गृष्टरदीक गेन खुजेत भेटैत त कतो गतिहामे पहिन रैनरीक मोथके देखव कबैत जेथ भेटैत । ए प्रश्नक उत्तर भेटैत जे कि एक गजनक परिवृष्टासँ रौरौ रैनरीक गधर बहना । कि एक रीना ब्राकबाक गजन बहिनो ए स्केत्रमे लोक कय आएन । जखन की जे रिधाक नियम छुठन हो तेमे रैसी लोक अरै छै (जेना करिता) हुदा ए गजनक संग कि एक ले भेन... एछुगव रिचाव भेटैत ।

बिदेह भाषा समाल २०१३-१४ (लेकपिक सहित अकादेमी प्रबन्धक रूपमे प्रसिद्ध)

२०१३ रौन सहित प्रबन्धक श्रीमती ज्योति सुनीत टोधी- "देरीजी" (रौन निरंजक संग्रह) जेन ।

२०१३ मुन प्रबन्धक - श्री रेंचन ठाकुरके "रेंचक अप्पास आ डीनवदेरी" (भाठक संग्रह) जेन ।

२०१३ हरा प्रबन्धक- श्री उमेश मन्डनके "निशुकी" (करिता संग्रह)जेन ।

२०१४ अम्बरद प्रबन्धक- श्री रिनीत उंगेनके "मोहनदास" (हिन्दी उपाख्यान श्री उदय प्रकाश)क मैथिली अम्बरद जेन ।

२. गद्य



२.१.१.

बिहनि कथा- सप्ताह

जाति- एक युग : छठ बूढ़ भाग ३ २



जगदीशदा सा मय-



२.२.१. नवमेव कान्ति - वसन्ती श्री लाल



बाय लाल कान्ति भुव - छिन्न



वैश्विक त्रिभुज संस्था ३ कथा व विनमन- दुर्गास्तुति स्तुति कथा : सिमिया ४. नवम्बर
कथा सा-टीका और ये ठीक थि कथा फलपत्रक कथा प्रकाश-नवम्बर कथा व विनमन
कथा म



२.२.१. छगने छद्म ठीक व 'विव' - १. एतिरक साहित्यिक व एतिरक कथा २. व विनमन



आकाश कथा २. उम लाल-कथा प्रकाश (एतिरक)



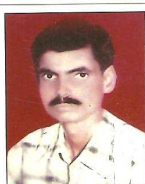
२.४.१. विव वि- कथा प्रकाश (एतिरक) २. उम कथा सा- वृत्त कथा
विव : कथा व वि नव प्रकाश



२.३. छगने छद्म सा व- कथा प्रकाश



२.३. गजेन्द्र ठीक व 'नवम्बर' - कथा प्रकाश (एतिरक)



२.१. कथा- कथा प्रकाश (एतिरक)



२. + १.

गङ्गाव समीक्षा (लेखिका)

वीरेंद्र प्रेमर्षि गङ्गाव समीक्षा (लेखिका) २.



अश्विनी अलकृष्ण-



१.

रिहति कथा- सम्मेलन

जाति- एक श्रृंग : छोट बूड भाग ३ २.



जगदीश्वर मा 'मय'-

१



जाति

एक श्रृंग : छोट बूड भाग ३

मधुश्रीकाँती समाप्ति भेल तखन हमर माँ के हाथक रँगन भोजनक मिममिना श्रुत भेल । पति देर कहना जे अहाँ त२ कहलते बहि बहि जे अहाँ के माँ अतेक नीक खावा रँगलैत छथि । हुनका सरस२ नीक हमर माँ के हाथक रँगलैत माड नगलैल । हम सँ रँगल के रीत करैत बली । हमरा द कहल जेन जे हमर माँ हमर माथा पब ठीक रीते रीत एकठा छेटी क२ दैत छलैत त२ हमर झूठ खबरूजा के डुंगर खजुबक गाड सनक नालैत छन आ हमर रँगल के दू छेटी रँगवी के रीत सनक । हमरा अखन तक मोन अछि जे अखन हम अगल छेटी सामान्य पौघ लोक जकाँ पाछाँ मे केनहुँ त२ हमरा कतेक खुशी भेल बहे । हमर पति के रँगत हँसी नगलैल आ रूमिक२ जे हम रीत मे एकठा पति रँगत गारै छनहुँ "भना है रूवा है जेना ती है मेवा पति मेवा देरता है ।" घरमे एकठा जगदीश्वरके पाछाँ छन मे मलाक हेल हमसँ झुँझ जोष्ट बहन छनहुँ । पतिदेर आरै कानमे हमर



पितामही सऽ प्रभुनखिन जे अर्ध' ठीके चाहे छियेन जे गऽ लोकरी करैथ । तऽ हमर पितामही कहनखिन जे प्रोफेशनल कोर्स कियेक कऽ बहन छथि लोकरीये करैलेन ल । हेब प्रेसमे हम दुष्व रिदा भेलहुँ दूँइँ दिस । बस्ता भरि रात करैत बहनहुँ जेना नागन रहुँत दिसक रात रात भेल छन । हेब रिवाजक रात मोन पारैत बही जे हमर पति प्रभुल बहैथ जे हमर सगना की अछि तऽ हम कहनियेन जे भावत आ पाकिस्तान हथधुनिक रँगनादेशे सहितद्व एक भऽ जाय । ओ हँसय नगना जे हम गतिहाम, भुगोल अथवा राजनीतिशेन नहि पढ़ । बहन छी । आहि नदल मे सँके सँगे बहैत देखैत छिये तऽ नाँतीत अछि जे सगना पुवा भऽ गेल । हमर पति देर हमर हाथ देखि बहन छलेथ प्रेसमे । हमर मेहदी के बग उतरि गेल छन । ओ कहना अर्ध' ठीके अति शीघ्र एकठा पुवा के प्र'ा प्ति होयत । हमर दूँइँ रँगि गेल त ओ कहना अर्ध' ठीके खबरुजा सगल नाँतीत हेरै रँटा मे । हेब कहना लोकरी के योग अछि । हम तुवस्तु आह्लादित भऽ गेलहुँ । हमरा प्रेसमे भुख रहुँत नाँतीत अछि से हम बस्ता भरि किछ किछ खागत पिरेत गेलहुँ दूँदा हमर पति के त माषु निर्जना ब्रत छलेन । २२ घण्टा के प्रेसक सफर हेब २ घण्टा नागन छेक्री स घब पहुँचय मे तखन पति कहना आरँ खाना पकाहुँ । हम रूमरै नहि केनिये जे हम हँस की काषु । नगहबमे सँ' भोजी आ रँहिन के प्र'र्गिमा सुनिषुनि पवेशन छनहुँ । आरँ हमरा महत्त्व भेष्टे बहन छनय त हम रहुँत थाकन बही । तैयो पतिदेर के आँका सऽ भोजन रँलनहुँ आ कवीर ३ राजि गेल स्वतय जायमे । अगिला दु दिन स्मृकेशे खानी कवग मे गेल । हेब जन्दिमे अगल रायोछाँ रँगाक लोकरी के ताल मे नागि गेलहुँ । छँवरु देरैलेन पतिके सँगेसँगे दु चारि ठाम भँकनहुँ तखन लोकरी नागन । आनदिस हम पतिदेरके रेड्डी दग छनियेन जाहिलेन साम रँड थिसिया गेल छनी एकदिस जे खानी पोष्टे टाय नहि दियोन तखन हम पागि सँगे देरँ नगनियेन । दूँदा हमर लोकरी के पहिन दिस पतिदेर हमरा सऽ पहिल उँठिगेना आ कहना जे उँठुँ आँग सऽ अर्ध' के दूँइँ के जिनगी शुभ भऽ गेल । हम कुदि कऽ भगनहुँ उँडाँड सऽ टाय रँगारैलेन । हेब तैयार भऽ रिदा भेलहुँ आहिस दिस । दूँइँ मे सफर करैके सुनिषु दिस छन ओ हमर जखन हमसँ भ्राताभागि कऽ तैयार होयत छनहुँ । रहुँत सहायक छन जे ओतरेँ छी घबमे राखकय आ छँगेले अन्तःखनग छन । काषा हमर पतिदेर के कम सऽ कम आधा घण्टा नाँतीत छलेन छँगेलेमे । लुका नातुा कवारैमे रहुँत पाँ'डा नागन बह पड़' छन । आ कहियो अर्धा दियो तऽ घब सऽ होष आरि जायत छन । अहिमे के नगहब के मासुव कहनाग दूँकिन । रँड दूँखी करै रना बरहाव छन गऽ । हम अगल लेन छँहिन सेहो पोक क न जायत छनहुँ । सँ'ममे लौठैकान के नातुा सेहो पोक बहैत छन । आ पतिदेर सऽ पुँडे छनियेन तऽ कहैत छलेथ आहि अँहिस मे पिच्छा पाछी अछि तऽ आहि किछ आव । लुका अहि रात सरँहक असब छन जे हमरा राहब के खेनाग के जिद नागि गेल छन । सन्तानु मे लुका सँगे कला भोजनानय मे जकब जाय छनहुँ आ रँमीतव हमर पसन्दीदा होयत छन पार भोजी । कोजगवा मे पतिदेर असब गेना घब आ हम लोकरी मे रासु । अगल पहिन दवमाहा सऽ हम पतिके दिवाली के कपड़ । कीष कऽ देनियेन । अहिना किछ किछ नागन बहन । कोला सन्तानु मे पर्दा रँदनन गेल कोला मे छीरी के करव । हेब रूमरै नहि केनिये जे कोला समय रात गेल आ हमर सरँहक पहिन रर्यगि आरि गेल ।

२



जगदामन्द मा 'मज'

ग्राम पोस्ट हविश्व डीहठेन, मधुबनी

रिहसि कथा
सम्प्रमेल



गामक दूकानपव नुन तेनक दूकान चलेनाहव, साहज्जी अणन दूकानगत दूह आ शीत झुत्तारकेँ कावण गामा
 तबिमे सतक सिलहणव रँनन दूदा किछु छोटे हुनकव एहि झुत्तारकेँ कावणे हुनका हँसीक पात्र रँनलल ।
 आग साहज्जी अणन किछु काजसँ रँध दिस गेल । दूकानपव हुनकव १४ रँथक रँधै समाण दैत-लेत ।
 एकठा रँथुष्ट चकलेष्टक सैन्समेल सागकिन ठाव करैत साहज्जीक रँधैसँ, “की रौ रौआ तौहव गगना रँधु
 कतए गेलखुह ।”

साहज्जीक रँधै सैन्समेलक दूह दिस कणी काज देखना रँध, “किएक, की रँधत ?”

“रँधत की समाण देरैकेँ अछि, प्रबनका पाग लेरैक अछि ।”

“किछु नहि लेरैकेँ अछि (जीतवसँ समाण सत उठा कए दैत) आ अणन पहिनका समाण सत लल
 जाडु ।”

“किएक ! पहिनका तँ बखल बह ।”

“नहि अहाँसँ किछु नहि टाली आ हाँ आगुसँ कहियो हमव दूकानपव नहि आएँ ।”

सैन्समेल दूह रँधै रँधै-रँधै ओग लला दिस देखैत अणन प्रबनका समाण सत समाष्टेमे लागल ।
 तारैतमे साहज्जी सेहो आरि गेलाह ।

साहज्जी सैन्समेलसँ, “कि यौ मालिक एना सतठा समाण किएक समष्टल जाग छी ।”

“हम कहाँ समष्टल जाग छी अहाँक ललकीवरौ सतठा समाण उठा कए दैत कहनथि एहिठाम कहियो नहि
 आएँ ।”

“किएक अहाँ की कहि देखिअ ?”

“हम तँ किछु नहि कहनिअछि ।”

“नहि किछु तँ कहल हेलै ।”

“हाँ अरैत माँतव पुछल बलिअछि, की रौ रौआ तौहव गगना रँधु कतए गेलखुह ।”

साहज्जी हँसैत, “हा हा हा, हमरा संगे जे हँसी ठूँठा करै छी से ठीक दूदा लेकवो सामल ओकव रँधकेँ
 पागल कहलै तँ ओ कोना सहत, जेकवा की ओ अणन भगवान रँधै छै । एखन बोले बोले दियाग
 शीत बँह तँ टुपेटाप समाष्टल आगस कए कए बहि गेल नहि तँ एहन तबहक गप्पपव रँधैखावा उठा
 कए मारि दैते ।”

ए बचनपव अणन मँतव ggajendra@videha.com पव पठाड ।



१. पबमेश्वर कागडि - लक्ष्मी आ लोखन २. राम भरोस कागडि 'भ्रमर'- टिबुन-



मैथिलीक भबियाक प्रसंग ३. कमाव अभिलक्षण- दुर्गास्तुतिक लोकपवसावा : मिमिया ४. नरेंद्र कमाव मा-पैकाक आभार मे ठप्प अछि कोसी महामेतुक काज सहवसा-हावरिसगज आमान परिवर्तनक काज मद

१



पबमेश्वर कागडि

लक्ष्मी आ लोखन

दिन रौवाग आ पतवा पुजा मिथिलाक दैनन्दिजनीमे अछि आ रैड़ रैड़ पारमि तिहाव एहि लोकके सजाव आ सजावमे बहन अछि । अलख लक्ष्मीक सङ्गे अखण्ड सुखानन्द प्रदान कबरौना सुखवाति-दियाराती पारमिपव लोकक समर्पित आस्था आ अर्पण मिथ्या अछि । एकव अणख थाम रिधि रिधान आ पुजा पद्यति आ आस्था रिश्यास अछि, मुन्य मान्यता अछि । ३ प्रमित प्रकामि पारमि धार्मिक सांस्कृतिक बागवगम महिमा मण्डित अछि आ लोकतन्त्र, लोकदर्शन आ लोक पुजा पद्यति एकव केन्द्रमे रिवाजित अछि । मिथिलाक एहि सांस्कृतिक परिपव रैदिक आ तात्त्विक पद्यतिक रूपक प्रभार सेहो सेहो अछि । अविषन लोकके सरलकसङ्गे एहिमे प्रयत्न हुकालोनी आ स्वपरिजना लोकमन्त्रक अणख थाम दर्शन आ मुन्यमान्यता अछि-

- हुकालोनी दियाराती । दियाराती हुकालोनी ।
- सुख सुखवाति दियाराती । हुकालोनी दियाराती ।
- सबक अलक्ष्मी-दविदा रौखव जाड ।

रौखवके लक्ष्मी सब आड ।

जहिना मिथिलाक सजाव सजाव अछि, महान अछि, लोक महिमा मण्डित अछि तहिना एकव पुजा अर्चाक बीति नीति, मुन्यमान्यता अर्पण आ लोकानित अछि । पारमि तिहाव आ पुजा उमेर लोकक जीरणमे अखण्ड उर्जा आन्दक सङ्गे सांस्कृतिक बागवग सेहो भविष्यक प्रदान करैछ । तर्ष सर सब, सर लोकक जीरणके जगमगएल गमगम महामह हवख आनन्द प्रदान कबरौना हिमरिस एकवा पवसावागत ठगम अर्पण एकव कसमे मनरैत आएन अछि ।

लोक पवसावा आ पद्यति अदल पदल, डालीए हूँहि रौत ना, ओहिना ले रैलैछ, एकाधे दिनमे सेहो ले रैलैछ । अणखसरके जीरण कर्म आ लोक पवसावा जे अछि से पवम तन्त्र, प्रमित दर्शन, सञ्जुआ आस्था आ अर्पण लोकविश्यास सञ्चालित अछि । सर जलैछ जे अणखसरके सुखवातिमे रहुत उद्यम अलको



जतन आ तग पुजसम लोक नक्कीले जहिन घब करैए, तहिन अन्नक्की-दबिदाके रौहब करैए । एहि घब रौहबके कर्मधर्ममे जतए नक्की घब आगन जागड आ अन्नक्की जे रौहबाएन जागड, सेहो देरी, धी रौंठी जकाँ । दुआक ले मोहबदे मले, लमे मित्र । नक्कीपुजा दिन सकले स्वर्गनी बुद्धि या पुर्वेनिया अन्नरौथेमे, स्वर्ग रँजक, मन्त्रीआ रिदा गीत पारिक- घबके दबिदा-अन्नक्की रौहब जाड । रौहबके नक्की घब आड । ! हे नक्कीमाग सुख पुन नहदर कक । हबथ आनन्दके रौद्धि रौवकेत दिख । अहाँ उद्यमके, रापावके, स्वर्गके, स्वर्गके रौंण प्रीतिके कपमे रिवाजु ।

सुख दुख, जीरनमूल, दुख दारिद्र, नीक रँजक सँ कर्मधर्मिक भोग पावस अछि । संध्या, छाया, मूलदेर आदिदेर दिनकव दीर्घाथक अपन घब परिवारक छथि । तँ सँ रौंठी रौतके गहि अरंधादि अ लोक दबिदाके दुबदुबाए, गविआए ले, नीके नाहित रौंठी रँहिन माहिक रिदा करैत छथि, गोधन दिन । आ अ रिदागके मिथिना पवसबा आ पद्यति अन्नरँत अछि ।

गोधन, गोरवधन पुजा दिनमे, मानक घबमे, अन्नक्कीके द्रुत गोरवस रँगाउन जागड । ओकरा अन्नक टट्टा जागड । अन्नक पौती पौती, सँ सँ सँ कपमे रँगाउन जागड । ओहो पौती पौती गोरवके बँह । जेहल देरता तेहल पुजा । तेहल रव रिदाग । पुजा भार अछि दुआले जे के हिनका दुआक अवादि मोन निअ । ओना कहुँ घब घुबि आएन त सँ सुख शान्ति नाहै ।

गोधन, गोरदुधन रँग, मन्त्रीके पाहु एकरी आओव थिम्मा कहन सुन जागड ।

धवतीए माग जिका गौ सेहो मते छथि । हिनकासँ अ लोकके, देरताके रँड रँड उगकाव ।

एहिना एक दिन नक्की महावाणी गौमाताम प्रसन्न भक, उगठे निहोले रिगती कए कहनथि जे अहाँ अणना परिव्र तममे हमारे रौस दिख । सँ देरताके अहाँमे भन रौस अग ।

अ रौतसँ थुमी हुअके रँदनामे गौमाता आँक, भयसँ मिहनि गेमथि आ हबकले दगधले रँजनीह- ले ले, एहन किन्नी ले त सकैए । हम हबगिज ले अ रौत मागि सकैछी । अहाँके पारिना लोक कोन कोन पाप, दुनद्धवम ले करैए ? हमबामे जखेनते अहाँक रौस हेएत त सँ हमरा छिनामपठी कवत । हमर सँ रौती सुखटेल हबन भुद्धन क देत । घात अघातमे, नाहकमे हमरा काँष्ट मागि देत, से छैले ।

एहन नगावी नक्की नगोरनए हठिपिठ क देनथि- हम ले माग । जारै अहाँ हमरा अणना तममे रौस ले देर, हम ठोस ठोव ठेकाण ले पाव, अहाँके कन ले पड देर ।

ओहब अदकन छिननिअ गौ तिनोभयि तनरिचन ले ओथि आ ले हुनक व मागथि- अ भगए ले सकैए । अहाँके अणवगन उगवटोड रौत हम मागि ले सकैछी । तले अहाँ अणन अन्नमे रिवाजे छी । नीके नाहित रौंणमे रँवकेत रँग । द्रुममे साक्षात् वहु । धवि एना रँगरँही ले कक । हमरा निद्धन उगवामे बह दिख ।

रँड महजवा, धवम धकेनके रौद, गौए हावि मागि जेननि- आरै अहाँ जखेन एतेक धवधन करैछी त जाड, अहाँ हमर गोरव गौतमे रिवाजुग ।

सेहे भेलै । ओकरे चमते आग टकावतमे, ओयमिमे, खेतक खान्दमे, परिव्र ठार आ निपिया पौतियामे रँड उगयोगी आ महर्गपूर्ण मानन जागड । गोधन पुजा अछि रौते, एकरो दुआले ल ।

प्रश्न कारामे गोरदुधनक अन्न महर्ग आ रँसिरँ छै, तेकव खेवहा एथन एत ले करी । कथिना त- हवि अन्न हवि कथा अन्ननाक टोष्ट टोष्टमे एत नहि पडरौक अछि ।



राम भवाम कागडि 'भ्रमर'

चित्रण

मैथिलीक भबियाक प्रसंग

मैथिली आबज्ज दैनिक अखरौब वंगीण आठ पृष्ठमे दबउंगा सँ रहब होगत अछि । दबउंगा अखरा बिहार आब मैथिल रहूँ फेद किरा ७ करोडक भाषा भाषी ओत ओकर की अरिगत होगत डेक पता नहि , जलकधुबमे नियमित दू गोष्ट ग्राहक छोडि आब लेओ डुर नहि चाहित अछि । करोडो ठेकाक नगालीमे सी एस मा दैनिक अखरौब निकालननि । एहि आशिये जे मैथिली बाज्जक रैठेत माँग आ मैथिली, मिथिलाक बठ नलोनिहार रीट जँ एकठा लाडमिष्टक अखरौब देखैक त ओ चनत , निक ग्राहक पाओत , रिक्तापण पाओत । मे सब आशिपव तुयारागत भ२ गेन छहि , ल अखरौब चलि बहन छहि आ ल रिक्तापण भेटै बहन छहि ।

अबन्ना अ डेक जे 'तीन तिहुतिया तेबह पाकक कहरी चवितार्थ करैत एतरे दिनमे कतेको पुवाण स्थाप परिवर्तन भ२ गेन छैक आ नलोया अखरौब कते, कोला रिटारवा, गिरोह अखरा मैथिली भाषाक संग जे पुर्नो सँ जुडेते काबक चलिने अस्तित्व भ२ बहन अछि । अखरौबक शुक्क सम्रादनाता लोकनि परिचय पत्र पारि नहि सकला अछि , पावित्रिक आ कदवक गप्पा कवरै लेकाव । कहरीक जकबति नहि अ अखरौबक अबन्ना काबने भेन हएत आ एहिमे समस्त समस्त मैथिल दोषी छी । मैथिली बाज्ज तँ चाली डन ममदा एकठा वंगीण मैथिली अखरौबक हेतु दैनिक दू ठेका खर्च नहि कवरै । रीमठा छि मेघ निकालि हिन्दी अखरौब सँ सटै । एहि तबहक दुरीकेँ जा धरि नहि छेठोउन जाएत ता धरि मैथिली आ मिथिलाक भबियाक प्रति समय त२ रँगले बहत ।

एक दिने अंगिका (पुरी तवांग दिने), मगही, रँझिका भाषाक मावि सुनियोजित ठग सँ आगा रँझि बहन अछि तँ दोसर दिने एहि भाषाकेँ मायता देन समूहक लोक जँ मैथिलीमे अछि, आरय चाहित अछि तँ ओकरा प्रति दुर्भारणा, अरमानना , गृष्टरँझिद्वारा कात कवरौक , उन्तजित कवरौक काज ओहल रप्पा सँ भ२ बहन अछि । जकवा चलिने एहि भाषा सतक उदय भेन अछि आ मे जोड पकडल जा बहन अछि ।

दुर्घट भवि साहित्यिक संघ, संस्थासभस होगक आकि तेहन गहन चुनन साहित्य क्षेत्रमे नागन लोक, अलने ककरो रिकछमे आमीन गिल रँदहराम भेन गोन निर्माण किरा दुबतिकेँ संवचना करैत अरन उर्जा खर्च करैत देखि पडैत अछि तँ तितव सँ दुःख होगत अछि , एहि दुखारे नहि जे ओ संवचना कोला राखि रिशेयकेँ कमजोर कवरौक हेतु कएन जा बहन होगछ , एहि दुखारे जे राखूमे ओ अण सामाज्य आ प्रतिभाकेँ अणका लोकरीमे अलने खर्च क२ बहन होगछ । काज तँ रँझिते डेक , कहाँ कोला प्रतिवाद किरा अरबाध अरैत डेक । तखन ककरो निर्दा देखरौक आमेवतिमे नागन लोक दू



ठेकाक 'मिथिला आराज' रीम ठेकाक 'मिथिला दर्शन', किंवा स्थानीय मैथिली अखबार सभ कीनि क२ मैथिली क्षेत्रमे लागू सभक लेखन। बुद्ध कविताथि तँ कतेक नीक लागैतैक । मैथिलीपव जाहि तबले दोतही हमरा भ२ बहन छैक, एहिमे ककरो कात नगा क२ नहि, जोडि क२ आगा रैठय पडत । छैली जकाँ सौम आकास अगल छैपव उजौल बहराक ज़ुमके पौमरँ सरथा पीडादायी परिणती दिने न२ जा सकैछ, मैथिली भाषा एतेक समृद्ध आ प्रभारी बहिनो पडुअएँ सँ नहि लोक जा सकैछ । मैथिली साहित्यक रीममे गनत सूचना प्रवाह भ२ बहलैक अछि, जकरा लोकरीक अभिमान छै । लगानी भाषीकेँ कानमे मैथिली साहित्यक गनत छि उमनन जागड । काठमाडु कएकठौ कार्यक्रममे किंतु लगानी भाषी अथवा किछु भूत मैथिलीसभ सेहो गतिमान एरँ गथारैकेँ तौडि मडोबि क२ प्रस्तुत करैत देखन गेलाह अछि । छैबलछैमे बाखन एक अछैजो लेखमे लगानक कथापव छैपणी छपन अछि, जाहिमे दु तीनछै कथाकावक छै मात्र छैक, एक छै छै पाठ खबक लोक छै, ओहो एहल दृष्टतापूर्ण तथा न२ क२ रौआ बहन छै । एहि सँ मैथिली लेखनमे लागन लोककेँ निवानी लागत छैक । फ़ोत लागत छैक । सतर्कता जकरा छैक हमसभ ओकरा सभकेँ तथा पवक सूचना दिअक । एखन बिदेहविद्यालयमे निगानी विषयमे एमए, पीएचडी, करैत विद्यार्थी सभकेँ मैथिली साहित्यक विविध विधापव काज कवरैक अरुमव देन जा बहन छैक, उमनत सम्पर्कमे अछैत छै, रूमि पडैए, कतेक गनत सूचना देन गेन छै रा ओ प्रोत्साहन छै । मैथिली विद्यापति, मनमोहन, दीनानाथ तो अथवा लोका रंजिआवा, दुनवा दयान, कोला साहित्यकेँ समृद्ध आ विकसित प्रयासित कवरैक हेतु प्रयास अछि । अदा तकरा लेन समग्र, समर्पण आ उदावतारक जकरवति अछि । मात्र एक दोसरक काठक हिराकमे बहरँ तँ त्रियामे ककरा कछैत बहरँ, अगल कछैगत छै जखन । खतवा साह अछि अगिका, मगली, किछु मात्रामे रंजिका सेहो । एखन सरिछानी बाखु । बाजक पविष्ठा कएनिहारकेँ हृदय आ मोट दृष्टि पौघ हएँक छै । मैथिल तँ एकछै बाजक हकदार अछि ।

३

कथा अभिनय

दार्शनिक लोकपक्ष : मिथिला

पृष्ठभूमि

एहि परिवर्तनशील दुनियाँमे, सभ किछु रँदनि बहलैक अछि । लोक आनक सभताक नकनक२ अगलकेँ धन रूम२ लागन अछि । एहि रिकछै परिवर्तितमे एखला गाम घरक हमरा सभक अगल मौलिक संस्कृति ओहो अरिछि कएमे देखरामे अछैत अछि । विविध लोककथा, लोकगाथा, लोकगीत सभमे लोकगाथा आ लोकनृ सेहो ग्रामीण जनताक संरक्षणमे जीवित अछि प्रस्तुत अछि । एहि जीवित पक्षरामे एकछै सभे अथाय अछि लोकनृ मिथिलाक ।

मिथिला मिथिलाक अधिकारी क्षेत्रमे रँड उमसक संग विद्यादशमीक शुभ उपलक्ष्यमे कनि स्थानसँ न२ दशमी पवि मलाउन जागड । मिथिला पाँचसँ न२ रीम पवि हरती सभक (अधरयसु ओ बहैछ ।) एकछै छैली लागड, जाहिमे कोला दु रा रैमियो छैछै माथपव कनि बाखन बहैछ जाहिमे अगनित भुव कान गेन बहैत छै । कनि छै माथपव बाखन दकनामे छैछै आनि बहैछ जाहिमे कलक कलक कानक रौद मछिया तेन बाखन जागत छैक जकर प्रकानि रैम छै पवि नहरा उछैछ । ओ छै छै छै सभसभ किछु छैछै माथपव कनि बाखि गाउन जागत गीतक तानपव अगल लखन खण्ड १ पांडा एकछै विशेष दृष्टि न्छन करैछ । एहि तबले विविध समग्र लोक सभक दवरँछापव नाटिक२ मिथिलाक पृष्ठभूमि लेन अगल गाउन गाउन करैछ । एहि गाउन गाउन अगल दिन अर्थात् दशमी दिन रँड पक्षरामक संग भोज तात ओ प्रसाद रितव लागड । आ विविध तबक नाट गानक संग मिथिलाक रिसर्जन लागड ।

गाममे एहि तबक छै छै छैली लागत छैक । सभ एक दोसरसँ नीक होयराक लेन प्रयत्नशील बहन करैत अछि ।



मिमियाक कनशेमे अमथा भुव जे रैणाउन बहेछ तकरा नाचरानी सदैर ड नरैत बहेत छैक, जाहिमे केओ ओहि भुवकेँ गमि ल जेअय । कहन जागछ जे केओ ओकरा गमि लेत छैक तँ नचमिहावक मूँ भऽ जागछ । तँ जँ शिव बहरो करैत अछि तँ नचमिहाव कनशेकेँ अलले घुमरैत बहेत छैक । तिमिया कहियामँ प्रावसु भेल तकर ठोस प्रमाँ नहि भेटैत अछि । ओना ए पवसवा तान्त्रिक रिमिसँ पूर्ण होयबक कारणेँ अन्दाज ए नगाउन जा सकैछ जे मिथिनामे जखन तन्त्र मन्त्रक नीक प्रभाव छन होयतैक तखन ए प्रावसु कयन गेल हायतैक । एकव प्रावसु आठम् शताब्दीक पहिलसँ भेल होगत से अग्रगण्य कयन जा सकैछ ।

मिमियाक पवसवा

एकव प्राचीन कप आ अथर्वका कपमे कोना खस अन्तुव नहि भेल रूमागछ । पहिल तान्त्रिक रिमिक उता माली आ मालिन भेल करैछत छन तँ देरी देरतक पुजा अर्चा एहि रश्मिसँ सम्पन्न होगत । आगयो धरि देरी देरतक जेल आरंभक पुनर्जागरण तथा रिभिन्न उपादन मालिक द्वारा प्राप्ति कयन जागछ । तँ मिमिया, जे पूर्ण कपसँ देरीक आवाधना थिक, माली द्वारा संरक्षण पौलक । मालिनी सतक द्वारा भगवती दुर्गाक आवाधना स्वरूप प्रस्थापित मिमिया नृ फ्रमिः आग समाजक अग्रगण्य रश्मिमे सेहो प्रचलित तथा संरक्षित होरैत लागल अछि ।

तान्त्रिक 'कष्ट' सँ प्रभावित ए मिमियाक रैणारष्टि सेहो एकठा रिमैय अर्थ बखेछ । कनशेक दुंगव बाखन ढकना आमोक प्रतीक थिक आ ओतिसँ निकलेत आना, आमोसँ ज्योति निकनरक रोध कवरैछ । मंगे ए मिमिया ड ाग, जोगिनकेँ प्रभावलीन रैणयरा जे रैणाउन गेलक कारणेँ आमोसँ निःसवित प्रकाशक गजोतमे ड ाग जोगिन कपी अन्तुव किछ नहि रैगाडि सकत तकर उाग सेहो कवरैछ । ए काज पूर्ण कपसँ हमरा सतक उगमिदसँ प्रभावित अछि “तमसोम ज्योतिष्मय” अर्थात भगवतीसँ आवाधना कऽ ए मिमिया ठेली “अन्तुवकसँ प्रकाशमे नऽ जाडि” क भारणा राख करैत अछि । आ साँट कही त यैह एहि लोकनृक मुन उद्देश्य थिक ।

मिमियाक संरक्षण मिथिना क्षेत्रमे मोवड, सनुबी, सिबल, धनुया, महोतबी, सर्गलि तथा रिहावक उतवाखण्डक किछ भाग पद्या, रैणीपल्ली, मधुबनी आदि क्षेत्रमे देखन जागत अछि । किछ मान रीचमे ए किछ ग्राम जकाँ भऽ गेल छन, ह्रदा जेव एखर आरि जेव मोवसँ प्रावसु भेल अछि । एकव प्रदर्शनसँ पूर्ण स्रष्टा विला आरि ओहिमे अमथा छेद कऽ तैयाव कयन जागछ आ ओकरा धामीसँ रक्षा देन जागछ । धामी अण मन्त्रसँ मिमियाकेँ रक्षक “सुतु गुरुक रक्ष पाँड । रजव, रजव, रजव करौडि रजव रक्षा दशो दुआवी । मष्टिआ रक्षा । ममान रक्षा, ठेला रक्षा, ठेलाव रक्षा...” । मंत्रयनाक बाद मिमिया ठेली सत रक्षक नग जा सरप्रथम आवाधना करैछ । आ तखन ओहि ठामसँ रिभिन्न गोठेक ओतऽ जागछ । आरि मंत्रयनाक क्रिया नहि कयन जागछ ।

मिमियाक गीतमे सामाजिक चेतना

मिमिया ठेलीसँ गाउन गीत ह्रथा दु प्रकारक होगछ । एकठा भगवती सय्यत्री आ दोसव ड ाग सय्यत्री । ओना मिमियाक ह्रथा नम्बर ड ागकेँ गावि देर होगछ तँ रैसी ओही तवरक गीत गाउन जागत अछि ।

मिमियाक गीत सत रिभिन्न ढंगसँ गाउन जागछ, ह्रदा नय आ ह्रद रैह होगछ, शीर्षमे मात्र ह्रवक बहेछ ।

देरीक आवाधना फ्रामे ह्रवक कामकप (कामथा अमया) देशे जयरीक र्षि रैड सजीर होगत अछि । प्रचलित गीत “कोन रेल रौले यैयागे, कावी कोगनियागे ।” मे देरीक रिदागक रैड बोचक र्षि भेटैछ । ओ साड़ी पहिलेत छथि । जुडि रैहरेत छथि । आँथिमे काजव नगरैत छथि... । आ अण गनुरा दिस रिदा होगरी जे तैयाव भऽ जागत छथि “केकरा अणमा यैयागे जुबरी रैहले गे, केकरा अणमा यैयागे कजवा पेहलेगे ।” जित्नासाक शान्ति गीतमे भेटैछ “रौ” आ तैया गायक प्रहृथ देरता रैहला आ ठेवरक जेल प्रयोग भेल अछि । अण कथा रा रैहिकेँ रिदा कवरै



एकठाँ सौँकृतिक पर्वगवाक अक्षरक आग तगरती रिदा भ२ बहनीह अछि 'कमकथा (कामकप कामथा) देशकए... । सभ तैवाव । इ नी भरा कपसँ सजाओन छनि । नीन इ नी छनि । नान ओन मागन अछि । रिबिन्न कनामेक द'गसँ सजाओन इ नीकेँ रँतीस छोष्ट कहाव उँठैछ आ तगरतीकेँ अतिश्रुति लखसँ रिदा करैत छथि खँरुँरौ... ।' नीन वग इ निना, सँजेवग ओरिया, मैयागे तीरि तैनाह रँतिमो कहाव, कमकथा देने मैया करै जगहँ ते ।

दोसब तबहक गीतमे डाँगकेँ गाबि पढ़न गेन छैक । एहिमे सभ गीतगागनि सभ गाँगकेँ खूँ जोमिमे आबि गाबि पढ़न करैत छैक । एहिमे रिबिन्न किमिक गाबि होगत छैक । जे आरंभकतामस गीतगागनि सभ द्वारा थपछट कयन जागत बँहत छैक ।

देखन जाय तँ अ स्पष्ट तेन जे गाबि सभमे इ गाँगक रारहावक पूर्ण छिप ओहिमे कयन गेन बँहछ । एकठाँ आमावाक छैक जे इ गाँगसभ दशमीक रीटमे गामसँ रौहव जा ओहिना नङ्गछे नाटन करैछ ।

एहि नाटक एमामे ओ अँगल द्वारा मावन कोला रँटाकेँ जियाक अगाँमे बाथि लेछ ग्रहो कथन छैक ।

एहि कथनक सजीर छिप एहि गीतमे तेथैछ

“रँवहमेक पडआबीये इ निना, मत करिहँ सिगाव ।”

रामे तेन आवती, दहिल तकआबि ते, नटेत नटेत गेली इ निना, सीमा ओगावगे, सगेसगे गेली इ निना, बाजकोतरान ते, देख तेनको आगे लीनिना, नङ्गछे उँघाव ते ।”

एहिँ अतिविश्रुत गारंराना रिबिन्न तबहक गीतसभ इ गाँगक कयन गेन फियाकनापक छिप उँपसित करैछ । एहिँ ओकवा सभक प्रस स्पष्ट भ२ जागछ । “कोठाके उँपवी इ निना खीड़की नलीन ना, खीड़की ओत इ निना थपरा छलीन ना । आगे किछ होएतो इ निना, गदहापव दहरो गदहा दह । इ निना नदुआँ हसरोना”

मावापतया इ गाँगक प्रस लोककेँ जाणकारी होगत छलैक तँ ओकवा गदहापव रँसा गाम भविमे घुमाओन जागत छलैक सँह रतु उँगरो कहन गेन अछि । से ओहि गीत सभमे एतना सौँकृतिक पर्वगवाक स्पष्ट छिप देखरामे अछैछ जकर प्रतिगानन एथन धरि भ२ बहन अछि ।

इ गाँग समाजमे कोना तिवसृत कयन जागछ तकरो रँषि गीत सभमे प्राप् भ२ जागत अछि ।

“इ निनाक रँषी मवन पढ़न छै,

अहाव घब मिमिड ी (मिमिया), कोङ ली रँस कछरैया ते,

अहाव बाति मिमिड ी’ ।

एहि तबहँ रँहृत वाम गीत अछि जाहिमे इ गाँगकेँ समाजक शत्रु तथा रिषासिक कहन गेन अछि आ तकव भ्रमसा कयन गेन अछि ।

मिमियाक रिमर्जन समावाहक तेन किछ मर्षीक पर्वगवा छैक । एहि एमामे रिबिन्न छोष्टेक ओहि ठाम जा कछाफूर्ण गीत गाओन जागछ । उँदुष्ट होगछ घब धनीसँ किछ नगद रा अन्न प्राप् कवरँ ।

“जारेँ तैया सुननि

मिमियाके अरैया,

तारेँ तैया ठोकननि करैव’ ।

आ, लोक किछ ल किछ देरँ करैत छैक ।

कनशेक उँपव बाथन दकनामे आगि प्रखरित कवरौ तेन मर्षिया तेन देरौक सेहो अन्नरोध कयन जागछ सेहो गीतमे । जाहि ठाम जतेक तेन तेथैछ जतेक देखवगव नहस चमकेछ ओत ओ सभ ओतेक मोनसँ गँछ तथा नटेछ । तेन सँगक एमामे

“एक इ रिना तेन ना

मिमिया कमन जाग छै’

दुहिना के कोन सिगाव ।”

एहिमे घबक रँलोपव निर्भव करैछ जे ओ ककव कोन सिगाव कहओ ।



संरक्षण आ संरक्षण जकरी

एहि तबहे देखेत छी, परिणामी कर्म मिमिया एखन धरि हमरा सभकेँ अपन अतीतक सांस्कृतिक
उपलब्धि दिस मोड़ि अलेत अछि । एकटा आव रैनी नीक जकाँ परिणामित कबरी जे प्रकृति रक्षाक
भूमिकाक आरम्भकता छै । ह्रदा, से भेटै नहि छै । तकर संरक्षण जकरी... । सांस्कृतिक पक्षले
त आर अपन बहि गेलक अछि खानि अपन... ।

एहन अवस्थामे समाजमे बसे बसे विप्लव होत जात मिमियाके संरक्षण संरक्षण जकरी अछि ।
पहिल जे प्रकृति गाममे समाजक विभिन्न रक्षाक महिमाद्वारा पक्षपात गीतद्वारा मिमियाक प्रदर्शन
होत छैन से आर जे महिमे आ महि रक्षावे मिमित भेल जा बहन अछि । एकटा महिमाजन संग
आयक माध्यम रक्षा जे बहन छैक । ल मिमियामे यौनिकता आर ओ प्रेक्षा आ रिश्ता । रातुरमे
रानरक्षाकेँ जे जे जे रक्षाकेँ जे जे जे रक्षाकेँ जे जे जे रक्षाकेँ जे जे जे रक्षाकेँ जे जे जे रक्षाकेँ
सचेत कबरीक पक्षपात जे जे जे रक्षाकेँ जे जे जे रक्षाकेँ जे जे जे रक्षाकेँ जे जे जे रक्षाकेँ
रिचाव आ टिप्पण से मेहो रिश्ता जे जे जे रक्षाकेँ जे जे जे रक्षाकेँ जे जे जे रक्षाकेँ जे जे जे रक्षाकेँ
यौनिक कर्म । तकरा जे प्रयास रक्षाकेँ छै ।

संगत प्रकृतिप्रतिष्ठा, संस्कृति विभाग गत रथ एकटा मिमिया महिमे कए एक संरक्षण संरक्षण
हेतु प्रयास सुरू कए छैन अछि । ह्रदा जे त प्रारंभ छै । एकटा आर रक्षाकेँ छै । उचित
प्रामाण्य दए एहि नृत्त प्रःस्थापित कए विभिन्न क्षेत्रक विभिन्न नृत्त कर्म बाह्य अन्तर्बाह्य
क्षेत्रमे देखाउन जा सकैछ ।

सदय, संगत प्रकृतिप्रतिष्ठा

४



नरेंद्र कुमार सा

शैलिक आभार मे ठप्प अछि कोसी महामेतुक काज सुरुवा-कावरीसंग्रह अथवा परिवर्तनक काज मद

मिथिलांचल आ कोसी के एक कबरीक हस्तगत सवायगढ़ निर्मा लेन परियोजना शैलिक आभार मे रैद
अछि । 324 करोड़ शैलिक रथ परियोजना सुरुचित शैलिक आभार मे नखति गेल अछि । एहि लेन
महामेतुक निर्माण पूरा भए गेल अछि ह्रदा सेतुक दुनु किनावा पक्ष जेष्ठ-जेष्ठ प्रन-प्रनिया, लेनक पक्षी
आ मिथीकबराक काज लेनले द्वारा आरम्भक शैलिक आरम्भित नहि कबरीक कावरी ठप्प अछि । सवायगढ़-
निर्मा लेन आशंक काज रारित लेना से मिथिलांचलक जनताक उन्मीद पक्ष ग्रहण नहि गेल अछि ।
मिथिलांचलक जनताक उन्मीद पक्ष ग्रहण नहि गेल अछि । पड़ सी देने संगतक सीमा से सभन बहरीक
कावरी एहि लेनकडक विशेष महत्त्व अछि ।

एहि मेगा लेन परियोजनाक शिनाचाम 6 जून 2003 के तत्कालिक प्रधानमंत्री अठन रिहारी राजपेयी
कयल छल । अठन सकारक कार्यकाल पूरा लेनाक बाद एहि परियोजनाक काजक गति कम भए
गेल छल । बाद मे रथ 2005 मे तत्कालीन लेन मंत्री आनु प्रसाद रथ 2005 मे सवायगढ़ मे भूमि
पूजनक काज प्रारंभ कयल आ एकटा जम्हा पूरा होसरीक घोषणा कयल । ह्रदा शैलिक आभार मे



अ मात्र घोषणा सारित भेल । नर लेन रैजुठ मे एहि परियोजनाक लेन हवाक स ठाका आरंभित नहि भेलो स स्थिति आओव टिताजुनक भन् लेन अछि । एहि लेन परियोजनाक काज प्रारंभित भेलो स आनी जगन भुन जे 79 रर्यक रौद कोसी केन्द्रक शेष मिथिलाचन स सीधा सम्पर्क भन् ज्ञायत आ सुपौल, अंबविया, सहबसा, मधेपुरा आ पूर्णिया आदि जिलाक लोकक दबर्तगा, मधुरी, झुजहमपुरा आ समस्तीपुर आदि जिला स रैठी-रैठीक सरीध स्थापित भन् सकत ।

एहि परियोजनाक निर्माण मे लागत ह्माव कम्प्रेन्सिभ आ घनश्याम नान प्रांगरेष्ट निर्मिठेड लेनले के कार्य सुगम प्रस्तार पठा देला स स्थिति रिक्ठ भन् लेन अछि ओतहि निर्माण कम्पनी जौठी अछि प्रांगरेष्ट निर्मिठेड के गोठेक 90 करोड ठाकाक काज निरिदिक माध्याम स भेठेन भुन ह्मा ठाकाक सद्भुतित भुगतान नहि लेनाक काका एहि कम्पनीक काज सेहो प्रायः रौद अछि । कम्पनी सूत्रक अनुभाव कोसी लेन महामेतु रैनिकन् तैयाव अछि । रतिमान रारिक योजना मे एहि परियोजनाक लेन मात्र तीस करोड ठाका आरंभित कयन लेन भुन जे एहि रर्य अथीन याम मे समाप्त भन् लेन । ठाकाक आभार मे काज रौधित अछि । लेनलेक अधिकारी सभक संग एहि विषय मे लेन रैमाव मे सेहो कोला परियाम नहि निकनन अछि ।

दोसव दिस, मिथिलाचनक एकठी आओव महत्त्वपूर्ण लेन नागलक अग्रिम परिवर्तनक गति यद पड़न अछि । लेन मंत्रालय द्वारा रर्य 1996 मे सहबसा-हावरिसगंज छेठी लेन नागल के रैड ी नागल मे अग्रिम परिवर्तनक स्तिपति देल भुन । ह्मा एथला एहि केन्द्रक जगता अथेजवक जमाणाक छेठी लेन नागल पव यात्रा कवन् पव विरमे भुनि । पड़िना रर्य 20 जनवरी 2012 के अग्रिम परिवर्तनक लेन बाघोपुर स हावरिसगंजक मध्या मेगा रौनक कयन लेन भुन । एहि काजक लेन 356 करोड ठाकाका आरंभित लेनाक रौदो अ काज एथन पवि पूवा नहि भन् सकन अछि एहि तवहेँ ७५५।५ रौनक के बाजधानी पठना स जोड़रौक लेन गंगा नदी पव प्रस्तारित दीघा-पवमार्गदपुर लेन सह सड़क पुनक काज यद गति मे चलि बहन अछि । हालांकि लेनले द्वारा एक रैव ह्मव रर्य 2015 पवि एकवा पूवा कवरौक घोषणा कयन लेन अछि । हालांकि एहि लेनखंड पव नर रैनन पाठनिपुत्र सृशेन स लेनक आरौजाली प्रारंभित होयरौक घोषणाक कयन लेन अछि । 6 सितय्व के एहि सृशेन स लेन बाज्रा मंत्री अवीव वंजुन टोपरी पठना यशेरतपुर ट्रेन के हविाव सडी देखा रिदा कन् एहि लेन खंड पव आनिक कग स आरौजाली प्रारंभित कवताह ।

अ वचनापव अगल यतव ggajendra@videha.com पव पठाउ ।



१. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अमिन'- १. प्रतिरैछ साहित्यकारक अथतिरैछ गजन २. अवनिन्दजीक आजाद



गजन २. उम प्रकाश-गजन समीक्षा (पेष्ठाकस)



जगन्मोह चन्द्र ठाकुर 'अग्नि' - १. प्रतिरक्ष साहित्यकारक अतिरिक्त गजन
२. अवलोकनकारक आजाद गजन

१

प्रतिरक्ष साहित्यकारक अतिरिक्त गजन

थोडे आनि थोडे पानि 2008 मे प्रकाशित प्रसिद्ध गीतकार भाग सिनाराम सा
सबसक 80 ठा गजन सकलन थीक । सबसजी गजनक शैलीक भूमिकामे करिता, कथा, निरर्थक
आदि बिधामे आनि बहन बचन सबक सुवर्ण सरोज उठौनि छि । लेखक, करि, गीतकार
के की की गठराक चाली, से सरोज देन गेन छि । लेखक लोकनिमे प्रतिरक्षताक
अन्तर पब आनि राख कएन गेन छि ।

अगन समाज, अगन भाषाक प्रति अगन लेखकीय प्रतिरक्षताक रक्षण सबसजी जहि
तबहे केन छि छि से रैब-रैब गठराक आ मोनहि मोन हुनक चक्का स्पर्श कबराक लेन
राधा क देत ।

झुदा जै अहाँ तारै जे गजनकारके की की गठराक अथवा कथीक अन्तर्गत कबराक चाली
से एहिमे नहि भेटैत । गजनकारक स्वर्ण गजनक सङ्ग्रहमे की-की गठराक छि तब
उल्लेख नहि कएन गेन छि । गजनक रक्षक कतहु छै नहि छि । गजनकारके मोन
पडैत छि दक्षिण अन्तरालक करि मोनोगमिक आनि गीत आ गीतगीत करि
करिता, कोला मोनकार कोला महर्षि शैबक उल्लेख नहि केन छि छि । एहिमे गजन
लेखक लेन आरम्भक प्रतिरक्षताक आन्तर्गत नहि होत छि ।

शैलीक 80 ठा गजनमे 62 ठा गजनमे बदीह आ कविताक प्रयोग कएन गेन छि जहिमे
5 ठा गजनमे बदीह अथवा कविता अथवा दुनूक निरर्थक सब शैवमे नहि भ सकल
छि । 16 ठा गजनमे कविता छि, बदीह नहि । 2 ठा गजनमे बदीह छि, कविता नहि । अन्तमे
एकठामे सब शैवमे बदीहक निरर्थक नहि भ सकल छि । कोला गजन एहन नहि छि जकर
सब शैवमे र्ण अथवा मात्राक एककता हो । ते रैवमे त्रुष्टि साह दृष्टिगोचर
होत छि । एहि दिन गजनकारक ध्यान किछक नहि गेन छि से नहि जानि । सबसजीसँ
लोकके रैव अन्तर्गत बहैत छैक, झुदा एहि सङ्ग्रहमे हुनक कोनहु स्पर्शक
सेहो कतहु नहि छि । आनि छि गजनकारक अन्तर्गत गजन-सङ्ग्रहमे आरम्भक
उपचारिकताक निरर्थक होत । अ पठि क नीक मल्लोत छि जे '.....' धीक भाग त
एते धरि कहल बहनि जे थोयाम के मैथिलीमे स्वरोंक हो त सब के सुन ज्ञा
सकेछ...' ते सबसजीसँ अपेक्षा आव रैति जागत छि ।

सबसजी कहैत छि, 'एहि सकलनक गजन सब त सहजहि अगन
लोकदेवक, माँ-पाँक, भाँक-साहित्य आ सँक-संस्कृतिक प्रतिरक्ष त
थि, सँक अलक ठाम अलक तबहे तकरा नर सँ परिवर्तित आ राखलित सेहो
कबैछ । नर-नर सँकक स्थापना सेहो कबैछ ।' सबसजीक उद्देश्य त केत
बिबिध गजनक एहि शैव सब पब रिचार कक-

जे पागल पौछु आ केवटे ल लोक, डी: डी: डी:



सेहो पाँगल घँब-घँब घँबघँबो बहल, गँ मैथिल छै

जौ-जौ अँक खँसै पिपली, धप-धप तेना खँसै छी हम
बसे-बसे उँठरी तँ सविगँह, होगए देर-उँठाण हमर

थप्पा समधिष देन समधि केव अँगा मे
उँजरो मोड़ पिजाएल, हाथलक दिस आगल

अँग सफ़दक किन्हबमे रँड छहरातक ज़ोब बहलै
रौब पब तेयो अँगल हम नाम तकल ज़ा बहल छी

रिज्ना कवाँन रँसल बहि ज़ोन लाथारी
गलिगल कियो थागत आ उँगलि बहल छलै

हम मवरँ, रँछी नडत, रँछी मवत-पौता नडत
कँछरँ-कँछरँ, जे रँसनी-सदतारणा-दुर्भरणा

हरा-गालिक रिणा एमरुव तेलेए दुति सरँ पीयब
ओरुव रँोडामे कमि-कमि, बिस खातामे ठुकारै छै

र्याकवण पफ़केँ जँ उँपेकित क देन ज़ाए तँ कएछी गज्जमे किछु शैव
महर्गुर्ण अँछि जे पाँठकक धाण आगुष्ट करैत अँछि किछु शैव जे पठरौमे नीक
नहि नछैत अँछि, तँ सकैए जे हुनका सुबमे सुबरौमे नीक नागय, मैथिली गज्जनक
तन्दावकेँ भवरीमे सबसज्जीक योगदानकेँ महर्गुर्ण मालैत हम गीतकाव सबसज्जीक
प्रशंसक, मैथिलीक सुधी पाँठक आ नर-धुवान गज्जनकाव सतसँ अँगबोध कवरँनि जे
कम-सँ-कम तीण रँव अरुष्ट पठि ज़ाथि सबसज्जीक थोडे आलि थोडे पालि । नीक
नगतनि ।

२

अबदिन्दजीक आजाद गज्ज

मैथिलीयोमे गज्जन पब थुरँ काज तेन अँछि आ एखला तँ बहल अँछि । गजेन्द्र ठाँहव
गज्जनक र्याकवण रिस्ताव सँ प्रस्तुत केननि आ अँगला रँहूत गज्जन लिखनि, आशीय
अँगलिहव मैथिली गज्जन जे सुतँव साँठ रँनाक र्याकवण केँ स्थापित
कवरौमे अँगला योगदान करैत अँगला रँहूत गज्जन लिखनि आ आँव रँहूत गोष्टे सँ गज्जन
लिखलौननि आ से काज एखला क बहल छथि हिनका दुनु गोष्टेक अतिरिक्त आव रँहूत
गोष्टे मैथिली गज्जनकेँ समूह कवरौमे योगदान क बहल छथि । गँ प्रसन्नताक रात
थिक । हमरा ज़लैत गज्जनकावक ऋथा तीणछी रक्षा अँछि । एक रक्षा ओ अँछि ज़ाहिमे
बचनाकाव पहिल गज्जनक र्याकवण पठनि आ तकवा रौद ओही अँगमाले गज्जन लिख
नगनाह, दोसव रक्षामे ओ गज्जनकाव सत छथि जे पहिल गज्जन लिख नगनाह , रौदमे
गज्जनक र्याकवण दिस घाण ज़ेननि आ ओहि अँगमाले लिखरौक प्रयास कव नगनाह,
तेसव रक्षामे ओ लोकनि छथि जे गज्जन सुनि क, पठि क नीख नगनाह आ नीथेत चन



गोनाह, पाछाँ उभै क बहि तकननि, उ मात्रा अथवा रर्षि गनि क येव
निखरौक-कहरौक टकुरवे बहि पडि अगल रातके केन्द्रमे बाथि धडाधड निथेत जन
गोनाह आ निथेत जा बहन छथि ।

रैहकनियाँ प्रदेशमे मात्र 24 दिनमे नीखन गेल 66ठाँ गजनक संग्रह थीक
जाहिमे गजनकाब अबरिन्द ठाँहबजीक कथन पब ध्यान देल जाए: ‘हम जे कहल छैत
छी से महत्त्वपूर्ण छैक, ताहि जेन ब्राकबरा छुँछै कि बिधा विशेषक मागदंड, तकब
हमरा पबराहि बहि अछि । ओकरा जन छली तहमब सहायक हूँ, राधा ठाँठ बहि कबए ।’
गजनकाबक एहि कथनके ध्यानमे बाथि जँ हिनक गजन पठरै त नीक लागत । 66 ठाँ
गजनमे 10ठाँ गजन एहेन अछि जाहिमे बदीह अछि, काहिया बहि, 16 ठाँ एहेन अछि
जाहिमे काहिया अछि, बदीह बहि, 40 ठाँ गजनमे बदीह आ काहिया दुनु अछि, किछु
गजन एहेन छैत जाहिमे रैहबसँ संश्लिष्ट दोष बहि हो, रुद्र, रैहूत बाम शैव सभमे
जे रात कहल गेल अछि से ब्राकबराक छुँछैके माग देलैमे रैहूत समर्थ नछैत
अछि, सभ गजनक अंतिम शैवमे गजनकाबक नामक प्रयोगक प्राप्ति पर्वपराक निर्राहि
नीक जकाँ कथन गेल अछि जे रैहूत गजनकाब बहि क पठरैत छथि, गजनकाबक समस्त
सांसाजिक, राजनीतिक आ सांस्कृतिक चेतनाक अरमुनाषक बियान स्केचक अन्तर्गत
संपन्न छथि जे जहाँ-तहाँ बिभिन्न गजनक बिभिन्न शैव सभमे प्रगष्ट भेल छथि । एकब
राँगगीक कथामे प्रस्तुत अछि निम्नलिखित किछु शैव:
दुध जेन लला आ बोगी हाकरोस कबत
लै जखन गाममे मानक रैथान बहत

एहि सांसाजक कठि भेल अछि योडनक उड्डाण सभ
थेगामे तीजन रैतहरौ ताहिपब गुंघरा बहन अछि

गाममे डिगियाँ जवन अछि बातिर्स नडरौक जेन
मैथीगानिष्ठन ठाँडनमे अछि बाति दुपहरिया रैषन

पात रिडेरौक रैव लोकक कबान छन
याव सभ अलोपित भेल ईठ उठेरौक रैव

बातिक जे एकरोन रैठन
दूर्ध्व सगव गजोबिया भेल

संसद केव हाँठैमे किछु बहि हेव-हेव
संगिनाथ, नागनाथ, गैह दुनु रैव-रैव

काब थोड़ै छै एकरु हुँठपाथ पब सुतन बिकाब
यम अरै छथि एहि षगव बिभिन्न राहण पब सराव

संसदमे घुमिआगल जे
सात जणम जेन केनक जोगाव

गजनकाबक तयारक आमेरियस एहि येव सभमे देखु:

धन्य ‘अवरिणतौ’ एनह गजनक जगतमे
हेव केउ ‘खुसरोकी’ तोहब रौद हेताह



ले पाठक ले टिप्पणी अवसर
नीक गजन ले पठरौ कबते

एहले आव रँहूत बाम नीक-नीक शैव रना गजन पठरौक लेन देखु श्री अवसरिन्द
ठाकुरक बचन आ 'नरारव' द्वारा 2011 मे प्रकाशित आ रँहूत सँदर कागतपव
'प्राप्ति' प्रिन्ट, नग्न दिग्ग द्वारा रँहूत सँदर द्वादित गजन
संग्रह 'रँहूकपिया प्रदेनेमे' । अस्तुमे हम गजनकावक उज्जिक उल्लख कब चारैः
'.....हाथक जेना सब रँहूत धृष्टि गेल । एहल धारा-प्रवाह जे गजनक
मिसबा,शैव,बदीह,कारिया,रँहूत,गिबल सबकेँ मन्त्रावर कर्तल....' तबिसक, एहल कावण
थीक जे गजेन्द्र ठाकुरजी द्वारा हिनक गजन सबकेँ आजाद गजन कहल गेल अछि । हम
एहि रिटार्वसँ सहमत छी ।

२



डॉ. प्रकाश

गजन समीक्षा (पेठावसँ)

1

रँहूकपिया बचनेमे

गजनमे हम कटि बाधेत छी । संगहि मैथिली मे थोड रँहूत गजन सेहो लिखै छी आ
गजनक पोथी सब पठरौक गछा बहे ए । मैथिलीमे रँहूत कम गजन संग्रह अछि

आ ओहो

सुनत ले होगत बहे ए । एहल परिस्थितिमे हमरा श्री अवसरिन्द ठाकुरजीक सन्तः
प्रकाशित मैथिली गजन संग्रह "रँहूकपिया प्रदेनेमे" पठरौक असब भैठेल आ हम
एहि पोथीकेँ आन्यागत पठनहूँ ।

सबसे पहिल हम श्री अवसरिन्द ठाकुरजीकेँ मैथिली गजनक पोथी लिखरौक लेन रँधाज
दैत छियेहि । मैथिली गजनक उल्लेख लेन प्रहल डेग हमरा महत्त्वपूर्ण लागै
ए । पोथीक लेख अग रँहूत सुलभ अछि । ठीकठा आ कागतक कोष्टि सेहो उत्तम अछि ।
पोथीक भूमिका गजनकाव अगल लिखल छथि आ ओहि मे गजन आ एहि संग्रहक संग्रह



मे रैहूत बाम गण सरे कहल छथि । जेना गृथ सखा सातक दोसब पावा मे गजनकाव कहैत छथि जे "मैथिलीक मिजाजक सीमा" ग मैथिलीक नहि, हमर अणन सीमा भऽ सकैत अछि (कै देखैत गजनक र्याकवा) बदीह, काहिया, मिसवा, मतना, मकता आदि(क स्थापित मापदण्डक कमरैष्टी पव हमर सब गजन खा उतवत तकव दारी तऽ नहि ए अछि रैकि हम तँ ग सकावय छै छी जे----- हमर सीमाक कारणाँ प्रस्तुत गजन मे कएक जगह सुनि पाठक लोकनि कै त्रुष्टि भेटै सकैत छनि । "एहि पावाक अस्तु मे ओ कहै छथि जे रैहवक दोथ किछु शैव मे भेटै सकैत अछि । हम गजनकावक सवालना करैत छी जे ओ भूमिका मे अणन कएक ठाम रैहवक आ अणन दोथ हएर स्याकाव कएल छथि । पोथी कै आद्यापान्त पठना पव हमरा ग ले रूमाएन जे एहि संग्रहक गजन सरे कोन-कोन रैहव मे निखन गेन अछि । अवररीक कोला ए रैहव मे कोला गजन नहि अछि, मैथिली मे आग-काहि प्रशस्त होग रैना सवन रार्कि रैहव मे सेहो कोला गजन ले अछि । गजनकाव कै एहक गजन मे ग निखराक चाली छन जे कोन रैहव मे गजन निखन गेन अछि । जँ ग "आजाद-गजन"क संग्रह थीक, तँ हूँका एहि रातक उल्लख कवरोंक चाली छन । भूमिकाक उपरोक्त पावाक शुक मे गजनकाव कहै छथि जे मैथिलीक मिजाज कै देखैत एहि मे उर्दू-हिन्दी गजनक मिजाजक नकन कवरोंक प्रयास कएन जागत तँ एकरा रूपायारी नहि ए ठी कहन जायत आओर सफलता सेहो नहि छैत । हम हूँकव गण सँ सहायत छी जे नकन कवरों उचित नहि । हूँका एकठा गण हम कहऽ छैत छी जे एहक रिधाक एकठा नियम होगत छै आओर जाहि फ्रेम मे ओहि रिधाक उदय भेल बहैत छै ओहि फ्रेम मे स्थापित भेल नियमक पानन केल रिधा कोला बचना मुन रिधा मे कोना भऽ सकैत अछि । जेना मैथिली मे समदाउण आ मोहवक पवसवा छैक आ जँ गजारी मे रा गजवाती मे रा की कोला अणन भाया मे समदाउण आ मोहव गारऽ चाली तँ नियम कोना रैदनि जेतैक । जँ नियम रैदनि तँ ओ दोसब छिज भऽ जेतैक । तहिना गजन अवरर फ्रेम मे जग्न जनक आ ग स्वाभाविक छै जे एकर नियम) र्याकवा (ओहि फ्रेमक स्थापित मापदण्डक आधार पव रैगन । स्थापित मापदण्डक पानन कवरों नकन नहि कहन जा सकैत अछि । आ जे नकनक गण कवी तँ "गजन" कहर अवररी-हिन्दीक नकन थीक । एक दिस गजनकाव "गजन" कहराक जोत ले छोटि बहन छथि आ दोसब दिस गजनक र्याकवाक नियम पानन कै नकन कहै छथि, ग उचित ले रूमाएन । गजन स्थापित मापदण्ड पव जँ ले कहन गेन तँ बचना कै गजनक स्थान पव दोसब नाम देन जा सकैत अछि ।

गृथ सखा दस पव दोसब पावा मे गजनकाव कहै छथि जे ओ जीरन सँ सिद्धा लेत छथि । ग स्वागत योग्य गण भेल । जीरनक सिद्धा सँ तैयाव राजन मोखदगव हरेर कवते । हूँका भोजन रैरै कान चाँवक सिद्धा पाणि मे मोमे हूँका कऽ पवनि देना सँ भात नहि कहागत अछि । चाँवक सिद्धा कै अदहन मे देन जाग छै तखन भात तैयाव होग छै । तहिना जीरनक सिद्धा जँ र्याकवा, नियम आ चिन्तन-मननक अदहन मे पकाउन जागत अछि तँ मोखदगव बचना भेटैत अछि । रिधा रिशेयक मापदण्ड तौडराक ऋतिकारी घोषणा कएना ठी सँ किछु रिशेय फायदा रा उमेद तँ नहि जलै ए । जँ कियो मापदण्ड तौडे छथि, तँ मापदण्ड पव चले रैना कै नकनछी आ राजीगव कहर उचित नहि । गजन आ हकवा आ दोहा मे थोडेक अस्तु तँ छै जे बहरेर कवते । अस्तु, ग गजनकावक अणन रिचाव छैहि आ आर प्रकाशित सेहो छहि ।

गजन संग्रहक सरे गजन पठनौ । नियम रस्तु सरे नीके नागन । गजनक र्याकवाक आधारपव कहि सकैत छी जे रैहवक दोथ तँ एहक गजन मे छैक आ जँ ग आजाद-गजनक संग्रह थीक तँ गजनकाव ग गण कतो ले कहल छथि । गजनकाव कै स्पष्ट कवरोंक चाली छन जे कोन कोन रैहव मे गजन सरे निखन गेन अछि । हमरा रूमाएन गजनक कोला शीर्षक ले होगत अछि, हूँका एहक गजन कै एकठा शीर्षक देन गेन अछि ।



रैहबक अतिविश्व बदीह आ काहियाक नियमक सेहो कएक ठाम पानन ले भेल अछि आ ग गजजनकाव भूमिका से सेहो स्त्रीकाव कएल छथि। जेना पृथ्वी राक्षस से मतनाक दुनू पाँति, दोसर सेव आ पाँचम सेव से काहिया से आयर प्रयोग भेल अछि, तँ दोसर आ चरिम सेव से अर क प्रयोग अछि। पृथ्वी टोरीस से मतनाक पहिने पाँति से काहिया से अ आयर अछि आ दोसर पाँति आ अर सेव से आत आयर अछि। पृथ्वी पट्टिम से काहिया की छै, से ले रूमाएन। पृथ्वी तिवर्ण से प्रत्येक पाँति से काहिया एकदम हवाक हवाक अछि। पृथ्वी अर्धगोल से मतना, दोसर सेव आ चरिम सेव से काहिया से अर प्रयोग अछि आ आयर सरे सेव से काहिया से अ प्रयोग अछि। पृथ्वी उन्मर्ष से सेहो बदीह आ काहियाक स्पर्शता ले अछि। पृथ्वी डियमर्ष से काहिया से कते अर आ कते आओन प्रयोग अछि। पृथ्वी सडमर्ष आ तिरुति से सेहो काहियाक नियमक उन्मर्ष भेल अछि। तहिना सहायक रैना काहियाक नियम सेहो एक दु ठाम हमरा हिसारै ठीक ले अछि। एकव अतिविश्व आओन कएक ठाम काहियाक नियमक पानन ले भेल अछि। हम उदाहरण स्वरूप किछ पृथ्वी उन्मर्ष कएनहूँ। हमर ग उन्मर्ष ले अछि जे खानी दोथ तकर जाय, ह्रदा जँ गजन कह छियै तँ गजनक नियमक पानन हेराक छली। सरँ गोष्ट केँ जाणकारी जेन ग रैता दी की रैना बदीहक गजन तँ भ२ सकैत अछि, ह्रदा रैना दुकत काहिया भेल गजन ले भ२ सकैत अछि।

भूमिका सँ एकठा रीत आर स्पर्श होग ए जे गजनकाव म३ २००+ सँ मैथिली से गजन लिखरँ शुक केनथि, उना ओ हिन्दी से पहिने गजन लिखैत छन। एकव मतनरँ ग भेल जे गजनकाव अर्धगोल आखर) मैथिली गजन केँ समर्पित रैनाग (सँ रैहूत रौद से मैथिली गजन लिखरँ शुक कएल छथि आ मैथिली गजनक रबीयता से रैहूत रौद से आयर छथि। अर्धगोल आखर रैनाग देखना सँ गता छली छै जे गजनकाव एहि रैनाग पब सेहो अर्धगोल कएक ठा गजन २००९ सँ एख धरि देल छथि। ओ अर्धगोल आखर रैनाग सँ छिह छथि, तँ ग उन्मर्ष अछि जे एहि रैनाग पब प्रकाशित मैथिली गजनक रिश्रुत राकबण केँ जकर देखल हेत। ग उन्मर्ष छन जे प्रश्रुत गजन संग्रह मैथिली गजनक नरँ पीठि जेन एकठा उदाहरण रैनाग। ह्रदा एहि संग्रह से गजनक राकबण जे उन्मर्षा भेल अछि, जे गजनकाव भूमिका से स्पर्श स्त्रीकाव कएल छथि, निवासी उन्मर्ष करैत अछि। ह्रदा ग संग्रह गजनकावक पहिलक मैथिली गजन संग्रह अछि, तँ गजनक राकबणक गनती भेनाग स्वरिक अछि। आशि राउ करै छै जे ह्रकव आगामी गजन संग्रह मैथिली गजन से अर्धगोल अर्धगोल स्वर वाखत।

२

घोष उन्मर्ष गजन

मैथिली गजनक पहिलक प्रकाशित पोथी "उठा बहन घोष तिमि पठरौक सौभाग्य" छै। ए गजन संग्रहक गजनकाव श्री रिश्रुति आनन्द छथि। एहि पोथी से ह्रन टोरीस गोष्ट गजन अछि। पूरा पोथी केँ एकहि रैमाव से पठि गेनहूँ आ रैव-रैव पठनहूँ। सरँसे पहिल हम श्री रिश्रुति आनन्दजी केँ मैथिली गजनक पहिलक संग्रह प्रकाशित करौ जेन धन्यवाद दैत छियै। एहि पोथीक भूमिका से गजनकाव कह छथि जे "मैथिलीक गजन सोम-सोम हिन्दी सँ प्रभावित अछि ह्रदा हिन्दी जकाँ जमन नरँ अछि एखला धरि। आगु ह्रकव कहनाग छैहि" - पावर्षिक राकबण संग्रहित अर्धगोल त्रुष्ट सत ठाम नक्षित हेत।



उना हम दुम्हारसगुरक साहस करैत बहनहुँ अछि जे कथा-सामाजिक नए राकबा
दिस सँ यदि मुँहो घुम जेन जाए तँ कोना रुझ नहि। किए तँ हम मालेत छी जे
अ पाठकसक रसु नहि अछि। विद्यार्थी मुर्ख नहि रैषत। तैँ की

----- राकबा सँ भयभीत भऽ नहि लिखन जाए। "गज्जनकावक
पहिलक कथक सङ्ग्रह मे हमर निरुद्ध अछि जे गज्जनक पवसबा अवरु-हावसी सँ
शुक भेल अछि आ ओतहि सँ आन भावतीय भाषा मे पसबन अछि। हिन्दी-उर्दू मे गज्जन
कहरोक पवसबा मैथिली सँ पहिल शुक भेल, तैँ रैहसुआ लोक दिग्भ्रमित भऽ
जागत छथि जे मैथिलीक गज्जन हिन्दी गज्जनक नकल छी रा ओग सँ प्रभावित भेल अछि।
गज्जनकाव सेहो एहि मिथ्या धारणा सँ प्रभावित छथि। आरँ गज्जनक राकबा पौड-रैहूत
समरजनक संग सरँ भाषा मे तँ एक बहत। ए हिति केँ हमरा हिसारै
"प्रभावित जेना अछि कहरोक कोना ओटि लै अछि। गज्जनकावक दोसर कथ देखि हम
निवाशि भेल छी। पता लै किया एखन धरि जे दुनु गज्जन संग (सरँसँ पहिलक आ
सरँसँ अन्तिम प्रकाशित (पठनहुँ, एहि दुनु मे गज्जनकाव कथा-सामाजिक आगु
राकबा केँ कोना मोडव लै देरै छित छथि। एकछी गप मोन बथरोक चाली जे
साहित्यक निर्माण रैयाकबनिक अनुशोसनक बाद सफल भेल अछि। अ हवाक गप अछि जे
समाय-कान आ सुनक हिसारै सरमाय परिवर्तन राकबा मे होगत बहन छैक।
रिना रैयाकबनिक अनुशोसनक भाषा पठरो, लिखरो आ रोजरो जोग बहत ? जिनका मे
साहित्य निर्माणक मादा छैहि, हुनका मे राकबा केँ पाननक साहस अरुस
हेरोक चाली।

आरँ हम एहि संग्रहक गज्जनक सङ्ग्रह मे किछ गप कहऽ चाहै। अ गज्जन संग्रह ओहि
समाय मे लिखन गेल अछि जखन मैथिली गज्जनक राकबा आ रैहवक सङ्ग्रह मे रैहूत
रैसी जनतरँ सारजनिक लै छन। हम एकवा एना कहऽ चाहै जे अ गज्जन संग्रह
"अनटिहाव आखन जुग सँ पुरक गज्जन अछि जखन रैहव, वदीह आ काहियाक नियमक
पाननक विषय मे रैहूत बस गप सरजन स्वत लै छन। एहि हिसारै जँ ए संग्रहक
गज्जन सब मे रैहवक दोथ छैक तँ अ स्वाभाविक रूमागत अछि। एहि संग्रहक कोना छी
गज्जन कोना रैहव मे लै अछि। तैँ ए संग्रहक रैह गज्जन)जाहि मे काहियाक नियमक
पानन भेल हुए (सब केँ "आजाद-गज्जन"क श्रेणी मे बाखन जा सकै। आरँ गज्जनक
काहिया आ वदीहक सङ्ग्रह मे किछ गप। एहि संग्रहक रैहूत बस गज्जन मे काहिया
आ वदीहक नियमक पानन भेल अछि। ह्मदा कथक गज्जन मे वदीह आ काहियाक गनती अछि।
जेना गृथ टोदर पव मतना देखना पव रूमागत अछि जे "अ मोसम वदीह अछि आ
"माली" "आओ" उमरै "काहियागुन मिह, अछि। ह्मदा दोसर शैव आ आगुक आन शैव
मे एकव पानन लै भेल अछि आओ शैव सब रिना वदीहक "अ "काहियागुन अछि।
गृथ पदर पव सेहो यैह दोथ अछि, जाहि मे मतना मे वदीह "कहाँ बहन"क
प्रयोग अछि आ आन शैव सब रिना वदीहक "अन "काहियागुन अछि। एहल दोथ गृथ
मोनल मे देखन जा सकैत अछि, जतय मतना मे "कले छन "वदीह मानन जरूरीक चाली।
उना ए गज्जनक आन शैव सब मे दु छी काहियाक सुनब प्रयोग अछि, जे नीक माली।
हमरा हिसारै काहियाक दोथ गृथ रीस, रोजस, टोरीस, पटीस, अष्टीस,
उपनीस)संग्रहक काहियाक नियमक दोथ, रीस आ मीस मे सेहो अछि।
एकव सरहक रिहूत रीस देरँ हम अपेक्षित लै रूमि बहन छी, कियाक तँ अ हमर
उद्धेष्ट कथमणि लै अछि। गज्जन संग्रहक सरँ गज्जनक विषय-रसु नीक अछि आ गज्जनकाव
अपन भारणा नीक जकाँ प्रकट केल छथि।
किछ गज्जनक काहिया आ वदीहक दोथ जँ कात कऽ कऽ देखी, तँ अ गज्जन-संग्रह एकछी
नीक गज्जन-संग्रह अछि। गज्जनकावक गज्जन कहरोक समता सेहो नीक रूमागत अछि। हमरा
अ अचबज मणि बहन अछि जे ए संग्रहक बाद गज्जनकावक दोसर गज्जन-संग्रह किया लै
आएन अछि। एकव काबा तँ गज्जनकाले केँ पता हेतैहि, ह्मदा अपन अनुतरक आधार पव
हम कहऽ छै छी रिहूति आनन्द नीक गज्जन लिख सकैत छथि। जँ रैहव



रिचाव ले कवी, तँ २०१२ मे श्री अरविन्द ठाकुरजीक गजल-संग्रह सँ कवीर
एकतीस रैथि पहिले १९५१ मे लिखल गेल एहि संग्रहक गजल सँ उम्दा कहल जा सकैत
अछि । एकव काका ग जे एहि संग्रहक गजल सँ मे काहियाक नियम-पाठक प्रतिभित
रतिमान समायक संग्रह सँ सँ रेसी अछि । कथाक मजबूती सेहो नीक कोष्टक अछि ।
थानी कहलन तुकमिनाली केल गजल ले कहल जा सकैत अछि, ग गग एहि संग्रह केँ
पठनाक बाद एखनका गजलकाब मत केँ सेहो बुझैतहि, ग आशि अछि । गहो एकठा
अचरजक रियस अछि जे जखन मैथिली मे नीक गजल एतेक मात्र पहिला कहल गेल छल, तखन
एकव बाद गजलक विकास-यात्रा पट्टिम-तीस रैथि धरि कतह आ किया ठमकि गेल । रीचक
अरवि मे मैथिली गजलक विकासक धाव मे रीच किया रैनि गेल छल, ग रिचावीय गग
अछि । उला आर ग रीच छुँ छुँ बहन अछि आ आशिक नर जोति मे मैथिली गजलक घोष उठि
बहन अछि ।

३

समीक्षा

बिदेह ७-पत्रिकाक १ अर्ध २०१२ केव नर अंक मे प्रकाशित श्री प्रेमचन्द्र
गजलजीक दु ठा गजल पठलौ । एहि दुनु गजल केँ हम गजलक ब्राह्मणक आधार पव
देखरीक प्रयास कएलौ । हम दुनु गजल पव आ प्रत्येक पाँति पव अपन रिचाव बाधि
बहन छी ।

गजल १

हम रात अही केव गीत कहँ, नहि गजल कहँ
रैक कहँ गीत नहि, तीत कहँ, नहि गजल कहँ

दाढ़व अपन पमावि बहन अछि माथापव सँझक राज
कोन रिधि रीचत प्रीत कहँ, नहि गजल कहँ

कतरौ माँछि सुँघाएँ तैउ नहि मानँ हम अप्पन हावि
टाक नान पढाई अपन हम जीत कवरँ नहि गजल कहँ

गगनक झूँहकेँ छुमए कतरौ ठाढ़ अहाँ केव शीमसहन
रैम कथनहूँ ब्राह्मण तीत कवरँ नहि गजल कहँ

हाथ पमावरँ बहत पसवने, झूँह छेँ छेँ कवरँ तँ की
कनि दुमि झूँह रिगवीत छनँ, नहि गजल कहँ

पहिल गजलक मतला पठना पव बुझाए जे वदीह "कहँ, नहि गजल कहँ" अछि आ काहिया
मे "गत" प्रयोग भेल अछि । दोसर शैव मे यैह वदीह आ काहिया भेल गेल अछि ।
झुँदा तेसर आ चारिम शैव मे आरि क२ वदीहक "कहँ"क रदना मे कवरँ "उपयोग कएन
गेल अछि । पाँचम शैव मे एकवा रदनि क२ "छनँ" क२ देन गेल अछि । ए सँ ग बुझा
नछेए जे वदीह "नहि गजल कहँ" अछि आ दु ठा काहिया "गत" "हाउ नहि" आ "अर"
हाउ नहि, अछि । जँ गजलकाव यैह वदीह आ काहिया मानि क२ छनल छथि तँ हूँका
प्रत्येक शैव मे एकरे प्रयोग कवरँक छली । तखन वदीह आ काहियाक दोथ ले
बहिले । वदीहक नियमक मोतारिक प्रत्येक गजलक एकेठा वदीह होगत अछि आ एकव



पावण ओहि गज्जनक एहक शैव मे होयराक छली । तहिना काहियाक नियामक मोतारिक
एहक शैव मे काहिया एके हेराक छली । आरै कनी रैहव पव चर्त कबी । अ गज्जन
सबन राप्तिक रैहव रा राप्तिक रैहव पव ले निखन गेन अछि । अबरी रैहव मे अछि की
ले अ जखन लेन हम सरे एक एक ठा पाँतिक रिहियन कबी । जै द्रव्य केँ १ आ
दीर्घ केँ २ मनी तँ पहिन शैव मे देखन जाओ:-

हम रात अही केव मीत कहँ, नहि गज्जन कहँ

११ २१ १२ २१ २१ ११ ११ ११ ११

आरै दोसव पाँति

रैक कहँ मीठ नहि, तीत कहँ, नहि गज्जन कहँ

१२ ११ २१ ११ २१ ११ ११ ११ ११

हुँपव दुनु पाँति मे देखि सकै छी जे द्रव्यक नीचा द्रव्य आ दीर्घक नीचा

दीर्घ ले आएन अछि आ तैँ अ शैव कोना रैहव मे ले अछि । जखन मतल कोन रैहव मे
ले अछि, तखन आन शैव सरे पव रिचाव कबरौक कोना प्रयोजन ले अछि । निश्चय यैह
जे गज्जन कोना रैहव मे ले अछि । आन शैवक रिहियन पाठक अगल ए आधाव पव क
सकैत छथि ।

आरै दोसव गज्जन देखन जाओ:-

गज्जनक रैहव हम आँगन -घब -दुआवि निखँ

राँध-रैण -कनमराँग-रैण -रैमरावि निखँ

साँठ छैक छुष्टी आ पाड़ । मवखान कतैक

साँठन फुमिनकेव स्वबजाक वखरावि निखँ

थानामे नाछै भेलि बगिचाक हाकरोम-

स्वमिहाव केओ नहि तकले पछावि निखँ

राँवन थेलोनामँ, पोथीमँ दुव कएन

जिनगीक रौम उद्येत लनाक भोकावि निखँ

नाटि बहन लोक आग असनी नटमिग सत

नटा बहन पवदमँ केओ पवतावि निखँ

फाँटन अकाम छै सीखत के-कते कोना

निखँ जे "गकज" रैव-रैव रिचावि निखँ

एहि गज्जन मे काहिया "आवि हाउ अछि आ वदीय" निखँ अछि । ए हिमारेँ वदीय आ
काहिया ठीक अछि । सबन राप्तिक रैहव रा राप्तिक रैहव रा अबरी रैहव मे ओहो गज्जन
ले अछि । द्रव्य केँ १ आ दीर्घ केँ २ मनी क२ मतना केँ देखन जाओ:-

गज्जनक रैहव हम आँगन -घब -दुआवि निखँ

१११ १२२ ११ २११ ११ १२१ १११

राँध-रैण -कनमराँग-रैण -रैमरावि निखँ

२१ ११ ११२१ २१ ११२१ १११

ओहो गज्जनक मतना मे द्रव्यक नीचा द्रव्य आ दीर्घक नीचा दीर्घ ले आएन अछि आ

अ कोना रैहव मे ले अछि । ओहो गज्जन मे जखन मतल रैहव मे ले अछि तखन आन शैव सरे

पव रिचाव कबरौक कोना प्रयोजन ले अछि । एहि आधाव पव अ निश्चय निकलै जे

ओहो गज्जन कोना रैहव मे ले अछि । एहि तबहँ देखन जा सकै जे दुनु गज्जनक रैहव

दुक्त ले छै । एठाँ अ रैता दी की मशगुफ़व मँ पूरक रर्ष दीर्घ मासन



जागै आ अग्रप्राव रौन रूँ मेहो दीर्य मानन जागै ।
गजनक रियारतु नीक अछि । दोसव गजन "आजाद गजनक"क श्रेणी मे अछि आ पहिलक
गजन काहिया दोखक कावा गजन ले अछि । सादर ।

४

मैथिली रौन गजनक अरधावा

जैना कि नाम सँ स्पष्ट अछि, रौन गजन मान लेन लेना-तुठकाक लेन गजन । रौन
गजनक अरधावा मैथिली मे एकदम नर अछि आ पहिल रौन २४ मार्च २०१२ केँ श्री
आशीय अरुणिका ए अरधावा केँ सामने आनयि । रौन अरुणिका मे रौन गजन
रौन अरुणिका गजनक आ रौन गजन कहिहार गजनका सबक एकठा रिशान पाति ठाठ
भेन लेन । ए मे सरिणी गजेन्द्र ठाकुर आ आशीय अरुणिका जकाँ स्थापित
गजनका तँ छथि, एकव अनाले नर गजनका सँ मेहो रौन गजन कहौ मे विशेष
अभिकटि देखोमहि । रौन गजन कहिहार नर गजनका सब मे सरिणी गिहिव मा,
झुझा झी, गवा मल्लिक, अमित मिश्री, चन्दन मा, पंकज टोपरी नरनरी,
बाजरी वंजु मा, जगदीश मा मन्त्र, करी मा, प्रणिता मैथिल आदि अल्लेन
गजनका छथि । "अरुणिका आथर", जे मैथिली गजनक एकमात्र रौनग अछि, देखना
पब पता नालेत अछि जे रौन गजनक अरधावा अनाक रौन सँ एथन धरि) आलेख निथरौ
तक (१३)तिरुति (१) रौन गजन ए रौनग पब पोस्ट भेन छुन अछि, जे अल्लेन आ
मे एकठा कीर्तिमान अछि । थाम कए एतेक कम समय मे एतेक पोस्ट आरौ रौन गजनक
लोकप्रियताक थिमा कहि बहन अछि । रौन गजनक रिवा एकठा स्वतन्त्र रिवा
रौनका रौन मे अग्रसव अछि, जे एतेक कम समय मे एतेक सँथा मे रौन गजन
कहिहार गजनका आ रौन गजनक सँथा सँ स्पष्ट अछि । सगहि किछ लोक केँ
गिवाडा मेहो नागर शुक अछि आ ओ लोकनि रौन गजनक सम्पूर्ण अरधावा केँ
नकावरौक फसित असहन प्रयास मे जेन हए अछि नै पोस्ट देरौ नागान । आ
गग आर स्पष्ट करौत अछि जे रौन गजनक रिवा मजबूती सँ स्थापित भेन बहन अछि ।
कियाक तँ सहन राखि आ रिवा सबक आकर्षक केन्द्र रौन अछि आ रौन गजन
मेहो सबक आकर्षक केन्द्र रौन छुन अछि, चाहे ओ गजनका होय, पाठक
होय, आलोचक होय रा जवनिहार लोक सब होय । जखन मैथिली गजनक छट भेन
बहन अछि, तखन श्री आशीय अरुणिकाक छट स्वतन्त्र अछि । मैथिली गजनक
विकास मे हकब योगदान हकब धूव रिवादी लोकनि मेहो मालेत छथि । मैथिली
रौन गजनक अरधावा लेन श्री आशीय अरुणिका मैथिली सहि मे अगल अग्रगम
स्थान रौन छुन छथि । रौन गजनक अरधावा मेहो हक केँ छेहि, जे रौन सहन
लेन अछि ।

आर किछ गग करी मैथिली रौन गजनक वचना सबक सँध मे । हमरा रिवा सँ रौन
गजन लेना तुठकाक लेन कटिग तँ हेरौके छरी, सगहि ए मे लोला स्पष्ट
सामाजिक मलस होय तँ आ मोल मे मोलज जकाँ हएत । ओना तँ सब रौन गजन कहिहार
गजनका सब ए मे सफ़म छथि आ नीक सँ नीक रौन गजन निथ बहन छथि, झुझा ए
सन्दर्भ मे हम श्री गजेन्द्र ठाकुरजीक रौन गजनक उल्लेख करौ उचित रूमि बहन
छी । हकब एकठा रौन गजनक मतना अछि:-



कनियाँ पतवा डोडू आबू रारी
जै बंग गनारी डै तै जालू रारी

ए गजन केँ पुवा पठि क२ कल देथियो । ए गजन कनियाँ पतवाक उल्लख करैत लषा-तुठकाक मलारजण तै करैत अछि, संगहि अजुका राजावरदक रनिरेदी पव फर्रिष भेन मल्लखक मार्गिक रिरैछा सेहो करैत अछि । एहन आबो कतेको रान गजन सत "अनटिहार आखर" पव डैठैत अछि, जकवा ए रानाग पव पठन जा सकैत अछि । ए गजनकाव सतक सामाजिक संरदना केँ प्रकट करैत अछि आ हम ए जेन सत गजनकाव केँ साधूवाद दैत छियैहि । हम एहन रान गजनक आस गजनकाव सत सँ नगोल छी । कियाक तै गजनकावक सामाजिक दगिर सेहो छै, जे पुवा हेरौक छाली । आधुनिक मैथिली गजनकाव सँ ये ए फमता अछि आ ओ दिन दुब ले अछि जखन एक सँ एक सुल्लव आ रानागयोगीक संगे सामाजिक समष्टा पव रान गजनक भवमाव छैत । रानाकषाक हिमारे मैथिली रान गजन नीक रौठ धएल अछि । अनटिहार आखरक रीमक परिश्रमक कार्षे मैथिली ये रैहवश्र गजनक कान शुक भ२ छकन अछि आ सबन रारिक रैहव)जकव अरवाका श्री गजेन्द्र ठाकुरजी देनथिह (केव अनारे आरै अवरै रैहव ये गजन कहनिहार गजनकावक कमी ले छै । रान गजन अणन शुकआते सँ रैहवश्र अछि, जे रान गजनक जेन श्रुत सकैत अछि । शुकआतिअ समय ये जे आ जतरौ रान गजन निखन छैन अछि, ओ सत रैहव ये अछि, छाने सबन रारिक रैहव होग रा अवरै रैहव । रैहवक अनारे वदीह आ कारियाक नियमक गालन सेहो पुवा पुवा भ२ बहन अछि । रानाकषा गालनक ए प्रतिरैछता निश्चित कषे रान गजनक सफलताक गाथा निखरौ ये सहायक छैत । मैथिली गजनक रैठैत डेग संग आरै मैथिली रान गजनक डेग सेहो उठि छैन अछि । मैथिली रान गजन जाहि द्रुत गति सँ अणन डेग उठिउनक अछि, ए सँ तै येह नालैत अछि जे अगिला मान आरैत आरैत मैथिली रान गजनक पोथी प्रकाशित भ२ सकैत अछि । संगहि असकुनक पाठ्यक्रम ये रान गजन समिति तैरौक सतारना सेहो साकाव कष न२ सकत । पाठ्यक्रम ये समिति तैरौक रौद मैथिली रान गजन सत पठनिहार-पठैनिहारक संज्ञान ये नीक जकाँ आउत आ सामाजिक विकासक संवछा ये अणन महत्पूर्ण योगदान, जे अपेक्षित अछि, सेहो द२ सकत ।

३.

बोथ हथियाव

श्री सुलेन्द्र नाथक कहन मैथिली गजनक संग्रह अछि "गजन हमर हथियाव थिक" । ए पोथी ये हूकव अडसठि ठा गजन प्रकाशित भेन अछि । ए संग्रह २००५ ये आएन अछि जकव आरुथ श्री अजीत आजाद जी निखन छथि । ए पोथी केँ आदि सँ अन्त धरि पठरौक रौद हमर येह अतिमात अछि जे गजनक रानाकषाक दृष्टिसँ ए संग्रह ये अलालो कमी अछि, जाहि सँ रैठन जा सकैत छन ।

पृष्ठा संख्या १३, ७१ आ १० पवहक गजन ये छारिये ठा मेव छै, जखन की कोला गजन ये कम सँ कम पाँच ठा मेव हेरौक छाली । संग्रहक कोला गजन रैहव ये ले अछि । हमर ए स्पष्ट मसतरे अछि जे गजनकाव केँ प्रत्येक गजन ये रैहवक उल्लख कवरौक छाली आ जै आजाद गजन कहन छथि तै ओहो स्पष्ट कषे निखरौक छाली ।



এ শোখী যে কাহিন্যাক গনতী ভবনাব অছি। কতৌ কতৌ তঁ গ্ৰ বুম্ভা জাগ ত্বে জে গজবকাব
 ঝিগা কাহিন্যা আ বদীফক মতনর বুম্ভা গজব কহরৌ তেন রৈস গেন ডুখি। একব উদাহবণ
 পুথ ১৩ পবহক গজব পঠরৌ পব ভেঁঠে জাগ ত্বে। গ্ৰ তঁ হয় একটা উদাহবণ কহি বহন ভী।
 আরো গজব এ দোখ মঁ প্রভারিত ত্বে, জতয় কাহিন্যাক নিয়মক ধক্কী উডা দেন গেন অছি।
 জেগা পুথ ১৫, ১৬, ২০, ২১, ২৭, ২৯, ৩১, ৩৪, ৩৬, ৩৯, ৪০, ৪১, ৪২, ৪৪,
 ৪৬, ৪৭, ৪৮, ৪৯, ৫০, ৫১, ৫২, ৫৩, ৫৪, ৫৫, ৫৬, ৫৭, ৫৮, ৫৯, ৬০, ৬১, ৬২, ৬৩, ৬৪, ৬৫, ৬৬, ৬৭, ৬৮, ৬৯, ৭০, ৭১, ৭২, ৭৩, ৭৪, ৭৫, ৭৬, ৭৭, ৭৮, ৭৯, ৮০, ৮১, ৮২, ৮৩, ৮৪, ৮৫, ৮৬, ৮৭, ৮৮, ৮৯, ৯০, ৯১, ৯২, ৯৩, ৯৪, ৯৫, ৯৬, ৯৭, ৯৮, ৯৯, ১০০, ১০১, ১০২, ১০৩, ১০৪, ১০৫, ১০৬, ১০৭, ১০৮, ১০৯, ১১০, ১১১, ১১২, ১১৩, ১১৪, ১১৫, ১১৬, ১১৭, ১১৮, ১১৯, ১২০, ১২১, ১২২, ১২৩, ১২৪, ১২৫, ১২৬, ১২৭, ১২৮, ১২৯, ১৩০, ১৩১, ১৩২, ১৩৩, ১৩৪, ১৩৫, ১৩৬, ১৩৭, ১৩৮, ১৩৯, ১৪০, ১৪১, ১৪২, ১৪৩, ১৪৪, ১৪৫, ১৪৬, ১৪৭, ১৪৮, ১৪৯, ১৫০, ১৫১, ১৫২, ১৫৩, ১৫৪, ১৫৫, ১৫৬, ১৫৭, ১৫৮, ১৫৯, ১৬০, ১৬১, ১৬২, ১৬৩, ১৬৪, ১৬৫, ১৬৬, ১৬৭, ১৬৮, ১৬৯, ১৭০, ১৭১, ১৭২, ১৭৩, ১৭৪, ১৭৫, ১৭৬, ১৭৭, ১৭৮, ১৭৯, ১৮০, ১৮১, ১৮২, ১৮৩, ১৮৪, ১৮৫, ১৮৬, ১৮৭, ১৮৮, ১৮৯, ১৯০, ১৯১, ১৯২, ১৯৩, ১৯৪, ১৯৫, ১৯৬, ১৯৭, ১৯৮, ১৯৯, ২০০, ২০১, ২০২, ২০৩, ২০৪, ২০৫, ২০৬, ২০৭, ২০৮, ২০৯, ২১০, ২১১, ২১২, ২১৩, ২১৪, ২১৫, ২১৬, ২১৭, ২১৮, ২১৯, ২২০, ২২১, ২২২, ২২৩, ২২৪, ২২৫, ২২৬, ২২৭, ২২৮, ২২৯, ২৩০, ২৩১, ২৩২, ২৩৩, ২৩৪, ২৩৫, ২৩৬, ২৩৭, ২৩৮, ২৩৯, ২৪০, ২৪১, ২৪২, ২৪৩, ২৪৪, ২৪৫, ২৪৬, ২৪৭, ২৪৮, ২৪৯, ২৫০, ২৫১, ২৫২, ২৫৩, ২৫৪, ২৫৫, ২৫৬, ২৫৭, ২৫৮, ২৫৯, ২৬০, ২৬১, ২৬২, ২৬৩, ২৬৪, ২৬৫, ২৬৬, ২৬৭, ২৬৮, ২৬৯, ২৭০, ২৭১, ২৭২, ২৭৩, ২৭৪, ২৭৫, ২৭৬, ২৭৭, ২৭৮, ২৭৯, ২৮০, ২৮১, ২৮২, ২৮৩, ২৮৪, ২৮৫, ২৮৬, ২৮৭, ২৮৮, ২৮৯, ২৯০, ২৯১, ২৯২, ২৯৩, ২৯৪, ২৯৫, ২৯৬, ২৯৭, ২৯৮, ২৯৯, ৩০০, ৩০১, ৩০২, ৩০৩, ৩০৪, ৩০৫, ৩০৬, ৩০৭, ৩০৮, ৩০৯, ৩১০, ৩১১, ৩১২, ৩১৩, ৩১৪, ৩১৫, ৩১৬, ৩১৭, ৩১৮, ৩১৯, ৩২০, ৩২১, ৩২২, ৩২৩, ৩২৪, ৩২৫, ৩২৬, ৩২৭, ৩২৮, ৩২৯, ৩৩০, ৩৩১, ৩৩২, ৩৩৩, ৩৩৪, ৩৩৫, ৩৩৬, ৩৩৭, ৩৩৮, ৩৩৯, ৩৪০, ৩৪১, ৩৪২, ৩৪৩, ৩৪৪, ৩৪৫, ৩৪৬, ৩৪৭, ৩৪৮, ৩৪৯, ৩৫০, ৩৫১, ৩৫২, ৩৫৩, ৩৫৪, ৩৫৫, ৩৫৬, ৩৫৭, ৩৫৮, ৩৫৯, ৩৬০, ৩৬১, ৩৬২, ৩৬৩, ৩৬৪, ৩৬৫, ৩৬৬, ৩৬৭, ৩৬৮, ৩৬৯, ৩৭০, ৩৭১, ৩৭২, ৩৭৩, ৩৭৪, ৩৭৫, ৩৭৬, ৩৭৭, ৩৭৮, ৩৭৯, ৩৮০, ৩৮১, ৩৮২, ৩৮৩, ৩৮৪, ৩৮৫, ৩৮৬, ৩৮৭, ৩৮৮, ৩৮৯, ৩৯০, ৩৯১, ৩৯২, ৩৯৩, ৩৯৪, ৩৯৫, ৩৯৬, ৩৯৭, ৩৯৮, ৩৯৯, ৪০০, ৪০১, ৪০২, ৪০৩, ৪০৪, ৪০৫, ৪০৬, ৪০৭, ৪০৮, ৪০৯, ৪১০, ৪১১, ৪১২, ৪১৩, ৪১৪, ৪১৫, ৪১৬, ৪১৭, ৪১৮, ৪১৯, ৪২০, ৪২১, ৪২২, ৪২৩, ৪২৪, ৪২৫, ৪২৬, ৪২৭, ৪২৮, ৪২৯, ৪৩০, ৪৩১, ৪৩২, ৪৩৩, ৪৩৪, ৪৩৫, ৪৩৬, ৪৩৭, ৪৩৮, ৪৩৯, ৪৪০, ৪৪১, ৪৪২, ৪৪৩, ৪৪৪, ৪৪৫, ৪৪৬, ৪৪৭, ৪৪৮, ৪৪৯, ৪৫০, ৪৫১, ৪৫২, ৪৫৩, ৪৫৪, ৪৫৫, ৪৫৬, ৪৫৭, ৪৫৮, ৪৫৯, ৪৬০, ৪৬১, ৪৬২, ৪৬৩, ৪৬৪, ৪৬৫, ৪৬৬, ৪৬৭, ৪৬৮, ৪৬৯, ৪৭০, ৪৭১, ৪৭২, ৪৭৩, ৪৭৪, ৪৭৫, ৪৭৬, ৪৭৭, ৪৭৮, ৪৭৯, ৪৮০, ৪৮১, ৪৮২, ৪৮৩, ৪৮৪, ৪৮৫, ৪৮৬, ৪৮৭, ৪৮৮, ৪৮৯, ৪৯০, ৪৯১, ৪৯২, ৪৯৩, ৪৯৪, ৪৯৫, ৪৯৬, ৪৯৭, ৪৯৮, ৪৯৯, ৫০০, ৫০১, ৫০২, ৫০৩, ৫০৪, ৫০৫, ৫০৬, ৫০৭, ৫০৮, ৫০৯, ৫১০, ৫১১, ৫১২, ৫১৩, ৫১৪, ৫১৫, ৫১৬, ৫১৭, ৫১৮, ৫১৯, ৫২০, ৫২১, ৫২২, ৫২৩, ৫২৪, ৫২৫, ৫২৬, ৫২৭, ৫২৮, ৫২৯, ৫৩০, ৫৩১,

সঁৱেদনাক তুব পৰ কিছ বচনা নীক ঞ্ছি আ ঙ্গৈ গজ্ঞকাক গজ্ঞক ৰাকৰণ পৰ ধৈঞ্ণ
দেলে বহতখিহ, তঁ নীক গজ্ঞ নিখি সঁকৈত ড়নাহ। গজ্ঞকাকক ঙ্গ পহিৰুক যৈখিণী গজ্ঞ
সঁগ্ৰহ ৰঁহুত ঞ্গাম তঁ লৈ জগৰৈত ঞ্ছি, হুদা হুগকব সঁৱেদনামেক থতিভা দেখৈত
হম ঙ্গ ঞ্গাম জকব কৰৈ ড়ী জে ও গজ্ঞক ৰাকৰণক পানৰ কৰৈত ঞ্গাণু নীক গজ্ঞ কহতাহ ঞ্গা
“গজ্ঞ হমৰ হখিযাব থিক কঁৈ চৰিতাৰ্থ কবতাহ। গজ্ঞ তঁ হখিযাব হোঙতে ঞ্ছি, হুদা
ৰিণ কাকিয়া, বদীফ ঞ্গ ৰঁহবক নিযাক পানৰ কেল বচনা গজ্ঞ লৈ হোঙত ঞ্ছি ঞ্গা ভোথ
হখিযাব ভ২ জাঙত ঞ্ছি। পদ্যক হখিযাব পৰ কাকিয়া ঞ্গ ৰঁহবক সাৰ চঠন হুগকব ৰৰ
গজ্ঞ-হখিযাবক থ্ৰীক্ষা বহত।

5

গজেনক জেন

শ্রী বিজয় নাথ সামাজিক গীত-গজল সংগ্রহক পৌখিক নাম 'ঐচ্ছিক' 'অসীক' 'জেন' । এ পৌখিকে গীত আ গজলক ফবাক-ফবাক দৃষ্টা প্রভাগ ছে । হম এ পৌখিক গজল প্রভাগক সংবধমে এঠা কিছু চর্চা কবং চাহব । এ পৌখিকে গজলকাব শ্রী বিজয় নাথ সামাজিক অঠহতক্টি গজল প্রকাশিত ভেন 'ঐচ্ছিক' । পৌখিক গজল গঠনান গা গতা চলেত 'ঐচ্ছিক' জে কিছু গজল কে ডোডিকং রেমী ঠা কাহিয়া আ বদীফক নিখ্যমক পানল কএন গেন 'ঐচ্ছিক' । গঠ



সংখ্যা ৪৭, ৩০, ৩৪, ৩৩, ৩৬, ৩৭, ৭১, ৭৪, ৭৩, +২, ৯৪, ১০১, ১১০, ১১৪ গণ
ভূগণ গজ্জনমে কাৰ্মিয়া গডৰঁডাএন ঞ্চি। এঠাঁ ঙা থেঞাশমে বাথরীক ঢালী জে বিনা
দুকন্তু কাৰ্মিয়াক বঢ়া গজ্জন লৈ ভ২ সলৈএ। তখলা ঞ্চিকশি গজ্জনক কাৰ্মিয়া দুকন্তু
ঞি, জে গজ্জনক বিকাশ যাত্ৰাক হিমারোঁ একটা নীক নক্ষণ ঞ্চি। কাৰ্মিয়া, বদৌফ ঞ্চা
গজ্জনক ব্রাকবণীক শিঞয় পাশ কবরীক হিমারোঁ গজ্জনকাব ওহি গজ্জনকাব সতম হাবাক
ঞেশীমে ডুধি জে গজ্জনক ব্রাকবাৰোঁ লৈ মাশরীক সম্পত খএল ডুধি।

এ গজেন সঁগ্ৰহক গজেন সৰৈ কোণে বঁহবমে লীখন গোন অছি, এ গব গজেনকাব যৌন ভুথি। গজেনক
নীচামে বঁহবক নাম জকব লীখন জুএৱাঁক চানী। বঁহবক ত্ৰাণ নৰৈ পীত্ৰীক গজেনকাব সন্তমে
বঁহেবামে গ্ৰ মহল্লপুৰী ডেগ হএত। ওলা ত গজেনকাব কোলা গজেনক নীচামে বঁহবক নাম
লী লীখন ভুথি, হুদা গজেন সন্তকে পঠামস গ্ৰ পতা চলেত ঠৈ জে এ সঁগ্ৰহক ঠেবী
গজেন এহন অছি জাহিমে অবৰী বঁহবক নিখমক পানন কবৰাঁক লীক থ্ৰাম কএন গোন অছি।
গ্ৰ স্বাগত যোগ্য গপ অছি। এমস গহো পতা চলেত অছি জে গজেনকাব অবৰী বঁহবস লীক
জকা পৰিচিত ভুথি আ জঁ গ্ৰ ৰাত অছি ত হুকা বঁহবক নাম গজেনক নীচামে হবিভাকৈ
লীখৰাঁক চানী। এ সঁদৰ্তমে হম পৌখীক সৰস পহিবুক গজেনক)পুথি সখা ৪৩.)

যতদূর উন্নত কবর চাই ডী-

হমৰ পূজা, হমৰ পৰিচয়, হমৰ শৃংগাৰ ডী অংগল

সকল সৌভাগ্য, ঘন, কায়া, বহিৰ-সঁচাব ভী অগ্নি

আৰু একব মাত্ৰা সংৰচনা পৰ ধেমালি দিও, ত পতা চলে ঠে জে এমে মুন ধ্বনি

মহাপ্রবল মাল "দ্রুত-দীর্ঘ-দীর্ঘ-দীর্ঘ" সরে পাঁতিমে চাষি রৌব প্রয়োগ কখন

গোন ঐচ্ছিক । মাল গ শিব রইলে-হজ্জমে কহন গোন ঠে । এ গজ্জনক আলা শিবমে মোঠামোঠী

କିନ୍ତୁ ଗମତୀକୈ ଛୋଡି ରହିବେ-ହଜୁରକ ପ୍ରାୟୋଗ ଅଛି ଆ କିନ୍ତୁଟାଁ ବର୍ମ ଦକ୍ଷ କର ଦେବା

পব গ্ৰ গজেন অবরী রৈব রৈব-হজ্জমে অন্ডি । গ্ৰ একটা উদাহরণ অন্ডি, এহন আরো গজেন এ

সংগ্রহে ঠে জে র্পী আ মত্ৰামে কিছু পরিবর্তন ভেগা পব অপরী রঁহবমে কহন

মানন জ্ঞাত । হমৰা গ্ৰীষ্ম ঋতি জে গজেনকাৰ অগ্নি ঋতিগা গজেন সংগ্ৰহমে এঁ রীতক দেখান

ବାଧତାହ ଆ ଏବଂ ରୂପ ହାତ୍ତ ଗଜନ କହିକଂ ମୈଥିନୀ ଗଜନକେ ସମ୍ବନ୍ଧ କବତାହ । ଶୈବକ

পাতিক অতমে পূর্ণ বিবাম বা কোলো বিবাম চিহ্ন লে মগেরাক শিখ্য অঙ্কি, দ্বাদা

পৌখিক গজদক শৈব সভক পাতিক ঐতমে পূর্ণি বিবাম নগাওন গোন ঐন্দি, জে

ମିଶ୍ରମାନ୍ବକନ ଲେ ଅଢ଼ି ଆ ଏକବ ଦେଖାନ ବାଧନ ଜଏରୌକ ଚାଲି ଢନ ।

ସମ୍ବେଦନାକ ସ୍ତବ୍ଧ ଓ ଗଜନ ସଂଗ୍ରହ ରଞ୍ଜିତ ଶ୍ରଦ୍ଧି ଆ ଗଜନକାବକ ରିଦ୍ଧିତାକେ ପ୍ରକଟ

କବିତ ଶ୍ରଦ୍ଧି । ଛନ୍ଦା କଏକଟାଁ ଭାବୀ ଭବକା ତସେମ୍ ଆ ସଂସ୍କୃତକ ଶିକ୍ଷକ ପ୍ରୟୋଗ ଗଜଗର୍ଭେ

ରସରାସେ ଭାବୀ ରସରେତ ଡେ, ଜାହିର୍ ରଚନ ଜା ମକ୍ତେତ ଡନ । ଗଜନସେ ନ୍ୟାସିକନ ଭାସାକ

প্রয়োগ বলিএ হেরৌক চারী, অগ্নিত্ত আম প্রয়োগক ভাষাক প্রয়োগ গজ্ঞনক তেজ রৌশী

নীক হোগত ঠে । শেষে এহন শিষ্টক প্রয়োগ জে খাম রেরঁনাবমে লৈ ঠে, গজুনকাবক শিষ্ট,

সামর্থ্যকে তঁ জবাব দেখাওঁত ছে, হুদা শেবকে আঁম জগন্ম দব মেহো কৰেত ছে ।

তৈ শেব কহরোক কান হমরা হিমারে রোমী নিম্ন ভাষাক প্রয়োগম রচরাক চালী ।

ଅତସେ ଶ୍ରୀ କହନ ଜ୍ଞା ମକ୍ତେଽ ଜେ "ଅଣିକ ଜେନ "ପୋଖିକ ଗଞ୍ଜନ ଥାବାଗ ସୈଥିନୀ ଗଞ୍ଜନକ ରିକମିତ

হোণত কপকে অস্পষ্ট কপো, ক্ষুদা দেখেইত জকব ঐতি । গা পোখী গজমক বাকবাক

হিসারোঁ কিছু গনতীকেঁ ছোডিকং বীক থ্যাম অছি । ঐ সংহক কএকটা শেবমে অবরী

ରୂପକ ମାଲକ ପ୍ରାୟମ ମହତ୍ତ୍ୱର୍ଥୀ ଆ ଲୋଫିମ କବରୀକ ଜୋଗ ଅଛି । କଏକଟା କିନ୍ତୁ ଆ

ମନ୍ତବ୍ୟ ଶେଷ ଥିବାରୁ ଉକ୍ତ କାଳ କଣ କଣ ଦେଖିବା ଲାଗି ତ ମନେପଡ଼ାଯାଏକ

সুবর্ণব সেনো গ্ৰা সংগ্ৰহ নীক ঞ্চি । মেথিলী গজ্জনক বিকাশ যাত্ৰাসে গ্ৰা পৌখী গজ্জনক

ভরিয়াক জেগ নীক ডেগ অর্দ্ধি ।

এ বচোপব ঞ্গল য়তৰ qqaj endr a@vi deha.com পব পঠাও ।



१. अमित मिश्र- गजल संगीता (स्पेष्टाकसँ) २. टनल कमाव सा- बैरुत किछ
बैरुत : किये बैरुत नहि सकल हमरा

१



अमित मिश्र
गजल संगीता (स्पेष्टाकसँ)

१

कतिआएन आखब

रात चाँद रैर्य पहिलक अछि हमरा संगे एकठा संगी हमले कम ये बहेत छन ।
पढ़ाये कल कमजोर छले दूदा कपटीसमये हमरासँ २-३ घंटा रैसी वाति कइ जाछी
छन आ एकव हलसक १० ठी ये ४ ठी सरीन जकब हल कइ ले छले । उना तइ हमरासँ
रैसी रात ले कलेत छन दूदा भोव होएते राँकी रैछन सरीनक लेन हमरा नइग जकब
आरि जागत छन आ एखन ओ मित्र री . ठेक कइ बहन अछि । ग घंटा चाँद मानक राँद मोष
पढ़न दूदा जिक एकठा शैव पढ़ा कइ

डाहसँ पहुँचै कोस-दु कोस
आगु रैछरी लेन तँ प्रेम चली

शिखरा डेढ़ महिनासँ दूदाजीक गजल संग्रह माँस आँगनमे कतिआएन डी
खोड़-खोड़ पढ़ा छलौह दूदा काहि भवि वाति एकव गहन अधास लेलौ । कम
५० ठी गजल आ १० ठी करीग के संग्रह अछि माँस आँगन ये कतिआएन डी । पोथीक
नाम पढ़ा मोषमे किदल-कहाँदल राँत सर उठै नागन । कतिआएन उलो माँस आँगनमे
रिचि सल नागन दूदा पढ़नाक राँद हमरा नाछीत अछि जे मोष एहि समाजके आँगन
आ एहि समाज कपि आँगनक माँस ये अगल रैसाव रैलल छथि । ग तइ सकैए जे समाजक
किछ भागसँ ग कतिआएन हेताह दूदा पूवा समाजसँ किछौ कतिआएन ले नाछी छथि
। हमर ग कथनक सलता एहि संग्रह के पढ़नाक राँद बुना जाएत । ग तइ प्रेमो
लेननि तइ समाजके धाँस ये बकि तैए तँ कह छथि

सर उमरि रज्ज के प्रेम चली
मरितो दया धरि फुलन छेय चली
आगि आ निवागि के फुलछाँद कहनि

निवागि संग आगिगर छेकन छै दुनियाँ
जँ देखनहुँ भगजोगनी तँ दिवाली बुनू

रिहावक ताकत आ कमजोरी के समष्टि ग शैव



रिहावक सिवथारी रैदलि गेन मण नलेथ औरै
त्रैमिक घष्टनामँ कपनी मालिक नलेथ रिहावी जकाँ
एहण-एहण कतेको दमदाव मेव सरसँ मज्जन ग गज्जन मंग्रह अणषा-आप मे अणग गहटाण रैणरैत अछि ।

गहिले गज्जन के देखनागव एकठा रौत हमरा अछकन जे डुन मात्र चारि ठी मेव ।
गज्जनमे कर्म-कम पाँट ठी मेव बहराक चाली दूदा एहि मंग्रहक गज्जन मथाँ
1,2,7,10,11,19,22,23,24,25,27,28,32,34,35,37,39,42,43,44,47,48 मे
मात्र चारि ठी मेव अछि जे की गनत अछि । उना मोगव आदुखक अतीममे ग गनती
स्त्रीकाव करै डुथि आ एकव जिन्दादाव अणषा के मालेत भरियामे एकव सुधावक रादा
करैत डुथि दूदा हूक शैदक पकड़ आ भारक अथायण केना के रौद हमरा नालेत अछि
जे मोगवक लेन उंगरोड गज्जनमे एक-एक ठी मेव रैदनाग कोला भारी रौत ले डुले
तैए हम एकवा आनस मले डी ।

औरै चरु काहियागव । एहि मंग्रहक किड गज्जनमे एके काहियाक प्रयोग भेल अछि
जेना 26म गज्जन मे तीस ठाम काहिया "चहिए" अछि । 29मे पाँट ठाम "अथला" 31मे
पाँट ठाम "उयाक" 46म मे पाँट ठाम "केकरो-केकरो" अछि । किड उव गज्जनमे ग रौत
अछि । उना काहियाक दोहरनामँ गज्जन गनत ले होग डै ।
तेसर गज्जनमे मतना ले अछि किएक तँ ग गज्जनक गहिल मेव अछि
हाँठेत डुन जतए मेघ आ जमीन
गहँउन गहिल उतहि अभागन

रैदन चारि ठी मेवमे "अभागन" के काहिया मालि फमि" :बाँगन ,भाँजन , माँजन आ
साधन निखन अछि । 4म गज्जनक मतनामे "करैए" आ "बाथे" "एँ" "तुकाबु" मंग अछि
दूदा पाँटमे मेव मे काहिया "होग" अछि । डठम गज्जनक अतीम मेवमे "कहाग" के
रैदना गनत काहिया "कहागत" निथा गेल । 32म गज्जनक मतना अछि
हमरा तँ सुख भेठैए गज्जनक गाँतीमे
उहिना जेना जाड मे गर्मी भेठैए गाँतीमे

एहिठाम "गाँतीमे" बदीह भेल आ काहियाक अता-गता -ले अछि । उना आष मेवमे
काहिया "आतीमे" "तुकाबु" मंग अछि ।

41म गज्जनक मतनामे काहिया "समका आ चमका " "तुकाबु" मका "मंग अछि दूदा दोसर
मेवमे काहिया "उठा" अछि ।
44म गज्जन मे काहियाक तुकाबु "एन" अछि दूदा दोसर मेवमे काहिया "बथेन" "एँ"
तुकाबु अछि ।
17म गज्जनमे अंग्रेजी शैदक काहिया "गेम" आ "रैनेम" निखन अछि ।

एहि मंग्रहक सरैठा गज्जन सबन राप्तिक रैहवमे अछि । उना तँ ग रैहव गज्जनक सरसँ
हणूक रैहव अछि दूदा मोगव गहो रैहवमे रैहूते रैव दोथा थागत डुथि । हमरा
जालेत 26ठा गज्जन गज्जनक कोला मेवमे एक-दू ठी रर्ष रैठ । देननि तँ कोला मे घटा
देननि । जेना
दोसर गज्जनक अतीम मेवमे 15 के रैदले 16 रर्ष अछि । 7म गज्जनक तेसर मेवमे 18 के
रैदले 19 रर्ष अछि । 9म मे दोसर मेवमे 11 के रैदले 10 रर्ष अछि । 11म गज्जनक
अतीम मेवक अतीम पाँतिमे 18 के रैदले 17 रर्ष अछि । एहण गज्जती गज्जन मथाँ



12,14,15,18,19,20,22,24,26,28,29,30,31,32,34,35,38,42,43,46,47 आ 48 मे मोहो भेल अछि ।

उना जँ भारक रात कवी तँ एहि गजन संग्रहकेँ छुटाग पब गहुँटा देल अछि एकव भार । सँष्टा गजन छदय केँ छु लेत अछि आ मोटरक लेन मजबूर करैत अछि तँ ग आन संग्रह सँ रिकून अलग अछि आ एकव आखब आन संग्रहक आखबसँ कतिआन अछि । भारक कावशे ग संग्रहक "कतिआन आखब" गटरक योग्य अछि । हमब सनाह अछि जे एकरेव एकवा अजमा कऽ जकब देखु ।

रोस तँ अछि सँ गटू आ हम जाग छी दोसर गजनक खोजमे . . .

2

गजन आ गीत मे अतब की छै ?

गजन आ गीत मे अतब की छै ? मात्र एक अकब के । गीत आ गजन दुनु गाउन जाग छै । जँ धनीक तुक {वाग्स} सभ पाँति मे मिलैत बहत त गीत रा गजन दुनु खुले सँ रेशी नीक लागै छै । दूदा गीत मे वाग्स नहियो लेते त चनेते दूदा गजन सँ प्रायः पाँति सँ 1, 2, आ तकरा बाद 4, 6, 8, 10 . . . मे हेराक चाली । गीत मे कतेको पाँति केँ बाद हेब सँ दूखवा दोहवाउन जाग छै दूदा गजन मे प्रायः तुकान्त रागा पाँति बाद कहन जाग छै । गजन कम सँ कम 10 ठाँ पाँतिक होग छै जकरा 2-2 पाँति केँ कप मे राँष्टि क शैव कहन जाग छै । जहिना गीतक शान्ति राकबा होग छै (सा ले ग . . .) तहिना गजनक राकबा होग छै । जहिना शान्ति गायन मे वाग होग छै तहिना गजन मे रँहव होग छै । जहिना गीत कोना ल कोना तान वाग मे होग छै तहिना गजन कोना ल कोना रँहव मे होग छै । । आरँ कछ गीत आ गजन मे अतब की ?

बरका गायक त गीतक ठाँग - हाथ तोड़ि क गारै छथि । दु तीन ठाँ शिष्ट केँ एके साथ जोड़ि क गारैत छथि बुझ जे हेरिकाँ सँ साँष्टि देल होग । जहिना गीत मे कोना तबहक छिहक {कोमा, हुन सृष्टि, आदि} केँ योजल ले दै छथि ।

उहिना

गजन मे कोना पाँति मे कोना छिहक { . , ? आदि } ले देन जाग छै । मात्र अगल नामक आगु पिछु { " " } छिहक नगा सकै छी ।

आरँ एना कि ए केँ जाग छै से ले पुछ ? अगल मोटू ल गीते जकाँ गजनो केँ त गाउन जाग छै ।

आ आरँ कछ गीत आ गजन मे अतब की ?

हमब एकठाँ मिल गजनक रातेमे पुछनि तँ कहनिअहि----

गजनक मे आरँ रना किछ शिष्ट केँ देखु ।

1} शैव - शैव दु पाँतिक होगत अछि आ अगला आग मे सदिखन पूर्ण भार दै अछि आ आन पाँति सँ स्रवत बहत अछि ।



2} गज्जन - कम सँ कम पाँट ठी शैबले जँ किछु तुकासुत सँग एक ठाम बाखन जाए त
उ गज्जन रैले छै । एकठा गज्जन मे एके वंग तुकासुत हेराक चाली ।

3} वदीह - गज्जन पहिन शैब के अतीम सँ देखु जँ कोला एहन शिष्ट, जे शैबक दुस्र
पाँति मे काँस होग त उकरा गज्जनक वदीह कहलै ।

आग चनु सँग प्रेम गीत जौलै प्रिय
एकठा प्रेमक महन रैललै प्रिय

एहि शैब मे "प्रिय" दुस्र पाँति मे अछि तँए एकव वदीह भेल "प्रिय" ।
आरँ गज्जनक सँ शैबक दोसव पाँति मे ग वदीह बहराक चाली ग अनिराग अछि ।

4} काहिया - काहिया मल मोठी मोठी तुकासुत (वाग्स) बुझु । जँ रौजे मे एके
वंग धुनी बुझा जाग ये त उ भेल काहिया । काहियाक तुक छि शिष्टक अतीम
सँ गता गाली छै । जे तुकासुत गज्जनक पहिन पाँति मे अछि सेह आग सँ पाँति मे
हेराक चाली । मतनरँ जे गज्जनक पहिन शैबक दुस्र पाँति मे आ आग शैबक दोसव पाँति
मे ।

काहिया - जेना - जेले , थेलै , नहेले { ए मे "एले" तुकासुत भेल
गमना , वधा , चेवा , केवा { एहि मे तुकासुत "आ" भेल }

हेते , थेलै , मेलै { ए मे तुकासुत "ए" भेल }

गोठी , हाथी , लेती { ए मे "ग" भेल }

मोवी , रौवी { ए मे "उ" भेल }
एनाहिले उव सँ मे काहिया { तुकासुत } रँगत ।

गज्जन पहिन शैब मे वदीह आ काहिया फमि : पाँतिक अतीम सँ अनिराग कग सँ
हेराक चाली । आ आग शैबक दोस पाँति मे सेहो वदीह आ काहिया फमि : अतीम सँ
हेत ।

5} मतना - गज्जन पहिन शैब जेकव दुस्र पाँति मे वदीह आ काहिया फमि : अतीम सँ
होग एकवा मतना कहन जेतै ।

टाँद देखलौ त सितावा की देखरँ
अहाबक कग दोरावा की देखरँ

प्रेमक मागव मे रँड नीक गाली
डूर छि छी त किनावा की देखरँ

एहि मे पहिन शैबक दुस्र पाँति मे काँस "की देखरँ" अछि तँए ग एहि गज्जनक
वदीह भेल आ वदीहक पहिले देखु , दुस्र पाँति मे "सितावा" आ "दोरावा" छै
एकव तुकासुत भेल "आवा" तँए ग भेल काहिया । आरँ दोसव शैबक दोसव पाँति मे
देखु । वदीह "की देखरँ" आ तुकासुत "आवा" के सँग शिष्ट, किनावा " अछि । ।
आरँ एहि गज्जनक सँ शैबक दोसव पाँति मे अत सँ वदीह "की देखरँ"



श्री काफिया "श्रीवा"
तुकांतुक मंग हेरौक चाली ।

तुकांतुक पाता शिष्टक अत मँ चले छै ।

6} मकता --गजन अतीम शैव जे मे मोगर अपन नामक प्रयोग करे छथि ओहि गजनक
मकता कहल जाग छै ।

मेघक डले चान ले रँहबासन
ले ओता "अमित" नजारा की देखै

ग भेन मकता ।
मोगर अपन मरँ शैव मे अपन एके ठी नामक प्रयोग करैथ । जेना हम पहिन गजन
मँअमित "निथे छी त आरँ कते "मिथे " ले निथ सकै छी ।

लेमे त एते देखु आ निथु । ओव कलछा रौत छुटन अछि जे अहाँ मरँ जालेत छी ।
रँप रना रौत । त आरँ निथु किछु नीक गजन

किछु दिन पुरँ हमने मग एकछा रँग पठन निथन गीतकाव मँ भेटे भेन । हमने जकाँ
हूणको बचना लोकक माथ पव द निकैज जाग छले । थैव ओ हमरा रँतेनमि जे गीत
निथेत रँव जँ रँप गानि क निथरँ त गारँ मे सुनिधा तेते । आ ओ रँप गानरँ
निथेनमि । ते पव हम कहनमि जे एना रँप गानि क हम मरँ "गजन" निथे छी
आ तेकव नाम दै छी
"सबन रारिँक रँहव"

आ एकव रँप एना गानन जागत अछि ।
हिन्दी रँपमाना के जतेक रँप अछि(आ मँ न क य , व . . . धरि) के
एकछा रँप माले छी ।
जतेक हननु बँह अछि तकरा मोजव ले दै छी अर्थात शून्य{0} माले छी ।
मशगुलबमे मशगुल अक्षर के एक {1} माले छी ।
जेना की "तुअ एहि मे 2 ठी रँप भेन । एकछा "त"आ एकछा "अ " ।

एकव रौद एकछा शैव कहलौ ।

भाग्य मे जे निथन अछि तेँ निवह मे माले छी
आनी केले छी कहियो त माग लावक धरौ

एहि शैवक दुनु पाँति मे 17 रँप अछि । एहि रँहव मे जँ गजन निथरँ त मरँ
पाँति मे पहिन पाँति एते रँप हेरौक चाली ।

ओ गीतकाव कहनमि जे अहाँके रँप गान आरँ ये तेँए अहाँ नीक गीतकाव रँगरँ आ
हमजँ आरँ गजन निथरँ । । गीत आ गजन मे एते समानता अछि त आरँ कछु गीत आ गजन
मे अँतव की ?

२



टदन क्माव मा

बहुत किछ बुझलैः कियो बुझि नहि सकल हमरा

एकेसय शताब्दीक पहिल दशकके, मैथिली गजलक इतिहासमे, जे नरजागवा काल कहल जाय तऽ कोना अतिशयोक्ति नहि होयत । एहि दशकमे मैथिली गजल अपन नरस्यकप ओ नरीन छुटोक संग साहित्य-धेनी लोकनिक सोसाँ उपस्थित भेल अछि । एहि समयारमिमे मैथिली गजलकेँ अपन हवाक गजलशोम्न भेलैक जे खाली गजल नहि अपितु करीग, कता, नात आदिक बचना हेतु सेहो राकबनिक पृथुभुमि तैयार केनक । ए गजलशोम्न मैथिली गजलकेँ अवर्री, हलवसी ओ उर्दू गजलक समकक्ष पहुँचेरामे सहायक सिद्ध भऽ बहल अछि । मैथिली गजल-लोकक परिवर्तित रितुत ओ सुदृढ रंग बहल अछि । एहिमेँ गजल कहरीक (निखरीक) राकबन सनात मानक तैयार भेल अछि जहिमेँ सचेष्ट लोक, गजल कहरीक शैली ओ शिपक त्राण सहजतापूर्वक अर्जित कऽ सकैत छथि ।

एहि सुचनाकांतिक युगमे “उष्टिबल्ल” मैथिली गजल ओ गजलशोम्नकेँ मैथिली-साहित्यधेनी धरि पहुँचेरामे महत्त्वपूर्ण माध्यम सारित भऽ बहल अछि । संगहि एकव रिभिन्न पक्षगव चर्चा-परिचर्चाक अंत सुभितगव मट उगमट्ट कवा बहल अछि । “अनट्टिहव आखव” नाम्ना रंगग मैथिली गजलक विकास ओ रितुावक हेतु पूर्णतः समर्पित अछि । लगानमे सेहो मैथिली गजलक एहि नरस्यकप केव विकासक हेतु किछ एहल सन प्रयास भऽ बहल अछि । कम गिनाकऽ कही जे पछिना दमेक रैवथमेँ किछ सजग नरतुरिया मैथिल साहित्यकाव लोकनि, गजल धेनी लोकनि, मैथिली गजलक भाषाणी ओ शिपगत विकासक मादें अतिशय चलाेल छथि । ए अतिशय एकठाँ इतिहासिक प्रयास थिक ।

वर्तमान समयमे मैथिलीक नरतुवक साहित्यकाव लोकनि मैथिली गजलक सर्गीण विकास हेतु प्रतिबद्ध छथि । एकदिन जतय ए सत नर-नर गजलकाव लोकनिकेँ प्रशिक्षित-प्रतिष्ठित कवरामे लागल भेलैत छथि ततहि दोसव दिस पूर्वरती गजलकाव सतक बचना समावक जेत-कोडक तकताल सेहो हिनका सतकेँ बहत छथि । पूर्क एहि बचना सतमेँ उपयोगी-अनुपयोगी तहकेँ रैवा बहल छथि । प्रतिफलस्यकप मैथिली गजलक रिभिन्न इतिहासिक पक्षमेँ मैथिली साहित्यधेनी लोकनि अरगत भऽ बहल छथि आ नरतुरिया साहित्यकाव रसकेँ एहिमेँ भरियाक दिशे-निर्देशे सेहो भेलैत जागत छथि । तखल एहि नरतुरिया अतिशय लोकनिकेँ अपन पूर्वरतीक प्रतिक (गजल / गजलसल किछ) समीक्षा कवैत काल एतरी अरुष्ट धाल बाथस पडतनि जे हलकव सतक राडिहक मादें कोना तवहक कठौव कि अगमालजनक शिष्टारनीक प्रयोगमेँ रौचथि । कोना तवहक पूर्वाग्रहमेँ रौचथि । संगहि हिनकव सतक बचनामे जे-जतरौ सकावामेक पक्ष अछि तकव रैसी चर्चा-परिचर्चा कवथि । एहिमेँ एकठाँ सकावामेक रातारवा रंगत । गजल आव लोकप्रिय होयत । गजलकाव आव रैसी समर्पित हेतल । गजलक पवपवा आव सुदृढ हेतैक । एतय एहि पूर्वरती साहित्यकाव रा एहि पिठनीक साहित्य धेनी लोकनिकेँ सेहो कलक उद्भवता देखरैय पडतनि । कदाचित जे कोना कट्टरचल ए नरतुव अपन पूर्वरतीक प्रतिबै कहैत अछि तऽ तकव पाडौ सेहो गजलक विकासक प्रति हिनकव सतक योगक मिश्रक प्ररगत बहत अछि । अतः सकावामेक रातारवाक निर्माण हेतु सत पक्षकेँ समर्पित हेरैय पडतनि । लस्य माधरै तखल सतर होयत ।



बीसम शताब्दीक आरंभमे पं.जीरण सा अणन “सुन्दर संयोग” (“बचन”मे डुगन डा. बागदेरसा क आलेख “मैथिलीमे गजनक अणुसाव १९०४ ई मे) नष्टकमे मैथिली गजनक गतिहासक शीर्षकमे कएल गेल । तदुपराव शीर्षक वसुंधरा दास, यदुनाथसा “यदुवर”, करिवर सीताबास सा, करिडुडासा “मधुप”, आदि एहि पर्वपराके आगाँ रैठौल गेल । एहि आरंभिक गजन सभमे जे सभसँ बिशिष्ट तत्व अछि से थिक जे प्रायः अधिकतर आरंभिक गजन रैहब, काहिया आ बदीह सँधी नियमक अणुगानमे अवरी रैहब (हुँद) –बिधानक अंत नगीट रूमना जागत अछि । आसक २ हिमकव सभक गजन केव एहके चबनमे (मेवमे) अणुप्रास-योजना (काहिया आ बदीह) केव बिनष्क प्रायोग भेटैत अछि । उदाहरणसक १९३२मे मैथिली साहित्य सभिति, द्वारा कशीसँ प्रकाशित “मैथिली-संदेह”मे मधुप जीक गजन देखन जा सकैए :-

मिथिलाक पुरी गौरव नहि धास ठी धरै छी

सुनि मैथिली सुभाया बिष आगिये जड् छी

सुगो जहक दर्शन-सुनरैत डन तही ठाँ

हा आग आग गो ठी गठ् छी उचता करै छी

हम कानिदास बिद्या-पति-नामडाडाँ झूहमे

बाँड् छी तीत पछ्छी सभ रैकिये धरै छी

भाया तथा बिभूया अछि ठीक अणुदेशी

देशीक गेल छैसी की पाँकमे पड् छी ?

ओ गव-तव देखु अछि पत्र सँकड् छी

अछि पत्र मैथिलीमे एको न ठेँ डरै छी

(2212-122-2212-122)

कहराक प्रायोगन नहि जे मैथिली गजन अणन रीन्याकानमे रैस सुनरैगव ओ आकर्यक डन । तकर एकठाँ गहो कावा भऽ सकैत अछि जे मैथिली गजनक जखन रीन्यारसु डलैक तखन मिथिलामे हावसी एकठाँ महपूर्ण ओ रोजगावगवक भाया डन आ सभरतः तकरे एतारसँ मैथिलीमे गजनक उपेति भेल । हावसी कचरवीक दस्तारैजक भाया, हिमरै-कितारैक भायाक कपमे प्रचलित डन । महाकरि नानदास आ उगनासकाव जीरड मिथि हावसीक शिक्षा ग्रहण कएल बहथि । एहिना मिथिलाक एकठाँ नमहव रक्षा हावसी पठ्-त-निथेत होयत तहिमे कोलो दु-मत नहि हेरौक छली । तखन पं. जीरण सा कि करिवर सीताबास सा रा मधुप जी आकि आन-आन बिद्वान लोकनि जे गजन निखरौक प्रायोग केवनि, हावसीसँ बिधिरत शिक्षित डनार रा नहि से नहि जानि झूद, जँ नहियो शिक्षित हेतार तैयो बिद्वानक रिट वहेत-वहेत एहि भायाक शिष्य ओ बिधानसँ पबितित भेल हेतार, तकर प्रायोग अणन-अणन गजनमे कएल हेतार, तकरा अणुभारिको नहि मानन जा सकैछ । एहि सँधीमे प्रायः जून् १९०४ ईमे “बचन”मे डुगन डा. बागदेरसा अणन आलेख “मैथिलीमे गजन”मे निथेत छथि-



- गज्जवक मारिकता ओ वयामेकता करि छन्दयकेँ सहजे आछुथ करैत अछि । मैथिलीमे करि लोकनि गज्जव दिने आछुथ भेलाह.....आँवलय ओ उल्लस्य शेताझीमे गज्जवक बच्चा ओ गानक केन्द्र वखन,बैलाक, गवालाबौद, दिखी, गवादि रैनि लाग छव । उल्लस्य शेताझीक उल्लस्य ओ रीस्य शेताझीक आँवलिङ्गक चलाये गानमे नियेठेवक जे श्रवण चव, ओरी संग गज्जव सेहो साँझ लोककेँ सुतिगोचर भेल । एहन मैथिली करि जे लोकक कण्ठमे फलसी उर्दुई संगुठ छलाह अथवा उर्दुईक परिगणित केन्द्रमे श्रवणमे करवाक अरुसव श्रुति एवनि, से सरे मैथिलीमे गज्जव-बच्चाक श्रवण कबराक छेती कयनि । -

किन्तु, मैथिली गज्जवक रीत्याकान केव शेट, शिंप ओ झुकणक मर्यादासँ रीहल सुनकारी सुतार एकव किमोबारसु आँरैत-आँरैत जेला अलङ्गणमे रैदनि गेल । जतय एकव भाषागी ओ रीकणक झुकणक निर्धारि हेराक चली छलैक ततय घोषित भेल जे मैथिलीमे गज्जव कहरे (निथरे) सँभरे नहि । रीकणिक कर्णे गीतन कहि एकठाँ नर कारा सँवला प्रतिपादित कएल गेल । दुर्भाग्यवश एहि घोषणाक समर्थनमे सेहो मैथिली साहित्यकार लोकनिक पाँत ठाठ भेल । तखन एहि मायताक रिकछ सेहो किछु प्रगतिशील साहित्यकार लोकनि ठाठ भेलाह । ह्मदा, ओहो लोकनि अररी रँहव-रिवाज आ मैथिलीक पारंपरिक उद्देश्यक अग्रणीकन कए एहि दुलुक मया कोला तबहक सामाजिक स्थिति नहि कए सकलाह । फलतः मैथिली गज्जव रीकणिकन बहन आ हिनकव सभक गज्जव काहिया गिलासी धरि सीमित भेल गेल । एहि सँधमे उँउ आलखमे डा. बामदेव झाक उँउ देखु-

हावक रिगत किछु र्वमे गज्जव-बच्चाक श्रवणिक पुनर्जन भेल अछि आ से एकठाँ श्रवण अथवा रीसणक कण्ठमे परिवर्तित भेल गेल अछि । एहि क्षेत्रमे किछु श्रुति ओ विशेषतः सुरा पीठ की करि गज्जव बच्चा करैत जा रहल छथि.....हिनका लोकनि गज्जवमेसँ किछमे अरुष्ट गज्जव अछि । पवसु अधिकनिकेँ गज्जव-शेतामे बटित गीत-याव कहल जाय तँ अग्रगण्य नहि होयत । -

उँउम भारातिराजिक अँउतेओ आ गज्जव सभ रतिमान गज्जवशिल्पक आभावक निघेस मारित होगत अछि आ एहीठामसँ मैथिली गज्जवक दु गिठ की रीट रीसणता सेहो उँगजेत अछि । ओला एहिमे किछु गज्जवकार एहला छथि जे सुरा रीकाव करैत छथि जे उँउत उँदशिल्पक अँउतरमे हिनकव सभक बच्चामे एहन त्रुष्टि बहि गेल । ह्मदा, किछु एहला रीति छथि जे एहला जिद अँउगेल छथि आ गज्जवक नर-रिवाजकेँ रीकाव कबरी लेल तैयार नहि छथि । एहिठाम एहि गिठ की गज्जवकारक प्रतिक्रिक आलोचनाक माँदै नरतुवक समाजोचककेँ ओहो ध्यान बखराक चली जे एहि समयमे मैथिलीमे गज्जव सँभरित रीकण उँगल्ल नहि छल । सँभर जे किछु साहित्यकार रीका रीरन मा, सीताबाम मा आदिक गज्जवकेँ श्रवणक साँतत मालीत बहलाह ह्मदा, अररी रँहवक श्रवणसँ मात्र एहि हेतु पवहेज कएल बहलाह जे ओ सिद्धाँत आन भाषासँ आयातित होयत । काँवा जे कोला होँ ह्मदा परिणाम एतरे अछि जे उँकुँ, रीयन-रतुँ अँउतेओ मैथिली गज्जव रीति आन-आन भाषाक गज्जवक समकक्षी नहि रैनि सकन । एक मय रँवखक गतिहासक अँउतेओ मैथिलीक अँगणमे अँपविटिते जकाँ जिरेत बहन । तखन एहि पुरुरती (गज्जवक पँधर) सभक एतरी श्रवणदाँ त नहि नकावन जा सकेत अछि जे आ सभ मैथिली-गज्जवकेँ जियोल बहलाह । मैथिलीमे गज्जवक सँभरणा रँचन बहन ।

एक मय रँवखक गतिहासक रँवण मैथिलीमे गज्जव कहराक ओह रीचन सँभरणा आ अँउतारक श्रवणक अँउतारि श्रवणक एकठाँ सुँदर प्रतिफल थिक ओमहाकमि जीक पहिल गज्जव-सँग्रह-**किये बुँमि नहि सकल हयवा** । एहि शेताझीक आँवलिँसँ गज्जवक रीकणक माँदै जे रीवाज नगाँव गेल, आ पौथी तकले उँगजा थिक । लणगणसँ साहित्यक प्रति कटि बखनित गज्जवकार ओमहाकमिजी एहि पौथीक भूमिकामे सुरा गँउत छथि जे मैथिली गज्जवक रीकामे हिनक साहित्य-कर्मिक प्राथमिकता छथि । हिनक साहित्य-साधनाक मुन साध गज्जव थिकनि । गज्जवक प्रति हिनक ओह नगरक परिणाम थिक जे आ अँपन एहि सँग्रहक माध्यमे मैथिली गज्जवकेँ उँउतव श्रवणधरि गँउतेरीक हेतु श्रवणसँ बुँमणा जागत छथि । हिनकव एहि सँग्रहमे अँउत संग अँलक रीयन-रतुँ यथा-सिलह,सँरदला,श्रुँगाव-सौँदर्य,साँझिक



महंगीक चाँचुव गङ्ग जेरी सत्तक पञ्च डै

महंगीक माकिम पाँचि-तिहावक, उमेर-उल्लासक, हँसी-हँहास, निपता भऽ गेल अछि । कोला सामाजिक, आर्थिक कि राजनीतिक समस्यासँ किछु खास जाति-रक्तेक लोक प्रभावित नहि होगत अछि रँकि एकव मावि समाजक, सभ रक्षक लोकपव पवैत डैक । एहनामे जाति-पाति, जात्र-गुन, अगड-पिड्डाक जोव-घष्टाँ, पंचांगसक उल्लास केव गतिमँ गतानन मल्लवथ लेन कोल काजक, कोल महलक ? ओकव त कोला धर्मिक कि महाकाली लोकनिक उल्लास सँ मेहो पेट नहि भवैत । तै उल्लासि जी कहैत छथि-

भुखन पेटक गतिमे उमराव लेन उल्लास की

गवरीक सत्तक एक मोहव्य की बयलन की

गवरीक रात कवराँना, अगनाकेँ गवरी-गवरीक गुठटितक कहगरीना जखन सत्त-मिहासन धरि पहुँचि जागत छथि तऽ हुनकव अतिष्ठ गवरी उल्लास कि गवरीक कलाप नहि बहि जागत छथि । जलताकेँ जलान कहि सत्तधरि पहुँचि ते स्रग जलान रँकि जागत छथि आ जलकलाप माल अगन आ सब-कटुँक कलाप बुनैत छथि । जलताक कोष ठूँरामे लागि जागत छथि । बारम्बारक गत्र-गत्रमे झुप्टाचावी घुन पैसन भेटैत । झुप्टाचावक मित नर-नर लेकाँड रँलैत आ जलता रीध भऽ कहैत-

कव जोड-डी सबकाँव आँरि बहऽ दिँ

कते कवरी झुप्टाचाव आँरि बहऽ दिँ

भुखन झाना, अहारक तापक प्रताप थिक जे मोहित समाज अतिजातक मोकारिना ठाठ भऽ जागत अछि । कहरीयो डैक-मवता, का नहि कवता ? समाजक दु रक्षक मध्य जे दूरी रँकि गेल डैक तकले परिणाम थिक रक्ष-सर्ग । भुख आ अर्थभार जनि एहि समस्या दिस गिवा कवैत अछि उल्लासि जीक ए दु ठाँ मिसवा-

मिमले लेन पेटक आनि देखु गजबि कल डै आदमी

जरीक खास बेन सदिखन कोला मरि बल डै आदमी

जाहि भुमिपव मिया सन मिया भेलीह आग ताहि भुमिपव दहेज कपी दानर "मैथिली"क प्राण हवा कए बहन अछि । मैथिली मुकदर्शक रँगन छथि । जलक काँ मरि बहन छथि । हुनका टिता पैसन छथि जे हुनकव रँगीक रिराह कोला हेलैत-

मिया दम ले रव केव रीप लिखैत अछि

धवमे गवरीक सदिखन अतिचाव कहैत डैक

मात्र भुख, रोरोजगारी, महंगी कि झुप्टाचाव जरीक रीपव समाजा नहि अछि रँकि एकवा अनार कतेको कुबीति मेहो अछि जे लोककेँ विकास-पथक रँठुरामे रोधक रँगन अछि । हम सभ जाहि भु-भागक डी ताहि मिथिलाक गौरवशाली अतीत बहन अछि । एहि धवतीपव सामाजिक सद्धार आ नारीक सन्धारकेँ सत्तक प्राथमिकता देन गेल । अद्वारतमान समयमे हम सभ जाति-पातिमे अगनाकेँ रँलैत खल-खल भेल डी । आपसी प्रतिस्पर्धामे अगल समागसँ अर्था होगत अछि । अगलहि भाग-रङ्गक अगिष्ठ मोचामे त्रिम-समाधन उल्लास कव नलैत डी आ परिणाम भेल अछि जे हम सभ अमल भेल दहो-दिस छिडिया बहन डी । जलक नगरीक रीग उजरी गेल अछि । उल्लासिजीकेँ मेहो ए रात अन्त नहि छथि तै उ कहैत छथि-

हक रँठुरा केव डै सरलक ए ले डी



रैठत सत गौत तखल रोग निखलै छै

लोक अंगण-आंगणक दुन्दुभे हँसल अछि । ओ आधुनिकताक नामपर पसबन भौतिकताक चकटोहमे लोक तैलाले आहव भऽ गेल अछि जे आरंभ मोलक मर्कै रूमरौक सामर्थ ओकर दृष्टिमे नहि रौटन छैक । ओकरा मात्र रौहरी वंग-वोगन धरि सुनैत छथि । मानवीय मूलक द्वास ओ संरक्षक जडताक टीस गजमकाव ओम्हाकामे जीक करेजामे सेहो रैहवागए जागत छनि -

कहू की किये रूमि ले सकय हमरा

हँसी सतक लागव रैठत ठव हमरा

झुदा, एतेक दुख-दरिद्रता, संकष्ट, समस्या आ संघर्षक अड्डितो ओम्हाकामे जी जिनगीक डेन नहि छोड़ैत छथि । रैठि निर्वतव नम्र दिस रैठैत बहरौक, सकावामेक मोट बखरौक आह्वान करैत छथि-

जिनगीक गीत अरु सन्धिष गालैत कहू

एहिना अ वंग अरु अंगण सुनलैत कहू

जीवनमे जिरतता आ मानवताक डेन धऽ छलैत काम गजमकाव गजमक मोह्यत मर्मा माले प्रेमक तमूक तागलै सेहो गकडल छथि । करेजक गह प्रेमक भारम त्रुंगार छिछकैत अछि जे हिनकर एकठा सुटा गजमकाव हेरौक परिचिति गठैत अछि -

चमकय झूठ अरु अंगण भऽ गेलै

अधवत्रिमे लागव जेना तेव भऽ गेलै

ओम्हाकामे जी एहि पौथीक भूमिकामे निखल छथि जे हिनकर पिता समाजरादी रिचावधारक समर्थक दुनखिष तऽ माता उद्भवरादी मोट बखनिहवि । हिनकर एहि संग्रहक वचना सतमे एहि दू रिचावधारक समिश्रिष भेटैत अछि जे स्वाभाविके अछि । संगहि सामाजिक सरोकारम संरक्षित हिनकर अंगण टिता-टितल सेहो भेटैत अछि ।

गजमकाव ठिक्क कहैत छथि जे संरक्षणहीन हृदयम गजन नहि रैहवा सकैत अछि । हमतऽ कनि रैठि कहू जे संरक्षणहीन हृदयम सहिष नहि रैहवा सकैत अछि । संरक्षणहीन हृदयक सहिष रूमरौक क्षमता नहि बहैत छैक तै ओ गजन सेहो नहि रूमि सकैत अछि । प्रायः एहल सन किछु भार गजमकावक मोलमे सेहो बहन हेतनि आ तै अंगण एहि पौथीक नाँव देननि-“**किये रूमि नहि सकय हमरा**” । झुदा, एकठा संरक्षणहीन करेजा बाखरौकाल हेतु एहि पौथीमे रूमरौक हेतु रैठत बस सामग्री अछि । गजमक विशेषताक मादें ओम्हाकामे जीक गहो कहूँ छैत छनि जे - रोकवण ओ मानवीय संरक्षण दू एकव दु गोष्ट पहिया थिक । तै गजमक वचना काम नहि एकव रोकवण पक्षकें नकाव ज्ञा सकैत अछि आ नहि ए एकव भार पक्षकें ।

गजमक परिश्रेष्ठमे रोकवणक जे महता ओम्हाकामे जी सुनैत छथि तकर भाग हिनक एहि संग्रहमे सेहो भेटैत अछि । एहि संग्रहमे संकलित कन सतासी गोष्ट गजनमे टोरीस ठा गजन अवरौ रैहव आधरित अछि एरं शेष तिकसठि ठा गजन सबन रार्थिक रैहवक अक्षुभाव निखल गेल अछि । एकव अन्तर आठ ठा करीग आ दु ठा कता संग्रहित अछि । हलक गजमक निचामे तकर रैहवक विरवा सेहो देन गेल अछि जाहिम पाठककें रैहवक संवचनाक ताँज सहजहि लागि जेतनि । प्रत्येक कपे रैहवक अ नामोम्लथ ओहि गजमकाव सतकें एना देखा बहन अछि जिनकर सतक मायता छनि जे मैथिलीमे गजन भऽ नहि सकैत अछि, संगहि एहि रातकें स्थापित कए बहन अछि जे मैथिलीमे गजन आ सेहो अवरौ रैहव-विधान आधरित गजन रैठै मोलम कहन ज्ञा सकैत अछि । एहिठाम डा. बामदेवमाक पूर्वोद्धृत आलेखक अंतिम अंश जाहिमे ओ कहैत छथि-



- जहिला सम्यङ्गिक बच्चा हिन्दी-उर्दुमे असाध रा कथ साध अछि तहिला मैथिलीयोमे गजब-बच्चाक हिन्दी मानव जा सकेछ । ह्मदा एकव अखम् नहि मानव जा सकेछ । कोला प्रतिभाशेवी करि मैथिलीमे उपस्थित मान्यताकेँ अन्तर्गत सिद्ध कय सकेत अछि । - केँ ओम्हाकाशे जी मेत-प्रतिमेत प्रयासि कबैत छथि आ अगल प्रतिभासँ सिद्ध कएनहि अछि जे मैथिलीयोमे उर्दु-हावसीए जकाँ गजन कहन (लिखन) जा सकेत अछि ।

टूँकि एहि पौथीक सदेह कय एखला उगनट्ट नहि भ२ सकन अछि तेँ एकव र्याकवा पक्षक गहन अध्यास नहि कय सकनहुँ । तखन अपेक्षा कबैत छी जे कियो ल कियो गोष्ट, गजनक र्याकवा गुठ् ज्ञानकाव लोकनि, एकव र्याकवा पक्षकव सेहो रिश्रुत टर्छा कबलें कबताह । ओना ओम्हाकाशे जीक गजन ओ गनक र्याकवाक अगुसवा कबलें जे अगुवाग छनि तहिन् जँ कदाचित एहिमे कोला त्रुष्ट हेरौ कबत त२ मे नगणाथाये, तेहन रिसरिस अछि । अगल सिमित ज्ञानक आधावगव एहि पौथीक र्याकवाक पक्षकव जे रिहंगम दृष्टिगत कय सकनहुँ तहि आधावगव हमरा कोला त्रुष्ट नहि देखासन अछि । तखन कतह-कतह रँहवक आखव कि मात्रा पुनरौक दृष्टिकोणसँ मिसवा सभमे जे रँ कि मात्राक जोड़-तोड़ कएन गेन अछि तहिन् भारक प्रवाह खडित होगत रूमना गेन । संगहि कतेको ठाम रतिनीक अगुछता सेहो एहि पौथीमे एखन देखन जा सकेत अछि । ह्मदा, गहो सँभर जे जखन एकव सदेह कय हमरा सभक हाथमे आगत तखन एहन रँहूत बामेक त्रुष्ट नहि बहत । पौथीक स्वकय आ दामक सँरंधमे एखन उचित-अवचित किछु नहि कहन जा सकेत अछि ह्मदा, एतरो त२ अरैष्ट नलोत अछि जे एहि पौथीकेँ पाठकक मिलाह भेटैतैक । संगहि निकट भविष्यमे ओम्हाकाशे जीक गजन मैथिली साहित्यकेँ नर दिना ओ दृष्टि देत ।

ए बच्चापव अगल मँतर ggajendra@videha.com पव पठाउ ।



जगदानन्द या गगन - ग्राम पोस्ट - हरिपुर अहठैन, मधुबनी

गजन समीक्षा

1

गजनक महाम

हमरा पठक सौभाग्य भेटैन कनार्णद भट्ट प्रत गजन संग्रह “कान्हापव महाम हमरा” जे की १६+३मे प्रकाशित भेल अछि । एहि गजन संग्रहमे कनार्णद भट्ट जीक गजन प्रति सङ्ग्रहण गजनक मादेक अगरी कन ४+४ गजन रा गजन सन किछ अछि । भट्टजी अप्पन सङ्ग्रहण गजनक मादेमे तँ रिबडि सँ कय लिखल छथि ह्मदा रौद रौकी गजन सभमे रिबडि शेट्सँ लै कय लिखल अछि । जँ सकेत अछि ह्मक रा ह्मक समकालीन मैथिली लेखकक द्वारा गद्य आ पद्यमे मैथिली प्रति कएन गेन अस्तुव ।

एहि संग्रहक मादे, गजनक र्याकवा पक्षकव अरैत छी । एक गोष्ट गजन लेन सभसँ आरम्भक अछि काहिया आ बदीयक पावन ह्मदा एहि संग्रहक किछ गिनतीक गजन रौय नक छोवि कय रौद रौकी गजनमे काहिया आ बदीयक दोथ अछि । जेना एहि संग्रहक पहिले गजनक मतना देखु -



“यव घलेक आगि सँ अछि जवन जा बहन
 भाग सँ भाग दूने तबन जा बहन ”
 आरै एहि मतनाक कहिया भेल ‘बन’, ह्रदा एहि गजनकेँ आँगाक शैव सरहक
 कहिया अछि – ‘रैनन’, ‘रैनन’, ‘चनन’, ‘कयन’ ।
 गजन तीन केव मतना देखु –
 ‘कछु की कथा कहूँ जौरी बहन डी
 फाँटन गुदरी अगन हम सीरी बहन डी’
 आरै एहि मतनाक कहिया भेल ‘री’, ह्रदा गजनक आन-आन शैवक कहिया अछि,
 ‘लीरी’, ‘पीरी’, ‘खी’, ‘पीति’ । एहिठाम ‘लीरी’ आ ‘पीरी’ तँ ठीक ह्रदा
 ‘खी’ आ ‘पीति’ ?
 गजन ३ केव मतना –
 ‘रौं रौं रौं गहाड़ छै गछन जखन
 सीयत दबजौ केँ आँकामे फाँटन जखन’
 एहिठाम कहिया भेल ‘छै’ जेना की काँटन, छाँटन, सँटन, ह्रदा एहि गजनक आन आन
 कहिया अछि ‘सँटन’, ‘फाँटन’, ‘जागन’, ‘नागन’ । एहिठाम ‘सँटन’ तँ ठीक अछि,
 ‘फाँटन’ ठीक ह्रदा एकव प्लुः प्रयोग आ ‘जागन’ आ ‘नागन’ ?
 गजन सँख्या १२ केव मतना –
 ‘अहाँ जौरीते मयबथ केँ जवा बहन डी
 घेबि गामे केँ झला कवा बहन डी’
 मतनाक कहिया भेल ‘वा’ ह्रदा एहि गजनक आँगाक शैवक कहिया प्रयोगमे अछि,
 ‘दमदमा’, ‘खड़’, ‘चमा’, ‘रौं’, ‘बटा’, ए गजन तेसव शैवक कहिया ‘खड़’ ठीक
 अछि रौंकी सत गतेती ।
 एहि तबते १५, १६, २०, २१, २२, ३३, ४५ गजनक कहिया ठीक नहि अछि ।
 अंतिम गजनक मतना आँव देखु –
 ‘शिरव केव मागव मे आँग गाम दुमि बहन
 कामाँ कहिया केँ गकड़ा जेना दुमि बहन’
 आरै उपवर्गे मतनामे कहिया भेल ‘दुमि’ दीर्घ डु काव आ मी (ह्रदा एहि गजनक आन
 शैवक कहिया बाखन गेल अछि, ‘दुमि’, ‘दुमि’, ‘लेड़ा’, ‘रुकि’, आरै दुमि ठीक
 रौंद रौंकी ‘दुमि’, ‘लेड़ा’, ‘रुकि’, कोन मादे ठीक भऽ सकैत अछि ।
 उपवर्गका उदाहरण सभसँ एक डेग आँगु रौं रौं रौं वाम गजन तँ एहना अछि जाहिठाम
 कहिया केव कोना झल नहि बाखन गेल अछि । आँ देखी किछ एहना गजन-
 गजन सँख्या सातक मतना अछि –
 ‘मवि मवि क जे जौरी मे आदमी चली
 बाखन रौं रौं हाथ मे मे आदमी चली’
 आरै एहि मतनामे देखी तँ दुनु पाँतिमे कोन अछि ‘मे आदमी चली’ अर्थात् जा
 भेल वदीह । आरै वदीहसँ पहिले एहि शैवक दुनु पाँतिमे कोना कहिया अछि ? नहि
 ल । एहि तबते एहि गजनक सत शैव रौं कहिया अछि । एहिठाम गजनकाव जाहि
 अखजानि नहि जाहि कि एक ल मियाँ देनहि, मतनाक मिठाक पाँतिकेँ कनिक
 रौंदन कए कहिया ठीक कएन जा सकैत छन, देखु –
 ‘मवि मवि क जे जौरी मे आदमी चली
 रौं रौं हाथ मे बाखन मे आदमी चली’
 एहिठाम एकठाँ गप्पा मियाँ देन रौं अछि जे गजन शोम्न अग्रमाँ रौं वदीहक
 गजन तँ कहन जा सकैए पवष्ट रौं कहियाक गजन, जेना रौं कनियाँ रौं कह
 कम्पना । एहि तबते, एहि संग्रहमे रौं वाम गजन रौं कहियाकेँ कहन गेल अछि



जेशा गजन मथा ११, २३, ३०, ३५, ३९, ४४, ५१ ४७ । एक रैव हफर्स गजन मथा ४७
केव मतना देखी -

“ठंगा जका ठाठ भेन नागे देखेत जी

हम रैठ-घाठ सतठास नागे देखेत जी”

आरै एहि मतनाक दुनु पाँतिमे कोमल अछि नागे देखेत जी जे की वदीह भेन आ
वदीहसँ पहिल काहिया नदबत ।

कतो कतो राग नक काहिया ठीको अछि तँ काहियामे एक शिर्दक प्रयोग रैव-रैव
अछि । जेशा गजन मथा २९ क मतना देखी तँ-

“जन्म रार्थ रैठीकेँ देवौ रिधाता

कर्म अगकर्म हम कोन केवौ रिधाता”

ए शैवमे वदीह भेन ‘रिधाता’ आ काहिया भेन ‘रौ’ । आरै एहि गजनक आन-आन शैवक
काहिया अछि, ‘रैलौ’, ‘चठ्ठौ’, ‘मिबजेवौ’, ‘रैलौ’, ‘चठ्ठौ’ ।

मतनाक शैवक हिसारै काहिया दुकसु अछि ह्मदा ‘रैलौ’ आ ‘चठ्ठौ’ शिर्दक
आवृति काहियामे एकसँ रैनी रैव अछि । एहि तबहे गजन मथा १३ आ ४३ मे सेहो
काहियामे एक शिर्दक आवृति एक रैवसँ रैनी रैव भेन अछि ।

रैवत वाम गजनमे तँ काहिया आ वदीह दुनु असाजसकेँ अरन्धामे अछि अथवा कहु
तँ दुनुकेँ दुनु गलती अछि । जेशा गजन मथा ३३केँ मतना देखी -

“रौनवक हँज जका रौथ बहन लोक

वंगन मियाव जका लोक बहन लोक”

एहि मतनामे देखी तँ वदीह भेन ‘बहन लोक’ आ काहिया ‘रौ’, ह्मदा एहि गजनक

आन-आन शैव सरहक काहिया आ वदीह दुनु संगे अछि, ‘दौड’ बहन लोक, ‘मिबयोव

रैनन लोक, ‘गढोड’ गडन लोक, ‘मिजोठ’ बहन लोक । एहि शैव सतमे, ‘दौड’ बहन
लोक’मे मतनासमाव काहिया आ वदीह दुनु दुकसु अछि ह्मदा तेसव आ पाँचम

शैवमे वदीह गलती अछि आ छवि शैवमे तँ काहिया आ वदीह दुनु गवरँड’ गोन
अछि । कहि तँ एहि गजनकेँ पाँचो शैवधरि गजनकाव आ नहि निर्धारित कए सकन छथि

जे कोन काहिया अछि आ कोन वदीह, एहि असाजसमे थिटव रैनि सम्पूर्ण गजन
नहान रैनि गोन अछि । रिकून एहेन तबहक रीमावीसँ अस्तु गजन ४३ सेहो अछि ।

एहिठाम हम कही तँ गजनकावकेँ सामर्थ्य नहि हुनक गजन रोकवा प्रति

अन्तर्गतकेँ देखी मानी सकेत जी । किएक तँ सामर्थ्यक गप्पा कबी तँ एहि संग्रहक

११ म गजनमे दोहवा काहियाक सहन गोन कएन गोन अछि एकवा हुनक सामर्थ्य अथवा
राग नक कहि सकेत जी । जिनका काहिया आ वदीह केव त्राण हेतनि ओ अतेक रैनी
गलतीक गुंजागम नहि होवता । एहि सन्दर्भमे २४ म गजनक मतना देखी -

“सविगहूँ अहाँ तैया कमान करै जी

अछि अछि आचवा ह्मदा गान करै जी”

अर्थक मादे कहु तँ एहि शैवक दोसव पाँतिमे “करै”केँ जगह ‘रैजै’ हेरा चली

ह्मदा गजनकाव “करै जी”केँ वदीह मानी “।न”केँ काहिया रैलाननि । एहि तबहे

मतनाक काहिया आ वदीह ठीक अछि ह्मदा गजनक आन-आन शैवक काहिया आ वदीह संगे

अछि, “तान करै जी”, “लहान करै जी”, “जान करै जी”, एतए धरि सत ठीक ह्मदा

अंतिम शैवमे अछि “छान वथे जी” वदीह “करै जी”केँ जगह वथे जी अर्थात वदीह
गलती एकले कहे ठेक सौँसे थीवा थाए कए पेशी तीत ।

आरै आरै काहिया आ वदीहकेँ रौद गजन रोकवा केव महवपूर्ण पक्ष रैवगव, तँ

ओ कहिसे कोला सकोट नहि जे संग्रहक पुवा पुवी गजन रैवगव अछि । सवन राँपिक

रैवक सागद ओहि समयमे जन्ममे नहि भेन छन आ नहि एहि कपमे संग्रहक कोला गजन

उतवि बहन अछि । रणवृत सेहो कोला गजनमे नहि अछि, कतो कोला गजनक एक आधो

शैवमे रणवृत अरितो अछि तँ गजनक रौकी शैवमे नहि अछि । एकछी उदाहरण



देखु संग्रहक ४४म गजममे गजनकाव रर्षित कलिक प्रयासमे छथि -

गजनक मतना अछि -

‘भेन ग की कहाँ मैं नहिये गेन अछि

२१२ - २१२ - ११२ - २१२

प्रमराटक धरा पव पसवि गेन अछि’

२१२ - २१२ - २१२ - २१२

एहि मतनामे २१२-२१२-२१२-२१२केँ रर्षित रैलित-रैलित गैलीव गेन अछि । एहिठाम

या तँ गजनकाव रर्षितसँ अत्रात छथि अथवा टागरीदकेँ दीर्घ माले छथि ।

गजनक आंगु केव तीरणी शैवमे २१२४केँ सटीक रर्षितक प्रयोग अछि । गजनक दोसव शैव देखु -

‘आदमी आदमी केव रैली रँगन

२१२ - २१२ - २१२ - २१२

कोन नतसँ घृणी ग उतरी गेन अछि’

२१२ - २१२ - २१२ - २१२

रूदा गजनक पाँचम शैवमे अरैत अरैत रर्षित छुँछ गेन अछि । पाँचम शैव -

‘उब काँपेछ धवतीक भानवि जकाँ

२२२ - १२ - २१२ - २१२

हग आदम कोना हेल पनछ गेन अछि’

२२२-२२२ - १ १२ - २१२

जँ कमिक मियाण देल बहिति तँ एतेक नअग एना रौद रर्षित पुवा ल होराक कोना कावण नहि । कहयै ग जे गहो गजन रैरहव भेन ।

कतौ कतौ रूमागत अछि जेना भुष्टजी समकालीन हिन्दी गजनकाव सतसँ प्रेक्षा न२ क२

मात्रिक छंदक प्रयोगक हिराकमे छथि । हनौकी मात्रिक छंद गजनक हिम्मा नहि

अछि तथापि एहि संग्रहक गजन एहना सिष्टममे पूर्ण छिछ नहि भए बहन अछि ।

पहिले गजनक मतना देखु -

‘यव घलेक आगिसँ अछि जवन जा बहन

२१२१ - २१२२-१२२१२

भाग मैं भाग ह्ये भवन जा बहन’

२१२२-२२२१-२२१२

रर्षित तँ नहि अछि रूदा मतनाक दुनु पाँचमे २०-२० ठी मात्रा अछि । ए

तबहे गजनक तेसव चरित्र आ पाँचम शैवमे २०-२० ठी मात्रा अछि रूदा दोसव शैवक

मात्रा गनियो कए कम रैनी अछि । गजनक दोसव शैव -

‘कोन आसन जमाणा जूआबी एतय)२१ मात्रा)

‘भरणा अरिलेकी रँगन जा बहन’ (११ मात्रा)

एहिना सम्पूर्ण संग्रहमे नहि कोना गजन मात्रिक गणामे पूर्ण अछि आ नहि

रर्षितमे । मल ग संग्रह पुवा-पुवी रैरहव गजन संग्रह अछि । काहिया आ वदीयक

अध्याताक कावणे एहि तबह केव बचलाक संग्रहकेँ अजानो गजन केव श्रेणीमे

बखानाग उचित नहि ।

गजन र्नाकवणक एकठी आठव महत्पूर्ण हिम्मा अछि मकता, अर्थात् गजनक अंतिम

शैव जाहिमे शोअव अणन नाम अथवा उगनामक देल होथि । एहि संग्रहक कोना गजनमे

मकताक प्रयोग नहि अछि ।

आरि आरी भाया पफपव । गजनक भाया एहन होरी टाली जे सुनिते माँतव दूहस

निकली राह । राह । आ ग की सुनहूँ आग आ रूने जेन दु दिन रौदो शिरदकोशि

ताकेत बद्ध । एहि पोथीमे एकव सदत अभाँ अछि । रूत उगवकेँ भाया, माष्टि थानमे

ठुंघले रनकेँ जेन जेना सुन्दर टोपाग जकाँ नीक तँ रूत छै रूदा किछ

रूमलौ नहि । किछ कटीन शिरद, ए संग्रहक पहिले गजनक एकठी शैव -



‘‘सुदृढ धवती गगन नयन मुनन अगन
अडि रमाती रमाती रमन जा बहन’’
आरै ए शैवक की अर्थ रूमन जेए ? आ जै रूमरौ कवरै तँ कतेक कान रौद आ ओहो के ?
एकठा आओव शैव ३१ मग गज्जनसँ –
‘‘यव जोष्ट-जोष्ट तीत टूना सँ टेडुवन
टिब ओहि पव बाधा प्रष्टक नगम’’
टूना, टिब हिदीक रैमाहन शैवद ओझुपव अर्थ की ? आ नगम की ? के रूमत ?
कठिन भारी भवकम शैवदकेँ अनारौ एहि संग्रहक भाया मैथिली अरथ अडि अदा
एहल एहल पोधी पठना रौद हिदीक दान सत कहत डै जे मैथिली हिदीक अग
अडि अथरा हिदीक उपभाया अडि । ए संग्रहक रूत कम एहल गज्जन अडि जाहिये
हिदी शैवदक प्रयोग नहि हुए । देखी किछ हिदीक शैवद –
गज्जन १ मे – टाम
गज्जन २ मे – त्रैम, विरमिता
कनीक आगु आरि गज्जन १० मे – रिपति, वड
गज्जन ११ मे – आदेश, रैमाथी, आठकित
गज्जन १२ मे – रिकठ, मय्याता, फुवता
गज्जन १४ मे – कर्ण, प्रमराचक, धवा, मशिकित, आभास
गज्जन १७ मे – निश्चय, शिथिल, सदृष्ट, रिमस
गज्जन १८ मे – अर्थव, अवनयन
गज्जन १९ मे – कव, अग्रसव
कनी आओव आगु रैठनी, गज्जन ३१ मे – घटी, उवम, रिम, जन
रौकीओ गज्जनमे एनाहिये हिदी शैवदक भव्याव अडि । कते-कते तँ एकछाहि हिदीए
अडि । १३.८म गज्जनकेँ आ दुनु शैव देखु –
‘‘यवमे सुष्ठन क्रिया गर्म सीमात अडि
भारणा संकटित रिमसकारी ल भेल

मवि मय्या कर्ण ओ रिम रकुव केव
कोन उतव आ मग दवाचारी ल भेल’’
उपवकेँ दुनु शैवमे कतेक शैवद मैथिलीक अडि ? ३९ म गज्जन केव आ शैव देखु –
‘‘उव रैमा द्वय ग्या घृणा केव नहवि
वड तर्पण करैड ल कोला जागरव’’
जै आ मैथिली तँ हिदी की ?
आरै आरि भार पक्षपव, तँ एहि संग्रहक सत गज्जनक भार पक्ष जैवदस्त अडि । समाजक
कोला एहल को नहि जाहिये शीव ए संग्रहमे रर्षि नहि केल होथि ।
टागुनीसँ शुक कए आम लोकक जीरणक रिमता, अस्थाटाव, महगा, अगव,
नुष्टि-पाठ, बाजनीति सत रिमपव अग कनम टनरैत एक एक भारकेँ उजाव करैमे
सहन छथि ।

ए वचनापव अग मतर ggajendra@videha.com पव पाठ ।



गजेन्द्र ठाकुर)संपादकीय सहित ४८० आलेख(गज्जन समीक्षा (पेठावस)

१

‘माँस आँगनमे कतिआएन छी’ झुझाझीक करौंग आ गज्जन संग्रहक नाम अछि । कतिआएन आ सेहो माँस आँगनमे ! की करीबक उमठरौमीक प्रभाव अछि आ आकि गज्जनक प्रभाव अछि आ ? नहिये आ करीबक उमठरौमीक प्रभाव अछि नहिये आ गज्जनक प्रभाव अछि, आ एकठाँ यथार्थ अछि । झुझाझी सग कतेको लोक कतिआएन छथि, प्रतीति अछि हेबाएन छथि । झुझा गज्जनकाब सभठाँ दोख अगलएव नऽ जै छथि ।

आरौँ तँ माँस आँगनमे कतिआएन छी
अगल छानिँ आरौँ रौँवा गेलहुँ हम
आ सएह कावण अछि जे ओ लावक सुख भोगऽ गेलौ छथि ।
लाव तँ खनै झुझा मज्जा सग गेलौ
केहन नीक प्रेमक दुख जेनहुँ हम

रौँडका खानिमे खनि छथि आ तहू जेन अगलकें दोखी गेलौ छथि:
छेँकौँ ठेसँ लै सरक जेनहुँ हम
तँए रौँडका खानिमे खनि जेनहुँ हम

तँ की गज्जनकाब प्रेमक महत्त्व रिसवि जेन छथि, लै प्रेम तँ सभकें छली ।
सभ उमेव रसकें प्रेम छली
मरितो धरि कशेन-छेम छली

आ लिंका जँ कोस दु-कोस मात्र चरौक बहितिहि तखन ल, लिंका तँ रौँड आगाँ
रौँडरौँक छहि तँ प्रेम छली ।
डाहसँ गँहूँकर कोस-दु कोस
आगु रौँडरौँ जेन तँ प्रेम छली

आ से सभ ठाम । एकठाँ हमर संगी छन, एकठाँ पबीक्षामे ठाँप केनक तँ रौँडन -लै
कशीठ करै छी तँ लै करै छी, आ करै छी तँ ठाँप करै छी । ओ गज्जनकाब लै छन जँ
बहिति तँ अलिना निथितए:
रौँदवी नादन बहै कोला रौँत लै
जदि रौँवनी तँ रौँविसात रौँनि कऽ

आ गज्जवि-गज्जविक हेल आ हाह ग्रास हुन आ दुनुठाँ अरबावणी एँ कपमे ओ बाथे छथि:
गज्जवि उठाँ कऽ देखलै तँ खाली रौँसएत आ दुनियाँ



नजरि गवा क२ देखैतै तँ सभ देखाएतै ए दुनियाँ

समाजोचना आ विरोध दुनूकेँ गजनकाव नीक मालै छथि ।

पक्षधरसँ बाधु अगलकै रैदा क२
रिपक्षीक सभ रातकै ले तीत रूम

महगागसँ लोक रोकन अछि ह्रदा तकवा जेन मूयैत मटानक रियै देखु:

महगागसँ खुल ले हठियो सुथाए
आरि मूयैत मटान सभ नछैतै लोक

आ ए उमठैरौसी देखु, रियै नर, भारवा मोयैत:

हम तँ घुब जडैरौ गरी मामये
मिमाएन आगिसँ पमालि कहियो

ए कोन गोष्ठी छी जे अछि कोन पत्रिकाक प्रायोजित छिँ डगुराक बाजनीति सभ,

ए करौग देखु:
मोष भए उठन दुधित होहकारीसँ
उठि दर्शक भागन मावामरीसँ
प्रायोजक तँ पथल बहन कास अपन
कर्ता देखाव भेना जतिगारीसँ

ह्रदा राठ्ठा क रियस जँ मैथिली गजनक अंग ले रैथ तँ रूम जे गजनकाव समाजसँ

कतिअएन छथि । ह्रदा से ले अछि ।
धाव एथन धरि तँ उफानपव अछि
लोक ताक-ताकी करैत राहपव अछि

आरि गड्ागल घटन अछि, मिथिनासँ गड्ागल । राहवी लोक रिहारीकै मजदूर आ
त्रिधिकक पर्यायराटी मारि जेन छथि । तहपव गजनकावक कनम चनन अछि ।

रिहबक सिबखारी रैदनि जेन सभ नछैतै आरि
त्रिधिक घटनसँ कपनी-मालिक नछैतै रिहारी जकाँ

ह्रदाजीक गजन आ करौग बुद्धिद कपसँ रैमकोना जेकाँ रैहन अछि । शैवक
सुभार होग छै जे जँ ओकवा लकसँ कहन जाए तँ आह-राह लोक कबिते अछि ।
मैथिलीमे गजन-करौग जग तबकै प्रसारित भ२ बहन अछि से देखि क२ यहन नागि
बहन अछि जे जतेक ए रिवा अगलकै पमालि बहन अछि तगसँ रैशी मैथिली
नाभावित भ२ पमालि बहन अछि ।

--गजेन्द्र ठाकुर १९ मार्च २०१२

2

मैथिली गजन शिल्प - भाग-१

गजनक उत्पत्ति खररी साहित्यसँ मानन जा सकैत अछि ह्रदा ओतए ए अवकाश माल
कोनो उच्छेदक घटनाक र्णन विशेषक रूपमे छन । ह्रदा गजन जे एहि अवकाश सभक
समूचा अछि से फावनीक छी । फेब ओतएसँ गजन उर्दू-हिन्दी आ आरि मैथिलीमे आएन
अछि ।



मायाशब्द मिथि मैथिली गज्जनके गीतन कहवहि, ह्नुदा ह्य एतए ओकवा गज्जने कहरे आ
अवरी फावनीक छन्द-शाम्बक किछु शैलीरनीक प्रयोग कवरै । से मैथिली गज्जन
शाम्बक शैलीरनी तेन अकज ।

रैहव : उँसै ठी अवरी रैहव होगत अछि । एतेक रैहव मोन बथरौक आरथकता नहि ।
किएक तँ रैहव माले थारै, बाग-बागिनी । एहि उँसैठौ अवरी रैहवक रैदना मैथिली
जेन नीटाँमे भावतीस संगीत)सात स्र श्री बागशेग सा बागसंग (द२ बहन
छी । आ किएक तँ देरनागरी आ मिथिलाकबसे जे रौजन जागत अछि सह निथन जागत
अछि)द्वय ग सेहो मैथिलीमे अग्रद नहि अछि (से द्वय आ दीर्घ स्वरकेँ
गणराक रिधि मैथिलीमे भिन्न अछि, सेहो एतए देन ज्ञात । जाहि रैहवमे शैवमे आठ
माले शैवक दूनु मिसवामे चाबि-चाबि (अवकाश ह्नुए से तेन मसमान आ जाहि
रैहवमे शैवमे छह)माले शैवक दूनु मिसवामे तीन-तीन (अवकाश ह्नुए से तेन
ह्नुददुस । एतए मैथिलीमे रिभञ्जि सँ क२ निथरौक रैदनाक आधार होव सिद्ध
होगत अछि कावणी गज्जनेमे जे रिभञ्जि छँगायो क२ निथरै तैयो अवकाश गणरा कान तेना
क२ गाए पढत जेना रिभञ्जि सँ ह्नुए, रिभञ्जि तेन अलगसँ गाना नहि छैत ।
जाहि रैहवमे एकछ्ठा करू ह्नुए से तेन महरिद रैहव आ जाहिमे एकछ्ठा सँ रैश्री
करू ह्नुए)करूक रैहवक अवकाश (से तेन ह्नुकरू रैहव ।

दुष्टी अवकाश पुनः आरै तँ ओकवा रैहव-शिकता कहन ज्ञात ।

मिसवा आ शैव : मैथिली गज्जनेमे दु पाँतीक दोहा जे कोला उँतजक घटनाक विशेष
वर्णन करैत अछि तकरा मिसवा रा शैव कह छी । दूनु पाँती एकछ्ठ तेन शैव आ
ओहि दूनु पाँतीकेँ अलगसे मिसवा कहरे । मतनाक दूनु मिसवामे एकवंग काहिया
माले तुकरुद्वी छैत ।

हुँना आ माली : शैवक पहिन मिसवा हुँना आ दोसव मिसवा माली तेन । दु मिसवासँ मतना
आ दु पाँतीसँ दोहा रंगन ।

अवकाश)करू (आ जिहाफ : आठ ठी अवकाश)करू (सँ उँसै ठी रैहव
रैहवागत अछि । से अवकाश मुन बाग अछि आ रैहव तेन रँगामेक बाग । अवकाशक भाव
तेन जिहाफ । जेना रँगाम् सँ रँगैयम् ।

तकतीअ : दु पाँतीक कोला उँतजक घटनाक विशेष वर्णन करैत दोहा जे मिसवा रा
शैव अछि आ कएक ठी मिसवा रा शैव मिनि क२ गज्जन रँगैत अछि, तकर शैव टिकिसो
तेन तकतीअ अछि । से मिसवा कोल बाग-बागिनीमे अछि तकर तकतीअसँ रैहव ज्ञात
होगत अछि ।

मतना)आवसु (आ मकता) अवसु : (गज्जनेमे पहिन शैव मतना आ आथिरी शैव मकता तेन ।
मतनाक दूनु मिसवामे तुक एकवंग ह्नुदा मकतामे करि अगल नाम दै छथि । मकताक
कथना कान लोग बहत, एकवा सम्भर्तसँ रूसरै थिक ह्नुदा मतनाक बहरै अगिरास ।

काहिया आ वदीह : तुकावु काहिया आ ओकवा रौद रा काहियाहुँ शैवक पहिलक
शैव, शैव, समूहकेँ वदीह कहत छि । काहिया हुँ शैव, रैदना ह्नुदा वदीह नहि
रैदना । काहिया रँग रा मावाक होग छै आ वदीह शैव, रा शैव, समूहक ।
दुष्टी काहियारैना शैव जू काहिया कहन ज्ञात अछि ।

एक दीर्घक रैदना दुष्टी द्वय सेहो देन ज्ञा सके ।

जेना काहिया रँग आ मावाक संग शैवकेँ सेहो प्रयाग करैत अछि तेहिना
वदीह एकव रिगरीत शैव, आ शैवक समूहमे सङ्गित रँग आ मावाकेँ सेहो
प्रयाग करैत अछि । ए तवहँ पहिन पाँतीमे जू शैव, समूह वदीह अछि तँ तँ
दोसव पाँतीमे ओकवा कोला एक शैव, दोसव शैवक अंग भ२ सके आ ओग काहिया हुँ
शैवमे वदीहक उँपछिति बहि सके ।



दुष्टी काहियाक रीचमे सेहो बदीय बहि सकेए, बदीय ए तबहँ अगुपहितसँ न२ क२
एक शेट, शेटक समूह रा राका भ२ सकेत अछि जे अगुविरति बहत । शूद्र
काहिया ग्रन्थ शेट, गजजमे रैदलोत बहत । मैथिली राकबाक दृष्टिसँ अगुविरति
मात्रा अगुविरति अगुप शेटकेँ रिया बदीयक गजज कहि सके छि, काका आ
काहियाक मुन विशेषता छि)अगुविरति मात्रा रा अगुविरति अगुप शेट,
..आ जू शेट, रा शेटक अगुविरति समूह दृष्टिसँ देखी तँ एतए बदीय
अगुपहित अछि ...उला बदीय अगुपहित सेहो बहि सकेए, शास्त्रीय दृष्टिसँ
कोला दिकत ले अछि ..से प्रावस्यमे रिया बदीयक गजजक रैदना एक शेट,
शेटक समूह रा राका जे अगुविरति बहए, सएह बदीयक कगमे ग्रन्थ कक ।
मैथिली गजज शास्त्र :

पहिल कसँ कस ३१ 'की' रैना कीरौड निअ ।

एहिमे १२-१२ ठाक तीस भाग कक । १३ आ २३ मथा रैना की मा,आ मा दुनुक रौध
कवरौत अछि । सभसँ पाँछी कावी आ सातौ उज्जव 'की' अछि । प्रथम १२ म
मनुक, रौधक १२ मथा मनुक आ, सभसँ दहिन १२ ताव मनुक कहलैछ । १ म ३३ धरि
मार्किसँ निथि निथ । १ आ तेवह सँ फागि: राम आ दहिन हाथ छनत ।

१२ गोष्ट 'की' केव सैमे ३. ठा कावी आ सात ठा उज्जव 'की' अछि ।

प्रथम अन्तसमे मात्र उज्जव 'की' केव अन्तस कक । पहिल सात ठा उज्जव 'की'
मा, ले, ग, म, प, ध, नि, अछि आ आठम उज्जव की तीर सँ अछि जे अगुनका दोसव
सैक सँ अछि ।

राम हाथक अनामिकासँ म, माधमिकासँ ले, गडेछ हिगव सँ ग, रूठरा

आँगुवसँ म, लेव रूठरा आँगुवक नीचाँसँ अनामिका आगु आ ग, लेव माधमिकासँ

ध, गडेछ हिगवसँ नि, आ रूठरा आँगुवसँ मा । दहिन हाथसँ १२ केवसैक पव

पहिल की पव रूठरा आँगुवसँ म, गडेछ हिगवसँ ले, माधमिकासँ ग,

अनामिकासँ म, लेव अनामिका नीचाँसँ रूठरा आँगुवकेँ आगु आ तथ रूठरा

आँगुवसँ ग, गडेछ हिगवसँ ध, माधमिकासँ नि आ अनामिकासँ मा । दुनु

हाथसँ मा दोसव १२ केव सैक पहिल उज्जव 'की' अछि । आबोहमे पहिल सैक मा

अछि तँ दोसव सैक प्रथम की बहरौक कावण मा ।

दोसव गप जे की रौडिसँ जखन आरज निकनगँ अगुन कँठक आराजसँ एकव गिना कक ।

कनियो नीच-डूँट नहि होय । तेसव गप जे मगीतक रण अछि मा,ले,ग,म,प,ध,नि,मा

एकव देरनागरीक रण रूमरौक गनती नहि कवरौ । आबोह आ अरबोहमे कतेक नीच-डूँट

होय तकले ठा आ रौध कवरौत अछि । जेना कोला आन धुनि जेनाकि क केँ निथ आ, की

रौडि पव निकनन मा,ले...केव धुनिक अगुमाव क धुनिक आबोह आ अरबोह कक ।

आ जे सातो स्रवक रण पिठना अकमे देन छैन छैन ओकवासँ आगु आहु । एहि सात

स्रवमे यडज आ पाँचम मल मा आ प अछन अछि, एकव स्रव पाँचमे उगव नीचाँ होयरीक

गुजागस नहि छैक । मा अछि आरिआ आकि रिश्यामा आ प अछि उल्लासक भार । मैथ जे

पाँछी स्रव अछि से सभसँ छन अछि, मल उगव नीचाँक अर्थात् रिश्यातिक गुजागस

अछि एहिमे । मा आ प मात्र गुह्र होगत अछि । आ आरि रिश्याति भ सकेत अछि दु

तबहँ गुह्रसँ उगव स्रव जागत किना नीचा । जदि उगव बहत स्रव तँ कहर ओकवा

तीर आ नीचाँ बहत तँ कोमन कहायत । म कँ डोडाँ कस सभ अछन स्रवक रिश्याति

होगत अछि नीचाँ, तखन रूम जे "ले, ग,ध, नि" आ छवि ठा स्रवक दु ठा कप

भेन कोमन आ गुह्र । मा केव कप सेहो दु तबहक अछि, गुह्र आ तीर । ले दैत

अछि उमोह ग दैत अछि शीति म सँ होगत अछि भय ध सँ दुःख

आ नि सँ आदेश । गुह्र स्रव तखन होगत अछि, जखन सातो स्रव अगुन निशित स्थान

पव बहत अछि । एहि सातो पव कोला छेह नहि होगत अछि ।

ଶୁଦ୍ଧ ଆ ମଧ୍ୟ ସ୍ବର ଉତ୍ତର ଅଂଶ ସ୍ଥାନରୁ ଡୁମ୍ବର ଉତ୍ତର ଅଞ୍ଚଳ, ତତ୍ତ୍ବ ଶ୍ରୀ ତୀବ୍ର ସ୍ବର
 କହାଗତ ଅଛି, ଏହିସେ ଡୁମ୍ବର ଡୁମ୍ବର ଦେଖ ଦେଖ ଉତ୍ତର ଅଛି । ଶ୍ରୀ ଏକେଷା ଅଛି -ମଠ
 ଏସମ ପ୍ରକାରେ ମାତ ଠା ଶୁଦ୍ଧ ଯଥା -ମା, ଲେ, ଗ, ଯ, ଗ, ଧ, ନି, ଚାରିଠା ଶୁଦ୍ଧ ଯଥା-
 ଲେ, ଗ, ଧ, ନି, ଆ ଏକେଷା ତୀବ୍ର ଯଥା ମଠ ମତ ମିଳା କର ୧୨ ଠା ସ୍ବର ଭେଦ ।
 ଏହିସେ ସ୍ପଷ୍ଟ ଅଛି ଜେ ମା ଆ ଗ ଉତ୍ତର ଅଛି, ଶେଷ ଚର କିରା ସ୍ବିକୃତ ।
 ଆଉ ହେବ କିରୋଡି ଗବ ଆଡୁ । ୩ ଠା କି ରେନା କିରୋଡି ହମ ଏହି ହେତୁ କହଲ
 ଚାଲୁଁ, କିଏକ ଠା ୧୨, ୧୨, ୧୨ କେବ ତିନି ସେଟ ଆ, ଅତିମ ଶ୍ୟା ତୀବ୍ର ମା କେବ ହେତୁ ।
 ମଧୁକ ସେ ମାତେଷା ଶୁଦ୍ଧ ଆ ମାତେଷା ସ୍ବିକୃତ ମିଳା କର ୧୨ ଠା ଭେଦ ।
 ରାମ କାତର ୧୨ ଠା ଉତ୍ତର ଆ କାବି କି ମିତ ମଧୁକ, ରୀଚ ରେନା ୧୨ ଠା କି ମଧ୍ୟ
 ମଧୁକ ଆ, ୨୩, ମ ୩୬ ପରି କି ତାବ ମଧୁକ କହନ ଉତ୍ତର ଅଛି ।

ଆରୋହ -ଗୀତାଁ ମଁ ଡୁମ୍ବର ଗୋଷା, ଜେଣା ମଝି ମଞ୍ଚକମଁ ଗଣା ମଞ୍ଚକ ଆ ଗଣା ମଞ୍ଚକମଁ
 ତାବ ମଞ୍ଚକ ।

ଯଦି ସମ୍ପ୍ରକାଶେ ଗୋଟିଏ ରିସନ୍ଦ, ତଥା ସମ୍ପ୍ରକାଶ ସାମାନ୍ୟ ଏବଂ ତାହା ସମ୍ପ୍ରକାଶେ ଉଠିବ
ରିସନ୍ଦ ଦେଖି ଜାଣିବ ଶକ୍ତି, ତଥା-

ਸ੍ਰ, ਰ, ਗ, ਘ, ਙ, ਖ, ਨ ਸ੍ਰ, ਲੇ, ਗ, ਘ, ਙ, ਖ, ਨੀ ਸ੍ਰ, ਲੇ, ਗ, ਘ, ਙ, ਖ, ਨਿ

অববাহ - তাকসঁ মধ্য আ মধ্যসঁ মন্দ কঁ অববাহ কহন জাগত ব্ৰহ্ম ।

বাদী স্বব -জাহি স্ববক সভমঁ রৈশী প্রযোগ বাগমে হোগত ঞ্ছি । সমবাদী স্বব-
জকব প্রযোগ বাদীক বাদ সভমঁ রৈশী হোগত ঞ্ছি । ঞ্ছবাদী স্বব -বাদী আ সমবাদী
স্ববক বাদ শেষ স্বব । রজী স্বব -জাহি স্ববক প্রযোগ কোলা বিশেষ বাগমে
বহি হোগত ঞ্ছি । পকড -জাহি স্ববক সদ্ধদ্যমঁ কোলা বাগ বিশেষকৈ চিহ্নত ছী ।
গায়ন কান মেহো সভ বাগ-বাগিনীক হেতু নিশ্চিত বৈত ঞ্ছি । ১২ রঁজে দিমসঁ ১২
রঁজে বাতি ধরি পুরীং আ ১২ রঁজে বাতিসঁ ১২ রঁজে দিশ ধরি উত্তবাং বাগ
গাওন-রঁজাওন জাগত ঞ্ছি ।

ପୁରୀର ବାଗକ ରାଜା ସ୍ବୟମେ କୋଳା ଏକ ଠା)ମା, ଲେ, ଗ, ଘ, ଙ (ଲୋଗତ ଥିବ ।
 ଉତ୍ତରାଂଶକ ରାଜା ସ୍ବୟମେ)ସ, ଗ, ଘ, ଙ, ମା(ସେ ମୁଁ କୋଳା ଏକ ଠା ଲୋଗତ ଥିବ । ସୂର୍ଯ୍ୟାଦୟ
 ଓ ସୂର୍ଯ୍ୟାସ୍ତର ସମୟେ ଗାଉଁର ଛାତ୍ରୀ ଶ୍ରୀମତୀ ବାଗକେ ମଧ୍ୟ ଶ୍ରୀମତୀ ବାଗ କହନ ଛାତ୍ରୀ ଥିବ ।

বাগক জাতি

বাগক আরোহী আঁ অরোহমে প্রযুক্ত স্রবক সখ্যাক আধাব গব বাগক জাতিক
নির্ধাৰিত হোগত অৰ্দ্ধ ।

একর প্রধান জাতি তিন টা আছে । ১.সর্পা ৭ (২.যাড়)৬ (৩.ওড়)৩. (আ
এহিমে সামান্য স্তর সংখ্যা কমিঃ ৭,৬,৩ বহুত আছে ।

আর এটি আধাব পব তীর্নকে হেঁধু ।

সম্পূর্ণ-ওবর কী ভেদ? হৈ পহিঁ বহত আবোহী আ দোমব বহত অরবোহী। কহু আঁহ। ১৭, ৩. এহিমে সাত আবোহী স্রব সখ্যা আ ৩ অরবোহী স্রব সখ্যা অহি। সম্পূর্ণক

সামান্য স্রব সংখ্যা ঊণব লিখন অঙ্কি) (আ ওড়রক) ৩. (। তখন স্রপ্প-ওড়র
ভেন) ১. ৩. (। অহিা ৯ তবহক বাগ জাতি হোয়ত। ১. স্রপ্প-স্রপ্প) ১. ১ (

২.সংপর্শ-যাড়র)৭,৬ (৩.সংপর্শ-ওড়র)৭,৫।

৪ .যাড়-সংগ্ৰহ) - ৬, ৭(



३. याडर - याडर) - ३,३(

३. याडर- ठडर) ३,३(

१. ठडर-संगुर्णी) ३,१(

४. ठडर - याडर) ३,३(

५. ठडर - ठडर) ३,३(

थाष्टः

थाष्ट - एकठा सभुकमे सात गुरु, चाबिठा कोमन आ एकठा तीव्र स्वर)१२ स्वर(होगत अछि । एहिमे सात स्वरक ७ सद्गुण, जेकरासँ कोला वागक उपेति होगत अछि, तकरा थाष्ट रा मेन कहल जागत अछि ।

थाष्ट वागक जनक अछि, थाष्टमे सात स्वर होगत ठेक)संगुर्णी जाति(। थाष्टमे मात्र आबोही स्वर होगत अछि । थाष्टमे एकहि स्वरक गुरु आ विपुल स्वर संग-संग बहल बहल अछि । विभिन्न वागक नाम पब थाष्ट सतक नाम बाखन जेन अछि । थाष्टक सातो ठाँ स्वर फेलावसाव होगत अछि आ एहिमे जेयता बहल होगत ठेक ।

थाष्टक १० ठाँ अछि ।

१. आसारवी-सा ले ग म प ध नि

२. कल्याण-सा ले ग म प ध नि

३. काहली-सा ले ग म प ध नि

४. थमाज-सा ले ग म प ध नि

५. गुरी-सा ले ग म प ध नि ६. विनारन-सा ले ग म प ध नि ७. ठेवर-सा ले ग

म प ध नि ८. ठेवर-सा ले ग म प ध नि ९. यावरा-सा ले ग म प ध नि

१०. तोड़-सा ले ग म प ध नि

रर्षः

रर्षी वागक कप-भार प्रगुष्ट कएन जागत ठेक । एकव चाबिठा प्रकार ठेक ।

१. स्त्री-जखन एकठा स्वर रैव-रैव अरौत अछि । ठेक अरुति होगत अछि ।

२. अरबोही - ठेक नीटाँ होगत स्वर समूह, एकव अरबोही रर्षी कहल जागत अछि ।

३. आबोही - नीटाँ ठेक होगत स्वर समूह, एकव आबोही रर्षी कहल जागत अछि ।

४. सटारी-जहिमे ठेक तीनु कप नयमे होय ।

नक्षत्र गीत : बचना जहिमे रौंदी, सगुंदी, जाति आ गायनक समय केव निर्देशक वागक नक्षत्र स्पष्ट भ जाय ।

स्त्री : कोला गीतक पहिल भाग, जे सत अक्षराक रौंद दोहरावत जागत अछि ।

अक्षरा : जकरा एकहि रैव स्त्रीक रौंद गावत जागत अछि ।

अक्षरा/पठेठा स्वर सद्गुणक नियमरुद्ध गायन/रादन भेल अक्षरा ।

आवाज : कोला विधेय वागक अक्षरात प्रयुक्त भेल स्वर सद्गुणक

विस्तारपूर्ण गायन/रादन भेल आवाज ।

ताम : रोगमे प्रयुक्त भेल स्वरक ह्रित गायन/रादन भेल ताम ।

तामक गति द्रुत होगत अछि आ २ जे दोरव गति सँ गायन/रादन कएन जागत अछि ।

आरौ आरौ ताम पब । संगीतक गतिक अनुसार १ जे सगुताम - १० मात्रा, त्रिताम - १३ मात्रा, एक ताम - १२ मात्रा, कदरा - ४ मात्रा ददरा - ३ मात्रा होगत अछि ।



गीत, रान्ध आर नृत्यक लेन आरथक समय लेन कान आर जाहि निश्चित गतिक ३
अनुसन्धी करैत अछि, से लेन नय । जखन नय ह्वित अछि तँ लेन द्रुत, जखन
आकु-आकु अछि, तँ लेन विनम्रित आर नयि आकु अछि आर नयि द्रुत तँ लेन
मध्य नय ।

मात्रा तान केव हनिष्ट अछि आर एहिँ नय केव नापन जागत अछि ।

तानमे मात्रा सङ्ग कर्ण उगहित बहना उतव ओकवा रिभाग कहन जागत अछि-
जेना द्वादशमे तीन मात्रा सङ्गकत बहना उतव २ रिभाग ।

तानक रिभागक नियमरूँह नियाम अछि छन्द । आर तानक प्रथम रिभागक प्रथम
मात्रा लेन सम आर एकव छेह लेन +रा x आर जतय रीषा तानीक तानकेँ बूनाउन
जागत अछि से लेन खानी आर एकव छेह अछि ०.

७२ सम्पूर्ण बचना जाहिँ तानक रौन गणित होगत अछि, जेना मात्रा,
रिभाग, तानी, खानी ३ सञ्छा लेन ठेका ।

छेह-

तानीक स्थान पव तान छेह आर संख्या ।

सम +रा x

खानी ०

२ अरग्रह/रिकावी

- एक मात्राक दु ठाँ रौन

- एक मात्राक चाबिठाँ रौन

एक मात्राक दुठाँ रौनकेँ धागे आर चाबि ठाँ रौनकेँ धागेतिष्ठ मेहो कहन जागत अछि ।

तानक परिचय

तान कहवरी

४ ठाँ मात्रा, एकठाँ रिभाग, आर पहिन मात्रा पव सम ।

धाणि

नाति

नक

रिष ।

तीन तान वितान

१३ ठाँ मात्रा, ४-४ मात्राक ४ ठाँ रिभाग । १,३, आर १३ पव तानी आर ९ म मात्रा
पव खानी बहेत अछि ।

धा रि रि रि

धा रि रि धा

धा ति ति ता

ता रि रि धा

सपतान

१० मात्रा । ४ रिभाग, जे क्रमसँ २, ३, २, ३ मात्राक होगत अछि ।

१ मात्रा पव सम, ३ पव खानी, ३+ पव तानी बहेत अछि ।

धी ना

धी धी ना

ती ना

धी धी ना



तान कणक

१ मात्रा । ३२,२ मात्राक रिताग ।

पहिन रिताग खाली, रौदक दु ठाँ भवन होगत अछि ।

पहिन मात्रा पब सम आर खाली, टाकिम आर डुठम पब तानी होगत अछि ।

धी धा त्रक

धी धी

धा त्रक

झन्झ-दीर्घ गणना

डुन्द दु प्रकारक अछि । मयिक आ रार्गिक । रेदमे रार्गिक डुन्द अछि ।

रार्गिक डुन्दक परिचय निख । एहिमे अक्षर गणा मात्र होगत अछि । हर्नतयुक्त अक्षरकेँ नहि गणन जागत अछि । एकाव उँकाव गवदि युक्त अक्षरकेँ ओहिना एक गणन जागत अछि जेना सहाय्यककेँ । सगहि अ सँ ह केँ सेहो एक गणन जागत अछि । द्विगणक कोना अक्षर नहि होगु । अथातः तीनठाँ रिन्दु मोन बाखु-
१. हर्नतयुक्त अक्षर-० २. सहाय्यक अक्षर-१ ३. अक्षर अ सँ ह- १ प्रत्येक ।

आर पहिन उँदाहव देखु -:

३ अक्षरक मेघ नहि मासत बहत रँवसि के=१+३+२+२+३+३+३+१=२० मात्रा

आर दोसव उँदाहव देखु ; पञ्चात्=२ मात्रा ; आर तेसव उँदाहव देखु

आर=२ मात्रा ; आर टाकिम उँदाहव देखु द्विष्ट=२ मात्रा

डुन्दारँछ बचना गद्य कहलैत अछि-अथवा ओ गद्य थीक । डुन्द माले भेन एहन बचना जे आनन्द प्रदान करव । अदा एहिमे ३ नहि रँवसि काली जे आखूक नर करिता गद्य कोष्टक अछि काका रेदक सारिनी-गायत्री मत्र सेहो शिथिल / उँदाव नियमक काका, सारिनी मत्र गायत्री डुन्द, मे परिगणित होगत अछि तकर चवटा नीचाँ जा कए होएत - जेना यदि अक्षर पूरा नहि भेन तँ एक आकि दु अक्षर प्रत्येक पादकेँ रँव । भेन जागत अछि । य आ र केव सहाय्यककेँ क्रमः ३ आ उँ नगा कए अलग कएन जागत अछि । जेना -रवणाम्=रवेणियम्
स्वः =स्वरः ।

आखूक नर करिताक सग हागकु / फलिका / हिकुक भेन मैथिली भाषा आ भावतीय, संस्कृत आश्रित निषि रारन्हा सरधिक उँगयकत अछि । तमिन डोडाँ मेघ सन्तठाँ दक्षिण आ समस्त उँतव-पश्चिमी आ गुरी भावतीय निषि आ देरणागरी निषि मे रँव स्व आ कष्टतप राख्खन रिधान अछि, जाहिमे जे निखन जागत अछि सेहो रँजन जागत अछि । अदा देरणागरीमे झन्झ “ग” एकव अग्रवाद अछि, ३ निखन जागत अछि पहिल, अदा रँजन जागत अछि रौदमे । अदा मैथिलीमे ३ अग्रवाद सेहो नहि अछि -यथा अछि ३ रँजन जागत अछि अ ह्रस्व ‘ग’ ड रा अ ग ड । दोसव उँदाहव निख -वाति -वा ग त । तँ सिद्ध भेन जे हिकुक भेन मैथिली सरोतमा भाषा अछि । एकठाँ आर उँदाहव निख । मन्त्रि संस्कृतक रिशेषता अछि, अदा की गलिमिमे सगि नहि अछि ? तँ ३ की अछि -आगम गोगाँ डूराड्सदएन्ड । एकव निखन जागत अछि -आग एम गोगाँ डूराड्स द एन्ड । अदा पाणिनि प्लि रिज्ञाणक आधार पब सधिक निखम रँगुनहि, अदा गलिमिमे निखरा कानमे तँ सधिक पाणन नहि होगत छै, आग एम केँ गुना आगम हललष्टकनी निखन जागत अछि, अदा रँजरा कान एकव प्रयोग होगत अछि । मैथिलीमे सेहो गथासंभर रिभक्ति शैलिसँ सठाँ कए निखन आ रँजन जागत अछि ।

डुन्द दु प्रकारक अछि । मात्रा डुन्द आ र्ग डुन्द ।



लेदमे रर्णवृत्तक प्रयोग अछि मात्रिक छन्दक नहि ।
 रार्णिक छन्दमे रर्ण /अक्षरक गणना मात्र होगत अछि । तर्नतयञ्ज अक्षरकेँ
 नहि गणन जागत अछि । एकाव उँकाव गलादि हाञ्ज अक्षरकेँ ओहिना एक गणन जागत
 अछि जेना सँहाञ्जअक्षरकेँ । सँगहि अ सँ ह केँ सेहो एक गणन जागत अछि । एकसँ
 रैनी माण कोना रर्ण /अक्षरक नहि होगत । मोठा-मोठी तीन्ठा र्निन्द मोन बाधु-

१ .तर्नतयञ्ज अक्षर-०

२ .सँहाञ्ज अक्षर-१

३ .अक्षर अ सँ ह- १ प्रत्येक ।

आरै गहिन उँदाहवण देखु-

३ अक्षरका मेघ नहि माणत बहत रँवमि के=१+३+२+२+३+३+१=१५

आरै दोसव उँदाहवण देखु

गश्तात=२

आरै तेसव उँदाहवण देखु

आरै=२

आरै चाकिम उँदाहवण देखु

द्विष्ट=२

द्विष्टा रैदिक छन्द मात अछि-

गायत्री, उँष्टिक, अष्ट्रुग, रूहती, गङ्गि, त्रिष्टुग आ जगती । शैव
 ओकव तेद अछि, अतिछन्द आ रिछन्द । एतए छन्दकेँ अक्षरसँ चिन्ह जागत अछि ।

जे अक्षर पुन नहि तेन तँ एक आकि दु अक्षर प्रत्येक पादमे रँठ । तेन जागत
 अछि । स आ र केव सँहाञ्जअक्षरकेँ फागि: ३ आ उँ नगा कए अनग कएन जागत अछि ।

जेना-

रवेणाम् रवेणियम्

स्वः =स्वरः

गुण आ वृद्धिकेँ अनग कए सेहो अक्षर पुन कए सकेत छी ।

ए =अ + ग

उ =अ + उँ

ए =अ/आ + ए

उ =अ/आ + उ

छन्दः शीघ्रमे प्रयाञ्ज 'ग्वक' आ 'नघ' छन्दक परिचय प्राप्त कर ।

तेवह छी स्वर रर्णमे अ,ग,उँ,म,नू ३ पाँट ह,स्व आव आ,ग,उँ,म,ए,एँ,उ,उँ, ३ आठ
 दीर्घ स्वर अछि ।

३ स्वर रर्ण जखन राजन रर्णक सँग जुड जागत अछि तँ ओकवासँ 'ग्विताक्षर' रँलेत अछि ।

क+अ =क,

क+आ=का ।

एक स्वर मात्रा आकि एक ग्विताक्षरकेँ एक 'अक्षर' कहन जागत अछि । कोना

राजन मात्राकेँ अक्षर नहि माणन जागत अछि -जेना 'अराक्' शब्दमे दु छी

अक्षर अछि, अ, रा ।

१ .सतछी क्षय स्वर आ क्षय हाञ्ज ग्विताक्षर 'नघ' माणन जागत अछि ।

एकवा उँपव U लिखि एकव सकेत देन जागत अछि ।

२ .सतछी दीर्घ स्वर आव दीर्घ स्वर हाञ्ज ग्विताक्षर 'ग्वक' माणन जागत

अछि, आ एकव सकेत अछि, उँपवमे एकछी छेष्ट - ।



३. अश्वत्थवा किरा बिसम्प्रायउ सभ अस्फव थक मासन जागत अछि ।
 ४. कोला अस्फवक रौद मयआस्फव किरा रौजन मात्र बहनामँ ओहि अस्फवकेँ
 थक मासन जागत अछि । जेना -अट, मर । एहिमे अ आ स दुनु थक अछि ।
 ५. जेना वार्षिक दुन्द / वृत्त रेदमे बारहाव कएन गेन अछि तहिना
 स्ववक पूर्ण कर्षमँ रिटाव सेहो ओहि थग सँ भेटैत अछि । सुन बीतिसँ ग्रा
 रिताउ अछि -१. उँदात २. उँदाततव ३. अश्वदात ४. अश्वदाततव ५. स्ववित
 ६. अश्वदाताश्ववउस्ववित, १. प्रचय) एकठा त्रुति-अनहत नाद जे रीना कोला
 टाँजक उँपेन होगत अछि, सेय सभठा अछि आहत नाद जे कोला रत्तुसँ ठकवउना पव
 उँपेन होगत अछि ।
 १. उँदात -जे अकावादि स्वव कर्षादि स्थानमे दुँध्र भागमे रौजन जागत अछि ।
 एकवा जेन कोला चेह नहि अछि । २. उँदातातव -कर्षादि अति दुँध्र स्थानसँ
 रौजन जागत अछि । ३. अश्वदात -जे कर्षादि स्थानमे अघोतागमे उँटावित
 होगछ । नीटाँमे तीर्यक चेह थटित कएन जागछ । ४. अश्वदातातव -कर्षादिसँ
 अरत नीटाँ रौजन जागत अछि । ५. स्ववित -जाहिमे अश्वदात बहत अछि किछ
 भाग, आ किछ बहत अछि उँदात । दुँध्रवमे ठाँठ रेखा थेटन जागत अछि, एहिमे । ६.
 अश्वदाताश्ववउस्ववित -जाहिमे उँदात, स्ववित किरा दुनु रौदमे होगछ, ग्रा
 तीन प्रकावक होगछ । १. प्रचय-स्ववितक रौदक अश्वदात बहनामँ अनाहत नाद
 प्रचयक, तानक उँपेति होगत अछि ।

१. पुराँटिकमे फेमसँ अग्नि, गन्द आ मोम पयमाणकेँ संरोधित गीत
 अछि । तदुगवास्तु आवणक काल आ महागान्नी आर्तिक अछि । आग्नय, अँद आ
 पायमाण परिकेँ ग्रामगेषा आ पुराँटिकक सेय भागकेँ आवणकगण सेहो कहन
 जागछ । समिति कर्षेँ एक प्रगतिगण कहत छी । २. उँतवार्तिक : रिप्रति आ
 उँतवगण सेहो कहत छी । ग्रामगेषा आ आवणकगणसँ मँद दुनि कय फेमसः
 उँहगण आ उँहगण कहलैछ -तदनुव प्रहक गण दमेवाव, मरमेव, एकह, अहिण,
 प्रायशित आ फुद परमे रँष्टन जागछ । पुराँटिक मँदक नगकेँ सवण
 क उँतवार्तिक केव द्विक, त्रिक, आ चतुष्टक आदि)२, ३, आ ४ मँदक समूह
 से एहि नय सभक प्रयोग होगछ । अघिकाणि त्रिक आदि प्रथम मँद पुराँटिक
 होगत अछि, जकव नय पव पुवा सुअ)त्रिक आदि (गाउन जागछ ।
 उँतवार्तिक उँहागण आ उँहगण प्रहक नगकेँ तीन रेव तीन प्रकारेँ गठैछ ।
 रेदिक कर्मकालमे प्रस्तार, प्रस्तारतव द्वावा, उँद्वीत उँदगातव द्वावा,
 प्रतिघाव प्रतिहातव द्वावा, उँगद्वर थुनः उँदगाह द्वावा आ निधान तीनु
 द्वावा मिति कय गाउन जागछ । प्रस्तारक पहिल हिकाव)हि, हूँ, हँ (तीनु
 द्वावा आ ३ उँदगाह द्वावा उँदगीतक पहिल गाउन जागछ । ग्रा पाँच भक्ति भेन ।
 हाथक द्वाद -हाथक द्वाद १.१. उँठा) प्रथम आँगव- (एक यर दुवी पव २.२. उँठा
 प्रथम आँगवकेँ छरैत ३.३. उँठा रीट आँगवकेँ छरैत ४.४. उँठा टाविस
 आँगवकेँ छरैत ५.५. उँठा पाँच आँगवकेँ छरैत ६.६. उँठा फूँठ उँठा
 प्रथम आँगवसँ दु यर दुवी पव १.७. सातम अतिथेव सामरेद +.१. अतिगीत
 मयद

ग्रामगेषागण -ग्राम आ सार्वजनिक सुन पव गाउन जागत छन । आवणक गेषागण -रण
 आ परिव्र स्थानमे गाउन जागत छन ।

उँहगण -मोमयाग एर रिमेय वार्षिक अरसव पव । पुराँटिकसँ संरहित
 ग्रामगेषागण एहि रिमिसँ । उँहगण आकि बहन्गण -रण आ परिव्र स्थान पव
 गाउन जागत अछि । पुराँटिकक आवणक गणसँ संरिध । नावदीग शिक्षामे



स्वार्थ)२३(।

३. तूतिरस्त्रः । तत् सरित्तुरलेणी । तर्णी देरन्ध्र धीमहि । मियो यो नः प्रदोदतात् ।
रैदिक भवि स्वार्थे आ देरताकेँ सेहो करि कहैत छथि । सम्पूर्ण रैदिक
साहिव एहि करि चेतनाक राख्य मूर्ति अछि । ओतए आधामे चेतना,
अभिदेरन्ध्रमे उर्ती भेल अछि, एकाँ ओकरा आभिभौतिक भायामे कप देन गेल
अछि ।

देरनागवीक अतिविकृत समस्त उतवभावतीस भाया लगान आ दक्षिणमे)तमिनकेँ
छोड़ि (सभ भाया रर्णमानाक कपामे स्वर आ कच्छतग आ य, व न र, श, स, ह केव
रर्णमानाक उगयोग करैत अछि । ग्राँ केव हेतु संस्कृतमे दोसब रर्ण ठेक
(छाद्गा पवम्पवामे एकव उँचावण नहि होगत अछि छथि छद्गा राजसलगी
पवम्पवामे खर होगत अछि -जेलो छाद्गा उँचावण सतुमि तँ राजसलगी
उँचावण सतुमिगुँ(, ग्राँ द्रव्य दीर्घ दू होगत अछि । सिद्धिबद्ध लेन
सेहो कर्म कर्म छह प्रकारक रर्ण मिथिनाम्बरमे प्रयुक्त होगत अछि । रैदिक
संस्कृतमे उँदात, अश्वदात आ स्वरित)कशिः कः कः कः (उगयोग तँ मराठीमे
ळ आ अर्छ र् केव सेहो प्रयोग होगत अछि । मैथिलीमे २)रिकावी रा अरग्रह(
केव प्रयोग संस्कृत जकाँ होगत अछि आ आग कालि एकव रैदनामे षागपक
स्वरिवाङ्माले द (दे२ केव रैदनामे)एहन प्रयोग सेहो होगत अछि छद्गा ग्रा प्रयोग
ओहि फाँ'ठमे एकठाँ तकनीकी नृणताक परिचायक अछि । छद्गा आकाव केव रौद रिकावीक
आरम्भकता नहि अछि ।

जेलो फावनामे अलिफ रँ से आ रोमलमे ए री सी होगत अछि तहिना मेष्टी-मेष्टी सभ
भावतीस भायामे निषिक तिम्रताक अद्वैत रर्णमानाक स्वरुप एके बड अछि ।

रर्णमानामे दू प्रकारक रर्ण अछि -स्वर आ रज्ज । रर्णक संख्या अछि ३४

जाहिमे २२ ठाँ स्वर आ १२ ठाँ रज्ज अछि ।

पहिल स्वरक रर्ण दैत डी -जाहि रर्णक उँचावामे दोसब रर्णक उँचावक
अपेक्षा नहि बहैत अछि, से भेल स्वर ।

स्वरक तीन ठाँ भेद अछि -द्रव्य, दीर्घ आ श्रुत । जाहिमे रज्जयामे एक मात्राक
समय नागन से भेल द्रव्य, जाहिमे दू मात्राक समय नागन से भेल दीर्घ आ
जाहिमे तीन मात्राक समय नागन से भेल श्रुत ।

मुनभूत स्वर अछि -अ ग ङ म नृ

पाणिनिँ पुरिक आचार्य एकवा समानास्कर कहैत छलाह ।

दीर्घ मित्रि स्वर अछि -ए ँ ओ ण

पाणिनिँ पुरिक आचार्य एकवा सन्धास्कर कहैत छलाह ।

नृ दीर्घ नहि होगत अछि आ सन्धास्कर द्रव्य नहि होगत अछि ।

अ ग ङ म एहि सभक द्रव्य, दीर्घ)आँ गँ ङँ (आँ श्रुत)आँ गँ ङँ ङँ (सभ गिना

कए १२ रर्ण भेल । नृ केव द्रव्य आ श्रुत दू भेद अछि)नृ३) तँ २ ठाँ ग्रा भेल ।

ए ँ ओ ण ग्रा टाक दीर्घ मित्रि स्वर अछि आ एहि टाकक श्रुत कप सेहो)ए३

ए३ ओ३ ण३ होगत अछि, तँ + ठाँ ग्रा सेहो भेल । भ२ गेल सभठाँ गिना कए २२ ठाँ
स्वर ।

एहि सभठाँ २२ स्वरक रैदिक कप तीन तबहक होगत अछि, उँदात, अश्वदात आ स्वरित ।

उँट भाग जेलो तारुँ उँपेल अकारादि रर्ण उँदात ग्राक होगत अछि आ तै

उँदात कहल जागत अछि ।

नीटाँ भागँ उँपेल स्वर अश्वदात आ जाहि अकारादि स्वरक प्रथम भागक

उँचाव उँदात आ दोसब भागक उँचाव अश्वदात कर्प होगत अछि से भेल



स्ववित ।

स्ववक दु प्रकार आव अछि, सामान्यमिक जेना अ आ निवर्णमामिक जेना अ ।

दत्तन निवृत्तः कुपो दातः । दत्त नाम्ना प्रकय द्वावा रिपाष्ट - रौस

धावक उत्तरवर्षिया ठै पव रौनरौवन, एतए गमाव भेन दात । अए प्रयासु तेनास

दात आदुदात भेन, अए प्रयासु होगत तै प्रया स्ववस

अन्नादात होगत । कपमे तेद नहि तेना पव स्ववमे तेद अछि । एहिसे सिह भेन

जे सामान्य प्रयास रक्षा सेहो शिष्टक सम्व उचावण करैत छान ।

स्ववितके दोसरो कपमे रूमि सकेत छी - जेना एहिमे अन्तिम स्ववक

तीव्रस्ववमे प्रकटावण होगत अछि ।

आरै राखण पव आहु ।

राखण ४२ ठी अछि ।

क ख ग घ ङ

च छ ज म ए

ई ई छ ह ण

त थ द ध न

प फ र त म

य व न र

ने य म

ह

य र न सामान्यमिक सेहो होगत अछि, यँ रँ नँ आ निवर्णमामिक सेहो ।

एकव अतिविकृत दु ठी आव राखण अछि - अन्वयाव आ रिमर्जनीय रा रिमर्जा ।

आ दूगुठी स्ववक अन्वयाव प्रयासु होगत अछि ।

रिमर्जनीय मूल रण नहि अछि, रवण म रा व केव रिभाव थीक । रिमर्जनीय

किछ धूमि तेद आ किछ कपभेदमँ दु प्रकारक अछि - जिहामुनीय आ

उपधानीय । जिहामुनीय मात्र क आ थ मँ पूर्ण प्रयासु होगत अछि, दोसव

मात्र प आ फ मँ पूर्ण ।

अन्वयाव, रिमर्जनीय, जिहामुनीय आ उपधानीयके अयोगराह कहन जागत अछि ।

उपरोक्त रण सभके जोड ४ ठी आव रण अछि, जकरा यम कहन गेन अछि ।

कँ खँ गँ घँ) यथा - पलिक क्री, चथ खूतः, अण् मिः, य घृष्टि(

पञ्चम रण आगाँ बहना पव पूर्ण रण सद्मे जे रण रीचमे उचावित होगत

अछि से यम भेन ।

यम सेहो अयोगराह होगत अछि ।

अ आ करञ्ज ह) अर्मयकत (आ रिमर्जनीय केव उचावण कष्टमे होगत अछि ।

ग ग चरञ्ज य ने केव उचावण तावमे होगत अछि ।

म ऋ ऌरञ्ज व य केव उचावण मुर्धामे होगत अछि ।

नृ तरञ्ज न म केव उचावण दाँतमे होगत अछि ।

उ ङ परञ्ज आ उपधानीय केव उचावण गुर्धामे होगत अछि ।

र केव उचावण उपवका दाँतमे अथवा केव सहायतमे होगत अछि ।

ए ई केव उचावण कर्ण आ तावमे होगत अछि ।

ओ ओ केव उचावण कर्ण आ गुर्धामे होगत अछि ।

य व न र अन्व राखण जेकाँ उचावणमे जिहामुनीय अन्वयाव भाग तावदि

स्ववके पूर्णतया स्पर्श नहि करैत अछि । ने य म ह जकाँ एहिमे ताव आदि

स्ववमे स्पर्श सेहो नहि होगत अछि ।

क मँ य धरि स्पर्श) रा स्पर्शक कावण जिहामुनीय अन्व द्वावा राह प्रवाह लोक

कए जोड जागत अछि (रण व मँ र अन्वःस्व आ य मँ ह स्पर्शक रण भेन ।



सब रक्षाक पाँचम र्षी अग्रनामिक कहलैत अछि कावण आन स्थान समाज बहिनो एकव
सबक नामिकामे सेहो उँटावण होगत अछि - उँटावणमे राह नामिका आ झूँह राँठे
रँहाव होगत अछि ।

अग्रनामिक आ यम केव उँटावण मात्र नामिकामे होगत अछि - आ ए सब नामिका
कहलैत अछि - कावण एहि सतमे झूँहवाँ रँद बहिन अछि आ नामिकामे राह रँहाव
होगत अछि । अग्रनामिक स्थान पव न रा म केव उँटावण नहि होगराँक चाली ।
जखन हमरा सबकेँ गण कवरौक गछा होगत अछि, तखन सकसमेँ जठराँधि धेवित
होगत अछि । नाति नगक राह लेगमेँ उँठैत मुर्बा धरि पहुँचि, जिलाक अग्रनामिक
भाग द्वारा निबोध बेनाक अग्रनामिक झूँहक ताँव आदि भागमेँ धरित होगत अछि आ
तखन र्षीक उँपेति होगत अछि । कसम बेनामेँ राह नादराण आ यैह गुँजित
होगत पहुँचैत अछि झूँहमेँ आ ओकरा कहन जागत अछि घोषराण, नादबहिन तँ पहुँचैत
अछि ग्रासमेँ आ ओकरा कहन जागत अछि अघोषराण ।

ग्रास अग्रनामिक र्षी बेन “अघोष”, आ नाद अग्रनामिक बेन “अघोषराण” । जाहि
र्षीक उँपेतिमे अग्रनामिक अग्रता होगत अछि से अछि “अग्रनामिक” आ जकव
उँपेतिमे अग्रनामिक रँहना होगत अछि, से बेन “महाअग्रनामिक” ।

कछैतप केव पहिन, तेसर आ पाँचम र्षी बेन अग्रनामिक आ दोसर आ चारिम र्षी
बेन महाअग्रनामिक । सगहि कछैतप केव पहिन आ दोसर बेन अघोष आ तेसर, चारिम आ
पाँचम बेन अघोषराण । य व न र बेन अग्रनामिक अघोष । मे य म बेन महाअग्रनामिक अघोष
आ ह बेन महाअग्रनामिक अघोष । सब होगछ अग्रनामिक, उँदात, अग्रनामिक आ स्रवित ।

तँ आरि नीखु मैथिली गजम । करिता, अकरिता, गद्य-करिता, गद्य सब जेन तर्क
उँगल्ल अछि । से मैथिली गजम सेहो अग्रनामिक कसमेँ रँहव)छन्द(मे सबन-रार्मिक,
रार्मिक आ मात्रिक छन्दमेँ कहन जखन चाली । जेना मोवठा, टोपाग छै तहिना
गजम छै.. उँदुमेँ ए तबक अग्रनामिक बेन.. अज्जाद गजमक नाममेँ.., कहनौक आरंभकता
ले जे ओ पूर्ण कसमेँ अग्रनामिक तँ गेलै.. ३.३९ अ.मेँ अग्रनामिक रँहव हाँ गजम आग
धरि लिखन जा बहन छै, हाँवमी आ उँदुमेँ सेहो रिना रँहवक गजम ले होग
छै.. गजममेँ भगवान धरि मज्जाक उँदु ओग जागत छै, ओग अर्थमेँ ओ उँदुव छै झूँह
रँहवक मागिनामेँ ओ रँहव कछैव छै, आ ए कछैवता ले अग्रनामिक गजमकेँथम केनकेँ आ
ले उँदुहाँवमीमेँ, मात्रा गिलास आ सहज अग्रनामिक गजममेँ एकठाँ बीतियेँ होग छै,
आ से ओकर रिशेयता छै, ले तँ जेव ए नज्मा तँ जेते..

3

मैथिली गजमशोम्-१३

“हमरा मासपष्टनपव मैथिलीक सन्नामित आलोचक श्री बमानन्द सा “बमानन्द” ओ राका
ओखन ओहिना अकित अछि जाहिमेँ ओ मैथिलीक वर्तमान गीत-गजमकेँ मर्दिय यने एरि
अर्थनामिक ओजाव कहिक२ एकव महल्लकेँ एकदम नकारि देल बहनि)सन्दर्भ-
मिथिला मिहिर, फरवरी-१९५३(; ...कोला आलोचककेँ एहेन ठोव जिम्मादावीरना
रङ्गरा देनौक की अधिकार ? भारतीय संविधानमे भाषाक स्वतंत्रता एकठाँ मौलिक
अधिकार छैक तँ ? ” (सिवावास सा “सबस”, दीपोसेर, १५/१०/९०; आरंभ, लोकसेवक आ



नामकिना(

रियोगी लोकलेद आ नामकिनाक एकठा दोसब आरुथमे निथे छथि – “हुन्दमोम्बक नियमपव आधारित होसरीक उपवास्ता एहिमे गजनकावकेँ गणा-नियमक स्वातन्त्र्यक अधिकार बहेत छैक ।” (!)

गजन कतेको ठुमँ कतेको रहबमे कतेको हुन्दमे निथन जा सकैए, ए मए अछि, हुदा गणा नियमक स्वातन्त्र्यक अधिकार ल मात्रिक गणामे छैक आ ल रारिँक गणामे ।

देरनेकब नरीन निथे छथि – “...गुनः डा बासदेर माक आलेख आएन । एहि निरङ्गमे दुष्टा अनङ्गन रौत ए लेन, जे गजनक पङ्क्ति लेन, हुन्द जकाँ मात्रा निर्धारण करए नगनाह...” ।

लोकलेद आ नामकिनामे गजन शुक्र हेरौसँ पहिल कएकठा आलेख अछि, मैथिली गजनपव कोलो सकावामेक छिप्पी तँ ले अछि ए सभमे, हँ हुदा समीक्षककेँ नाठी हाथे “ए सभ मैथिली गजन थिक, गजले ठा थिक” कहौपव रिरने करैत एहाव सभ अरथ अछि ।

हागकुमे मिनेरन आ ररिँक गिनाली अथेज्जी हागकु आबन्धिक लेखनमे ले भ२ सकन, देखन गेन जे ३/१/३ मिनेरनमे रहतवास अल्फारेष्ट आरि गेन, जापानीमे ओतेक अल्फारेष्ट ३/१/३ मिनेरनमे ले छन । मैथिलीक आबन्धिक हागकुमे सेहो ३/१/३ मिनेरनक अङ्ककणी करैत ज्योति टोषवी अणन करिता संग्रह “अटिस” मे रैसी ररिँक प्रयोग केनहि । तँ ह्य सनाह देनहँ जे मैथिली हागकु सबन रारिँक हुन्दक आधारपव निथन जाए जगमे द्रव्य-दीर्घक रिटाव ले हुअ । सयृतमे ११ मिनेरनरना रारिँक हुन्दमे लोकमे लोक गिना क२ ११ ठा ररिँ होग छै – जेना शिखरिणी, ररिँगए पतितम् मन्दाक्रान्ता, हरिणी, हाकिनी, नवदत्तकम् कोकिलकम् आ भावाक्रान्ता । से ३/१/३ मे ११ मिनेरन लेन ११ ठा ररिँ हागकु लेन गेन, से आरि ज्योतिज्जी सेहो न२ बहन छथि, ह्य सेहो न२ बहन छी आ गिरिब सा, गवा मल्लिक, उमेने मडन, बागरिनास माहू, सुनीन कमार सा सेहो न२ बहन छथि । करीगमे ह्य सनाह छन जे एतए सबन रारिँक हुन्दक प्रयोग समुद्र ले अछि, कावण एकव प्रावन्त दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ रा दीर्घ-दीर्घ-द्रव्य सँ होगत अछि से चाहे तँ द्रव्य-दीर्घक गिनाली आगत ररिँक हुन्दक प्रयोग कक रा मात्रिक हुन्दक । करीगक चतुष्पदीमे पहिल दोसब आ चरिम पाँती कहिया हाउ होगत अछि; आ मात्रा)रा रारिँकमे ररिँ(२० रा २५ हेरौक छली । कावण टाक पाँती टावि तबहक रहब)हुन्द (मे निथन जा सकैए से निश्चयकेँ आगाँ नमारेरौक आरथकता ले छै, हँ ए निर्णय करैए पडत जे टाक पाँतीमे रारिँक रा मात्रिक गणा पछति जे नी, से एहू हेरौक छली ।

गजनमे हुदा अहाँ रारिँक, सबन रारिँक रा मात्रिक हुन्दक प्रयोग क२ सकै छी, हुदा एक गजनमे दुष्टा रौतु गिन्नव ले कक । रिन हुन्द रा रहबक गजन अहाँ कहि सकै छी, समीक्षककेँ बुरा क२ आ नाठी हाथे; हुदा ओ गजन ले हएत, उर्दु/हावसीमे तँ हुमायवामे अहाँकेँ दुकेये ले देत । आ आरि जखन बोनिन सा, प्ररीण टोषवी प्रतीक, आशीय अनटिन्हाव, सुनीन कमार सा सन हरा गजनकाव अन्तर्जनपव एकठा छिप्पीक रौद सबन रारिँक हुन्दमे गजनकेँ संशोधित क२ सकै छथि तँ नामकिनारानी गजनकाव लोकनि किए ले क२ सकै छी ? मायाबन्ध मित्रि “गीतन” कहि आ गंगेने गुंजन “गजन सन किछ मैथिलीमे” कहि जे गनत पवम्भारकेँ जवाबि बथरौक निर्णय लेन छथि तकरा रौद हुमा जौ आ आशीय अनटिन्हाव जँ रिन हुन्द /रहबक गजन निथे छथि तँ एकरा ह्य मायाबन्ध मित्रि, गंगेने गुंजन आ नामकिनारानी अ-गजनकाव लोकनिक दुष्टभारे बुने छी ।

लोकलेद आ नामकिना:



आमेन्द्र आमेन्द्र मन्त्रक रौद ए मन्त्र मे कलाभन्द भष्ट, तावाभन्द रियोगी, डा.
देरशेकब नरीण, नरेन्द्र, डा. महेश, वमेश, बागटेटन "श्रीवज", बागभरोम
कागडा "भ्रमर", वरीन्द्र नाथ ठाकुर, रिभूति आनन्द, मियाबाग ना "सबम" आ
सोमदेरक गजन देन गेन अछि ।

कलाभन्द भष्ट

भोव आनर हमा दोसब उगासर सुकज

कबर नुतन निर्माण हमा रीनासर सुकज

सबन रारिकक अग्रसार गणा - पहिन पाँती-११ रपी दोसब पाँती- १५ रपी, जखन

सबन रारिकमे गणाक अग्रुव अछि तँ जस दीर्घ रिचावग जेराक मेहनति

रँटि गेन ।

मात्रिक गणाक अग्रसार - पहिन पाँती-२५ मात्रा, दोसब पाँती -२५ मात्रा,

मात्रा मिनि गेनमे आर जस दीर्घ गव छनी । पहिन पाँती

दीर्घ-जस-दीर्घ-जस-जस-जस-जस-दीर्घ-जस-जस-जस-दीर्घ-जस-जस-जस-जस-जस-जस

(एतए दुष्ट नगाताव जसक रँदना एकठा दीर्घ द२ सके छी, से दोसब पाँतीमे

देखर(। दोसब पाँती-

जस-हस-जस-दीर्घ-जस-जस-जस-दीर्घ -जस-हस-

जस-हस-दीर्घ -जस-हस -जस-हस-जस । रँदना एतए गाठ कएन

अक्षरक रौद फाट्टे छे गेन ।

तावाभन्द रियोगी

दर्र जँ हद केँ छेगन जख तँ आनि जखमे अछि

रँफ अगाव रँगन जख तँ आनि जखमे अछि

सबन रारिकक अग्रसार गणा - पहिन पाँती-१९ रपी दोसब पाँती- १५ रपी, जखन

सबन रारिकमे गणाक अग्रुव अछि तँ जस दीर्घ रिचावग जेराक मेहनति

रँटि गेन ।

मात्रिक गणाक अग्रसार - पहिन पाँती-२३ मात्रा, दोसब पाँती -२३ मात्रा,

मात्रा मिनि गेनमे आर जस दीर्घ गव छनी । दीर्घ)संश्रुतवकेँ

पहिल- (जस-जस-जस-जस-दीर्घ-जस-जस-जस-दीर्घ-दीर्घ-जस-दीर्घ-जस-जस-जस-दीर्घ-जस-जस-

जस ।)एतए

दुष्ट नगाताव जसक रँदना एकठा दीर्घ द२ सके छी, से दोसब पाँतीमे देखर(।

दोसब पाँती -दीर्घ) संश्रुतवकेँ पहिल- (जस-दीर्घ-दीर्घ एतए

फाट्टे गेन ।

देरशेकब नरीण

अँठा जेर समय-छफ, सहजहि एहि आँखि रीच

नरका प्रभात जेन, फाँटि कोला ठाँनि जेर

सबन रारिकक अग्रसार गणा - पहिन पाँती-१९ रपी दोसब पाँती- १३ रपी, जखन

सबन रारिकमे गणाक अग्रुव अछि तँ जस दीर्घ रिचावग जेराक मेहनति

रँटि गेन ।

मात्रिक गणाक अग्रसार - पहिन पाँती-२३ मात्रा, दोसब पाँती -२३ मात्रा,

मात्रा मिनि गेनमे आर जस दीर्घ गव छनी ।

जस-दीर्घ-दीर्घ-जस-जस-जस-जस-दीर्घ-जस-जस-जस-दीर्घ-जस-दीर्घ-जस-दीर्घ-जस-दीर्घ-जस

(एतए दुष्ट नगाताव जसक रँदना एकठा दीर्घ द२ सके छी, से दोसब पाँतीमे

देखर(। दोसब पाँती -जस-जस-दीर्घ -रँदना एतए गाठ कएन अक्षरक रौद

फाट्टे छे गेन ।



बलराम

मिकनू तँ मज्जिकऽ मज्जिकै

रामन नी ठोकि रँजालै

सबन रारिकक अग्रसार गणना - पहिन पाँती-१० रर्षि दोसब पाँती - ९ रर्षि; जखन

सबन रारिकमे गणनाक अग्रसार अछि तँ जखन दीर्घ रिटारणक जखनक मेहनति

रँटि गेल ।

मात्रिक गणनाक अग्रसार - पहिन पाँती-१२ मात्रा, दोसब पाँती-१४, मात्रा

गणनाक अग्रसार अछि तँ जखन दीर्घ रिटारणक जखनक मेहनति रँटि गेल ।

डाँ महेन्द्र

चलेछ आदमी सदिखन चलेत बहरा नए

जरीलेछ आदमी सदिखन कलेस बहरा नए

सबन रारिकक अग्रसार गणना - पहिन पाँती-१५ रर्षि दोसब पाँती- १५ रर्षि ।

रूदा तेसब शैबमे दोसब पाँतीमे १७ रर्षि आरि गेल अछि । मात्रिकमे सेहो उँपका

दू पाँतीमे क्रमसँ २४ आ २३ रर्षि अछि ।

बमेश

जखन-जखन माओनक ठाम पडैए

हमर छाती मे गज्जनक ठाम रँटैए

सबन रारिकक अग्रसार गणना - पहिन पाँती-१७ रर्षि दोसब पाँती- १७ रर्षि ।

रूदा दोसब शैबक पहिन पाँतीमे १३ रर्षि । मात्रिक मे सेहो उँपका दू

पाँतीमे २२ रर्षि अछि । रूदा जखन-दीर्घ गणनामे दोसब शैबमे ३ मात्रा आ

जाए ।

३ दोस शैब गज्जनकावमे सेहो देखबामे अछि ।

एकव अतिविश्व बलरामनाथक “गज्जन हमर हथियार थिक” , सिगाराम ना “सबस”क

“थोडै आनि थोडै पानि”, बमेशक “नागहोली” आ तारामन्द रियोगीक “अपन हाक

माओनमेसँ किछु कितारै नाही हाथे मैथिली साहित्यमे गज्जन संग्रहक कपमे

माहिन अकादेमीक सरे आर मैथिली निष्ठेलेखक उँतब जयकाष्ठ मिश्र

संग्रहमे आरि गेल अछि, किछु ए सहितक गतिहासक अगिला संग्रहमे आरि

जाएत । अबरिन्द ठाकुरक गज्जन सेहो पत्र-पत्रिकामे गज्जन कहि छपि बहन अछि जे

अही पत्रिकाकेँ आगाँ रँटैत अछि ।

जँ ३ सब गज्जन ले छी तँ पद्य तँ छी आ तग कपमे एकव रियेचन तँ हेरौके छी ।

ए क्रममे बलरामनाथ ठाकुरक “लेखनी एक रँग अलक” देखु । मैथिली गज्जन

संग्रहक कपमे ३ पोथी आगाँ २३ रर्थ पुरि आएन । सोमदेव आ ज्ञानक संग हिनको

गज्जन नानकिनारादक परिभाषामे ले अछि । गज्जन ले रूदा पद्यक कपमे एकव

स्थान मैथिली साहित्यमे स्थापित छै, रूदा ३ आन रर्षित गज्जनक तथ्याकथित

संकलनक रियामे ले कहन जा सकैए ।

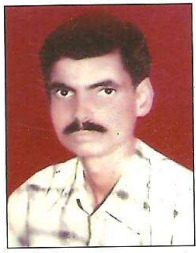
एक छन्द, एक रौशनी, एक धूँ सुनयराजे

नियौ ३ एक गज्जन, आ ३ सुनयराजे

(बलरामनाथ ठाकुर “लेखनी एक रँग अलक”)



এ বচনাগৰ অংশ মন্তব্য ggaj_endra@videha.com পৰ পঠাও ।



রাজেন

গজেন সমীক্ষা (স্পেষালিস্ট)

১

রাজেন গজেন: পুৰাণ দেহক নৰ চেহৰা

ঘড়ীক শ্বেত্ৰম সন স্মৃতিত জিহগীমে স্থিৰতা ভাগন ফিৰে। ল দেহ স্থিৰ আ ল চিত্ত। কেথলো ক তঁ অগলো ঠব-ঠেকাৰ চেৰাএন সন নগৌএ লোককে। জঁ চিত্তনশীল ভ তাকৰ তঁ ঠকাএন সন অস্বভৱ হএত। এহন স্থিতিমে কোলো নৰ মোচ বা নৰ অৱধাবণাকৈ ঘোচা-তীবীমে হঁসি জেৱীক আশীকা ঘেৰি লে। স্মৃদা বক্ষামেকো ভ ৰএহ নৰ অৱধাবণা, নৰ প্ৰয়োগ, নৰ বচনা সাহিত্যকে জিয়া ক বখৰীক ক্ষমতা দেখুৱে।

পদ্ম ৰিধাক একঠা কণ গজেন অংশ আ সমাজক সৌন্দৰ্যৰোধ কবুৱে। হামিক, বসিক ভ প্ৰেমমে ওমবা উৰ-ডুৰ কবিত অংশ ৰাষ্ট পৰ সমবন জাগত দেখাও। গজেনক ৰঠেত লোকপ্ৰিয়তা আৰু অংশ ৰিস্তাব তকে। আৰু গজেন সত ভাৱমে চতবন-পসবন জা বহন অছি। এ ৰীচ চৰ্চিত হুৱা গজেনকাৰ আশীষ অলচিহাব জী গজেনক ক্ষেত্ৰমে একঠা নৰ অৱধাবণা বখনহি। সাহিত্য একাদেমী আ মৌলোবগক সন্যস্ত তল্লৱধাৰমে ভেন কথা গোষ্ঠী ২৪ মাৰ্চ ২০১২কে অলচিহাব জী ৰাজেন গজেনক অৱধাবণাকৈ স্পষ্ট কবিত কহনহি " জেনা পদ্ম ৰিধা বা অলচিহাব ৰাজেন সাহিত্য নিখন জাগত অছি তহিলা গজেনমে মেহো ৰাজেন মল্লৱিভাৰণ পৰ আধাৰিত ৰাজেন গজেন নিখন জা। " ২৪ মাৰ্চ ২০১২ কে প্ৰস্তুত কএন গেন ৰাজেন গজেনক পৰিকল্পণাক ৰিধিৱত ঘোষণা অলচিহাব আখব আ ৰিদেহক হেমসৰূক ৰসন পৰ ২৭ মাৰ্চ ২০১২কে হোগতে ৰহুত বাস পৰিপক ৰাজেন গজেন সত সৌমা আএন। ঘোষণা হোগতে এ ৰিধাক পহিন বচনাকাৰ ভেনাহ আশুতোষ মিশ্ৰা জে কী লগানসঁ ডুখি স্মৃদা যদা-কদা নিখোত ডুখি। দৌসৰ স্থান পৰ ভেনাহ জগদাৰ্ণদ মা মল্ল আ তকবা ৰাদ তঁ অমিত মিশ্ৰা, কৰী মা, নৱন শ্ৰী পকজ, টদন মা, মিহিব মা, স্মৃদা জী আ আন গজেনকাৰ সতহঁক ৰাজেন গজেনক প্ৰকাশনিক কমা ৰনি গেন। আ এঁ তবকে এ অৱধাবণাক প্ৰথমে চৰণ ঠৌস ভ সৌমা আএন, জাহিসঁ একব মজগুত ভৱিষ্যক আকলন কএন জা সকে। সগে একব পূৰ্ণ সঁভাৱনা মেহো জাগন দেখাও।

অলচিহাব আখব দ্বাৰা ৰাজেন গজেনক মহত্বকে দেখেত " গজেন কমলা-কোমী-ৰাগমতী-মহাৰ্ণদ সন্মান" অৱগম দেৱীক ঘোষণা মেহো কএন গেন। আ ৩ মাৰ্চ মাসসঁ প্ৰভাৱী মানন গেন। আ শ্ৰীমতী প্ৰিতী ঠাফব জীকে স্মৃতাচমনকতী ৰাএন গেন। এখন ধৰি জুন মাস ধৰিক প্ৰাৰ্থিতক চৰণক চমন ভেন অছি জে এনা অছি-----

১) মাৰ্চ মেন শ্ৰী মতী কৰী মা জীকে চুনন গেন।

২) অশ্বিন মেন নৱনশ্ৰী পকজ জীকে চুনন গেন।



३) मग जन अगित मिश्री जीके चुनन गेन ।
 ४) जून जन टुनन सा जीके चुनन गेन ।
 संप्रति बिदेह द्वारा प्रस्तुत रीन गजन विशेषांक एकव आधावके मजगुत कवरक
 दिनामे एकठा सनेउ प्रयास अछि जहिमे एकव विकासक संभावना अछि बहए ।

ए बचनाव अगन मंत्र ggajendran@videha.com पब गछि ।



१. श्रीराम शर्मा गजन संगीता (पेठाव) २. श्रीराम शर्मा गजन संगीता (पेठाव)



१



श्रीराम शर्मा (१० ठी आखन)

गजन संगीता (पेठाव)
 शर्मा जीक आखन बिदेहक एक संघे डन तकवा रीद अखन आखन सेहो
 देन गेन । रतिमान समयमे आखन गठ-अस गहिल शर्मा जीक आखन देखू
 जे अखन आखन देरी जन माँगन गेन सहाति केव रीद आखन डन—

“आखन, ओ कोला गहिल आखन नग छै । हमरा जलेत ओ आखन हम तहिया लिखल बली जहिया
 गजनन रैमी काज नग होगत छलै । अखन सन्दर्भमे ओ आखन रीद हलुक भऽ सकै छै ।
 आ रतिमानमे कल मेहनति कऽकऽ लिखन अखन सेहो हम नग छी- सहातिरक
 कावणे । तँ हम नग बाखू से तँ नग करै, रुदा कमस कम हम आखन रीद उल्लख कऽकऽ बाखू
 देखै तँ भऽ सकै छै जे डगनाक रीद हम दोयक भागी कल कम रैनी । धन्यवाद”

१

मैथिलीमे गजन आ एकव संवचना

कग-वर्ष एरि चलि-प्रगति देखनाग गीत आ गजन दुनु सहोदर बुझागत छैक ।
 रुदा मैथिलीमे गीत अति प्राचीन कार्यालयी कगमे छलैत आखन अछि, जखन कि
 गजन अपेक्षागत अखन नरीन कगमे । अखन दुनुकेँ एकठा देखनाग एना नलीत
 छैक जेना गीत-गजन कोला हलुक मेनामे एक-दोसरासँ रिड्डा गेन डन । मेनामे
 भोतिआगत-भोति गजन अखन गहिल गहिल छै । गजन ओरुने गनन-रिड्डा आ जखन रैम



जुआन भ२ गेन तँ अपन रिङ्गडन सहोदरकेँ तकेत गीतक गाय मिथिलाधरि सेहो पहुँचि गेन । जखन दुनूक भेटै भेलैक तँ किछु समय दुनूमे अपविचयक अरुआ रसन बहलैक । मिथिलाक माँथेमे पौसाएन गीत एकवा अपन जगह कट्ठा कब२ आएन प्रतिद्वन्द्वीक रूपमे सेहो देखनक । ह्मदा जखन दुनू एक-दोसराकेँ नगमँ हियाक२ देखनक तखन रूमरौमे अएलैक-आहि ते रौ, हमवासभमे एना रैव किएक, हम दुनू तँ सहोदरले छी ! तकरा रौद मिथिलाक धवतीपर डेगमँ डेग गिना दुनू पूर्ण आनन्द

भारै निबन्धन आगाँ रैठेत बहन अछि ।

गीत आ गजनक स्वरूप देखनापर दुनूक स्वरुपमे अपन पौसाएन जगहक स्वीयताक अरुआ पुनः देखरौमे अरैत अछि । गीत एना गेलैत छैक जेना बरबिबन्धी फुनकेँ सँतक२ सजाउन सेजोछै हो । मिथिलाक गीतमे काँठेसन रात जँ कहन जागछ तँ फुलसन मोनायम भारमे । एकवा हम एह तबलेँ कहि सकैत छी जे गीत फुनक नतमापार चलेत लोककेँ भारक डुँटागपरि पहुँचैत अछि । एहिमे मिथिलाक लोकस्वरुप एर माणरीय भार प्रहृत भूमिका निर्राह करैत आएन अछि । जहि भाषाक गायियोमे बिदम आ मधुवता होगत छैक, ओहि भूमिपर पौसाएन गीतक स्वरूप कठोर-धवाह भग्न नहि सकैत अछि । कही जे गीतमे तँ नानीपुनः फुनजकाँ ओ तकरा रिगुमान छैक जे मछ खागत कान जँ गवमे काँठे अछैकि गेन तँ तकरा गनाक२ समाप्त क२ दैत छैक ।

गजनक रंग-रौनि देखरौमे तनहि गीतेजकाँ स्वरुप गेलैक, एहिमे गीतमन नवमाहर्षि नहि होगत छैक । उमवाह मरुभूमिमे पौसाएन भेलैक कावणे गजनक स्वरुप किछु उमरु होगत छैक । आ कछुव गेल्लासभक सभ्रतिमे रौनी बहन अछि, तँ एकव स्वरुपमे “जरेँ कछु न चलेगी तो ये तनराव चलेगी” सभ तेज तेरवरैनी देखरौमे अरैत छैक । यद्यपि गजनकेँ प्रेमक अतिरिक्त सभ्र माध्यम मानन जागत छैक । गजन कहितहिदेवी लोकक मन-मस्तिष्कमे प्रेममाय मोहोन नाचि उठैत छैक, एहि रौतमँ हम कतहु असहमत नहि छी । ह्मदा गजनमे प्रेमक रौत सेहो रौन धवगव अन्दाजमे कहन जागत छैक । कहरौक तापेस जे गजन तकराविजकाँ सीधे रौन दैत छैक नम्रकेँ । नागनपठेमे रौनी नहि बहैत छैक गजन । मिथिलाक सन्दर्भमे गीत आ गजनक एकरा तबलेँ जँ अन्तर्ब देखरै२ चली तँ आ कहन जा सकैत अछि जे गजन फुनक प्रेमपरापरि तकराविजकाँ करैत अछि, जखन कि गीत तकरावि सेहो फुनजकाँ उठैत अछि ।

मैथिलीमे सँथामेक कएँ गजन आनहि रिवाजकाँ तनहि कम निखन जागत बहन हो, ह्मदा ग्रांथक दृष्टिँ आ हिन्दी आ लंगानी गजनमँ कतहु कलकौ मुस नहि देखरौमे अरैत अछि । एकव कावण गेलो भ२ सकैत छैक जे हिन्दी, लंगानी आ मैथिली तीनु भाषामे गजनक प्रेममे एकरा ह्मदार्थमे भेन छैक । गजनक त्रीगणेशे करौनिहव हिन्दीक भावतेन्दु, लंगानीक मोतीबाम भञ्ज आ मैथिलीक ग. जीरन सा एकरा कानखन्दक सप्रामत छथि ।

मैथिलीयोमे गजन आरै एतरी निखन जा चुकन अछि जे एकव सँवलाक मादे किछु कहलाग दिनहिमे डिग्री रावरैजकाँ गेलैत अछि । एहलामे यदाकदा गजनक नामपर किछु एहला पाँतिसत पत्रपत्रिकामे अरुआ जागत अछि, जकरा देखनापर मोन किछु मन्त्राण भग्न जागत छैक । कतेकोछोठेक वला देखनापर एहला रूमगत अछि, जेना ओलोकनि दु-दु पाँतिरना तुकरुन्दीक एकठा समुहकेँ गजन रूमैत छथि । हमरा जलैत ओलोकनि गजनकेँ दुनूमे देखिक२ ओहिमे अपन पाँतिर छुटैर शुक क२ दैत छथि । जँ मैथिली साहित्यक ग्रन्थकेँ आमोत क२ चलेत कोला रात्रि एकरेव दु-चाँठि गजन ठमसँ देखि निखै, तँ हमरा जलैत ओकवामे गजनक सँवलाप्रति कोला तबहक द्विधा नहि बहि जएतैक ।

तँ सामान्यतः गजनक स्रष्टाकेँ नर जिज्ञासुक लेन जँ किछु कहन जाए तँ रिना



कोला पारिभाषिक शैक्षिक प्रयोग कएल हम एहि तबहँ अगल रिटार बाथः छहैत छी-
गज्जनक पहिने दु पाँतिक अन्त्याश्रयाम गिनत बहैत छैक । अन्तिम एक, दु रा
अधिक शैक्ष, सभ पाँतिमे समिया बहलपव मासी शैक्षिण पहिने शैक्षिण अन्त्याश्रयाम
रा कही तुकरान्दी गिनत बहलपव छली । अन्त्य दु-दु पाँतिमे पहिने पाँति
अन्त्याश्रयाम दृष्टि अन्त्याश्रयाम बहैत छैक । अन्त्या दोसव पाँति रा कही जे पछिना
पाँति स्थायीरना अन्त्याश्रयामकै पछिअरैत छलैत छैक ।

अ तँ तेन गज्जनक अन्त्या-काणक संवत्सराश्रयाम रात । अन्त्या थानि अन्त्या-काणक धाण
देन जखन आ ओकव कथा जँ गोष्ठीअगत रा शैक्षिणगत बहि जाए तँ देखलामे गज्जन नगिने
मथार्यमे ओ गीजन भः जागत छैक । तँ प्रश्रुतिकवाये किछ बहल, किछ
रोमाञ्चक सभ सम्पानन छैक-जकाँ गज्जनक शैक्षिण तान-मात्राक प्रवाहमाय साँटमे
थटाथट रैलैत छल जखनक छली । गज्जनक पाँतिकै अर्थरताक हिसारै जँ देखल
जाए तँ कहि सकैत छी जे हःबक सिवाँडबजकाँ अ छलैत छल जागत छैक । हःबक पहिने
सिवाँडब जाहि तबहँ धवतीक छाती टरिबक ओहिमे कोला टिज जलमाओन जा सकल
आधाव प्रदान करैत छैक, तहिना गज्जनक पहिने पाँति कम्पना रा रियररतुक उठाव
करैत छैक, दोसव पाँति हःबक दोसव सिवाँडबक कायशिलीक अन्त्याश्रयाम करैत पहिनेमे
थमाओन रीजकै आरंभक मात्रामे तोगल दःकः प्रः आगु रैठःरौक माझ प्रशिक्ष
करैत छैक । गज्जनक प्रहल दु-पाँति अन्त्याश्रयामे स्रतल बहैत छैक आ
एक-दोसवक सभ तानामे स्थापित करैत समग्रमे सेहो एकठा रिलिख अर्थ
दैत छैक । एकव दोसव तबहँ एहना कहल जा सकैत छैक जे गज्जनक पहिने पाँति
कणसारसँ निकालन नालाना नाला बहैत छैक, दोसव पाँति ओकव निर्दिष्ट आकावदिस
रैठःरौक जेन पडः रना घणक सम्पानन छैक तेन करैत छैक ।

गीतक सृजनमे सिद्धहस्त मैथिलसभ खोडः रंग-रानि रूमितहँ आमासीसँ गज्जनक
सृजन कः नलैत छथि । सम्वतः तँ आवसथमाद सिंह, बरिन्दनाथ ठाकुर, डा.
महेन्द्र, मार्कण्डेय प्रसादी, डा. गङ्गेश प्रशिक्ष, डा. रूचिनाथ मिश्र
आदि मुनतः गीत क्षेत्रक रचित बहैत गज्जनमे सेहो कनय छलैलनि । ओह
सिद्धहस्त रचितसभक जेन हमर अ गज्जन लिखल तौव-तविकाक मादे किछ कहल
हालापद भः सकैत छैक, अन्त्या नरसिन्हासभकै तविसक अ किछ सहज रूमाओक ।
मैथिलीमेकनय छलैलिनवसतमा प्रायः सभ एक-आध हाथ गज्जनमे अज्जलैत पाओन
जेना छैक । जनकरी रैद्यनाथ मिश्र “यात्री” सेहो “भगवान हमर अ मिथिला”
शीर्षक करिता पूर्णतः गज्जनक संवत्सराय लिखल छथि । अन्त्या सिवायाम मा “सवस”,
स. काननन्द भट्ट, डा. राजेन्द्र रिमल सभ किछ साहित्यिक थैली गज्जनकावक

कगमे छलैत जागत छथि । ओना सोमदेव, डा. केदारनाथ नाथ, डा. तवाणन्द
रियोगी, डा. वामदेव धीबज, रौरी रैद्यनाथ, डा. रिभूति आनन्द,
डा. धीबज धीव, अज्जलैतमाय नमिनी, वमेश, रैफर्न रिदेह, डा. वामदेव
मा, वमिश जलकधरी, पी. निवाणन्द मिश्र, देवशेखर नरीन, श्यामसुन्दर
मिश्र, जगदीश नरन, जियाँडबहमाय जाहरी, अजितकमाय आजाद, अशोक दत्त
आदिसमेत कतेको स्रष्टाक गज्जन मैथिली गज्जन-समावकै रितुति दैत आएन छैक ।
गज्जनमे महिना हस्तलक रैत कय देखल जागत छैक । मैथिली विकास समद्वारा
रैठवागत पत्रक पूर्णिमा १३, २०३१ टैतक अई गज्जन अईक कगमे रैठवाएन छैक ।
सम्वतः ३४ छैक अन्त्या-अन्त्या गज्जनकावक एकठाम तेन समायोजनक अ पहिने रागगी हएत ।
एहि अईमे डा. शैलानिका रमा एक मात्र महिना हस्तलक कगमे गज्जनक
सभ प्रश्रुत तेनीह छैक । एही अईक आधावपव लपानीमे मैथिली गज्जन स्रष्टा
दुछैक समालोचनामेक आनख सेहो लिखल छैक । पहिने सभ ज्ञाकारीद्वारा
काङ्तिप्रव २०३२ जेठ २१ गतेक अईमे आ दोसव डा. वामदेव वल्लभद्वारा



गोवर्धन २०३२ हाश्व २७ गतेक अर्कमे । डिष्टिफ्ट आगहू गजन सङ्गण रँहवाएन
हेत, दूदा तकव ज्ञानकारी एहि लेखककेँ नहि ड़ैक । है, मियावाम मा "सबस"क
सम्पादनमे रँहवाएन "लोकनेद आ नानकिना" मैथिली गजनक गभुरा आ न्नकप द२
रँहूत किछु हरिडाक२ कहैत पाउन गेन अछि । एहिमे सबसमहित तबानन्द रियोगी आ
देरनेरुव नरीनद्वारा प्रस्तुत गजनसङ्गणी आलेख सेहो मैथिली गजनक
तकोनीष अरन्ध्रधरिक साङ्गीपाङ्ग छि प्रस्तुत कवरौमे सफल भेन अछि ।
समग्रमे मैथिली गजनक रियोगीमे अ कहि सकेत छी जे मैथिली गीतक खेतसँ प्राप्
हनगव माष्टमे श्रारताक दृष्टिँ मैथिली गजन निवन्तुव रँठि बहन अछि,
रँठि एबहन अछि ।

२



आशीष अचरिहाव (१० ठाँ आलेख)

गजन समीक्षा (पेष्टाकसँ)

आशीष अचरिहाव (१० ठाँ आलेख)

१

पहवा-अधपहवा

आग हम पठ्ठहूँ रौरा रँहवाथ प्रत " पहवा गमाणपव " जे की १९८९मे प्रकाशित
भेन आ एमे हन मिला तीस ठाँ गजन अछि । देखान देरै रिताजि नैहमे सँभन अछि आ
अ गजनकाले द्वावा कएन गेन अछि आ हमवा लोकनि सेहो ए गवस्रवाक अग्रयागी छी ।

तीसठाँ गजनकेँ छोट्टाँ ए संग्रहमे आबनी प्रनाद सिंह, गोपाल जी मा गोपेशि,
सोमदेव, मार्कण्डेय प्ररामी, ज़ीरकाष्ठ, बमार्णद मा बम, ड़ात्रार्णद सिंह मा
उ रिभूति आर्णद ज़ीक सङ्गिष्टि छिप्पणी सेहो अछि । अ गजन संग्रह मात्र ३२
पन्नाक अछि । आशर्च्य ए गप्पाक जे १९८९मे प्रकाशित भेनाक रौराजुदो ओहि समयक
आग गजनकाव (जे की एथला ज़ीरित आ बचनावत ड़ुथि) ए गजन संग्रह कोला छटाँ ले
केल ड़ुथि । ज़ौ लौवसँ अहाँ १९८९-२००८ रँना कानखन्ड देखरँ तँ रँहूत कन्ना ठाम
हिनक रा हिनकव पौथीक छटि भेठैत आ ओहमे अर्धिकाशि छटि अ-गजनकाव (दूदा
अगना रिधामे प्रतिष्ठित) बचनावत द्वावा भेन अछि ।

की कावण छै जे एकठाँ गजनकाव दोसव गजनकावक छटाँ ले कवए छहैत अछि । खवाग रा
नीक रौदक रियग भेन दूदा छटाँ तँ हेरौक छली । हमव गजन एहन, हमव गजन ओहन ए



तबहँक चर्चा रहूत भेटैत ह्रदा एकठा गज्जनकाव दोसव गज्जनकावक चर्चा ले कबत । आखिब
 किह ? रा एना कहु जे गज्जनकावक चर्चा के कबत कथाकाव की नाँककाव आ की आष ।
 जूँ ज सभ कवरौ कबता तँ ओहण समयमे जखन की गज्जन पूर्णिकपेण रिकसित भ क
 देखाव भ ज्ञाएत तखन । ह्रदा प्राबन्धिक कानमे तँ स्वर्ग एक गज्जनकावकेँ दोसव
 गज्जनकावक चर्चा कव पडैतहि, आलोचना आ समीक्षा कव पडैतहि तखन आलो
 आलोचक सभ गज्जनपव निखरौक प्रयास कबता । जूँ प्राबन्धिक कानमे अहाँ मोटि लेरौ
 मात्र हमरे गज्जन चर्चा योग्य दोसवक ले तखन अहाँ गज्जन नीखु की आष कोला रिधा
 ओकव रिकस ले रहत । मात्र प्रबल गज्जनकाव सभमे एहण रौमारी ठे से ले नर
 गज्जनकाव सभ मेहो ए रौमारीकेँ पौसल छथि । नरमे देखी तँ टटल मा, बाजरी वंजण
 मिथि, पंकज टोपरी नरन श्री, जगदार्णद मा मय, अगित मिथि आदिमे
 आलोचना-सालोचना-समीक्षा निखरौक प्रतिभा छनि ह्रदा ओकरा उगयोग ले करै छथि ।
 आरँ हमरा नग ज प्रम अछि जे जूँ ज सभ केकरो चर्चा ले कबथिह तँ हिनका
 लोकनिक चर्चा के कबत । आरँ ज सभ जकव कहता जे हम सभ स्नातः स्वाय बच्चा करै
 छी तँह हमर समीक्षक कोला जकवति ले ह्रदा हमरो रूमन अछि, हुनको रूमन
 छहि आ सभकेँ रूमन ठे जे सहितकाव केखला स्नातः स्वाय बच्चा ले करै
 छे । केकरो ल केकरो लेन ओ बच्चा जकव बटे छे.....खस क एहण
 समयमे जखन की हलक बच्चाकाव अण्णा आगकेँ प्रगतिशील आ जलरादी घोषित करै अछि ।
 हमरा रूमन कथित स्नातः स्वाय रँगा बच्चा जलरादी आ प्रगतिशील भेए ले सकैए ।
 काव प्रगतिशील आ जलरादी बच्चा जलता लेन निखन जाग छे स्नातः स्वाय लेन
 ले । हमरा रूमन आले रिधाकाव जकाँ प्राबन्धिक दोसव गज्जनकावकेँ गज्जनक दिना
 रँगार पडते । हँ रौदमे रहूत सभर जे आलो रिधाकाव सभ गज्जन आलोचनापव हाथ
 टनारथि ह्रदा शुक्र तँ गज्जनकावकेँ कव पडैते । सभ नर-प्रवाण गज्जनकावकेँ ए
 दिनामे मोटोरक चाली । हलक पोथीमे नीक रा खराप बहे छे ह्रदा जूँ चर्चा ले
 कवरै तँ ओ मोमा कोला आएत । हमरा जलैत एक गज्जनकाव द्वारा दोसव गज्जनकावक
 आलोचना ले कवरौक पर्वपरा जे सियाबाम मा सबस जी द्वारा शुक्र कएन लेन तकवा
 टटल मा, बाजरी वंजण मिथि, पंकज टोपरी नरन श्री, अगित मिथि आदि नीक
 जकाँ रहत । बहन छथि । आ अतः ज त्रिविद्य लेन खतबलाक सारित रहत । ह्रदा
 ओम्हकानि जी हमर कथनक अपराद छथि । ओ जतरा मलायोगसँ अपन गज्जन नीखे छथि ततरा
 मलायोगसँ ओ दोसवक गज्जन पठर ओकव आलोचना समीक्षा करै छथि । हमरा जलैत
 ओम्हकानि जी मैथिली गज्जनक पहिल आलोचक-सालोचक-समीक्षक छथि (रहबहाउ
 कानखन्ड रँगा) । टटल मा, बाजरी वंजण मिथि, पंकज टोपरी नरन श्री, जगदार्णद
 मा मय, अगित मिथि आदि ओम्हकानि जीसँ प्रेका न क कससँ कम रँथमे एकठा
 गज्जन पोथीक आलोचना निखथि तँ मैथिली गज्जन नीक दिनामे आरँ ज्ञाएत । नर गज्जनकावकेँ
 रहूत रौमारी दगिह लेरँ पडैतहि तखन गज्जनक दिना सली हेते । आ जूँ गज्जनक
 दिना सली भेलै तँ रूमन जे गज्जनकावक दिना मेहो सली भ जालै । ओना हम ज जकव
 कह चारै जे हवा लोकनि ए रँहसमे समय ले रँवरौद करी जे के आलोचना केनाह आ के
 ले केना । जे भेलै से भेलै ह्रदा आरँसँ शुक्र भ जेरौक चाली ।
 आरँ हमरा लोकनि आरँ रँगार रँगनाथ जीक प्रतिपव । प्रति थिक गज्जन आ तँह हम एकवा
 तीण भागमे रँठैर--

१) ब्राकवण पक्ष २) बाया पक्ष, आ ३) तार पक्ष

तँ पहिले देखी ब्राकवण पक्ष । ए संग्रहक कोला गज्जनमे रँपरित ले अछि । मल
 पूवा-पूवी ज संग्रह रँरँहव गज्जन संग्रह थिक । किछ उदकाव देखु । पहिल ए
 संग्रहक पहिल गज्जनक मतना आ तकव रौद ओकव दोसव मेव देखु----

एक रँव लेखक नजवि शेषण हम आसन छी

२१२-१२२-१२-१२२२२२



रा २१२-१२-२२१२-१२२२२२
सौमे सभासँ हम सदति सतधन छी
२२२२२२-१२-१२२२
रा २२२२११-२२१-१२२२

अ भन मतना आ एकव दुनु तबहै होमए रँना मात्रा फ्य अहाँ सभहँक सामनाये
अछि । कहनक मतनरँ जे मतनाये रँनरृत ले अछि । आरँ कल एही गजनक दोसब शैव
देखी---

सभ दिन हम मोह निशामे सुतन बहलौ
२२२११-२२२२२२२२

बर्थ-जँजानमे हम जग गमायन छी
२१२२-१२२२-११२२२

रा २१-२२१२२१२-१२२२

तँ हवा लोकनि अ देखि बहन छी जे गजनमे रँनरृत ले अछि मल गजन रँनरृत हाउ ले अछि ।
आ अ हानति प्रायः तीसो गजनमे अछि । कोना गजनक कोना शैवक दुनु पाँतिये तँ
रँनरृत आरँ जागए ऋदा ओकव आगु-पाछु रँनाये ले । जेना एकठाँ उदाहरण देखु । अ
उँनतीसग गजनक मतना थिक--

भोव भागन जेना दुगहब देखि कऽ
२१२२-२२२-१२२-११

गाम गामो ल बहलौ शैव देखि कऽ
२१२२-२२२-१२२-११

तँ हमरा लोकनि अ देखनहुँ जे ए मतनाये तँ रँनरृत अछि । ऋदा एही गजनक आगुक
शैव देखु---

आगत गवरी जखन नहि गामिये गडऽत
२२२२-१२२२-१२-१२

हेते खेती ल छुट नहब देखि कऽ
२२२२२२२-१२२-१२

आरँ अहाँ सभ अगल रँमि सके छि जे गडऽरडऽी कत छै । संग्रहक तीसो गजनमे अ
रँनाबी छै । किछ लोक कहि सके छथि जे तँ सके जे शोअर ओहि समयमे हिन्दी
गजनमे प्रचलित माविक छन्दमे लिखल हेत । तँ हमर कहँ जे माविक छन्द
गजनक छन्द होगते ले छै आ दोसब गप्प जे ओ उदाहरणमे देन शैवक मात्राकै
जोडऽि गहो देखि देखु जे माविक छै की ले ।

बाकबणामे मात्र रँनर (रँनरृत) ले होग छै काहिया आ वदीह सेहो होगत
छै । ए संग्रहक वदीह ठीक अछि (काव वदीह अपविरतित होग छै तँ --) । ए
संग्रहक अघिकनि काहिया ठीक अछि मात्र किछ काहिया गनत अछि । आ हमरा

बूनेत ओग समय (१९५५) केव हिमारेँ अ रँनरृत रँडऽका उँगल्लि अछि । जखन की आग
२०१३मे एहन स्थिति अछि जे गजनपव एतेक चर्चक रँनरौ महल गजनकाव सभ काहिया
एहन सबन रँनरुमे गनती करी छथि । हमरा हिमारेँ रँनरौ रँनरुनाथ छी ए जेन रँनरुग
केव पात्र छथि । आरँ देखी किछ गनत काहियाक सूटि जे ए संग्रहमे अछि---

दोसब गजनक मतना---

सगडऽ । किये रँनरन छै गामक निमाणपव

पहवा कोना नगयलौ लोकक गमाणपव

ए मतनाये काहिया शोअरक हिमारेँ काहिया भेन--- " अ " न्ववक रँग

माणपव" । ऋदा एकव रँनर आन-आन शैव सभमे फ्यमिः " गमाणपव ", " ज्ञाणपव",

"पुवाणपव ", " दगाणपव ", " ऋवाणपव ", " नादाण पव", " तुहाणपव" आ



"प्रपापव" अछि । (जँ ए गज्जमे पव रित्रि ले बहते तँ काहिया ए मतनामे काहिया शोत्रक हिमारे काहिया होगते--- " ए " स्ववक र्ग 'मान' र्ग-र्ग जँ मतनामे "मिमापव" केव रौद जँ " जापव" आरि जगत तेत ए गज्जक सत काहिया एकदम सही त जगत । आरि हमरा रिशिम अछि जे गज्जक जापकावक र्ग पाठक सत सेहो र्मि गेन तेत जे गडरिडि कत छै)। ठीक एत गडरिडि ए र्गहक गज्ज सखा 16,13,19 आ 27मे सेहो अछि । तहिना गज्ज सखा दमके देखु । ए गज्ज रिना वदीक अछि (रिना वदीक तँ गज्ज त सके द्द रिना काहियाक ले)---

गहिन शैव अछि--

का एकवा दयोक नहि छैक

ए अछि र्हिवा ओ अछि र्क

आन शैवक काहिया अछि--मोक, थोक, लाक, आलोक आदि । काहिया शोत्रक हिमारे छैक केव काहिया, थोक, लाक, आलोक , आदि । द्द ए शैवमे छैक केव काहिया अछि र्क जे की गत अछि ।

आरि आरि कल ए र्गहक भाषा पकपव । भाषा तँ ए र्गहक मैथिली थिक द्द गज्ज सखा ७मे काहिया र्मारे के छक्कमे एहना काहिया न लेनथि जे की हिन्दीक फिया अछि आ मैथिलीमे मान्य ले अछि । गज्ज सखा ७ केव मतना देखु---

रिक्कुरव कोन रौठ दुनियाँ जा बहन छै

सए काय सुठ कीतल गा बहन छै

ए गज्जक आन शैवक काहिया सत अछि-- पा, था, छ, रौ (मुँह रौ), आ

आरि ए देखु जे एतेक हिन्दी फियामे सत छुगछी फिया मैथिलीमे मान्य

छै-- जा एरि था । रौद रौकी एत पवि मान्य ले छै । हमरा हिमारे अग्रह

हिन्दी फियाके प्रयोग कवरि भाषाके दूधित कवरिक छेछा अछि । तथकथित

प्रगतिशील गज्जकाव नरेन्द्र एही प्रकारक भाषाक प्रयोग करि छथि आ ए लेन हम

ले रौरी र्गनाथ जीक समर्थन करि छी आ ले नरेन्द्र जीक । हँ, एतरी कहरीमे

हमरा कोना मोक छै जे नरेन्द्र जी अगल १००मे १३.२१ गज्जमे एह भाषा

प्रयोग करि छथि तँ रौरी र्गनाथ १००मे १०मे । एना ए ठाम ए जाणरि रोक

हएत जे एह काहियाक प्रयोग कवरि अछित ले छै र्गरे की भाषा र्दलि जेरिक

छाली । जँ नरेन्द्र जी रा रौरी र्गनाथ जी ए काहिया सतक प्रयोग अगल

गामक रा गडि सी गामक मैथिलीक जोनहा कगमे गज्ज नीथि कथि तँ ए काहिया सत

रिक्कुर सही होगत । हम रौरी र्गनाथ जीक उगवमे लेन गेन गज्ज सखा ७क

मतनाके ए कगमे देखा बहन छी---

भाग केन दुनियाँ जा बहनगा

साँट कालि न्छी गा बहनगा

(आन शैव पाठकक कपणापव छोडन जागए)

आरि एह अगल अग्रत क सके छि जे काहिया तँ एह हिन्दीक छै द्द फिष्ट एरि

प्रारहणी त गेन छै । शोत्रके सत र्म एतरी देखरीक छै । ले तँ भाषाके

दूधित होगत देवी ले मागत । जँ ए काहिया सतक प्रयोग मैथिली क जोनहा कगमे

रा टंगावा, द्दकपव, सीतामठि, र्गुसवाय, र्शोनी ए सावखंड रौन मिथिना

केवक भाषाक र्ग कवरि तँ गज्जक कणा सेहो लेते आ मैथिलीक सेहो । भाषाक

सर्गमे एकछी आर गप्प ए र्गहक अरिगि गज्जमे मैथिलीक टरत कग (मल

गाम-घवमे रौज रौना कग) प्रयोग लेन अछि जे की मैथिली गज्ज लेन श्रुत अछि ।



है, एतेक अपेक्षा हम रौरी रौनगाथ जौसँ जकब केल छल जे ओ पूर्णियाक
 छथि त हुनक बचनमे पूर्णियामे रौजन जागत मैथिलीक स्वरूप बहत । जौ ए
 अभावपब देखी ओ सँग्रह कल हमरा निवाशि केनक (ओ हमर रातिगत आलोचना अछि,
 गजनक ब्राकवर्ष हवाक देखन जाए एकवा) । जेना की उगले गणित क टुकन छी जे
 गजनकाव स्वर्ग शेट्टेमे रिताञ्जि सठैरौक पक्षमे छथि आ हमरा हिमारे ओ मैथिलीक
 जेन नीक । आ अन्तमे आँउ ए सँग्रहक भार पक्षपब । मैथिली साहित्यमे " भार "

सभसँ सत्ता छै । जकवा देखु मे भार केव बाँवनि पकडौँ साहित्यिक रैतकी पाव
 कलै छथि । तँए ए सँग्रहक सभ गजनक भार पक्ष उन्नत अछि । आ ए पक्षपब हमर कोला
 कथन ले बहत । काबि जखन सभ पक्ष हमरी कहि देरै तखन तँ पाठकक कटि खमे भ
 जेरौक डब बहत तँए पाठक संग आन सभ गोष्टसँ अन्वेषण जे रौरी रौनगाथ प्रत "
 पहवा गमाणपब " नामक गजन सँग्रह पठथि आ अगल-अगल रिचाव देखि । जिनका ओ शोथी
 कोला कावपरमे ले उगल्लै भ बहन छथि मे ए लिखपब जा क एकव पी.डी.एफ फागत
 डाउनलोड क एकवा पठथि

। ओ डाउनलोड रिक्लू त्रि अछि मल साहित्यमे प्रयोग होमए रौना " भार " सँ
 रँहूत रौनी सत्ता ।
 कल ककु, जे गोष्टी भार जेन तबसँ हेता तिनका जेन मात्र किछु शैव हम
 देखारैए चाहै (उन्नतसम गजनक आठम शैव)
 बाति-दिन रँडआ खाली कमेल्ली स्वप्न
 कियेक पठःते फ्रिकेठक नहव देखि कः
 ए शैवकेँ पठः आ तखनक संग एखनका समयकेँ देखु । कोला हर्क ले भेलैए ।
 पहिल बेडियोमे रौरी ले देन जाग छलै फ्रिकेठक समयमे आरि केरैन नाँस कठैरा
 देन जाग छै । पठः गणव फ्रिकेठक की असर छै मे एके शैवमे देखा जेन छथि शोष ।
 पठः गणव कि ए ओ फ्रिकेठ तँ आन छोट-छोट खेनकेँ सेहो नाश क देनक । शोष ए
 शैवक माध्यमे सेहो प्रेक्षण दिखरैत छथि । एही प्रकारक स्वरुत हृदा सभकेँ
 रौरी रौनगाथ अगल गजनमे लेल छथि जे की आन शोषक गजनमे दूबर्त अछि । भार
 केव ए चर्चमे १५ गजनक अंतिम शैव कहल रिना गुवा ले हएत---

कहियो जौ मोन पडः अप्पन अतीत जौरन
 रँस आँधि मुनि दुनु कनिये नज्जा निग
 ए शैवकेँ पठः आ एकव मतनरँ निकान् । सँहना हेलैले कही आ नगले कही । एएह
 भेलै गजनन जकवा रौरेमे कहन जाग छै जे गजनक शैव सीधा कलेजमे नलै छै । जौ
 एकेसम गजनकेँ देखी तँ निश्चित कसँ ओ रौन गजन अछि (रौन गजन बहिरौ
 राख जेन ओतेरँ प्रामाणिक अछि) आ ओजपूर्ण सेहो अछि-

छोडः अगल कष्टकेँ आ उदव रँगु तैना
 गाँधी स्वभाव लहकक अरताव रँगु तैना
 अग सँग्रहमे त्रिगाव बसक गजन सेहो अछि जे की पाठकक जेन छोडः जागए । तँ



आमा अछि जे आरि अहाँ मउ जकब एकवा पठरै ।

२

हिंष्टि पत्रिकाक संपादक आ गजलकावस अंगीन

पहिल गजलकाव सभसँ-----

कोला पत्रिकालेँ अपन गजल पठैसँ पहिले अ देखु जे अहाँक गजल कोन रँहबमे अछि । आ से देखि लेनापव तकव नाम नीखु आ सँगे-संग ओहि रँहबक मात्रा क्या लिखरै छै कव । कावा अलग-अलग पत्रिकाक अलग-अलग रतनी आ ओहि हिमारेँ प्रकाशित केल अहाँक गजलक रँहब छुँष्टि जाएत । एकवा हम एकछी उदाहरणसँ देखाएँ । मानु जे अहाँ कोला रँहबक हिमारेँसँ " क " शिष्टक प्रयोग केनहुँ जकब मात्रा क्या छै U "जन्म-दीर्घ" द्वाद कतेको पत्रिका एकवा " क " रँहा देताह जकब मात्रा क्या छै UU "जन्म-जन्म" रा । "दीर्घ" (दूछी नघु गिना एकछी दीर्घ) । तँ कतेको पत्रिका एकवा खाली " क " रा " क " नीथि देताह जकब मात्रा क्या छै U "जन्म" । आरि अहाँ अपन रूमि सकेत छी जे रतनी रँदल मत्रा क्या छुँष्टि जाएत । मल रँहब छुँष्टि जाएत आ गजल रँहब भए जाएत । एँछा हम खाली एकछी शिष्टक उदाहरण देनहुँ अछि द्वाद अलको शिष्टक अ नागु छएत । तँ गजलक सँगे-संग रँहबक नाम आ ओकव मात्रा क्या जकब नीथी । सँगहि-संग गजल रा मोरो-मोरीक अग्र बिवा कोला पत्रिकालेँ पठरैत कान संपादक जीसँ अ आग्रह कक जे जँ हूका अपन रतनीक हिमारेँ गजल लेँ रूमहि तँ गजल लेँ भागथि । कावा जखन रँहब छुँष्टि जेतै तँ ओ गजल रँकाव । छुँष्टि जाएत तँ कोला कर्मक ले । जँ गजल सबन रारिक रँहबमे अछि तैओ अ समझा अएत । उदाहरण लेन मानु जे अहाँ " नहि " शिष्टक प्रयोग करैत एकछी गजल सबन रारिक रँहबमे नीथि संपादक जीलेँ देनहि द्वाद ओ संपादक जी अपन रतनीक हिमारेँ ओकवा " ले " नीथि देनहि । मतनर जे सबन रारिक रँहब सेहो छुँष्टि गेल । तँ गजलकाव सभसँ रिशेय आग्रह जे ओ हिंष्टि पत्रिकाक संपादकलेँ अनिरार्य कणे लिखथि जे जाहि स्वरूपमे गजल छै ताली स्वरूपमे गजल प्रकाशित हेरौक छाली लेँ तँ प्रकाशित लेँ कव ।

आरि हिंष्टि पत्रिकाक संपादक सभसँ-----

जँ संपादक महोदयमे कनियो रूमरौक शिष्टि हेतहि तँ उगवका विरवणसँ हूका गजलक सँरमे रारलविक समझा रूमि जेतहि । तँ संपादक जी लेन हम रिशेय लेँ लिखरै । रँस हमरै एतरेँ आग्रह कवरहि जे अपन रतनीक पक्ष नए ओ गजलक सँ रँकाव लेँ कवथि । जँ हूका अपन रतनीकेँ वखरौक छहि तँ ओ गजलकेँ लेँ भागथि । या एकछी उपाय गेलो भए सकेत छै जे ओ गजलकेँ भागथि आ सँगे-संग अ लष्ट दए देखि जे " अ रतनी गजलकाव रिशेयक रतनी थिक, पत्रिकाक नहि " । अतिकाक संपादक अनलकासु जी अपन पत्रिकामे एहन लष्ट भाषि लेखक रिशेय आ अपन पत्रिका दूषुक रतनीक बक्का केल छथि । एकछी आव गप्प करिता जकाँ पाँतिकेँ सछी कए भागर गजल पवपवाक बिकछ अछि । सँर-सँर एक पल्लक दु भाग रा दु पल्लक दु भागमे गजलकेँ भागर सेहो गजल पवपवाक बिकद अछि । एकछी गजल दए बहन छी बाजीर बक्कन मित्रि जीक जाहिसँ अ



पता आगत जे एकठा गजनक विभिन्न शैवक रीटमे कतेक जगह बहराक छली-----

गजन

कथला किछु रौत रूमन कक मोषक
धवकन दिन बाति रैनन कक मोषक

अ जे सिमकन त नता पता सुननक
आहाँ हरियाद सुनन कक मोषक

छोहक मावन त घड्ी घड्ी तड्गन
मवहन रैन घार भवन कक मोषक

कहरो ककरो जूँ कवर त के रूमन
सगे रैन मीत बहन कक मोषक

गारी बाजरीर मदति गजन लहक
ततरा धरि छह सुहन कक मोषक

2222 112 1222

शीर्षक द क गजन भागरी रेकाव कावण गजनक शीर्षक ले होग छै । टूँकि एकठा
गजनमे जतेक शैव होग छै ओतेक नियम बहत छै गजनमे तँए शीर्षक देरीक परगवा
ले छै । हम अपन एकठा गजन दए बहन छी जालिँ अ स्पष्ट हएत जे ए तबीकामँ गजन
ले प्रकाशित करीक छली-----

गजन

ओकर हाथमँ छन अछि देह
सदिखन गम गम हुन अछि देह
प्रेमक उचासन गिनन छैक
दू ठी घाँक पुन अछि देह
कोना छनि सकटे गजन आर
देहक तँ प्रतिबुन अछि देह
गोमदा सिंगनन छै मोष

छप्पा ओ अड्छन अछि देह
एँठाँ अलछिहान छिहान
सत देहक समुन अछि देह
माता एम-222-2212-21 हलक पाँतिमे

ए तबीकामँ भागरी गनत थिक । एहन कपमँ गजन प्रकाशित कवर परम्परा बिकछ
अछि । गजनमे सदिखन दूठी शैवक रीटमे जगह करीक छली । ओना हिन्दीमे सेहो
करिता जकाँ पाँति सँठा क गजन प्रकाशित कएन जागत छै अद्वैत एकव मतनर ले जे
दोसब ओनाबमे खसत तँ हमाँ सत खमि गड् ।



अनुवाची संपादकक हेतुमे मलैत गजल

किछु मास पहिल हम छिष्ट पत्रिकाक संपादक आ गजलकाब सभसँ एकठा अगल लेल बलि । अ अगल मैथिलीक रचनी आ आ रचक सभसँमे छल । ए अगलक डिक्शनमे गजल श्री नामक रात्रि कहनाह जे ठीके कहे छी, एना कए क रचत संपादक गजलक आश घाटि ले छथि । ताहि पब हम कहलै जे " बिदेह"क संपादककें छोट किनको रचक लेल छथि । ताहि पब रचकक हमार मल्लिक नामक एकठा पाठक कहनाह जे बुझायत अछि जे ...""Ashish Anchinhari जी सभ मैथिली पत्रिकाक संपादक लोकनिक लेल पबका नय टुकल छथि । मैथिली गजल मे अगलक योगदान अनुवाची आ मीनक पाखर जेकाँ अछि, जहिया कहियो रा जतय कतओ मैथिली गजलक छटा हेतय ओतय अगलक नाम निर्मलदेह सभ सँ पहिल आ आदरक संग लेल जायत । ह्मा एना निर्मा लेलाय कतेक उचित ? आलोचन करी सगे संग निर्मा स' मेहो रचिह्मा ह्मा लेल गग कहर जे गजलक रीते मे हमरा ओतले रचन अछि जतेक कोना गजल के रचन लेतेक, किछु रचनी कहा लेल ह्यो त एहि छिष्टाकें छिष्टा देलैक' तकरा रौद हम रचन जीकेँ सरोधित करैत लिखनहूँ जे..... हमर नाम लेल जाए की ले लेल जाए से रियस ले छै । रचन एहि रीतकें छै जे गजलक आ मैथिली रचनीक रारनरिक समयाक हविछै । से उगब पठि कए रचन लेल हएत अछै । जहाँ धरि निर्माकें गग छै । ओ आदमी उगब निर्भर छै । हम गजलक लिखन आ लिब स्वरूप छै छी आ ओह लेल हमरा जँ किनको प्रसंगी रा थिह्मा कबए पठित तँ हम कवरै । " आ तकरा रौद रचन जी लिखना जे..... " हमर छिष्टाकें अहाँक आलेखक लेल नय अछि अगलक छिष्टाकें सभसँ मे छल । " ताहि पब हम ह्मा लिखनहूँ जे..... " हमर छै मी सभसँमे कहनहूँ अछि आ ह्मा कहर जे..... जहाँ धरि निर्माकें गग छै । ओ आदमी उगब निर्भर छै । हम गजलक लिखन आ लिब स्वरूप छै छी आ ओह लेल हमरा जँ किनको प्रसंगी रा थिह्मा कबए पठित तँ हम कवरै । " आ ह्मा हम रचन जीकेँ सरोधित करैत लिखनहूँ जे.....--" आ जे मी गग छै तकरा कहनाह हजे की । जँ अछै कोना एह संपादकक नाम रचन हो जे बिदेहक ले लेल आ ओ रचन रचैत लेल तनिक नाम प्रसंगी सहित देल जाए । " ताहि पब रचन जी लिखना जे....." एहि रीत के निर्णय कबय रचन हम के जे कोन संपादक के कतेक लेल छथि जखन हम पहिल सभ कय देल छी जे एहि रियस मे हमरा कोना लेल नय, हमरा जे बुझायत से कहनहूँ । "..... आरँ कल आरँ पात्र सभ पब । गजल श्री कमलमोहन टुलु जीक रौदक छथि आ एखन कमल मोहन टुलु... पठनाई प्रकाशित " घब-रौद" नाम पत्रिकाक संपादक मडनमे छथि आ पत्रिकाक लेल सामग्री पब लिहके निर्णय मात्र होगत अछि । आ रचन जी पाठक मात्र छथि ।

आरँ आरँ कल " घब-रौद"क नर अक पब मल अछि-जून २०१२ रचन अक पब । ए अकमे जे संपादक महदोय अगल जे प्रदेखना से रचन कवरै योग्य ले । सभसँ पहिल तँ देखु जे सुबेन्द्रनाथ आ अवरिन्द ठाकुर जीक रचन रचन ६-६ठा गजल प्रकाशित लेल । अ रौदमे गजल अर घाट-रीव घाट रचन रौदगी अछि । सुबेन्द्र नाथ जीक गजलमे एखना कफिया गडरौद अछि तँ अवरिन्द जी रचक नाम पब हवि बहन छथि । एही अकमे योगदान लेल जीक " गीत " शीर्षकसँ छै वचना



हुगल अछि । अ आशुचर्य रैना रात छै जे योगार्णव लीवा झीक अ दुनु बच्चा गजल छै
झुदा संपादक ठकवा गीत कहि बहल छथिन्ह । अ कोन प्रकाशक संपादकीय दायित्व
छै । हमरा रूमल घब-रौहवक संपादक अछिन्ह तँ छथिन्ह सगे-सग लीन भारणसँ
सेहो भवल छथि । काव्य योगार्णव लीवा झीक अ उगलौल गजल गुवा-गुवा अवररी रौहवक
पावल कलैत अछि । सगे सग संपादक अगल मूर्धताकै छनते दोसब गजलक मकछा
पाँति गाँव क देल छथिन्ह । आ हमरा रूमल संपादक अ काज जामि-रूमि क लेल
छथि । काव्य हलका अ रौहवक लै छथि जे केँ रौहव हाँक गजल लिख । अ दुनु
गजलक कँ द्य बहल छी आ देखु जे संपादक कोना रौहवानी लेल छथि । पहिल गजलक
मतलक पहिल पाँति अछि----

" किमल पव घुमै अछि तमरा "

देखु जे एँमे आँठ छी दीर्घकेव प्रयोग अछि आ अ शैवक हलक पाँतिमे निगलन गेल छै ।

आँ जखन अहाँ दोसब गजल पाव आँएँ तँ माथ घुमि जाँत । संपादक महोदय एहीठाम
रौहवानी लेल छथिन्ह । कल शैवसँ कँ देखु-----पता नागत जे " छी हलमल "
बदील छै आ " मोव", भोव, "कोव" आदि कहिया छै । संपादक महोदय अ गजलक एकछा
पाँति छोडि देल छथिन्ह । जहि काव्य अ 11 पाँतिक गजल रैनि गेल अछि आ किछ
लै पता नागि बहल छै । अ संपादक महोदयकै गजलक सँधमे लल बहिलहि तँ
एहल प्रकाशक गनतीसँ रौहल जा सकै छल । अ अँतसँ अ गजलकै देखी तँ एकब रौहव
एना छै-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ+दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ+दीर्घ आ हलक
पाँतिमे अ कय पावल कल गेल छै । आ हमरा रूमल संपादक अ तबहँक अलगतासँ
मैथिली गजलक भरिया गर्तमे जा बहल छै । आथिब जिनका मेहनति लै कवरौक छथि
से गजल लिखरौक लौल किँक कलै छथि । सहिल केव रौहव बस रिधा छै मेहनति लै
कवए रैना सँ दोसले रिधामे हाथ अजुमारिथि तँ नीक ।

4

मैथिली गजलमे लोथ गजलकावक तुलिका

तँ कल आँ देखी ब्याकवालीन गजलक पवसवारकै । टुँकि मैथिली रिश्रिक एकमात्र
भाषा अछि जे की हिन्दीक नकल करै । अ हिन्दी मैथिली बच्चाकाव सँभलै दल
बहिलो वाति कहते तँ मैथिली बच्चाकाव सेहो दलक रौहवा वाति कहते काव्य
मैथिलीक बच्चाकाव रिश्रि कपे माणसिक गुनाम छथि हिन्दीक । प. जौरल ना,
आनन्द ना आयाचार्य, करिरव सीतावास ना, मधुप जी जहि मैथिली गजल के नीक
जकाँ रिश्रुत केनथि तकरा मात्र हिन्दी नकलक कावणे १०के दमेकमे न्न.
मायाबन्ध मिश्र जी अथल्ल कपसँ कहि देना जे मैथिलीमे गजल लिखरँ समुह
लै । ठीक ठीसँ एक-दु रँथ पहिल हिन्दीमे नीबज द्वावा अ कथल देन गेल छल
जे हिन्दीमे गजल समुह लै अछि । नीबज जी हिन्दीमे गजलक नाम गीतिका
देनथिन्ह आ गीतिका केव तर्जुन मैथिलीमे गीतन नाम भेल । एँठाम हम कह छल
जे " त " सकैए हिन्दीमे नीबज जीसँ पहिल गजल लै छल हेतै तँ ओ एहल कथल
प्रश्रुत लेल हेता झुदा मैथिलीमे तँ १९०३सँ गजल लिखल जाग छल आ ओहो पूर्ण
कपेना ब्याकवा सनात । तखन मायाबन्ध जीक अ कथल केव मतलक की ? आब किछ
छट कवरौसँ पहिल मायाबन्ध जीक पोथी " अराधन " तुलिकाक किछ अणि पठूँ (अ



सोथी १९५५मे मैथिली चेतना परिवर्द्ध सहस्रमा द्वारा प्रकाशित भेल)। पृष्ठा ७
 पब मायानन्दजी निथे छथि -- " अराधुवक आवस्य अछि गीतमसँ । गीत नातीति
 गीतमसँ अर्थात् गीत केँ आन रँगा भेल गीतम । किन्तु गीतम पबसवागत गीत नहि
 थिक, एहिमे एकठो सब गज्जन केव सेहो नलीत अछि । गीतम गज्जन केव सँ रँधन (सँ
) केँ स्वीकार नहि करैत अछि । कगयो नहि सकैत अछि । भायाक अपन-अपन रिशैयाता
 होगत अछि जे ओकव सँकृतिक अक्षरकेँ निर्मित होगत अछि । हमर उद्योग अछि
 मिश्रणसँ एकठो नरीन प्रयोग । तेँ गीतम ल गीते थिक, ल गज्जन थिक, गीतो थिक
 आ गज्जो थिक । किन्तु गीतित्वक प्रधानता अतीत, तेँ गीतम । "
 उपरका उद्घाटनमे अहाँ सब देखि सकै छिँ जे कतेक दोखान स्थापना अछि ।
 प्रयोग एहँ नीक गप्प द्वाद अपन कमजोरीकेँ भायाक कमजोरी रँगा देरँ कतहँसँ
 उचित ल आ हमरा जलैत मायानन्द जीक ए रँडका अपवाद छनि । जँ ओ अपन कमजोरीकेँ
 अंकित गीतम केव आवस्य कबतहि तँ कोना रँजाए गप्प ल द्वाद हूँका अपन कमजोरी
 ल मैथिलीक कमजोरी स्मृता होनहि । एकरे कहै छै आँथि बँहैत आँहव । ए मोन
 बाखरँ रँमी जकबी जे २०११मे प्रकाशित कथित गज्जन सँग्रह " रँहूँकिया प्रदेमे
 मे " जे की अवस्थित ठाँव द्वारा निधित अछि तद्धमे ठीक एह गप्पकेँ
 दोहवाँन होलै ।

मायानन्द जी अपन कमजोरीकेँ माँपैत जे गीतम केव आवस्य केना तेँ पाँडा हमरा
 रँमल तीन ठी कावण भ सकैए---

१) स.मायानन्द मिश्र जी हिन्दीक अक्षर भङ्ग छन ।

२) स. मायानन्द जी मैथिली गज्जनक सँग्रहमे अन्तर्गती छन ।

३) स. मायानन्द चतुर्वागसँ अपन-आप के मैथिली गज्जनमे स्थापित कवरौक योजना रँहनाह ।

कह रँगा कहै छै आ प्रचार छोड़ छै । कथनक विरोध भेलाग मुँक भेल ए आ विरोधक

सम्प मुँक भेल रँडका मज्जाक । मज्जाक ए जे विरोध कव रँगा सब सेहो ब्राकबलीन

गज्जन निथे छन रा एखला निथे छथि । ओहि समयक रँगा ब्राकबलीन गज्जन निथ रँगा

सब (द्वाद अपन-आपकेँ गज्जनकाव माँ रँगा सब) दु भागमे रँष्ट होन । गीतम

भागमे, मायानन्द, ताराणन्द मा तका, रिनष्ट पासरान रिहंगम, आदि एना रा छथि

(ए सूरीमे आब नाम सब छथि द्वाद अग्रथा एह सब छन छथि) तँ कथित गज्जन रँगा

भागमे सिगावाम मा सबस, वमेश, ताराणन्द रियोगी, रिभूति आनन्द, कनानन्द

भङ्ग, डा. महेश्वर, मोमदेव, बास तरोस कागडाँ अमर, देवरीकव नरीन, बास

चैतन्य धीवज, वरीन्द्रनाथ ठाँव, बाजेश्वर रिमन, धीवेश्वर प्रेमर्षि,

अवस्थित ठाँव आदि-आदि सब बहना रा छथि । ए सूरीमे आब नाम सब छथि द्वाद अग्रथा

एह सब छन छथि । द्वाद एँठाँ हम ए स्पष्ट कव छन जे नाम तल जे होग

मायानन्द जी रँगा गूँ रा सबस जी रँगा गूँ दुनु गूँमेँ कोना गोष्टी गज्जन ल

निथे छन कावण ओ ब्राकबलीन छन । आ ब्राकबलीन कथित गज्जनकेँ गज्जन ल

गीतमे ठी कहन जा सकैए । सबस जी मायानन्द जीक सबस रँमी विरोध केनथि

हूँकव कथनक कावण द्वाद सबस जी सँ ब्राकबलीन गज्जन निथना आ निथे छथि तख

मात्र कथनीपव केकरो विरोध कवरौक की मतनरँ जखन की कवनी दुनु गोष्टीक एकै

छथि ।

सबस जीक सम्प रँहूँ कथित गज्जनकाव सब होहकारी दैत एनाह द्वाद ओहो सब

ब्राकबलीन गज्जन निथना आ निथे छथि । आँ हमर प्रश्न जे जखन ब्राकबली छैले ल

तखन गीतम आ ओग कथित गज्जनमे अन्तर्गती की ? हमरा रँमल कोना अन्तर्गती ल । हम

मायानन्द जी गीतम आ सबस जीक कथित गज्जन दुनुकेँ एकै समाँ माले छी । ए ठाम ए

रँमी मोन बाखरँ जकबी जे सबस गूँ केव महानायक धीवेश्वर प्रेमर्षि जी गीत

आ गज्जनकेँ सहोदर भए माँलै छथि । तखन सबस जीक नज्जविमे मायानन्द जी अपवारी



भेना आ धीरेन्द्र प्रेमर्षि जी महाराजक । हमरा जलैत अ सबस जीक पक्षपात थिक
आ ए पक्षपात केव बिरोध हेरौक छली ।
मियाबाबू सा सबस जीक संपादनमे रैथि १९९०मे " मानकिना आ लोकलेख " नामक एकठा
साप्ताहिक गजल सङ्ग्रह आएल । एहि सङ्ग्रहमे गजलमे पहिल तीसठा भाषाकावक आद्वय
अछि । पहिल आद्वय संपादक जीकेँ छहि आ ओ तकर श्रुति आ कवि छहि-----
समालोचना आ साहित्यिक गतिहास लेखक स्फेदमे तकर कविताँ जलै छल
ओहि साहित्यिक प्रेमक स्रष्टा संपादक अग्रज छहि होत....." । अर्थात्
सबसजीकेँ हिसारै कोना साहित्यिक बिधाक आलोचना, समीक्षा, रा ओकर गतिहास
लेखन रहल कए सकैए जे की ओहि बिधामे बढावत छहि । जँ हम एकब राखी कवी
तँ अ नतीजा निकलैए जे गजल बिधाक आलोचना रा समीक्षा रा ओकर गतिहास रहल
नीथि सकै छहि जे की गजलकाव होथि । ह्मदा हमरा आश्चर्य नहोए जे ल १९९०मे
पहिले सबस जी अ काज केनाह आ ल १९९०मे २००८ धरि अ काज कए सकनाह । २००८केँ
एहि दुनोमे हम मानक रैथि लेनहुँ जे काव २००८मे लिखल गेल सबस जीक एख
धरिक अन्तिम कथित गजल सङ्ग्रह "खोड्-खोड्-पानि" एतहि ह्मदा ओहमे ओ
एहल काज ले कए सकनाह । आ रैथि २००८मे गजल बिधा पब केन्द्रित रंग "
अनछिन्हाव आख " आएल जहिमे गजलक र्याकषा आ आलोचना पब पर्याप्त काज लेन ।
आ गजल बिधाकेँ सबस आ ह्मदा ठीसमे छलकावा प्राप्त लेन । आ जे काज १०० मान
मे नहि लेन से मात्र एक मान पाँच मासमे गजेन्द्र ठाकुर कए देखेनाह आ
मैथिली गजलकेँ पहिल गजल मोन देनाह । अ हमरा हिसारै कोना गजलकावक सीमा
भए सकैत छलै ह्मदा सबस जीक दोहवा चरित्र ओली आद्वय के तैसब आ चरित्र पृथमे
भए जागत अछि जतए सबस जी लिखै छहि-----" मैथिली साहित्यमे तँ रंगना जकाँ
गीति-साहित्यिक एकठा स्वर्ण पर्वगा बल्लैक अछि । गजल अली पर्वगाक न्यता
बिकास थिक, कोना प्रतिरुद्ध आलोचककेँ से रंग पडैतैक । तँ अ एकठा दीगब आ
महर्षि रीत भए सकैछ जे मैथिलीक समकालीन आलोचकक पास एहि न्यताम बिधाक
आलोचना हेतु कोना मापदंडके नहि छहि । नहि छहि तँ तकर जोगाव
कबहुँ....."आरँ अ देखल जाए जे एके आलेखमे कोना दोहवापन देखा बल्ल छहि ।
आलेखक श्रुतिमे ह्मदा भारणा छहि जे " जे आद्वय गजल ले नीथे छहि से एकब
समीक्षा रा गतिहास लेखन लेन अयोग्य छहि ह्मदा ह्मदा ओली आलेखमे ओहल आलोचकमे
गजल लेन मापदंड छहि छहि जे कहियो गजल नहि लिखल । भए सकैए जे सबस जी अ
आलोचक सबस जी अग्र पर्वगा बिदासपद गजलकाव मापदंड छि पब नगरथि
होथि । जे की सबस जीक हलक आलेखमे स्रष्टा होगत अछि । ह्मदा एठास हमरा सबस
जीमे एकठा प्रेम जे जँ कोना कावपरने माया जी ओ काज ले कए सकनाह रा जँ
मापदंड जी अ कहि देनथिह मैथिलीमे गजल ले लिखल जा सकैए तँ ओकरा गनत
कबरी लेन ओ अग्र (सबस जी) की केनथिह । २००८धरि मैथिलीमे १०-१२ठा कथित
गजल सङ्ग्रह आरँ छल छल । ह्मदा अग्र सबस जी कहाँ एकेठा कथित गजल सङ्ग्रह
समीक्षा रा आलोचना केनथिह । गजलक र्याकषा रा गतिहास लेखन तँ रहुत दुबक
रीत भए लेन । ए आलेखमे दोसब रीत ओहो स्रष्टा अछि जे सबस जी कोना समकालीन
आलोचककेँ गजलक समीक्षा लेन मापदंड देरी लेन तैसाव ले छहि । जँ कदचित्
कलकलौ सबस जी आलोचक सभकेँ मापदंड दितथिह तँ संभवतः २००+ धरि गजल
स्फेदमे एहल अकाल ले बलिटे ।
आरँ हम आरँ बिदेहक अंक ९६ पब जहिमे श्री ह्मदा जी द्वारा गजल पब
परिचर कबरी लेन लेन छल । आ-आ प्रतिभागीक संग-संग प्रेमद पंकज नामक
एकठा प्रतिभागी सेहो छहि । पंकज जी अग्र आलेखमे आरँ रीत संग ओहो लिखैत
छहि-----" कतिपय रात्रि एकठा वाग अगोषि बल्ल छहि जे मैथिलीमे गजलक
स्वर्ण पर्वगा बल्लैक एकब मायता ले तेष्ट बल्ल छैक । एहल रीत प्रायः



एहि कावणे उठैत अछि जे मैथिली गजलकेँ कोना मात्र समीक्षक-समालोचक एखन धरि अछुत मासिक एखन तकरै सेहो अपन मार्गदाक प्रतिकुल बुनैत छथि । एहि समीक्षकमे हमर रातिगत रिटाव अछि, जे एकबा ओहल समालोचक-समीक्षक अछुत बुनैत छथि जिनकाय गजलक सुझावकेँ बुनबाक अरगतिक सरिथा अछार छनि । गजलक संवचना, मिजाज आदिकेँ बुनबाक लेन हुनका लोकनिकेँ स्वर्ण प्रशंस कब पड़ैतनि, कोना गजलकाव लेनि क भुंथी नहि धवउतनि । है, एतरी निश्चय जे गजल धुड़माड़ निखन जा बहन अछि आ पसनि बहन अछि आ अपन सामर्थ्यक रैन पब समीक्षक-समालोचकलोकनिकेँ अपना दिस आकर्षित कए क छोड़ैत----- “ अर्थात् प्रेमचंद जी सबसे जी जकाँ भुंथी ले धरैरक पक्षमे छथि । सबस जी १९९०मे कहे छथि ह्रदा पंकज जी २०११केब अतमे मतनरै २२मान रौद । मतनरै रैरथ रैदलेत गेली ह्रदा मासिकता ले रैदगले । उना एठास हम अ जकब कहए छहरै जे भुंथी धवारै लेन जे उना आ गछा शिष्टि होग छै से रैजावमे ले रिंकागत छै । ह्रदा आरै एठास हम अ जकब कहए छहरै जे मायानंद प्रिंजली रैवान आ अरुणतार मैथिली गजलकेँ जतेक अहित भेलै तहिने रैमी अहित सबस जी रा पंकज जी सन अक्षुंकावी लोकनिसँ भेलै ।

निधित कएकेँ छोड़ै मैथिलीमे गयराक लेन सेहो गायक सत गजलक नामपब अलंछाव केनाह । किछ नीधि देरै आ गनामे स्वर बहत तँ ओकवा गारि सकेँ छी तँ की ओकवा गजल मानल जेतै ? गायक ए धूखेनमे रैहूत बस गायक दुनाह रा छथि जेना टंदमणि मा, बागमेरक ठाकुर, कृष्ण रिंवावी प्रिं आदि-आदि । जेना निख रैना सत मैथिली गजलकेँ भुंथी रैमेनक तेनाहिते गायक सत सेहो । गायक सत गजलमे मात्रा एम सलुक (मा,ले,गा,मा,गा,धा,नि,मा) केब हिसारसँ रैमारै नाछी छथि जे की अरिंजनाक तँ अछि ए सखी-सखी अर्थकावी सेहो अछि । कारणमे बागक हिसारसँ छन्द ले रैले छै । तँ कोना एकछी छन्दमे रैनन वचनाकेँ रैहूत गायक रैहूत बागमे गारै छथि गारि सकेँ छथि । बाग-बागिनीक मात्राएम सखीत लेन छै साहित लेन ले । तेनाहिते छन्दक मात्राएम कारा लेन छै सखीत लेन ले ।

स्वर्ण शिखर टोपरी आ रारौ रैंगनाथ जी गजलमे किछ तह तँ अछि । खाम क रारौ रैंगनाथ जीक गजलमे सत तह अछि ह्रदा रैंगित ले अछि । आ तँ लिंको लोकनिकेँ हम कथित गजलकावक प्रीणमे बथेत छी ह्रदा हमरा अ कहरौमे कोना सकोट ले जे अ दुनु रौद-रौकी कथित गजलकाव सतसँ रैमी रौधगव छथि ।

आरै हम पाठकक उंगल छोड़ै छी जे ओ अपन निंय लेखू जे मैथिली गजलक ए पौखविमे के कते योगदान देना ।

आरै एठास एकछी प्रश्न ठाठ होगत अछि जे एना अखन हिंका सतकेँ (माया गूठ एर सबस गूठ) खाविज किंए कएन जा बहन अछि ? जँ हिंका सतकेँ वचना गजल ले अछि तँ की अछि ? एना खाविज कवरै कतेक उचित ? हिंका सतमे प्रतिभा छनि की ले ? आदि..... निश्चित कएसँ हमरा ले नीक नागि

बहन अछि हिंका सतकेँ खाविज करैत ह्रदा हिंका सतकेँ शिंए तेहन छनि जे

खाविज कबहे पड़ैत । हमरी मात्र गजलकाव छी आ हमले गजल मात्र गजल थिक अ शैली हिंका सतकेँ पहिछान अछि जखन की लोक आरै बुनि बहन अछि जे हिंका सतकेँ गजल गजल ले छन आ ले अछि । अ लोकनि ले अपन गजलपब काज केनाह आ ले दोमबकेँ कब देनथिह । आ जकब पविणाम गजल भोगि बहन अछि । खाम क अहाँ सबस जीक गजल पौखीक भूमिका पठू ले गजलपब चर्चा भेटैत आ ले गजलक राकबापब ह्रदा उंगले अ चर्चा जकब भेटैत जे सतकेँ साहित अकादेमी भेटै गेली हमरा किंए ले भेटै बहन अछि । सबस जीक गजले ले हलेक पौखीक भूमिका ओ लेखमे अ भेटैत । तवारनंद रियोगी,



देवर्षिकव नरीण, गर्गेशी गुंजन, वमेशी, आ ओग समायक कथित गजनकाव सत एना एना जेना
 ओ गजनपव उंगकाव क बहन होथिन्ह । आ ए हेजमे योगावद हीवा, रिजयनाथ सा सत
 दरि क बहि गेना । हिनका सतमे प्रतिभा छनि कावा रीना प्रतिभा बहन केओ
 माहिर दिस आरिह ले सकैए (रौदमे अथायक जकबति पडै छै) तँए हय ओ
 माहि बहन छी जे ओ सत प्रतिभाशाली छनाह । हँ, ओना माहि बहन छी जे केओ
 खूपीक आगुसँ दुति छीलेह आ ओ कथित गजनकाव सत खूपीक मुठसँ दुति छिनरीक
 प्रयास केना । एकव पकियाम ओ तेन जे हिनका सतकेँ मेहनति तँ कव पडैतनि,
 पसेना सेना रँहननि ह्दुन दुति छीनि क ओ सत गजन कपी गथेकेँ भोजन ले द
 सकनाह । आरँ ए प्रयगव आरी जे हिनक सतहँक बचना गजन ले अछि तँ की अछि ?
 निश्चित कपसँ हिनक सतहँक बचनामे सबसता, पद-नालिन ओ गेयता अछि ह्दुन
 राकवण ले अछि । तँए हय हिनक सतहँक कथित गजनकेँ हय पद्यक कपमे माले छी ।
 आरँ पद्यमे केहन पद्य से तँ आन आलोचक सत हड्डीछा क कहता ह्दुन जहाँ धरि हय
 अण रियाव अछि तँ ओ सत नीक पद्य अछि आ आन पद्य जकाँ माहिरमे समादृत
 अछि ।

ए ठाम ओ गप्प सारिजनि कवरँ अनिरार्य अछि जे अणनु रीहारी नान दाम "
 गम् " जिक जे छुँछी गजन संग्रह छनि (सबसजी द्वारा देन गेन मुछना)
 तेमेसँ हय एकेछी पोथी ले पठ्ठाँ सकवहँ अछि । तँए गम्जिक गजनपव हय कोना
 छिप्पणी ले कवरँ । हँ एतेक हय जकब कहँ जे कर्मितक किछ अकमे हमा ह्दुन
 गजन पठ्ठरीक असव तेठन ह्दुन तेमे रँहवक अतार अछि । रँहूत वाम गजनकाव तेन ओ
 छिप्पणी हय सुबक्षित बाथए दाहरँ । संग-संग हय ओना कहँ दाहरँ जे ओ एकेडमिक
 मोध ले थिक तँए रँहूत वाम गजनकावक पोथी तेठरीमे हमा दिक्कत तेन तथापि
 हमा नग १००मेसँ ११० मैथिली गजन संग्रह रा मैथिली गजनपवहँक लेख सत अछि ।

5

नघु-ग्वक निर्णय (दुनु भाग एक ठाम)

(हमर ए लेखमे मात्र प. गोरिन्द सा जिक छै अछि तकरा अग्रथा ले लेन जअ
 से हमर आग्रह । प. गोरिन्द सा जिकेँ हय मैथिली राकवाक धुरी मालेत ओ
 निथन अछि । निश्चित कपे प. जी अण अग्रजसँ नियम ग्रहण केन छथि आ अण
 अग्रज सतकेँ रँसी प्रभावित केन छथि तँए हय मात्र प. जिक उंगव ओ लेख
 केन्द्रित केनहँ जहिसँ ह्दुन अग्रज आ ह्दुन अग्रज सत ए लेखक माममे आरि
 सकथि ।)

तँ आँ कल चली मात्रा केना गानन जागत छै ताहिपव । मात्रा गनरीक तेन मोन
 बाथु जहिसँ अक्षरमे "अ", "ग", "उ", "म" एरँ "वृ" वृकाएन हो तकरा नघु माण
 आ तकरा रौद सतकेँ दीर्घ । संगहि संग अग्रजसँ तँ दीर्घ अछि ह्दुन
 छन्दरिन्दु नघु । छन्दरिन्दु जँ नघु अक्षरपव बहते तँ नघु माणन जेते आ
 जँ दीर्घ अक्षरपव बहते तँ दीर्घ माणन जअत । संगहि-संग जँ कोना शिष्टमे
 संग्रहअक्षर ह्दुन तँ तहिसँ पहिलेक अक्षर दीर्घ भए जागत छैक दाहे ओ नघु
 किअक ल ह्दुन । उदाहरण लेन--अक्षर शिष्टमे दूरी संग्रहअक्षर अछि पहिल



ए एरि फ़ । आरि एहिमे देखु "ए" सँ पहिल "ए" अछि तँ ए अ दीर्घ भेल आ
 "फ़" सँ पहिल "ए" अछि तँ ए गहो दीर्घ भेल । अ नियम जँ दु ठा अलग-अलग
 शिष्ट हो तैयो बागु हएत जेना उदाहरण भेल--- हमार प्रेम छी अहाँ... एमे
 "प्र" सहायक भेल आ तहिसे पहिल रँना शिष्ट, " व" दीर्घ भए जाएत ।
 मतनर जे "हमार" शिष्ट अछि अछि "व" दीर्घ भए जाएत । सख-सख मोन
 बागु "ह" आ "र" सहायक सँ पहिल रँना शिष्टमे नय दीर्घ सेहो हएत ।
 जेना की "कहाव" मे "र" सँ पहिल "क" दीर्घ भेल तैनाहिने "कहाव"
 शिष्टमे सेहो "ह" सँ पहिल "क" रँ दीर्घ भेल । फ़, व आ उ
 सहायक अछि । तैनाहिने.... ए, र, आदि सेहो सहायक अछि ।
 ह्दा "मृत" शिष्टमे "मृ" सहायक ले अछि । बिसर हाउ नय रँ सेहो
 दीर्घ होगत अछि । हननु सँ पहिल रँ नय दीर्घ होगत अछि आ हननुक मात्रा
 नय होगत अछि ।

गजनमे दू ठा नयकेँ एकठा दीर्घ सेहो मान जोगत छै । रँत गोठेकेँ समान
 होगत छै जे अ नय-दीर्घ कोना होगत छै । प्रत्युत अछि किछ उदाहरण---
 रिगडा ----- एहि शिष्टकेँ ज्ञ-दीर्घ मागु रा दीर्घ-ज्ञ मागु ।
 रँवक जेहन जकबति हो । अरि रँवमे तीन ठा नय सँ कोना रँव ले छै तँ ए
 नय-नय-नय मागुरा कोना जकबति ले ।
 ह्कव----- एहि शिष्टकेँ दीर्घ-दीर्घ मागु रा दीर्घ-नय-नय मागु रा
 नय-नय-दीर्घ दीर्घ मागु जेहन जकबति हो । अरि रँवमे चाँचि नय सँ कोना
 रँव ले छै तँ ए नय-नय-नय-नय मागुरा कोना जकबति ले ।
 घव----- एहि शिष्टकेँ दीर्घ मागु रा नय-नय रँवक जेहन जकबति हो ।
 छेव----- अ माह तैव पव दीर्घ-नय अछि ।

जँ कोना मेवमे एना पाँति छै--- रिगडा चले ।
 आरि एहि दु शिष्टकेँ रँह । या तँ अहाँ " रिग" मल एकठा दीर्घ मागु आ
 "डा" मल एकठा नय हव "ट" एकठा नय भेल आ "ले" एकठा दीर्घ । एकव मतनर जे
 " रिगडा चले" केव सँभारित रँव भेल--दीर्घ-ज्ञ-ज्ञ-दीर्घ ।
 एहि शिष्टकेँ एकठा आव कग दए सकेत छी जेना की---- "रि" के नय मागु
 "गडा" के दीर्घ मागु आ हव "ट" एकठा नय भेल आ "ले" एकठा दीर्घ । एकव
 मतनर जे " रिगडा चले" केव सँभारित रँव भेल--- नय-दीर्घ-नय-दीर्घ ।
 आरि एहि दु कगकेँ अहाँ रँवक हिमारे प्रयोग कक । कतेको आदमी " रिग" केँ
 दीर्घ मानत हव "डा" "ट" केँ गिना दीर्घ मानत आ "ले" भेल दीर्घ मल
 दीर्घ-दीर्घ -दीर्घ ह्दा अ कग गनत भेल । ह्दा एहिमे एकठा गप्प मोन बागु जे
 किछ शिष्टमे प्रमाण सेहो बागु पडत जेना एकठा शिष्ट, " कमल " निअ । आरि जँ अहाँ
 एकव उदाहरण क-मल (मल नय-दीर्घ) कवरै तहिसे एकठा नयक अर्थ निकनत
 ह्दा जखन अहाँ एहि शिष्टकेँ क-म (मल दीर्घ-नय) कवरै तखन एकव अर्थ
 घटनागमे हेते जेना - पानि कमल की ले गवदि । तँ हमार आग्रह जे पहिल
 कोना शिष्टकेँ उदाहरण हिमारे अर्थ देखु जहिसे उदाहरण अर्थ ले ह्द ।
 मैथिलीमे रँगीकेँ हिमारे अ उदाहरण देखु----
 नए----- ज्ञ-दीर्घ
 नs -----ज्ञ
 न-----ज्ञ
 नय--- ज्ञ-ज्ञ रा दीर्घ



अएह निश्चय कए, कऽ रा स, भए भऽ रा भ जेन छै आन आकष जेन एहल रीत बुझल जाए। एठास जेहो कल जे नय जेन ज्ञान शैक्षिक प्रयोग सेहो कएन जागत छै तेषाहिते दीर्घ जेन गुरु शैक्ष, छै। एठास हम एकठा गप्प स्पष्ट कब छारै। संस्कृतक राक्षिक गामे छूँछी नयूँकेँ एकठा दीर्घ माणरीक गवस्रवा ले अछि। संगे-संग राक्षिक छन्दमे जेतक गी छै ततेक अक्षर भेलाग अनिरार्य। एकठा उदाहरण निम्न--

माणु जे १२२-१२२-१२२-१२२ सँ रँजन शोकक हलक पाँतिमे गावा एम गएह बहते संगे-संग हलक पाँतिमे १२२ अक्षर बहते। कम रा रँसी अक्षर माय ले छै। ह्रदा आधुनिक भावतीय भाषामे अ कठिन सन रँसाधन तँए छूँछी नयूँकेँ एकठा दीर्घ माणरीक छूँछे छैछेन।

अ तँ छन मूत्र कण्ठमे। कल एकवा हविष्ठा कए देखी-----

१) गी. गोविन्द सा अणन पोथी " मैथिली छंद शान्त्र" (मिथिला प्रसक्त केल्ल दवर्तगाम प्रकाशित, द्वितीय संस्करण १९५१)मे पृष्ठ १३ मे निखेत छथि जे " सँ, जँ, तँ, हँ आदि गुरु अछि" मल छंदरिदूकेँ गी. गोविन्द सा जी दीर्घ मल छथि (गी. दीर्घरंज सा वचित मिथिला भाषा विद्यालयमे एहल निखन अछि।) ह्रदा हल गी. गोविन्द सा जी शैख प्रकाशक २००७मे प्रकाशित अणन पोथी " मैथिली परिचयिका" केव पृष्ठ २०पव निखे छथि जे " अण्नाव भावी लोगत अछि आ छंदरिदू भावलीन" मल ए पोथीमे गी. जी छंदरिदूकेँ नय मल छथि आ एहल सन रिचर ओ मैथिली अकादेमीसँ २००१मे प्रकाशित अणन पोथी "मैथिली परिचयिका"क पृष्ठ ३३.पव देल छथि। आरँ हमरा एहल पाठक जेन अ रँडका प्रम अछि जे छंदरिदूकेँ नय माणन जाए की दीर्घ, काव्य एकेँ गी. गोविन्द सा जी अणन भिन्न-भिन्न पोथीमे भिन्न रिचर देल छथि आ अ प्रचारित कवरीक उपाय कले छथि जे जाहि पोथीमे हम जे नीथि देनहुँ से सली अछि। जँ गी. गोविन्द सा जी रँड रँना पोथीमे नीथि देल बहितिह जे " मैथिली छंद शान्त्रमे छंदरिदू केव संस्कृतमे हम जे निखल छी से गनत थिक आरँ आरँ हम ए पोथीमे एकवा स्रवा विहन छी" तखन हमरा जलत प्रम ले पसबिते आ एम हलक महाभता सेहो सिद्ध लोगत। ह्रदा से ले भेल। कोला भाषाक रँयाकवणक उपाव छै भाषाक हलक लोकेँ रिचर लोगत छै। मैथिल सेहो गी. जीपव रिचर कलेत छथि (हमरा सहित) आ तँए रँड मैथिल लोकेँ छंदरिदूकेँ दीर्घ माण रँसन छथि। एकव सभसँ रँडका उदाहरण श्री वसा सा सन अर्कव शान्त्री अणन पोथी " भिन्न-अभिन्न"क पृष्ठ ७१-१३ मे देल छथि जतए श्री वसा जी गी. गोविन्द सा जीक सभसँ दैत छंदरिदूकेँ दीर्घ माण जेल छथि। अतु अ गप्प हविष्ठा अछि जे छंदरिदू नय लोगत अछि आ अण्नाव दीर्घ। एही क्रामे एकठा आब गप्प भए सकेँ जे गी. गोविन्द सा जी करिब सीतावास सा जीक कविताकेँ देखि छंदरिदूकेँ दीर्घ माण जेल लेथि तँ से गप्प हवाक, कावा करिब सीतावास जी अणन अधिकनि करितामे छंदरिदू हाउ नयूँ शैक्षिक दीर्घ जकाँ प्रयोग केल छथि। ह्रदा एठास अ मोष बाथए पडत जे छंदमे जकबति पडनापव (माव आरंभक स्थितिमे) नयूँकेँ दीर्घक रँवारव रा तेषाहिते दीर्घकेँ नयूँ रँवारव उदाहरण कएन जागत बहते। तँए जँ करिब सीता वास जी जँ आरंभकता पडनापव जँ छंदरिदू हाउ नयूँकेँ दीर्घ जकाँ प्रयोग केल छथि तहिँसँ ओ नियम ले रँनि जेतै रँडतः नियम तँ गएह छै जे छंदरिदू नयूँ अछि। एकठा गप्प आब संस्कृतमे नयूँकेँ दीर्घक रँवारव रा तेषाहिते दीर्घकेँ नयूँ रँवारव उदाहरण



547X VIDEHA

ভজ্ঞস্বাজ্ঞানয়া নিৰ্ভজ্ঞজ্ঞক
শ্রীযে চিবাস জ্ঞাতা চকোবরজ্ঞশেখবঃ ॥ 5 ॥

মনঃচন্দ্রবজ্রনক্ষত্রসমুদায়নির্ভা-
 -গীতগোবিন্দকং বহুনির্ভাষকম্ ।
 স্বধাম্যুখলেখয়া বিবাজমানশেখর-
 মহাকাশান্নিশ্চদেশিবোজঠানমস্তু নঃ ॥ 6 ॥

কবানফানগষ্টিকাপগহুগহুগভস্থন-
 হুগগুগাবদীপ্ততৎসৎপংম্যাক ।
 ধবাধলেন্দ্রদিশীক্ষাওত্রৈপ্রেক-
 -প্রকল্পলেকশিপিষি বিজোচল মতির্ম্ম ॥ 7 ॥

বরীণমেঘাস্তনী নিকহুদ্ববস্থাবত-
 অদ্ভুশিশীখিলীতমঃ প্রক্করৈক্কককবঃ ।
 শিলিশ্মির্মবীববস্তলোত্ত প্রতিমিজুবঃ
 কনানিধাণরুকবঃ শ্রিং জগহুবকবঃ ॥ ৪ ॥

শ্রদ্ধা স্মার্ত-পদ্ধতি
- বিনয়িক-কন্দলীক-চিত্র-বৈষ্ণব-
স্বভিদ্-প্রভিদ্-ভরভিদ্-মথভিদ্
গজভিদ্-দাকভিদ্-তাপুভিদ্-ভজে ॥ ৯ ॥

অগর্ভমর্গস্যাঁকাকানকদগ্ন্যগ্ধবী
 বস্ମথারান্গাদুবী বিজৃম্ভ্যাঁগাদুবী ।
 স্বাস্তকং প্রবাস্তকং ভ্রাস্তকং ম্যাস্তকং
 গজাস্তকাক্সকাস্তকং তমাস্তকাস্তকং ভজে ॥ 10 ॥

জগদ্বন্দ্ব বিপ্রযুক্তিমান্দু জঙ্গমশ্রী-
- দ্বিনিষ্কাণ্ড কংসস্থ বকেবানফানন বরাঠ ।
বিচিহ্নি চিহ্নি মিল্লগম্মদর্শ স্তম্ভাস্থান
ধ্বনিফাথরতিত থ্যস্ততাশ্বরঃ শিরঃ ॥ ১১ ॥

दृषद्विचैतन्पयोर्तुजशंयौद्रिकसजोव-
 -गविश्ववनेनाश्रयोः सुद्रक्षिष्मणस्योः ।
 भृश्यावरिन्दच्छयोः प्रजासमीपेन्दयोः
 मां प्ररतयान्नः कदा सदशिरिं तजे ॥ 12 ॥

কদা নিবিশ্বনির্মলবীৰিক্‌শ্চকোষ্ঠে বসন্
 বিষ্ণু উদ্‌যାতি: সদা শিব: স্ফুটন্তি বহন্ ।
 বিষ্ণু উজ্জ্বলজ্যোতসো নবম্‌লহাননম্‌ক:
 শিরেতি মহাব্রহ্মচৰণ সদা সুখী ভৱাম্যহম ॥ 13 ॥

গাং হি নিবমেরদুওদুওমোতুং সুর
 পঠল্লবল্লুরল্লরো রিশুহিমোতিসন্ততম ।
 হলে থরো স্তবতিয়াশু যাতি লালুথা গতি



रिमोहन हि देहिना सुमिहवन्तु चिन्तनम् ॥ 14 ॥

गुजारमानसमाये दमेरुगुपीठ गः
शेखुगुजनगर्भ पठति एदोये ।
तय हिवा वथगजेन्दुवर्षयडा
नक्षत्री सदैर सुदधि एददति शेखुः ॥ 15 ॥

ए के अनार गुवा संयुत पञ्च एकव उदाहरण अछि । दूदा से देरै ल हमरा
अभीष्ट अछि आ ल उचित ।
मैथिलीमे अ नियम ले छै तकर काका प्राप्त-अप्रतिभा भाषाक प्रभाव छै । मैथिली
सहित आन-आन आधुनिक उतव भारतीय भाषामे अ सेहो अ नियम ले मानन जागत छै
प्राप्त-अप्रतिभाक प्रभाव । आर अ देखु जे अ प्राप्त-अप्रतिभा कौन भाषा
थिक । प्राप्तक सङ्ग्रहमे बाष्ठा शिल्पक प्रभाव भवत दूदा कहै छथि
जे-----

एतदेर रिपर्सिङ्ग संकाय गुण रजितम्
रिपर्सिङ्ग प्राप्त पाठि नागा रजितवामेकम् ।
मल जे मुन शिल्पक अक्षरके आगु-पाठ कय रा सबनीयत कय राजर प्राप्त पाठ
कहाय । एठाम मुन शिल्प, मल संयुतक शिल्प, भेन, दूदा मुन शिल्प, कौनो भाषा
भए सकै । तेनाहिने आचार्य भर्तृहरि जी प्राप्तक सङ्ग्रहमे कहै छथि जे

दैरीराक् रारकीर्णम शिकतेवति पाठतिः
मल जे दैरीराक् (संयुत) अमिष्ट लोकक मुँहमे आरि भिन्न-भिन्न कणमे
आरि जाग छै । दूदा महाभाषाक पतञ्जलि प्राप्तके अमिष्टक कणमे देखैत
छथि आ हकका मते ए तवहक अमिष्टक प्रयोग छहे ओ राजन जाग की सुनन जाग
दूदा कणमे अर्क थिक ।
प्रायः-प्रायः हरेक भाषारिज्ञानी प्राप्तक रीद रीन कणके अप्रतिभाक नाम
देले छथि । नगभग वरम आ दशम शताब्दी धरि प्राप्तक प्रयोग थमे भए गेल छल
आ अप्रतिभाक प्रयोग शुक भए गेल छल । दूदा ए ठाम मोन बाधु जे अमिष्टक
भाषारिज्ञानी अप्रतिभाके प्राप्तके अनग मल छथि दूदा दूदाक प्रभाव एक
समान हेराक कारणे " प्राप्त-अप्रतिभा " नाम रैनी छल छै । प्राप्तमे शिल्पक
निर्माण दूदातः लोक कटिपव निर्धारित छै ल की रारकणव । एकठा उदाहरण
देखु-----छन्द शिल्पक छन्द प्राप्त शिल्प, भेन दूदा छन्द शिल्पक छन्द
शिल्प, ले रैनन रैनकि छन्द शिल्प, रैनन । तेनाहिने रधु शिल्पक रधु रैनि तै गेल
दूदा साधु शिल्पक साधु ले रैनन । साधु अनग शिल्प, अछि । आ नगभग एहल हानति
अप्रतिभाक अछि । अ रीत जगनाग महर्षि अछि जे तेनाहिने प्राप्तक जेन मुन
शिल्प, संयुत छै तेनाहिने अप्रतिभा जेन मुन शिल्प, प्राप्त छै । आ रीदमे एही
अप्रतिभाक मैथिली आ आन आधुनिक भारतीय भाषा सबके जग भेल । ओना प्राप्तक
रहित कण छै । तेनाहिने अप्रतिभाक सेहो अलको कण छै । मैथिलीमे अप्रतिभाके
अप्रतिभा रा अरुष्ट सेहो कहल जागत छै । दूदा अ प्राप्तक कण हरेक समयमे
होगत बहल । रैदक भाषाशिली एकव उदाहरण अछि । आ मगरमे ओहि समयक
मागानुव भाषाक रित वाम शिल्प, छै । तेनाहिने अमिष्टक राष्ट्रिकमे हगमल जीक
अ चिन्ता जे हम सीता जीसँ देरभाषामे गप्प कबी की मागबी भाषामे सेहो ए
गप्पक प्रमाण अछि जे ओह समयमे संयुतक मागानुव भाषा छल आर ओकव नाम
मागबी होग की रा अल कोला । महर्षि तै अ छै जे रैदसँ नए कय एथन धरि
संयुतक मागानुव भाषा रित बहल आर तेने ही ओकव नाम जे बहल होग ।
संयुत शिल्प, जखन प्राप्तक कणमे आर नगले तखन सङ्ग्रहक शिल्पक रित



रैनी प्रभार पडले । जै लोकर देथले तै पता नागत जे प्राप्तात रौजए रैना सत
संश्रुतक शैके अंग नख रैलल डन ताहमे एल संश्रुतक रैना
शैके जे शैके शुकशतमे डन । एकव काका डले जे संश्रुतक रैना शैके
रैजराये रैत सारवाणी आ शिखा छली डन । संश्रुतक संश्रुतक रैना शैके

प्राप्तातमे दु कपमे तोड़ल जेन---

१) जे संश्रुतक शैके शुकशत संश्रुतक रैना शैके तै तै तै प्राप्तातमे
पुवा-पुवा जेन कए देन जेले । केथला-केथला शुकशतक संश्रुतक रैना शैके
आनि देन जेले जेना-----

“अह” संश्रुत तै रूदा एकव प्राप्तात “गिबले” तै । तेनाहिने कन्द जेन
खन्दा, फमा जेन थमा रा डमा, तुम्ह जेन थम्ह, झलिठ जेन थलिथ, कन्धि
जेन किन्दिना गवादि ।

२) जै शैके शुकशत जोड़ल कतो संश्रुतक रैना शैके तै केथला ओक जेन तै जेन
तै रा नर कपमे संश्रुतक रैना शैके जेना -----

चतुर्थी जेन चउथी, छै जेन छगडा, छद्दिमा जेन छद्दिमा, फेवम्
जेन छेतम् आदि-आदि । फन गिना कए प्राप्तात-अपञ्चमे एल शिखि रैलल जे
दुनु भायामे सै कोला भायामे एल शैके, ले डले जक शुकशत संश्रुतक
शैकेसँ होगत हो ।

एतेक रिरेछाक रौद हम अंग मून उठ्ठ दिस छली । हमर मून उठ्ठ डन जे
मैथिलीमे संश्रुत जकाँ अंग-अंग शैके, बहिरो संश्रुतक रैना शैके

अक्षर दीर्घ किएक ले होगए । आरै जै लोकर उंगवका गिरवा पठल हएँ आ जै आव

प्राप्तात-अपञ्चमे शैके सत पठल तै पता नागत जे प्राप्तात-अपञ्चमे तै
संश्रुतक रैना शैके शुकशत शैके, तैके ले । आ मैथिलीयो अपञ्चमे निकन अछि आ
प्राप्तातक मैथिलीमे संश्रुतक रैना शैके शुकशत होगत कोला शैके, ले अछि । आ तै
मैथिलीमे संश्रुतक आ नियम ले आएन । आ अहाँ अंगल मोटियो ल जे जे भायामे
संश्रुतक रैना शैके होगत शैके, तैके ले से एल तवहक नियम किएक बाखत ।

रूदा जै नरीन मैथिली भाषाक किछु प्रतिष्ठित लेखकक बचनकेँ देखी तै ओ

मात्र फियापदकेँ जोड़ल सत संश्रुतक शैके, (तसेम शैके,)केँ प्रयोग केल
छथि । आन-आन कम प्रतिष्ठित लेखक अंग बचनमे तसेम शैकेकेँ फिन्नी मसला
मानि जेवगव प्रयोग करै छथि । एतरो ले प. गोविन्द ना जै अंगल शैके मैथिली
परिशीलन क पृष्ठ २९-३० पव लोकर पुरक नरीन भावतीय भाषा (जे मे मैथिली
सेहो अछि)केँ तसेम मिश्र लेखक रैत बस फायदा गेलल छथि । आरै हमरा स
जिज्ञासु नग आ प्रश्न अंगल-आप आरि जागए जे जै संश्रुतक शैके, जेनासँ रैत
बस फायदा लेले (रा तै सकेत तै) तखन तै संश्रुतक सङ्ग्रहित नियम जेनासँ
सेहो फायदा लेन बहिने (रा तै सकेत तै) । ओनाहो मैथिलीमे रा अंग कोला
आधुनिक भावतीय भाषाक पद्यमे संश्रुत शैकेक प्रयोग होग तै तखन ओ नियम
सुतः पालन तै जागत तै । अहाँ अंगल मैथिली मँक एल कोला पद्य गाँउ जाहिमे
संश्रुतक रैना शैके शुक होगत कोला संश्रुत शैके, हो सुतः अहाँकेँ बुना जात
जे अंग शैके, बहिरो संश्रुतक रैना शैके अक्षर दीर्घ होमए नहोत तै ।

एँहो हएव मोन बाख जे प्राप्तात-अपञ्चमे भायामे एल शैके, डलेहे ले जक
शुकशत संश्रुतक रैना शैके होग तै ओ भायामे आ नियम ले पालित लेन । आरै एतेक
रिरेछाक रौद अहाँ सतकेँ मागिना बुनराये आएन हएत । तै हमर आग्रह जे जै ए
नियमसँ रैतक हो तै संश्रुतक रैना शैके शुक होगत शैकेक तद्धत कए प्रयोग क
जेना “ प्रकानि ” जेन पवकानि, “ प्रयोग ” जेन परियोग गवादि । हमर कहक
मतनर जे जेना पवना कानमे प्राप्तात संश्रुतक रैना शैकेकेँ हँपी देनकेँ रा आधुनिक
कानमे रैना भायामे संश्रुतक रैना शैकेकेँ हँपी लेने तेनाहिने मैथिलीमेसँ



संश्लेषण सेहो छी दिउ । आ जँ अहाँ संयुते शेट, तेरें तखन पुवा नियम सहित लिख । आरँ अहाँ जँ सकाक्षि पाठक हएरें तँ हमसँ गुडरें जे जँ केउ संयुत छोट्ठा आन भायाक शेट, तेत तखन की ओहि भायाक नियमक पालन कबत ? एँ तेन हमर उँतब बहत जे ले । काका संयुत हमर मुन भाया थिक तँ ओकरा दिस तकरें हमर मजबूरी ले रँकि कर्तरा सेहो अछि । ह्मदा ओकरा छोट्ठा जँ आन भायाक शेट, ले ते तखन ओकरा मैथिलीक नियम हिसारें प्रयोग कक । जेना की अबरी-हावनी-उर्दु भाषामे " गज्ज " लिखन जागत छै मल ग आ ज केव मिठा ब्रुआ नगएन जागत छै ह्मदा मैथिलीमे ब्रुआ ले छै तँ मैथिलीमे " गज्ज " नीख । ब्रुआ नगा कए लिखरें रँकाव । कोना संयुतक शेटकेँ रा अग्रदेशीय शेटकेँ मैथिलीकए कोना कबी आ कोना नर शेट, रँगारी तकव रिराएना आगु हएत ।

एँ छन हमर पहिन तर्क । आरँ कल दोसब तर्क दिस छी---

संयुत पद्यमे एकठाँ पाँतिकेँ गकाग मानन जागत छै । आ जँ हम शेटकेँ तिम-तिम करै छिँ मल अनग-अनग शेटक संश्लेषणसँ तेन दीर्घ ले माले छिँ तँ एकब मतनरें जे हम पाँतिकेँ ले रँकि शेटकेँ गकाग मानि बहन छिँ आ हमरा जलैत पद्यमे शेटकेँ गकाग मानरें उचित ले । पद्यमे गकाग सदिखन पाँति होगत छै । एकठाँ रिडरेंना देखु जे मैथिलीक सभ बाकबा मोहरी आ करि लोकनि शेटकेँ गकाग तँ माले छथि ह्मदा जखन जग-गगन केव गिनती करै छथि तखन पाँतिकेँ गकाग मानि ले छथि । एकठाँ उदाहरण लिख जे की रसनु तिनका छन्दक अछि । एँ छन्दक बारम्बार एना अछि----

तग+ मग+जग+ जग+ गा + गा

मल की ----दीर्घ-दीर्घ-नघ् +दीर्घ-नघ्-नघ् +नघ्-दीर्घ-नघ् +नघ्-दीर्घ-नघ् +दीर्घ+ दीर्घ

आरँ एकब पद्य उदाहरण देखु----

" एँ ले अहाँक सन रीबक काज थीक "

(करिवर सीताबास मा, मैथिली छन्द मोहरी, पृष्ठा-४३) । एँ एकठाँ पाँतिमे

देखु जे " एँ " आ " ले " दुठाँ अनग-अनग शेट, अछि सङ्ग-सङ्ग तेसब शेट, "

अहाँक केव पहिन अक्षर " अ " नघ् कए मात्र एकठाँ " तग " रँगन अछि । आरँ हमर

कहरें अछि जे जँ अहाँ पद्यमे शेटकेँ गकाग माले छिँ तखन दु-तीनठाँ अनग-अनग

शेटकेँ सानि एकठाँ जग-गगन किएक रँगलें छी । जँ केउ शेटकेँ गकाग माले छथि

तकव मतनरें एँ तेन जे ओ अपन पद्यमे एहन शेटकेँ प्रयोग कबथि जे हरेक जग-गगन

मल कोना दशोष्करी खल तेन समान कएन बहए । तँ हमर मानरें जे संयुतक

पद्य जकाँ जँ अनग-अनग शेट, होगत तेयो संश्लेषणसँ पहिबक रँगा अक्षर

दीर्घ हएत । एँठाँ एँ मोन बाखु जे एकठाँ पाँति थमे तेले तँ ओ गकाग थमे

तेले । आरँ जँ दोसब पाँतिक श्रुतसँ संश्लेषणसँ तँ बहन छै तकव प्रचार

पहिन पाँतिक अन्तिम शेटक अन्तिम अक्षरपव ले पड़त ।

प. गोविन्द मा जी अपन पोथी " मैथिली छन्द मोहरी " क पृष्ठा ४३ ले लिखै

छथि जे ---- ए,ँ,ँ,ँ कतहू नघ् होगत अछि आ कतहू दीर्घ आ तकव रीद ओ समान

नियम देखल छथि । ह्मदा उदाहरणमे देन होन जे-जे शेट, सभ लेल छथि मे

प्रथा:-प्रथा: आगँ १३० रँथ पहिबक अछि सेहो मोति नामक छान्दमे राजन

जागत छन ओना मात्र थकय रङ्गमे । हमर कहँक मतनरें जे म्नी (चाहे कोना

जातिक किएक ले हो) एरँ लीव-छान्द ओहि शेटारलीक अन्तु ले छन आ ले

अछि । तँ हम ओग नियम सभक रिराएन ले कवरें मोन स्रले कहरें जे ए,ँ,ँ,ँ जतए

बहए ततए दीर्घ बहत । हँ, दुठाँ गगन देखन बाखु पहिन जे रँहूत कान ए,ँ,ँ,ँ

आदिक उँचाका कोमल त जागत छै ह्मदा कोमल उँचाका कावर्षे ओ नघ् ले मानन



जाएत । आ दोसर गप्प जे प्राप्ति-काममे संयुक्त विरोध स्वकण लोक सब अण्डा
स्वविधाक हिमालय ए.ए.उ. आदिके कते नय आ कते दीर्घ गानि लेना । शुक्राती
प्राप्ति काममे उठावा दूध-सुखणव आधारित अछि मले एहन उठावा जकवा रोजामे
लेमी कठिनाई ले हो । दूदा जखन एहे प्राप्ति संकावशुद्ध रनि गेल तखन
संयुते जकाँ एकरो विरोध तेले आ अर्धतमे भाया आएन । दूदा आगेके जूगमे
जखन की मैथिली संकावशुद्ध रनि गेल अछि तखन प्राप्ति-अर्धतमे नियमक कोण
काज (आरं अहं सब ए डब ले देखाएर जे संकावशुद्ध लेना मैथिली मवि
जाएत । जे एतरे डब अछि तखन मैथिलीकेँ १००० रर्थ पाछु न जाड आ तखन
प्राप्ति-अर्धतमे नियम निश्च । रस्तुतः भायाकेँ मवर आ जगर प्रकिया मयवस्थ
जकाँ छे जे की लोकन ले जा सकैए । है, किछु स्थान बाखन जा सकैए जेमे मूल
भायाक विशेषता नर भायामे बहि जाए) तै हमार ए स्पष्ट कर्पे मानर अछि जे
ए.ए.उ. उ आदि जतए बहे ठकवा दीर्घ मय (गुणा दुन्दमे केखला कान अपराध
स्वकण काज चलेर लेना ए.ए.उ. उ आदिके नय मानन जाएत बहलेए दूदा ए छुट
जकाँ लेन नियम जकाँ ले) ।

प. जी एनी पोथीक पन्ना १४८१११ एकरी नियम देनाह जे --- तद्धुर शिष्टमे
अनुसं तेमव उ टाविम स्थानव पडनिहार ए.ए.उ.उ सब नय थिक जेना ---
तेन (२१)----- तेनाह (२२)
लेन (२१)----लेनव (११११)

दूदा प. जी ए ले स्पष्ट केनाह जे अनुसं तेमव उ टाविम स्थानव पडनिहार
ए.ए.उ.उ सब नय किएक होगत अछि ।

आरं आउ टनी प. गोविन्द मा जी द्वारा लिखित आ १९५५मे प्रकाशित पोथी "
मैथिली दुग्म उ विकास " (पहिल संका १९७५मे मैथिली प्रकाशित समीतिर आ
दोसर परिवर्धित संका मैथिली अकादेमीर)क १९५५ पन्नाव----

" ११ (१) ऐदिक कामहिसं ए नियम टन अरैत अछि जे एके पदमे एके स्व उदात
बहए, आन सब अवदात भए जाए । ए नियम शेष मियात कहलैत अछि । एहि प्राप्ति
नियमक प्रकियामयकण मैथिलीमे एक रैडर महत्पूर्ण नियम ए अछि जे अनुसं
प्रथम उ द्वितीय स्थानकेँ जोडर शेष जतेक धनि अछि से नय भए जागत अछि ।
एहि नियमकेँ पडित प्रिन्सिपल सारेर Rule of short antepenultimate कहन
अछि । मैथिलीमे एहि नियमक अनुसार एक शिष्टमे अधिकर अधिक दुग थक बहि
सकैत अछि, आ सेहो अनुसं प्रथम रा द्वितीय स्थानमे ,तारिसं पुरि सकन

स्व नियमतः नय बहत, तथा प्रवादि जोडरानं जखनहि कोना थक धनि

तृतीय रा तारिसं पुरि पडर जाएत तखनहि उ नय भए जाएत । एकव उदाहरण
ग्रंथमे रावराव तेठैत, एतए दुग-टावि उदाहरण देखलैत छी---

गानि,गनिगव,कष्ट,कष्टिह, रात, रैतह, रैतहा, रैतहरा ।

छे एहि नियमकेँ कल आव परिवर्धित कवर आरंभक । प्रिन्सिपल सारेरक कथासुमाव
यदि तृतीय र्प नियमतः नय होगत अछि तै " पाठन ", " आरं " गलादिमे "आ
"नय किएक नहि लेन ? एकव समाधान प्रिन्सिपल सारेर ए देन अछि जे अन्तिम नय
स्व रा नयतम स्वक लेखा नहि होगत अछि । पवस्तु दुन्दमे शीतमेः उदाहरणर आ
उठावा-परिप्रेक्ष्यर ए स्पष्ट अछि जे अन्तिम नयतम स्वो एक र्प एक

syllable गनन जागत छन । ते उक्त नियमक स्वकणहण बाखर सद्धतिः मैथिलीमे
थक धनि अनुसं टावि मात्राक तितले बहि सकैत अछि, तारिसं पुरि नहि ।

फलतः मैथिली शिष्टक अरमान २२,११२,२११,१२१ एनी टावि प्रकावक भए सकैत अछि उ
तारिसं पुरि सकन धनि शिष्ट अपरादे नय बहत यथा-म० आकानि, मै० अकाम
गलादि । "

लेव प. जी १९९२मे प्रकाशित पोथी " उदातव मैथिली र्कावण " द्वितीय



संस्कारक पृष्ठा ६६पव, २००७मे प्रकाशित पोथी " मैथिली परिचालिका " केव
पृष्ठा ६६पव आ २००१मे प्रकाशित पोथी " मैथिली परिशीलन " केव पृष्ठा ३.३-३.१पव
अह गप्प एकसागल कर्पस कहल-लिखल छथि ।

तँ पं. जीक कबीर पाँछी पोथीमे ए रियम-रन्तुकेँ पठ्नाक पढाति हम अपन किछ
रिचाव बाखन चारै--

रैदिक कानमे छन्द निर्माण जेन नय-युक्त प्रकिया ले छन । मात्र अक्षरकेँ
गणि क छन्द रैले छन जकरा छोरा जेन उदात, अक्षरदात एरि स्वरित कणक महासता
जेन जागत छले । उदात मल कोला अक्षरक स्वरकेँ उठा क गाएर, अक्षरदात मल
कोला अक्षरक स्वरकेँ मिटा खमा क गाएर तथा स्वरित मल कोला अक्षरक
स्वरकेँ तबत उगव उठा क तबत मिटा खमा क गाएर । रैदिक साहित्यमे जे
अक्षर नय अछि तकर उदात उदात भ सकेत तेषाहिते जे अक्षर दीर्घ अछि तकर
उदात अक्षरदात भ सकेत छन । मोन कर्पस कही तँ उदात, अक्षरदात-स्वरित कोला
अक्षरक मात्रागव निर्भव ले छन ।

२) रैदिक साहित्य केव रौद लौकिक संस्कृतमँ न क प्राप्ता-अप्रभुभा भाषा
कर्पमे मैथिली साहित्यमे रैदिक छन्द ले बहन मल या तँ लौकिक संस्कृतक
रर्पित बहन या मलिक छन्द ।

३) पं. जी नय-युक्त नियम आ उदात-अक्षरदात-स्वरित प्रकियाकेँ एके मणि जेल छथि ।

४) पं. जीक हिमारेँ विश्वमल साहेरँ द्वारा देन जेन Rule of short
antepenultimate रैसी ठीक ले अछि तँ पं. जी ओहिमे संशोधन केनार । आरि हमर
प्रश्न अछि जे ई उगवका नियम मैथिली जेन अनिरार्य अछि तखन ओहिमे संशोधन
किएक ? संशोधित होमए रैना नियम अनिरार्य तैए ल सकेत ।

३.) पं. जीक पोथी सभ पठ्ना हमरा रँहूत रैव अक्षरत होए जे पं. जी र्याकवा
मोम, छन्द मोम आ धुनि रिक्ता तनुक नियम एकेमे मणि देल
छथि । हलक भाषामे नयुतव आ अति-नयुतव धुनि होए छे छदा ओकर विरोध
र्याकवा आ छन्द मोममे ले भ धुनि मोममे होए छे । ई लेखककेँ एके
पोथीमे धुनि रिक्ता देरौक बहे छे तँ ओकर खल अनग क देन जागत छे । ए न
क पं. जीक पोथीमे रँहूत ठाम संदेहमेक स्थिति रैनि जागत छे ।

हम उगवमे जे रिचाव बाखन तहि अभावगव अपन निष्कर्ष द बहन छी----

अ नियम अनिरार्य नियम ले अछि कावा पं. जी स्वयं ए नियमक रँहूत बस अपराद
देखेल छथि । कोला अनिरार्य नियममे ई एतेक अपराद हो तँ निश्चित कर्पस ओकर
अनिरार्यतागव प्रमटिह नाले छे ।

अ नियम र्याकवाक ओ छन्दमोम ले रँनकि मोमकोयीय अछि । मल ए नियमक
महासतामँ अहाँ संस्कृत रा अथ भाषाक मोमकेँ मैथिलीकवा क सकेत छी । मोम
पाठ्ना प्राप्ता भाषा संस्कृतक मोम, सभकेँ (मल मोमक मुकसँ पहिने, दोसव रा
तेसव दीर्घक उदात गाएर क देनक । आरि आगु ए गाएर कएन दीर्घ जेन हम मात्र
कोमल मोमक प्रयोग कवर) कोमलीप्रात केनक जेना--आकशि केव रँदना अकाम, आयो
केव रँदना अयो आदि । रौदमे एही नियमक अभावगव अंग्रेजी मोमक अह हान भेल
जेना डांगर केव रँदना डलेर, स्मेल केव रँदना टीमल, आदि-आदि । छदा अ
नियम ओहल मोममे नागन जे मोममे विराम जेराक स्वरिधा ले छले । "परिशीलन" अ
एकठा मोम अछि छदा एकव उदात -- "पवि-शी-मल" होएत अछि मल एके मोममे
दु ठाम विराम अछि तँ ए मोमकेँ कोमल कवरौक जकराति ले जेन । अवरी-हावसीक
हजारा मोम, मुन कर्पस मैथिलीमे छनि बहन अछि (मल रिना कोमल केन) कावा
ओ मोम, सभमे विराम छे रा बहन छेते । ई अहाँ " मैथिली " मोमक उदात
कवरौ तँ " मै-थिली " उदातिह छेत । छदा विरामक अ स्वरिधा आकशि, आयो,



डांगरव आदि शिष्टमे ले डले तँ ओकवा कोमन रंग प्रयोगमे लेन गेलै। स्रग
प. जी अग्रवाद सक्रुप जे शिष्टक उद्गवण देल छथि तकरा देखु---रौसन--केव
उटाका रौ-सन लेन। मासन--केव उटाका म-सन लेन। अगनहू--केव उटाका
अन-नहू लेन। मल एहू शिष्ट, सभमे विराम छै तँ एहू शिष्ट, सभके कोमन कवरौक
जकराति ले रूमाएन। जँ ए नियमक अभावप देखी तँ आधुनिक मैथिली भाषाक कतेको
शिष्टके ठीक कवरौक जकराति रूमाएत। हाजेमे दबतगाम प्रकाशित मैथिली दैनिक
" मिथिला आराज " ए नियमक अभावप गनत अछि। सली नाम हेते " मिथिला आराज "
रूमा मैथिलीक जे बाहू-मैथि-केत सभ छथि से ए नियमक पालन ले क क मैथिली
भाषाक निजताके तोड़-रौगव लागल छथि। तँ आर अर सभ रूमि सके छिं जे प. जी
जे नियमके अनिवार्य माले छथि से मात्र अर भाषाक शिष्टके मैथिलीकरण
कवरौक ठेका थिक। उटाका आग्रह ठेका जकराति तैयो सकेत छै आ नहियो त
सके छै। ए शिष्टकोषीय नियम आजुक कालमे ओतरे महवपूर्ण अछि जतेक की पहिल
हुन। लेखक सभसँ आग्रह जे ए नियमसँ अर भाषाक शिष्टके मैथिलीकरण कथि आ
मैथिलीक निजताके सुवर्धित राखथि। ए के रिपरीत लेखला काल भाषाक निजता
बखरौक लेन शिष्टके दीर्घ सेहो कएन जागत छै जेना उर्दूमे उस्ताद रूमा
मैथिलीमे उस्ताद। रकीन केव रूदनामे ओकीन आदि-आदि।
तँ एतेक धरि एनाक पछाति हम कहि सके छी जे ए,ए,उ,ओ आदि जे ठाम बहत दीर्घ
कालमे बहत। अकाका कपसँ रा अगना मोल नयू मागि लेरौस नीक जे मैथिली
भाषासँ नयू-थक छै रैदिक उद्गक लेखन प्रचलन कएन जाए। एमँ अनावश्यक
कपसँ छटि होगत उर्जा रूचत आ भाषाक विकास सुनिश्चित हएत।

6

मैथिलीमे रौन गजन

की थिक रौन गजन:

किछ लोक "रौन गजन"क नामसँ तेनाहिने टोकि उठल छथि जेना केओ हुनका
अनछेकेमे हूड-पेछि देल हो। जँ एहन रौत मात्र मैथिली ए ठामे बहिने तँ कोला
रौत ले, रूमा ए टोकिर हिन्दी आ उर्दूमे सेहो भए बहन छै। काका ए अभावप
मात्र मैथिली ए ठामे छै आर कोला भावतीय भाषामे ले। जँ हम कोला
हिन्दी-उर्दू भाषी गजनकाव मित्रसँ "रौन गजन"क छटि करैत छी तँ छेष्ट कहैत
छथि जे उर्दूक रूत गजनकाव सभ रूत मेवमे रौन मलारिजनक रणन लेल छथि
खाम कए ओ सुदर्शन हाकिम द्वारा कहल आ जगजीत सिंह द्वारा गाओन गजन-----
"ये कागज की कस्तरी रौ रौस का पानी" रौन सदर्भ दै छथि आ ए रौत ओन स
छै रूमा " रौन गजन"के हूठका कए ओकवा लेन अनग स्थान मात्र मैथिली ए ठामे
देन गेलै। आ ए मैथिलीक सौभाग्य थिक जे ओ "रौन गजन"क अगुआ रौन लेन अछि
भावतीय भाषा मल।

जहाँ धरि रौन गजनक रियस चरण केव रौत थिक तँ नामसँ रूमा जागत अछि ए गजनमे
रौन मलारिजन केव रणन बहत छै। तथापि एकछी परिवर्तना हमरा दिससँ -----
एकछी एहन गजन जाहि महक हलक मेव रौन मलारिजनसँ रणन हो आ गजनक हलक
नियमके पुररर पालन करैत हो ओ रौन गजन कहैरौक अधिकारी अछि। जँ एकवा



दोसब शेरमे करी तँ अ कहि सकैत छी जे रौन गज्जन जेन नियम सब रहब बहटे जे गज्जन जेन होगत छै रैस खानी नियम रैदनि जेते ।

आरौ आरौ रौन गज्जनक अतिशय पब । किछ लोक कहता जे गज्जन दर्शनिकतासँ भवन बहे छै तँ रौन गज्जन छै ल सकैत । अदा ठहन-ठहन लोक बिदेहक अंक-111जे रौन गज्जन विशेषांक अछि तकर हलक रौन गज्जन पठायि हुनका उत्तर भेटै जेतहि । ओना दोसब रौत अ जे करिता-कथा आदि सब सेहो पहिले गतीव होगत छन अदा जखन ओहिमे रौन सहित छै सकैत तँ रौन गज्जन किअक ले ? ओनाहो मैथिलीमे गज्जन बिधाले रैहूत दिन धरि मायास (थाम कए गज्जनकाले सब द्वारा) अरुदेवि देन जेन छलै तँ रैहूत लोककेँ रौन गज्जनसँ कछु भेलाग स्वाभाविक छै ।

की रौन गज्जन जेन नियम रैदनि जेते:

जेना की उपरमे कहन जेन अछि जे रौन गज्जन जेन सब नियम गज्जन रौन बहटे रैस खानी एकठा नियमसँ समझौता कबए पड़त । मास जे रैहब-काहिया-बद्रीफ आ आव-आव नियम सब तँ गज्जन जकाँ बहटे अदा गज्जनमे जेना हलक शैव अलग-अलग भारकेँ बहैत अछि तेना रौन गज्जनमे कर्तन रूमागए । तँ हमरा हिसारौँ एठाम अ नियम छुटैत अदा तेओ कोना दिकत ले काबि अलगसन गज्जन तँ होगत छै । अर्थात् रौन गज्जन एक तबहै "अलगसन गज्जन " भेल ।

रौन गज्जनक पुरि भूमिका:

तारीखक हिसारौँ 24/3/2012केँ रौन गज्जनक उपेति मानन जाएत (एहि पाँतिक लेखक द्वारा 24/3/2012केँ दिल्लीमे सहित अकादेमी आ मैथिलीय द्वारा आयोजित कथा गोष्ठीमे अ रौन गज्जन नामक बिधाक प्रयोग कएन जेन) अदा ओकर स्वरूप मैथिलीमे पहिलेहँ फड्कि छै छकन छन । 09 Dec. 2011केँ अण्टिहार आखर <http://anchi.nhar.akhar.kolkata.ablogspot.com> पब प्रकाशित श्रीमती शान्ति लक्ष्मी टोषरी जीक अ गज्जन देखन जाए (रौदमे अ गज्जन मिथिला दर्शनक अंक मग-जून २०१२मे सेहो प्रकाशित भेलै) आ मोहन जाए जे रौन कोना घोषणकेँ एतेक नीक रौन गज्जन कोना लिखन जालै-----

शिशु सिया उपमा उपमान छिये हमर आह्वानि रैथी
मैथिली गार्गीक कोमल प्राण छिये हमर आह्वानि रैथी

छिमेकित कमलनयन, धर-धर माथन मन कपोल
पुष्पसमीक चमेकित छन छिये हमर आह्वानि रैथी

रिहसित ठाव मे अमृतधारा रिनथेत ठाव सोमरस
शिशु स्वरूपक शीतलपराण छिये हमर आह्वानि रैथी

लोनिहार किहकारी सबस मिथिलोबन महोदय पोथी
दा-दा-ना-ना-माँ मालेगामा गान छिये हमर आह्वानि रैथी

सकन पतिरावक अनखतावा जगपतीक सबसती



अगन यैया-पितृश्रीक जान छिये हमर आश्रयति रैठी

उपनिषाक रैठी छिये स्वतंत्रिष्ट मिथिलाक दीनु नम्र
माहृ पिहृ नमक अवगान छिये हमर आश्रयति रैठी

"नीतिनक्षत्री" बिदेहक घब-घब देखय गयह शिशुनक्षत्री
रैठीजातिक त्रिष्टु ग्राम छिये हमर आश्रयति रैठी

.....रूपी 22.....

तेनाहिने एकठी हमर रीना हुंद रैहवक गजन अचिह्वाव आखव

<http://anchi.nhar.akhar.kol.kat.abl.ogspot.com> श्री बिदेहक हेमरूक रमन
<http://www.facebook.com/groups/videha/> पब 6/6/2011कै आनर डन से
देखु-----

होगत छैक रैवथा आ ले रौआ
कागतक नार रैना ले रौआ

देथिहै घुसो ल टोवरौ घब मे
हाथमे ठेगा उठा ले रौआ

तोले पब सतठी मान-ग्राम
माएक मान रैठ । ले रौआ

छैक गड्ग कष्ट घृाक करेजमे
थेमसँ ओकवा छै ले रौआ

नहि सुको माथ तोहव दुग्मन नग
देशेक जेन माथ कछा ले रौआ

तेनाहिने 4 अक्टूबर 2010कै अचिह्वाव आखव

<http://anchi.nhar.akhar.kol.kat.abl.ogspot.com> पब प्रकाशित गजेन्द्र ठाकुर
जीक ए गजनकै देखन जाए----- जे मिद्वारनीक आवाव पब रौन गजन अछि रुदा अर्थ
रिस्तारक कावर्षे रौन आ रूठ दू जेन अछि-----

रौनव पछै लेने अछि तैयाव
रिबन सभ कक ल उछाव

गाएक अर्ब-रौन सुनि अचछेले
दूहे समझै जनताक कपाव

पुन रैलरीक समटा छैक ले
अर्थमिन्न-पौथीक डले भुडार



कोनो रौती उरैनी देरौक लेन
आँउ रँजाँउ रूँठ णम - भजाव

डबक घाँठ नहएन छी हम
मे महरँ दहोदिने अलाटाव

एवारत अछि देखा - देखा कए
सभछी देखैत अछि ओ रागाव

करिव मीताबास मा जौक करी १४४०मे लिखन रौन गजन सेहो छनि ।
ए तीसरी गजनक आधार पव ए कहँ रौनी उँटित जे रौन गजनक भूमिका रँहूत पहिले रँनि
गेन छन ह्रदा रिश्ता २४/३/२०१२कें भेलै । आ ए रिश्तामे जतेक हमर भूमिका
अछि ततएँ हिनका सभकें सेहो छनि । एँठाम ए कहँ कला रँजाए ले जे बिदेहक अँक
रौन गजनक पहिल रिशेयाँक अछि । बिदेहक अँक-१११ जे की रौन गजन रिशेयाँक अछि
जाहिमे हन १६ ठी गजनकावक हन ९३ठी रौन गजन आएन । संक्षिप्त विवरण एना
अछि-----

करी मा जौक १३ठी रौन गजन, गवा मल्लिक जौक २ठी, ह्रदा जौक ३ठी, प्रेमति
मैथिल जौक १ठी, पंकज टोषवी (नरन श्री) जौक ८ठी, जराहव नान काँष्टग जौक
१ठी, क्राँति ह्माव सुदर्शन जौक १ठी, जगदीश टँद ठाँव अमिन जौक १ठी,
अमिन मिश्री जौक ३०ठी, उमहकानि जौक १ठी, शिर ह्माव गान्दर जौक १ठी, टँद
मा जौक १४ठी, जगदीश मा मल्ल जौक ६ठी, बाजरी वंजन मिश्री जौक ४ठी, मिहिव
मा जौक ४ठी, गजेन्द्र ठाँव जौक १ठी आ तहि संगे आशीय अलंकारक २ठी रौन
गजन आएन ।

रौन गजनक आगले ७ठी रौन गजन पव आलेख आएन । आलेख काव मँ छनि---- ह्रदा जौ,
उमहकानि, टँद मा, जगदीश मा मल्ल, अमिन मिश्री आ आशीय अलंकार आ मिहिव
मा । आ तारीख १५ अक्टूबर २०१२ धरि अलंकार आखवप हन १३३ ठी रौन गजन आ
३५ठी रौन करौग आरि टूकन अछि संगे मंग करी १०ठी रौन गजनपव आलेख उगर्द्ध
अछि । एखन धरिक ह्रदा रौन-गजनकावमे श्रीमती शान्तिनक्षत्री टोषवी, जगदीश
मा मल्ल, अमिन मिश्री, टँद मा, पंकज टोषवी (नरन श्री) , शिर ह्माव गान्दर,
श्रीमती गवा मल्लिक, उमहकानि, मिहिव मा, बाजरी वंजन मिश्री, क्राँति
ह्माव सुदर्शन, जराहव नान काँष्टग, श्री मती करी मा (ए सभ गौंठेँ
अलंकार आखवक <http://anchinharakhar.kolkata.ablogspot.com> खोज छनि गजनक
मागलेमे); प्रेमति मैथिल, श्री जगदीश टँद ठाँव " अमिन ", रिनीत
उगेल, ह्रदा जौ, गजेन्द्र ठाँव आ हम मल्ल । आँर हमरा ए पूर्ण रिशेय
अछि जे रौन गजन मैथिलीमे पसवत आ लना- लुँठका केव जौहपव चउँत ।

7

तन्त्रि गजन



जखन बिदेह द्वावा रौन गज्जन बिशेषांक निकलन बरह तखन के० ले मोटल बरह जे एतेक जन्दिअ गज्जनक नर प्राकग " भक्ति गज्जन " बिकसित भए जाएत । ह्मदा से भेल आ ताहि जेन सभसँ रौनी धन्यवादक पाव छथि ओ लोक सभ जे की गज्जनक सिद्धा कबैत छथि । काका जौ ओ सभ ले बहितिथि तँ आग गज्जन ले बहिति.. रौन आ भक्ति गज्जनक तँ रौते छोट् ।

की थिक भक्ति गज्जन--

जहाँ धरि भक्ति गज्जनक नियम चयन केव रौत थिक तँ नामेसँ रूमा जागत अछि ए गज्जनमे भक्ति केव रूषि बहैत छै । तथापि एकठा परिभाषा हमरा दिससँ ---- " एकठा एहन गज्जन जाहि मँहक हलक शैव भक्ति मलारिज्जलसँ रौन हो आ गज्जनक हलक नियमकेँ पुरुरत पावन कबैत हो ओ भक्ति गज्जन कहैरौक अधिकारी अछि" । जौ एकबा देसब शैलमे कही तँ ए कहि सकैत छी जे भक्ति गज्जन जेन नियम सभ रएन बहैत जे गज्जन जेन होगत छै रौस खानी नियम रौदनि जेते । मे भक्ति गज्जन रौन गज्जन जकाँ छै ।

की भक्ति गज्जन जेन नियम रौदनि जेते:

जेली की उगवसे कहन जेन अछि जे भक्ति गज्जन जेन सभ नियम गज्जन रौना बहैत रौस खानी एकठा नियमसँ समसौता करब गड् । माल जे रौनव-कारिया-वदीय आ आव-आव नियम सभ तँ गज्जन जकाँ बहैत ह्मदा गज्जनमे जेली हलक शैव अनग-अनग भारकेँ बहैत अछि तेली भक्ति गज्जनमे कठिन रूमागए । तँ हमरा हिसारौँ एगाम ए नियम छुटैत ह्मदा तैओ कोला दिकत ले काका हलसन गज्जन तँ होगत छै । अर्थात भक्ति गज्जन एक तबहै " हलसन गज्जन " भेल ।

किछ लोक आपति कए सकै छथि जे गज्जन तँ दार्शनिक बहिति छै तखन ए भक्ति गज्जन किएक ? उचित प्रश्न ह्मदा हम कहै जे दर्शन आ भक्ति दुनूमे रौहूत अतब छै जकब चर्चा रिद्धान सभ करिबै बहै छथि तँ ए भक्ति गज्जन दर्शन रौनासँ अनग भेल ।

तारीखक हिसारौँ भक्ति गज्जनक उपेति केँ मानन जखत जखरबी 2012केँ मानन जखत जाहिमे जगदण्द मा मल जौक भक्ति गज्जन आएन । ह्मदा ओहसँ पहिल चिह्न मा द्वावा एकठा आएन जे ताहि समयकेँ हिसारौँ ठीक छन ह्मदा रौत जलक सभ ओहिमे कारिया आदिक दोष रूमाण जेन । ह्मदा भक्ति गज्जन स्वकग मैथिलीमे पहिलहँ फड्ि छ भए छकन छन । मैथिलीक प्राबलिके दोबसे भक्ति गज्जन शुक्खात भए छन छन करिब सीतावास मा आ मलुग जौक गज्जनसँ सेहो शुद्ध अवरी रौनवसे । मल 1928 धरि भक्ति गज्जन पूर्ण कण्ठे स्थापित भए जेन छन मैथिलीमे । तँ एतेक देखनाक गड्ति आँ देखी करिब सीता वास मा आ ओहि समयक किछ भक्ति गज्जन---तँ आँ देखी 1928मे प्रकाशित करिब सीतावास मा जौक " सुद्धि स्वा (प्रथम रिद्)मे संगलित एकठा गज्जनकेँ जे की रहुत: " भक्ति गज्जन " अछि---

जगत मे थिकि जगदण्द अहिक पथ आरि रौसन छी
हमर को ले सुलैये हम सभक गुण गारि रौसन छी

न केलाँ धर्म मेरा रा न देरावाधल कोख



फूँटेरौ मेँ डुलौँ नागन तकव फन पारिँ रौसन डी

दया न्नातीक घनमाना जकाँ अगलक भूतन मेँ
नगौल आस हम टातक जकाँ झूँह रौसिँ रौसन डी

कहू की अगँ अगल मँ हूँवेये रौत ल किछु
अगल अगल मँ टुपकी नगा जौ दारिँ रौसन डी

कबे यदि दोष रौनक तँ न हो मल रोख माता कै
अही रिश्यास कै केरन छदन मेँ नारिँ रौसन डी

एकव रौहव अछि-1222-1222-1222-122 मल रौहले हज्ज

लाष्ट--१) करिक मुन रतनीकेँ बाखन गोन गोन अछि । रिभडि सत अग-अग अछि जे
की गमत अछि ।

२) करि द्वावा टँद रिंदु हाऊ सेहो दीर्घ मागन गोन अछि जे की गमत अछि ।
प्रमग रने गहो करै रौजाए ले जे करिब अगल गजन समेत सत करिताये
टँदरिंदुकेँ दीर्घ मागि लेल छथि । शायद तँए ग गोरिंदु मा जौ सेहो
टँद रिंदुकेँ दीर्घ माले डुनाह आ जकव खडन भए टुकन अछि ।
एकेँ अगले मगु जौक भडि गजन अछि । रिजय नाथ मा जौक भडि गजन अछि ।
कहरोक मतनरै जे अगलहाव आखक अगलमँ पहिलेते भडि गजन डन ह्दो ओक
नामाकवण (पहिल कगमे जगदार्णद मा मल) अगलहाव आखक गडाति भेल ।

रतिमल समयमे हमरा छोडिँ नगतग सत गजनकाव भडि गजन नीथि बहन छथि जेना ,
जगदार्णद मा मल, टँद मा, अगित मिथि, गकज टोधी नरन श्री, रिंदेयेव
लगाती, न्नाति मिथि, श्रीमती शीति न्नाती टोधी, श्रीमती गवा मल्लिक,
ओम प्रकाश, रौन ह्दो गौठक, जगदीश टँद ठाकुर अगल, मिथि मा, प्रदीप
गुल, अगल मल्लिक, बाजीर वंजन मिथि गवादि-गवादि ।

ए रिथामे आब अगलहाव जकवति अछि ए छोट आलेख आ हमर छोट बूझिमे भडि
गजन एहन रिभूत रतु ओतेक ले आएन जतेक एरोक टाही । ओना हम ह्दो रिंदेयेव
ए रिमेविक लेन धनराद ले देरै कावण हमर रिंदेह डी आ लोक अगल आगल
धनराद कोना देत ।

8

गजनक माझ

हमरा आगुमे गमन अछि “अगल हाक माझ” तावार्णद रिथोगीक गजन संग्रह ।
टावीस गेट गजनकेँ समेटल । लोककेँ डगुना नारि सकेत छैक जे मैथिलीमे गजनक
आलोचना कहिआमँ शुक भए गेलैक । ए डगुनाक कावण ह्दोत: हम दु कपेँ देथेत
डी पहिल तँ ग जे गजन कहिओ मैथिली माहिक ह्दोवावामे ले आएन
दोसव-मैथिल-जन एथला गजनक समाज मिथ्य आ ओक रौलातवीसँ गविटित ले छथि ।
समाज किएक अगल-आगल गजन रूमनिहाव सेहो हान एहन छथि । रौसी दुव ले
जाए पडत । “यव-रौहव” जूनाग-सितयँव 2008 गमे प्रकाशित अछि आजादक लेन
“कनार्णद भडि रौहल मैथिली गजनगव टँद” पडि मिथ मागिना रूमरामे आरि



जाएत ।

जौ रियासतुव ले रूमाए तौ फोड़के देवले तावार्नद रियोगीक पोथीसँ हष्ट अज्जाद
जीक लेखक छट कवी । ए लेखक पहिले पाँति थिक- मैथिलीमे गज्जन लिखरौक सुदीर्घ
पवम्पवा बहन अछि..... । दूदा कतेक सुदीर्घ तकव कोला ठेकावा अज्जादजी ले देल
छथिन्ह । फेब एही लेखक दोसव पौवामे अजित जी दुमरजामे हँसन छथि । ओ मैथिल
द्वारा समान गण-सम्पामे गज्जनक पाँति ले जोड़रौक प्रथम कावण मालेत छथि । जे
मैथिलीमे शैव एकदम ले लिखन गेल । आरौ पाठकगण कल प्रेक्षण देन जख । लेखक
पहिल पाँति तौ अगलकै प्रेक्षण हेरौछाँ कबत जे मैथिलीमे गज्जनक सुदीर्घ.... । ”
सभसँ पहिल गप्पा जे गज्जन किछु शैवक संग्रह होगत छैक ओ दोसव गप्पा ए जे जौ
अज्जाद जीक मोतरिक शैव लिखल ले गेलैक तौ फेब कोन प्रकावक सुदीर्घ
पर्वपारकै मोष पाड़ि बहन छथि अज्जादजी । एठाग गनती अज्जाद जीक ले मैथिलीक ओहि
गज्जनकाव सभक छहि जे गज्जन तौ निथेत छथि दूदा पाठककै ओकव परिचय, गठन, निश्चय
आदि देरौसँ पवहेज करैत छथि । ओना प्रसंगरमे ए कहरौमे कोला सकौट ले जे गज्जन
कथला लिखन ले जागत छैक । दूदा मैथिलीक धूर्धव सभ गज्जन निथेत छथि । मुन कर्ण
अवरी-हावरी-उर्दुमे गज्जन कहन जागत छैक लिखन ले । पाठकगण गज्जनक ए निश्चय भेल ।
आरौ फेबो अजित जीक लेखकै आगु गठु आ अगल कपाव गिष्ट अगलकै खुल-खुलामे कए
लिख । अजित जी अगल संपूर्ण लेखमे जे शैव सभ मञ्जा कहनथिन्ह अछि रञ्जुतः ओ
मञ्जा छैक ले । पाठकगण मोष बाखु, मञ्जा गज्जनक ओहि अंतिम शैवकै कहन जागत
छैक जेमे गज्जनकाव (एकवा रौद हमा शौगव शैव, प्रहङ्ग कवर, अष्टाग मोष बाखु
शौगव गनत उँटावण थिक ।) अगल नाम रा उँगलामक प्रयोग करैत छथि । (अष्टाग मोष
बाखु हलक गज्जनमे नाम रा उँगलामक समान प्रयोग होएरौक चाली ए ले जे एकवा
गज्जनक मञ्जा तावार्नदसँ होखै आ दोसव गज्जनक मञ्जा रियोगीक नामसँ नामसँ ।) दूदा
आश्चर्य कषेण अज्जादजी जे शैव सभकै मञ्जा कहनथिन्ह अछि ओगमे कोला शौगवक
नाम- उँगलाम ले भेटैत । ओना अजितजी हिन्दीक सुप्रसिद्ध शौगव छथि तकव प्रमाण
ओ लेखक प्रार्थनेमे दए देल छथि ।

हँ तौ ए लेखक सक्रिय अरलोकक गङ्गाति फेबसँ रियोगी जीक गज्जन संग्रहपव
छली । तौ श्रुत्वात कवी संप्रतीकवसँ, हमर ले रियोगी जीक । सभसँ पहिल ए जे
अष्ट मैथिली शौगव जकाँ रियोगीओ जी मालेत छथि जे गज्जन लिखन जागत छैक । दोसव
गप्पा जे रियोगीजी द्वारा देन अगल भाषा सँधी रिचवसँ मलैत अछि जे भनहि

रियोगीजी उर्दु सीख उर्दुक पोथी पठेत हेतह दूदा गज्जन तौ कियहूँ ले
निथेत हेतह, कावा, पाठकगण प्रेक्षण देन जख । अवरी-हावरी-उर्दु तीनु भाषाक उँद
शान्द एकमतसँ कहै जे दोसव भाषाकै तौ जोड़ू अगला भाषाक कठिन शैवक
प्रयोग गज्जनमे ले हेरौक चाली । ठीक उँगलाम भाषाक निश्चय जकाँ मैथिलीओ मे
निश्चय छैक । तौ महाकवि विद्यापति अगल कोनहुँ गीतमे छष्ट, रिष्ट आदिक
प्रयोग ले केल छथि । दूदा रियोगी जी अगल पोथीक नाम बखल छथि “अगल हाफक
साक्षर” । जलसमान हाफ तौ कहुना रूमि जेतैक दूदा साक्षर.... । एठाग
प्रसंगरमे ए कहरौ रौजाए ले जे रियोगीजी अगलकै अनअभिज्ञात शैवक प्रयोग
मालेत छथि ।

आरौ हमरा लोकनि ए पोथीमे प्रस्तुत चालीसो गज्जनक छट कवी । पहिले भाषाकै
देखी । ओना रियोगीजी भाषा सँधी गनती जनि रूमि कए लोन-रमे ततेक ल कएन
गेल छैक जकवा अगला कए आँगा रँठरौ सभरौ ले । एकव किछु उँदाहरण प्रस्तुत अछि-
दोसव गज्जनक मतनाक दोसव पाँतिमे दुखक रँदना यातना । अही गज्जनक दोसव शैवक पहिल
पाँतिमे नावाक रँदना जूमा । तेसव गज्जनक दोसव गज्जनक दोसव शैवक दोसव पाँति
धधवाक रँदना जूमन । अही गज्जनक अंतिम शैवमे प्रहङ्ग तर्ग, आरौ एकव अर्थ
जलताकै रूमिगि । फेब आगु गज्जनक दोसव शैवमे नजरि केव रँदना दृष्टि, दमग गज्जनक



दोसब शैबमे उद्यक जगह रिगरीत । एगावहम गजनक मतनामे दूरीधक जगह छै । तेबहम गजनक तेसब शैबमे लकदिनी आ रँदीक प्रयोग । तगम गजनक अतिम शैबमे भठैवगक रँदना रँदवग । पटीम गजनक तेसब शैबमे गजोबिखक रँदना ज्ञातमना । टोतीम गजनक मतनामे दूध केब रँदनामे पीड-गवादि । उना ए उदाहकाक अतिविड हलक गजनमे हिन्दी, उर्दू, संस्कृत आदि भाषाक तमेम रँहूँ शैक ततेक ले प्रयोग भेल छै जे गजनक मुँह सँ, भार-भंगिमा, बसकेँ भविगव रँना देल छै । तैगव रियोगीजी गरि पुरक घोषणा केल छै जे ओ उग परिवारक ले छै जिखका संकावमे अतिज्ञात शैक, भेटेल हो । रँदना छोट्टा एकटा छै कहल जा सकै । जँ टादीमो गजनक भाषाकेँ पेशासँ देखल जाए तँ हमरा हिसारै रियोगीजी ए गजन सरहक मैथिली अखराद कए देखिह तँ रँदी नीक हेतैक ।

भाषासँ उतरि आरि गजनक रिचावग आएन जाए । रँदी दुब ले जाए पड-तेसब गजनक अतिम शैबसँ मागिना रँमनामे आरि जएत । सोम-सोम ग शैब कहै जे- लोकेँ अण जयघोष कवरौमे देवी ले कवरौक टाही आ काज केहना कवी टान-सुकजक पाँतिमे अएरौक जोगाड रँमारी । उना हम एतए अरथ कहै जे ग लोना बाजनीतिक रिचाव ले छै जक संप्रतिकर्ष दए-रियोगीजी अण गतिआ छोट्टा । जेतह । ग रिश्र कणे समाजिक रिचाव छै आ ए रिचावसँ समाजगव की नकारामेक प्रभार पड-लेक रा पड-लेक तकव अथाय अरथ कएन जेरौक टाही । ह्दा एहल नकारामेक रिचाव ए संग्रहमे कए अछि । संग्रहक छि सकारामेक रिचाव प्रस्तुत अछि । दम गजन केब अरलोका कएन जाँ । निश्चित कससँ रियोगीजी एकटा परिवर्तनीय रिचाव बखनाह अछि ग कहि जे-

देस हमर जगत अद्रक एना टलि ले सकत

हारि निखरि मन्दा के आदमीक जौत निखरि ।

पाठकग आजूक समयमे मन्दाक रिगरीत लोकाग सहज गप्प ले । तहिना टारिम गजनक

तेसब शैबक पहिने पाँति- वाम बाजक स्थापना जेन तबत-नक्षत्र सगड-ि बहना ।

कतेक सटीक रँग अछि से सब गोष्टे रँमेत हेरैक । ओते आजूक ज्योपौदक

सकारावग ते दिसमे निखन अड-तीम गजनक मतनाक पहिने पाँति देखु-

बाजनीति भठकन तँ डुरन ममभाव जकाँ ।

रिचाव रँदी प्रस्तुत उदाहरणसँ स्पष्ट अछि जे सकारामेक रिचाव रँदी अछि ।

ह्दा कहरी तँ नृपति हेरैक अण जे एकैठा सड-न माड..... ।

अतु आरि ए गजन संग्रहक र्याकव पक्षकेँ देखल जाए । एठा ग स्पष्ट कवरि

आरथक जे मैथिली गजन अखला हविड भए कए ले आएन अछि जेसँ हम रँहव (हुँद)

आदिगव रिचाव कवरि । तँ एठा हम मात्र वदीह आ काहियाक प्रयोगगव रिचाव कवरि ।

पाठकग गजनमे वदीह उग शैक, अथरा शैक, समुहकेँ कहल जाग छै जे गजनक मतनाक

(गजनक पहिने शैबकेँ मतना कहल जागत छै ।) दू पाँतिमे समान कससँ आरि आ

तकरा रौद हलक शैबक अतिम पाँतिमे सेहो समान गणे बह । तहिना काहिया उग

वर्ष अथरा मात्राकेँ कहल जागत जे वदीहसँ तुबत पहिले आरि हो जेना एकठा

उदाहरण देखु- दुष्टा शैक, निख, पहिले भेल अणटिहाव ओ दोसबमे अहाव । आरि

मागि निख जे ग दू शैक, लोना गजनक मतनामे वदीहक तुबत रौदमे अछि । आरि जँ

लोवसँ देखरै तँ छैत जे दू शैक, तुकातु “व” छैक । तँ एकव मतनर जे “व”

भेल काहिया (काहिया मतनर तुकातु रँमु) तेनाहते मात्राक काहिया सेहो

होगतकेँ जेनाकि- वधा आ रौधा दू शैक, आक मात्रासँ थमे होगत अछि तँ

एमे आक मात्रा काहिया अछि । “एहि” आ “वहि” दूमे गक मात्राक काहिया

अछि । अथ मात्राक हान एहल सन रँमु । तँ हेल टाही ए संग्रहक र्याकव

पक्षगव- ए संग्रहक छि गजनमे काहियाक गगत प्रयोग भेल छैक- उदाहरण जेन



मातम गज्जकलें देखु । मातमाक शैवमे काहिया अछि “ब” (भगवान आ मन्त्रा) । रुद्रा
रियोगीजी आगु दोसब शैवमे काहिया “म” (मन्त्रा) कें लेनथिह अछि जे
मरथा अछि । तेनाहिले मतागम गज्जक उपाधु “म” काहिया रैदनामे “ब”
काहियाक प्रयोग ।

कन मिला कए आ गज्जक संग्रह ओतक प्रतारी ले अछि जतेक की मागव कहैत छथि । ह
एतेक श्रीकाव कबरीमे हमरा कोणा मकोट ले जे आ गज्जक संग्रह ओग संग्रामे आएन जे
संग्रामे गज्जक मात्रा कय छन । आ मागव आ गज्जक संग्रह सेहो कय जकाँ छन ।

9

सूर्योदयसँ पहिल सूर्यास्त

“सूर्यास्तसँ पहिल” आ नाम छहि बाजेन्द्र रिमन जीक गज्जक संग्रहक । ए
संग्रहक भूमिका लेब अन्तिम भागमे रिमन जी लिखै छथि जे आ मैथिलीक पहिल
संग्रह अछि जाहिमे 100 (एक सय) गज्जक प्रस्तुत कएन गेल अछि । रुद्रा हमरा
जुलैत 1985मे प्रकाशित गज्जक संग्रह “ लेखनी एक वंग अलक ” जे की बरीन्द्र
नाथ ठाकुरकें छहि ताहिमे कन 109टा गज्जक देन गेल छै आ संग-संग कता सेहो
छै । तखन रिमन जीक ए पहिल सय घोषणाकें की मतनरै ?

आ तए सकेँ जे रिमन जी एकवा लपानीय मैथिलीकें सन्दर्भमे लिखल होथि रुद्रा

तखन तँ आव गड्ढा काव रिमन जीक ए संग्रहमे कन 4 (चारि)

टा गज्जक एहन अछि जे की दोहवक गेल छै । मतनरै जे जँ शुरु कर्म देखी तँ ए
संग्रहमे कन १७९टा गज्जक अछि । हमरा रिमन जी एहन लोकसँ आ उन्माद ले छन जे ओ

“ पहिल कें लेबमे गड्ढा एहन काज कबताह । गतिहासकें अपना फायदा लेन गनत
कबताह । आरै लपानक सुवि समीक्षक मत कहताह जे की रीत छै । हमर आ छिप्पी
मात्र गतिहास फुलता लेन छै । गज्जक संख्या 19 आ 20 एके गज्जक अछि । 29 आ 30
एके गज्जक अछि । 31 आ 33 एके गज्जक अछि । तेनाहिले 56 आ 61 एके गज्जक अछि । ...

जँ गतिवता पुरक पठन जाए तँ बाजेन्द्र रिमन जीक कथित गज्जक संग्रह “

सूर्यास्तसँ पहिल ” मे रैहूत बस एहन बच्चा भेटैत जे की मात्र गीत अछि गज्जक

ले । गता नहि छनि बहन अछि जे गीतकें गज्जक संग्रहमे कोन काज

छै ।

बाजेन्द्र रिमन जीक कथित गज्जक संग्रहमे रैहूत बस गीत मत सेहो अछि । तँ देखन

जाए कोन-कोन गीत अछि--- गृथ संख्या--1,2,3,14,19,20,23,27,34,42,आ 47क

दोसब कथित गज्जक गीत अछि । तेनाहिले गृथ

संख्या--4,7,8,9,10,11,16,18,29,31,32,36,39 पब कथित बच्चा रिना रैहवक गज्जक

तए सकेँत छन रुद्रा लेखक ओकवा करिता रैना ठाँ । चामे देल छथि । आन कथित गज्जक मत

गज्जक ठाँ । चामे अछि तँ हम आ मागरा लेन रीध तए जागत छी जे करिताक ठाँ । चामे

रैना मत करिता अछि । काव रिमन जीकें करिताक ठाँ । चामे आ गज्जक ठाँ । चामे नीक

जकाँ अतब रूमन छहि । आ एकव प्रमाण ओ अपन कथित संग्रहमे सेहो देल छथि ।

चूँकि ए आलोचनाक प्रावधिक भाग २०१२क मध्यमे फेसबुकपब देल बली आ तग

क्रमे एहमर एही आलोचनापब किछ छिप्पी आएन । ए छिप्पीमे प्रेमर्षि जी



एकवा प्रेमक गडरैडो कहलहि । चूँ उतए धरि ए रात मागल जा सकै
 छै.....हुदा गीत आ करिताकै गजन कहि पाठककै रोकुथ
 रेलरोक आ लेकाड रेलरोक मेहन्ता किशका बहन हेतहि । आचार्य बाजेंद्र
 रिमल जीकै रा प्रेम रैनाकै.....

तँ ए जँ कदाचित संध्या रैना गडरैडो प्रेमसँ भेल छै तैयो गीत आ करिता रैना
 गडरैडो तँ रिमल जीक छहि । दोसर गप्प जे मागि निश्च ए प्रेमक गडरैडो छै
 आ ए संग्रहक सब बच्चा गजन अछि तैयो सदैहक घेबाये रिमल जी छथि मात्र रिमल
 जी ले मैथिली गजन (कथिते रैना) सँधी उवाच मेहो सदैहक घेबाये अछि
 काका जखन १९+३९मे १९९ रैना गजन संग्रह प्रकाशित भेलै... तखन रिमल जीक
 घोषणा मात्र पहिन रैना रैमावीक नक्का अछि । तँ आरि चूँ कल हेमरूक पवँक उग
 रैहस दिस जे की ए आलोचनापत्र जे की हमरा आ धीरेन्द्र प्रेमर्षि जीक भेल
 छन---(हनाकि ए रैहस ए ठाम हम ए द्वाले दए बहन छी जेसँ पाठक ए रूमथि जे
 मैथिलीमे आलोचना ले सहरोक जडा कते गँहीवमे गेल अछि)-----

o

Dh i r e n d r a P r e m a r s h i

अग रातपत्र एकर रैहस भऽ चुकल छै । प्रकाशिक गनतीक कारणे किछ गजनक
 पुनर्वावृत्ति भेल छै । मैथिलीमे ए रैड भावी समझा छै जे लेखनमे जतेक ध्यान
 देल जाग छै तते प्रकाशिक क्रममे लेखे रना काजमे नग । जहाँतक इतिहासक जे
 रात अछि ताहि सन्दर्भमे शायद अहाँ जलेत हएँ जे बरीन्द्रनाथ ठाकुरजीक
 शौथीमे गजन कत आ शायरी मेहो समिलित छनि । लगानक सन्दर्भमे पहिन
 सम्पूर्ण मैथिली गजन मङ्गल अरथ कहल जा सकैए । उवा मिश्रित संग्रहक
 कथमे बागबानस कापडि आ बाजुरिबाजक एक कोला मानी मेहो गजनक शौथी राहब कऽ
 चुकल छथि ।

about an hour ago • Unlike • 1

o

Ash i sh Anchi nhar कता आ शायरी छोडाँ फल 109थी गजन देल छथि
 बरीन्द्रनाथ ठाकुर । प्रकाशिक केव गनती भए सकै छै हुदा भूमिका तँ रिमल जीक
 छहि । ...

about an hour ago • Like

o

Ash i sh Anchi nhar शायद अहाँ एहो जलेत हएँ जे कता, करीग आ अथ शायरी
 रिधा (खाली नञ्ज छोडाँ) गजनक अतन्त्र अरि छै । ...

about an hour ago • Like

o

Dh i r e n d r a P r e m a r s h i

आशियजी, अहाँ उग माधुसँ काज कऽ बहन छी जकब सम्पूर्ण नाथ, पगल अहाँक
 हाथमे बँहए । हुदा भापा माधुम एहल होग छै जगमे अहाँक सब कथन पवन पाणि भऽ
 सकैत अछि जँ प्रेममे काज कएनिहब किछ गडरैड कऽ देलक तँ । भूमिका रौकी सब
 छिज छनि गेनाक रौद नग भऽ मायागतया आवस्यमे लिखल जाग छै । रिमल सब सँधी
 गजन आ तदनुक भूमिका नीथिक भूपर जेल देल बहथि । प्रकाशमे सनन
 रात्रिसभ मेही अँधै नहि देखि सकल हेथि आ किछ गजनक पुनर्वावृत्ति भऽ
 गेल हेतै । अहाँक जानकारीक जेल कहि दी जे ए गनती सभसँ पहिल हमरा रिमल सब
 देखोनहि । आरि अहाँक कहँ ए जे जखन अग तवहँ गनती भऽकऽ आरि गेलै तँ की रिमल
 सब सब कितारैके जवा दितथि ? का रात्रि जँ तकनीकी आ शारीरिक कर्पे सब
 कार्य स्वयं करौमे सक्षम नहि अछि तँ एकव मतनर ए नग होग छै जे उकल कोला



एक रातकेँ न२क२ ओकरा ब्रह्मशा देन जाए । अहाँक ज्ञानकारीक जेन ओहो कहि दी जे रिमल सबक दु समयँ जैनी गजन जहिँतहिँ छिडिआएन पडन हेतनि । है, जँ अहाँकेँ किछ कहबोकेँ छन तँ ओग पौथीक भूमिकाक सम्दर्भमे कहि सकैत छियेक जे रँहूत रिद्धतापूर्णसन देखन जागतहूँ पौथीमहक गजनसभसँ तानामो स्थापित नहि क२ गँरैत अछि ।

51 minutes ago • Unlike • 1

o

Ashi sh Anchinhar अहाँ एकवा गनत सँदर्भमे नए बहन छिँ । ए मात्र गतिहास शुद्धता जेन छै । रातिगत कसँ एमे हम किछ ले कहि सकैत छी । ..

41 minutes ago • Like • 1

o

Dhi rendra Premarshi अहाँकेँ गमरक गजन अँक भेटैन ?

37 minutes ago • Unlike • 1

o

Dhi rendra Premarshi जखन अहाँ प्रकाशिक केव गनती तए सकेँ छै ह्रदा भूमिका तँ रिमल जिक्र छिँ । निथरै तँ ओकर आशिस गनते नली छै । अतिशयोक्तसँ रँहूत रातक अस्तुरहुँकेँ सेहो बूनेत गतिहासक शुद्धिकर्ता करैत चरबोक चली ।

37 minutes ago • Unlike • 1

ए रातानागसँ एकठा गप्प ओहो निकलै जे प्रेमर्षिजीकेँ गजन पवम्पवाक कोला ज्ञानकारी ले छिँ । अवरै-हावसी-उर्दूमे " दीराण " शब्दक प्रयोग कएन जागत छै जेमे गजन, कता, करौंग, नञ्ज आदि सभ बहै छै । जेना दीराण गानिरे (मल गानिरे केव एहन संग्रह जेमे गजन, कता, करौंग, नञ्ज आदि संग्रहीत छै, तेनाहिने दीराण मीव, दीराण नामिथ, आदि जेन । है, आधुनिक युगमे किछ उर्दूक गजनकाव सभसँक एहना दीराण अछि जेमे खाली गजन छै । ह्रदा तँए अहाँ ए कहि देखै जे ले खाली पौथीमे गजले बहराक चली तँ से कतौसँ उर्दूत ले..... एकठा गप्प आब प्रेमर्षिजी रिमलजीक समर्थनमे एते धरि कहै छथि जे.. " का रात्रि जँ तकनिकी आ शारीरिक कसँ सभ कार्य स्वयं कवरौमे सम्भव नहि अछि तँ एकव मतनरँ ए नग होग छै जे ओकर कोला एक रातकेँ न२क२ ओकरा ब्रह्मशा देन जाए । " आरँ ए देखु जे जँ ए अभावपव हम रिमलजीकेँ जँ ब्रह्मशा (आलोचनाकेँ हम ब्रह्मशाग ले बूनेत छी ए प्रेमर्षिजीक रिदाव छिँ) ले सकेँ छी तँ हरेव मात्र एकठा अभावपव प्रेमर्षिजी बरिन्दनाथ ठाकुरकेँ गतिहाससँ राहव किएक क देनथिह ? ए प्रश्नक उत्तर हम मात्र त्रियामँ छै छी । ए रातानागकेँ कात करैत हमरा लोकनि हरेव चली रिमल जी पौथीगव । रिमलजी अणन पौथीमे गजनक परिभाषा, तह, रँहव आदिक रनि लेन छथि (ह्रदा अणुर्ण कसँ थाम क रँहवक जेन) । ओना ए रिमल अणटिहाव आखवपव २००९सँ प्रकाशित छै आ रिमल जीक ए पौथी २०११मे आएन छिँ । रिमलजी स्वयं ७९वर्ष छै ओ हरेमरुकव छथि । ह्रदा रिमलजी द्वारा देन जेन रिमल पठनागव ए प्रश्न अरैत अछि जे पौथीक भित्तव देन जेन गजन सभमे ए रँहव, तह आदि किएक ले अछि ? एकव रँहूत बाम कावण तँ सकेँ ह्रदा हमरा बूमल सभसँ प्रह्व कावण छै जे मात्र रिद्धता देखरँ जेन ए रिमल कतौसँ मागस जेन जेन छै (मल ७९ किलको, मीमेष्ट किलको आ घब रँहव रिदायक जीक) । तँए भूमिकामे देन जेन रिमल आ भित्तवक गजन सभमे दूब-दूब धरि तान-मेन ले रँहै । ए गाँति धरि अरैत-अरैत अहाँ सभ बूमि जेन हरे जे ए गजन संग्रहमे रँहूत मोन-मान छै । मात्र राकवणक दृष्टिँ ले लेतिक दृष्टिकोणसँ सेहो । ओना जँ तारणा आ राकवण ठीक बहैत तँ ए संग्रहक किछ गजन नीक रनि पडैत जेना की



३.३म गज्जन, +३म गज्जन आदि । किछ गज्जन नीक जकाँ लगानक बाजनीतिकेँ घेबल अछि तँ किछ गज्जन पूरा मैथिली समाजकेँ । तार आ रीर तँ प्रायः मैथिलीक हरेक लेखकक नीक बहेत छनि तँ हिनकब किछ खास हेतहि । हिनको तार पक्ष नीक छहि ।

10

मैथिली गज्जनक रतमान

अनछिन्हार आखबक जगसँ पहिल (गैठबलछ पव) किछ गज्जनकाब, समालोचक सभपव आबोप मगरैत छथि जे ओ गज्जनकेँ रूमि ले सकनाह । ह्दा हमरा रूमल आलोचक सनी छथि आ गज्जनकाब गनत । काबन मैथिलीक किछ तथ्याकथित गज्जनकाब सभ अपन गज्जनकेँ ले रूमि सकनाह । जकब पकिाति अरूम मेव सरहक कपमे भेल । आ स्वाभारिक छै जे एहन-एहन गज्जनकेँ आलोचक नकाबरेँ कबतथि ।

रतमान गज्जन-- अ.आ. (अनछिन्हार आखब) क बाद गज्जन अरूम ले बहन । से हम किछ मेवक उदाहरण देर ।

1)

कोला बाजनीतिक गप्पी हो सभहँक छितिकेँ पबथेत छिनि या कहैत छथि---

छोड़ दिओ हाथ देखिओ केसर जाग छै
जेते तँ ओ उरले सर जेसर खाग छै

ह्दस ह्माव कर्जि कहै छथि--

लताक तेयमे सभ कामदेव छैक
तमसँ लोक देसक तेँ अघोव छैक

ह्दा एकव परिणाम की भेलो सेहो कहै छथि ह्दस जी--

छुला गवीरकेँ दिन बाति छैक रंज
जे छैक अथ्रु घब ओकव गज्जोव छैक

ककवा कबत तरोसा आम लोक आर
मिटा अकास उप्पव घुमथोव छैक

आ जखन सभ मनिओते छै तगकेँ ह्दस जी एना कहै छथि--

आलोचना कबत ह्दस कतेक आव
जे छेव ओकले ह्द एत जोव छैक

उम्रकामि जी बाजनीतिकेँ एना देखे छथि--

छान लागल महसक खरिहासमे
गाम ककरो उज्जदले खेबसँ किछ

रहुत मेही कपसँ उम्रकामि जी आजूक बाजनीति केव रात्रिकता आ परिणामकेँ एकै मेवमे देखा गेल छथि । तेन त बहन छै ह्दा सभ अकास रंजन अछि आ उम्रकामि जी छहि द बहन छथि---

मिजीर भेल रंजनी मगर सूतन
स्वतन्त्राग येन सरहक जाण जेते



आ एतरेहि पब ले ककैत छथि । आ हेलो कहैत छथि---

मोसम साँठ पब करैत छै मैसब के दारी ले भाग
अतिरात्रिक सुँद साँठ दूँह रँहलै की जारी ले भाग

5) प्रेम आ प्रेम जनि तरेदना गजनक प्रहृथ अंग थिक । रिना एकबा गजन मनुआन
नागत । रतिमान गजनमे गेलो छैत । बाजरी बजल मिथिली कहै छथि---

टास बाति सन सजन दूफास हूक माकक
जास प्राँ हति बहन दूफास हूक माकक

आ गेल प्रेम जूँ पवित्र भूँ जौ तखन विप्रवारी कमाव मेरि जौक शैव जगै---

आँधि मिला कऽ हमरा सँ बाह पकड लेनि अहाँ

कोना कष्टे अछि दिस आँ बचना गराह अछि

हमर गिहिव माँ जौकेँ रूमन छहि जे आ रेदना किछक छै तँ ओ कहैत छथि---

हमरा अहाँ तोड़न्हूँ सगला रूमि कऽ

हमरा अहाँ छोड़न्हूँ अगला रूमि कऽ

दूदा एतरो तेनाक रौदो मैथिली ओ भाया थिक जहिमे रिद्यागति सन करि तेनाह ।

रिद्यागति आशिरादक सतसँ रँडका करि छथि । आ हमर ओम प्रकाशे जौ एही आशिकेँ

पकडि कहैत छथि---

माँपे तेन भसियेन जिनगीक छूँछन धरातल,

सगलाक नरका छै भवि दिस रूलैत बहै छी ।

अमित मिथी जौ कहै छथि---

तरेगा नाथ छै तेथो नगर अन्धार बहिले छै

रँक छै तीर दुनियाँमे मल्लख एसगर चलिने छै

आनी आ सँघर्ष एक दोसराक पुवक छै--- तँ अदम्य कमाव कर्ष कहै छथि---

रूमि सँघर्ष जियलै जखन

जिनगी मोल अतिमान छी

दार्शनिकता गजन स्थायी भार छै--- हम ए पक्षकेँ बाजरी बजल मिथी जौक शैवसँ देखाएँ---

एँ उदाम मोलक हान केँ रूमत

ओमि सतक सत सततरी सवा बहन

टँटन माँ रिझन नर भारमे एँ दार्शनिकताकेँ अकाले छथि---

लैक काजब पब मोहित छै सगरो जगत

जडैत डिरीयाकेव मोलक मरम केँ रूमत ?

जौ अहाँ मैथिल छी तान्दमे साहित्यक आँ जौ रौठकि दर्द ले तेन तँ अहाँक

मोजब स्या । दूदा गजन एँ दर्द केँ नीक जकार देखब केनक आँ बाजरी बजल



मिथिलीक अराजमे राजि ठैल---

गुजन देरी सकि मासि लोक धरि कषाव
कहियो कोशी त कहियो राना मासि गेल
माथप्रदधिकता जेल बाजरी वजन मिथिलीक राना भुनि--

ले बाग बलीमक मोक बहय
ले रेल अवागक ठेक टनय

जै गप्पा मिथिला आदोवन हूँ तै गुजन ओहमे पाहु ले हठेल । आगु रैठा पंकज
टोपवी नरन श्री कहे छथि--

मैथिली भाषा अपन अछि
मैथिलक रैठ पौष तागत

एकता मैथिल जै बाखर
सुतन मिथिला हेल जागत

XX

पकड़ लेन टनु दिगी
तबले जेल टनु दिगी

धवना देर कवर अपनेन
मिथिला जेल टनु दिगी

क्रांतिक धाव "नरन" रैहले
नडरौ जेल टनु दिगी

अन मिना मैथिली गुजन गुवा-गुवा रिक्कित त गेल अछि आ गु कोला भारकै राउ
कवरामे समर्थ अछि (ए लेखमे मात्र हम गुजनक उदाहरण देनहुँ अछि । रान गुजन आ
तुझि गुजन रैकिअ अछि ।) । अकर रानगी उंगक उदाहरण सभमे देखन जा सकैए ।
मैथिली गुजनक भविष्य पब हमर कोला छिपी ले बहत काका हम कोला ज्योतिषी ले डी ।
आ अतीतो पब ले कहै काका गु सभकै रूमन डेक । गु मजब सुनेमानक आलेखक रान
मैथिली गुजन निश्चित कषे पाहु गेल (जीवन मास पाहु) जे स्वागत योग्य
अछि ।

ए बचनपब अपन मंत्र ggaj endr a@vi deha.com पब पठाउ ।

३. पत्र



३.१. कामिनी कार्माचर्या- संग दिअ सदिखन अछिना



३२. दशरथ प्रसाद यादव-छोटासगरी



३३. अनिल कुमार शर्मा- लकवा में कलर



३४. अनिल कुमार शर्मा- गजब १-२



३५. अनिल कुमार शर्मा- लता जी बैरवांस कले छवि



३६. अनिल कुमार शर्मा- बाख्तर माछ

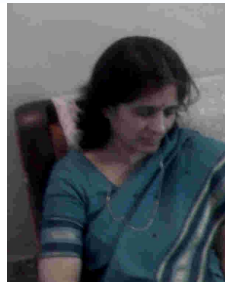


३७. अनिल कुमार शर्मा- अन्तिम कथा



३.४.

भावचन्द्र सा-आर्यक लेखी



कामिनी काश्यामी

संग दिख सदिख अहिना

संग दिख सदिख अहिना ॥

आहाँ कहैत छी जौ लेखै त /

रिसवि जायरेँ ओरी गङ्गा त छपि ले ।

अगिष , गहाड़ , थोह , थपिया , /

रैड़ , पीपल , ताड़ , आ पिछड़ि /

छैन जतय स , पिछड़ि गोनछ छेब /

नित दिससक अपमान भेटैत रैस /

भवि पायन समाव स मल त /

पड़ १ बहन छन स्याम अगाड़ि /

तङ्कित खसल जल रिन मङ्गरी /

जबैत रौद / सुनलौत धवती /

खनिअ गएब, हेमि से गुम छन /

कबी ल सकल रिश्रीम कनिकरौ /

छनरौ जल उधत सदिख /

छनगत जिमलब लेल मोसाफ़ि बि /



कठिणतरी डन ,जाले करव/

मुक, रैमिब मण ,रैटेत छले डन /

तजि बहन डन ,संग जे तन के /

रैमि बहन ओकवा मण रैनजोबी /

किन्तु एक क्षण एहेला आगन /

नागन डेग रैटेत नहि एला /

छेला नग खसन पडन त /

दुब ठाट दबिया झसकायन /

गवा सुथि अरकछ पडन डन /

अनन्य अहा मलम लल कीछ/

कहन्य अनृत बस अछि पी नू /रिमि जाडु पाछा के राँठे सर /

आगा के क्षण हमी का जिरू/

संग देरै हम क्षण क्षण अहा के /

तखन हमर हिनत डन घुबन/

देर दूत संग सुथ सर पाँउन /

अहिना छले चनारू लेया/

गारी हम सुमि जी भवि के । ।

ई बचनपत्र अपन मतिर ggaj_endra@videha.com पब पठाऊ ।



दुखन प्रसाद यादव

डीनामपठी

माबि-काष्ट रैठ्ठा बहन दिन-दिन डीनामपठी जावी
 रूठ्ठा या-जुअनकीके की कष्ट रूठ्ठा ठेक दिन डे भावी ।
 की कहियो दाग मन होगए ले जरी मवि जाग
 कियो ल रैठ्ठे आग ऐन-पड् मीया सत तताह डे आग ।
 रैबरम देरक कठ्यावा ठूठन दराग-डराग तेन टावो
 मोहन्यादोक कठ्यावा ठूठन नूठन मशीन-तिजोवी ।
 मोष्टव मागकिन घबस उठे डे शिक्षक पिठाग थागए
 रैक-तिजोवी मन-खजाना थागा आग नूठाग ।
 सबकारोक हान डे खसता केकरा के देखे
 उमाया रीन नाथो-हजारो रैणदुक डतियारै ।
 बक्क-भक्क आग नलै केना क२ जरी दगया
 खना-केजवीरान की कवता सतस पौष कपेखा ।
 लता-मन्त्री सत झुष्ट डे सत भ२ गेलै घेरे
 स्वपव रौस त स्वपव घेव अडि जेकव सतठाँ मोले ।
 टोदर-टोरीस लोजराण सत दिगोलीन भ२ गेल अडि
 रैकवी-पठक था था सत कोग माँठ भ२ ठेकवैत अडि ।
 शिक्षिकाक अगहका होगत अडि लेग सलखाम भावी
 रूठ्ठिया-रूठ्ठी नूठन जागत अडि देखत के नटावी ।
 पुनिस-आँफिसव सत देखे डे रिडमर्षणा भावी ।
 सतकेँ अगल लिखए पडत अगल जिम्मेदावी
 की कहियो भाय चन्द्रमोख नक्षीराग रैणली आग ।



अज्जानी सरहक ज्ञान छै

जन्मसिद्ध अधिकार हमर अज्जानी सरहक ज्ञान छै
लोकतन्त्रक धरोहर छै तिनकक पैगाम छै ।
सोनाक टिड्डी याँ छन भारत ब्रिदेशीक नजरि गड्ढ
हुँछी-हुँछी क२ हमरा नृत्तक श्रुतक रँगियाँ उज्ज्वल ।
पाँच सँ रैबथ यरणक मोसमसँ सभठाँस कोहवाँस मछन
दू सँ रैबथ सिँवगी हमरा नृत्त-नृत्त रैबरौद केनक ।
सोना-चाँदी कट्ठा मानसँ भवन खजाना खाली छै
ओकरा पाँचैमे अखनि धरि देखियौ तँ तंगवाली छै ।
अँठावह सँ सँतारणमे सिंगाली रिदाँह भेलै
रैबहम अँधेज कष्ट की कलकौँ एँसँ सुकलै ।
गाँधीबाँरा आन्दोलन सत्याग्रह देशेमे जँ पञ्चवत
शिव-गाम आ टोवाँस सभठाँस सरहक भ्रष्टी तनन ।
तीतव आन्दोलन राँहव लता जीक शोचक तान छै
अँधेज भारत जोड़ू लहकटाँक पैगाम छै ।
चन्द्रशेखर, खुदीबाम रौस, पीव अनी शहीद भेलै
जानियारौना राँगमे शहीद खुनक नदी रँहि गेलै ।
मजकन हक जय प्रकाश, लोहिया जीक योगदान छै
बाजेलूँ राँरू, मोतीनाँ, राँरौ सहैरक प्रतिदान छै ।
पञ्चवत अगस्त उल्लेख सँ सैतानीस भारत अज्जान भेलै
नानकिनाँस लहक टाँक शीतल सँदेशे भेलै ।
जाति-पाति-मजहूरसँ उँठ क२ हमरा सभ एकजुँठ बनी
हुँछ-हुँछसँ देशे रँटा क२ भारतकेँ मजगुत करी ।
डाक्टर कलाम, जगदीश चन्द्र, भाँक तँ रँस काम छै
रँठूँ, खूँ आ देशे रँटाँ मल शक्तिह हमर झुकाम छै ।



बिहारी अछि बिबसोब धरा केब

बिहारी अछि बिबसोब धरा केब महिमा एकब महल छै
श्रीतम रईमाण महारीब बिदेहक जे धाम छै ।
लोकतंत्रक जन्माभूमि गिद्धरीकेँ हम सब माले छी
जनश्रिय बिबसोब करि बिद्यापतिकेँ हम जाले छी ।
नागण्डा केरि वर्णनमे यात्रीक कहियानक नाम छै
श्रीतम रईमाण महारीब बिदेहक जे धाम छै ।
मण्डल मिथि भावती झीकेँ देशे-बिदेशमे छर्छ छै
प्रथम बायल्लेपति बाजेंद्र राँउ कछ केब ले अछि छै ।
मुरतंत्रताक आन्दोलनमे बिहारक रँड जोगदल छै
श्रीतम रईमाण महारीब बिदेहक जे धाम छै ।
अंग्रेजक बिबदर रीब फँसब ले केतौ जेड । अछि
योगेन्द्र शुक्ल रँडेकेब दल माँ भावतीक तोड । अछि ।
शुद्धी बाम लौस शिदीह पीब अली रीब मगुतक गाम छै
श्रीतम रईमाण महारीब बिदेहक जे धाम छै ।
बाज्रुमार लोकनायक जेपी नानू निमित्तक गाम छै
अग्रजक श्रीप्रया कर्पूरी राँउ जगजीवन बाम छै ।
अरुंदन राँवी मजकन तक बिबास छन्दक पैगाम छै
श्रीतम रईमाण महारीब बिदेहक जे धाम छै ।
मच्छिदा नन्द छन्दा सा नरित राँउक बिहारी अछि
बी.पी.मण्डल सुबज राँउ भोगेन्द्र राँउ प्रयाग अछि ।
यात्री दिकब बेगुजीकेँ हम सब दिस जाले छी
हबिमोहन मणिमन्त्र जगदीश मण्डलकेँ पहचाले छी
प्रताकाब डी.पी.गान्धर जूगन्ध जकाँ करैत प्रताब छै
श्रीतम रईमाण महारीब बिदेहक जे धाम छै ।



दुखन प्रसाद यादव

सम्पर्क-

गाम-रंगमठ, धरौली, भाया- बबहिया

थाना- जोकली, जिला- मधुबनी

फोन- +९१९०+ (रिहाव)

ई बढापाव अणम मतिर ggaj_endra@videha.com पब पठाउ ।



सुरोध कमार ठाकुर, डाकवी- सी.ए., हैठा-बौली (मधुबनी)

केकवाँ कहलै

बससँ भवन मल,

पानिसँ भवन मेघ भेल कावी बैग,

रैबसत कहिया,

हमरो मलक आस पुरवत कहिया ?

ले पामले बहन,

आ ले पामे मरन,

अर्छि-हृदयन बहन मलक रैगिया,

हमर पाम मिमाएत कहिया ?

बैग-रिबैगक सगलसँ अछि सज्जन लेना,

केकवासँ कहलै एतेक रैगिया,

के पढ़त हमर मलक मेरुआ भवन पतिया,

केकवासँ कहलै एतेक रैतिया

ई बढापाव अणम मतिर ggaj_endra@videha.com पब पठाउ ।



उम प्रकाश

गजन

१

आग किछ मोन गडले हवसँ किए

भार मोनक ससबले हवसँ किए

छाँल लागल महसक खरिहासमे

गाम ककरो उज्जडले हवसँ किए

आँखि थोबू किए छी आसब रँगल

लाव देशक सहबले हवसँ किए

छान मोभा रँले छै गगनक सदति

छान नीचा उतबले हवसँ किए

“उम” जिनगी आसबक जौले छले

प्राप्त-राती गजबले हवसँ किए

- उम प्रकाश

(दीर्घ-द्वय-दीर्घ-दीर्घ)-(द्वय-दीर्घ-दीर्घ)-(दीर्घ-दीर्घ-द्वय-दीर्घ)

(यागनातन-हङ्गुल-हङ्गुल-गङ्गुल) - १ रँव प्रहसक पाँतिमे

२

कहियो तँ हमर घरमे छान एते

लगाक छौव रिसबल गान गेटे



निज्जीर भेन रँझी सगव सूतन
सुतनाग यैह सरँहक जान जेते

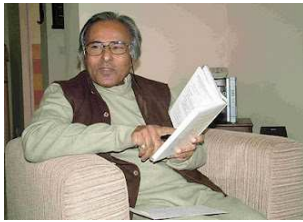
माणक गुमान धबले बहत एतय
लावक नगर्हिमँ सबकिक२ माण जेते

सुब तान गिनत जखल सतक एँठाँ
फाँतिर रिगुनसँ गँजित तान हेते

हक अगल "ओम" झिनत तान ठौकिक२
छोडरँ किया, कियो की दास देते
- ओम प्रकाश

(दीर्घ-दीर्घ-द्वय-दीर्घ)-(द्वय-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ)-(द्वय-दीर्घ-दीर्घ)
(द्वय-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ)-(द्वय-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ)- एतक पाँतिमे एक रँव

ए बचनसब अगल मतिर ggaj_endra@videha.com पब पठाउ ।



गंगेश्वर गुजरा

लता जी रँकरास कले छथि

झीरे ठाँ ओ प्छेक पाछु
यथा जमीना नमि कले छथि

कहता हवदम काज रँहूत छथि
किछु ठाँ ल खाम कले छथि

जेहल लता तेहल जनता



पाँट रैथ अरकशि करै छथि
भेष्टजोगाडु बाजनीति मै
सरै कर्मि अश्रुत करै छथि
अन्तर्गामी परिवर्तनक सुनि बहने
लता जी रैकराम करै छथि
लोक ठकयना जाली ठक सँ
तकरै हेलै रिश्तास करै छथि
सबकन जलजलरिष अकान मै
लताजी मर्यादा करै छथि
लोकक हृदयक हृदयक धवती
सगला सँ आकानि करै छथि
नर गुणगीक रैधन गुंज
रुष्टिक हेलै प्रयास करै छथि

ए बचनार अण मंतर ggaj_endra@videha.com पब गठि ।



बाजदेर मन्त्र

सुबसे रौस

एक दिन आन बली अणल काम
सुनल बली अहाँक नाम



कनषित डन जे मसमे कप
दवस भेन डन अरि क अरुग
मसमे उठैत बहन आन
पवरैशताक रौड्ीमे कठैत काह
जाए पड्म दूब संग बहन डान
पुनः एलौ, ले डेलौ रौपवरौह
केतौ ल टलि बहन पता
अहाँ केतए भ२ गेलौ निगता ।
लोक कहैत अछि-
अहाँ उड्ि गेलौ आसमासमे
डूहि गेलौ शुन्याक महागासमे
थोजि बहन डी रौव-रौव आरि
रौटैल डी दवस ले पारि
ताकि बहन डी मेघ रैनि अकाममे
अहाँ निश्चय हएँ अलीठाम आस-गाममे
जे सूरव हएत नग-गाम
उलीमे हएत अहाँक रास
अहाँ ले डेठैर किन्तु डेठैत अराज
जे थोनि देत अहाँ सभैठा बाज ।

अथर्वीक गम-१

रौललौ एकठा महन
जगमे डुछडे पौसा गहन ।
थन-थन पौसाक थनक
नान्ति उड्ि गेल स्वमि ते सनक
गलेस किअ दूथ सहत
उ किअक असगले बहत
दूनु भागि गेल



हमर स्वतन आँखि जगि गेल
मात्र पैसा खन-खना बहन अछि
हमरा पाछु गनगना बहन अछि ।
बाति-दिन केल परेशोन
अकछु भ२ गेल हमर काण
स्वतन्त्राये स्वर्णित छी रहल तान
जगन्नामे निरकनए जान
तँए हम भागि बहन छी
किन्तु, कहाँ जगि बहन छी ?



अथर्वक गण-२

एकव की होएत जाँट
आ तँ गुवा-गुवी छै साँट
तँए ले भेन रेंगवराह
ले चाली कोला गराह ।
यो सुनि निख बाज
एसँ ले चनत काज
केहला अछि राँत
अहाँक चाली संग-साथ
नगा दैत कोला नाथ
किन्तु, ले रेंगव राँत
केतरो होएत साँट
नगि जाएत नाट
जुगरीक जेन
कवरौ कवत जाँट
केतरो टिटियाएँ
निकलैत बहत आह
साँटके जेन
दिख पड़ैत गराह ।



अध्यायीक गण-३

हमर गतिहाम अछि हमले गाम
जगमे देखि सकै छी
हम अगल धवती
आ अगल अकाम
अगल सिबजन आ अगल नशि ।
पूरिजक कएन काज
डीनन आ डिनाएन ताज
बाथर गिन-गिन
रैवथ, गाम आ दिन
नीक अधनाह जे केल छी काम
से ले अछि दोसबठाम
सन्तुष्टी हमर भूत
रैगि-रैगि दूत
अछि हमले गाम
हमर गतिहाम ।



अध्यायीक गण-४

केतेक गोष्ट केनक स्वारीक प्रवास
अन्तमे ठूँष्ट गेन सरहक आस
केते उपाए नगरेत बहन गन-गन
सभ भ२ गेन अन्तमे असह्यन
हारि क२ हारा छोडि देनक
ए काजसँ झूठ मोडि केनक
हूँअ नगन टाकतबसँ आघात
ठोकबसँ भ२ गेलौ कात
रिनष्ट गेन सभ बाज-काज
हँसत अछि आरि सकन सजाज ।
आरौ जँ ले कबरि स्वाव
डूगि जघत घब-गनिराव
मोटेले भेलौ नाटाव
सम कहै आरि कक रिटाव
मोटे डी जँ ए दिस
नाजसँ सुकि जागत अछि नीमि
ले डे दोसब कोला आधाव
सूर्य क२ सके डी अगन स्वाव ।



अथर्वक गण-३

जेतए केतौ गेलौ कोला निमित्त
होगत बहन हमरे जित
केलौ छठ १७ देव-सरेव
जीतते बहलौ रैव-रैव
हमरा सोमा मभ गेल हारि
मरैन्धी मभकेँ देलौ तारि
मरैन्ही गाडन थुष्टाकेँ देलै उँखाडि
हमर धर्रा के जेत समहारि
नामक डका रैजए नगन
हमरे रौतगव मभ छल नगन
ठमकि गेलौ अगल नग आरि
कोला थाह ले बहन छी पारि
हमरा मागल मभ गेल हारि
हम गेलौ अगलमँ हारि ।



अथर्विक गण-३

अवसीक पौष्ठा पीठमे गङ्ग
हम छी रोकुय जकाँ गङ्ग
कहिया गी पीठगव मँ छैत
कहिया गी भाव छैत
अगन दुध केकवा कहै
आरि केते कष्ट सहै
जागरव मन अवसीक खु
केल जागत अछि पीठमे भुव
छैत दिख निमाँस जेह
आरौ लै थड् । हूँ देह
उठि आरि हम ठाठ् हएह
समेकै एना लै गमाएह
ठाठ् लोगते अवसी छैत
तः सकैए माथो झुठत
जीतवमँ उठि बहन बोध
हमरा लै देह पाछु दोष
आरि लै हम स्वतन्त्र बहै
लै एना मुक्त बहै ।



अथर्विक गण-१

केतक खोजलौं श्रेष्ठ गीत

जे कबत रुचन हित

प्रवाण ठुँठैत बहन

नर-नर भेटैत बहन गीत ।

सभ अगल सरार्थे परेशान

गलैत बहै अगल गान

अगलमे जँ एतेक दुःख

केतएँ बखते शीतक मान ।

किन्तु, आग भेटैत रुचन श्रेष्ठ गीत

जे रुचने तीव्र गलैत रुचन गीत ।



अथर्विक गण-+

बहे डन जे मंग-साथ
कले छेलौं ओकवासँ रात ।
“छेछाह छै ओ बाह
ओ गाडी छै रैड-तताह ।”
पुवा डवा गेन डन लोक
रैछ छटा ते धर नग छेलौं मोग
हम छेलौं पुवा मिडव
लोककेँ भर गेन छेलौं डव
अन्तर होगते काँपे खव-खव
मरैले भाषि जागत डन घव ।
भर गेन छै आग अरैव
अन्तरिया लेल छै वस्त्रा घेव
भवन मेषमे बिकाव
रैनि नर-नर अकाव
आगु शैरद गन-गन
बाति भेन सन-सन
लोककेँ डवरैत छेलौं
आग रुझँ डवा गेलौं
रैछ रैछमे ततली गाडी
आग रुझँ घेवा गेलौं ।



अथर्वक गण-६

हिन-गिन खेव हुनराउ १
नगा दियो यो
बग-बग बगबग गृध्र मजा दियो यो
एक-एक गाढक अण गतिमास डै
एक-एक हुनक अण सुवास डै
सुगंधसँ टाकभव गमका दियो यो
हिन-गिन..... ।

सभमे एक ज्ञान डै
एक तान डै
सभमे एक मास डै
सभमे एक गान डै
सुखनकेँ जगसँ पठा दियो यो
हिन-गिन..... ।

सभमे एक उल्लास डै
सभमे बस डै आ बसातास डै
मौनागनकेँ खेवसँ हविषा दियो यो
परन संगे गृध्रकेँ षटा दियो यो
हिन-गिन..... ।



कतए छी हम

सैकड़ । नहि हज्जाबक हज्जाब

तबन छै भूतसँ रज्जाब

कलित-रैटैत मन्त्रक मांस-हाड़

किछु टिटिआगत किछु खसौल घाड़

किछु अछि मोक्ष किछु करै तकराब

किछु हँसैत आ किछु कलित ज्वाब-ज्वाब

दाँत-झूँह चमकलैत

तबते तब जगत अछि पाव ।

हम ब्रह्मण छी ओहीठाम

जेतए सब किछुक नहि बहन दाम

लाटि लल अछि ओ सब

हमरा देहक मांस-हाड़

अंग-अंग छोड़ । क२

क२ देल अछि ताब-ताब

लल हाथमे हाड़

हँसैत अछि रैसम्हाब

हम देखै सब किछुओ

काले छी ज्वाब-ज्वाब ।



अछगव

समरैत अछि सब-सब
हमारे दिस आ अछगव
लाल हमारे देहक नाग
झूह रौल अछगव साँग
तुथान छै तन
कामनासँ भवन मग
एकबा के बोकि सकत
के रीछमे छैकि सकत
तीर छै गति
छठ्ठ छै कृति
रैछेले चनए पड़त दान
ले तँ निश्चय धर जेत आ कान
कबए पड़त कोला उगटार
ले तँ हमरा घोरि मावत ठेकार
झूहसँ ले हूँछै रैकार
रैछ । जेजो अपन देहक अकार
गिवत हमरा तँ हूँछै छै
झगल रोगसँ छेते छैछै ।



अकसमे ठाठ गडी

अकसमे उठेत गडी अठकि गेन अछि
जेना मतिभ्रम भेनासँ ओ भठकि गेन अछि
छना बहन अछि पाँथि
एकठक तकेत आँथि
जोब नगोल रँठरौक जेन
मजिनगब चठरौक जेन
ल आगु रँठेत अछि ल पाछु
भर गेन अछि थीब
रँहा गेन सब शक्ति
नगि गेन केहेन पीब
कहि बहन ओकब मति
जे हम रँठरि बहन डी अगल गति ।
एकठक तकेत आँथि आ मल
आकि हमरौ रँगि गेलौ ओकले मन ?



रौश्या लेव गत

मोटेत-मोटेत हाथै हीया
लेतए भेटैत ए गाढक रौश्या ।
अ अचिन्ह गाढ
हमरा मोसहा करए नाट
देखि क२ मल करए जाँट
ले भेटैत रौश्या
तँ नम्र भ२ जाएत नाम
छूँछि जाएत मलक आस
तकैत-तकैत भेल छी निवाशि
रितम जागत रैवथ आ मास
ओकरे भ२ सकैत अछि गता
जेकरासँ छै असली नाता
रएह कहि सकैत अछि
असली अता-गता ।



कठैत गाढ

हड्ढुडु ।गत कठै क२ गिलैत गाढ

टिटागागत रैजन जे डन साँट ।

“हम तँ कलैत बहलौं सकवम

कहियो ले केलौं ककवम

कलैत बहलौं उगकाव

जगसँ अहाँक सगला हूँ सकार

अहाँ कलैत बहलौं उगलोग

हम कलैत बहलौं

हन-हुन आदिमँ सहयोग

हम केलौं न्याय

अहाँ केलौं अन्याय

हम केलौं पोषण

अहाँ केलौं मोषण

धूँधैत कठैत सहैत अतिआचार

दुपटाग अहीक जेन तैयार

सतत कर्मवत बहलौं हम

कहियो ले केलौं घमण्ड

तैयो अहाँ सत गिनजूनि क२

देलौं हमरा आनन्द

हम कहेन छी उदाड

दोखी ले छी तैयो दाड ।”



कवय

हे रँसुवले मेतु मेतु कवय
अहाँक अँगन
उंगजे सुवय
जगमँ उडेत सुवय
तऱ नरँवय
गमकि बहन दिग-दिगवत
हे रँसुवले मेतु मेतु कवय ।

अहीक चमक छी हम क
अहीक प्रगमँ रँवय अछि तव
धीवज, मेकति दिअ हमरा मव
अहीक समवपित अछि अ तव
हे रँसुवले मेतु मेतु कवय ।

ए बचनपव अपन मँतव ggaj_endra@videha.com पव गँछ ।



सन्दीप कुमार साहनी

करिता

१

लैंगीकमे दलानपव



आँउ यौ याव, थेनाग डी ताम
लैस क२ अखन कवर की
छू कले डी ठैम पास
लैव सुकते ठै
जाएर कलेले घाम
छ्छान सन लौद नलैए
टावि रौज२ जा बहन अछि
नलैए अखन एक रौजन अछि
महीस थोनरें ठग लैवमे
पोथवि न२ जाएर नलैले
सुतलामे गवमसँ नीक ले नागए
थाठैमे उडू मिस करैए
कडुव-मडुवसँ नीन्द ले अरैए
पुवरी हरा सेहो पौष्ट हुनारैए
घामसँ देखु गंजी बीज तान
कौआ डाढ़ि पव तान रैलैए
मेषा जाहूणपव मगडू । करैए
रैगडू । दनाणपव टी-टू-टी-टू
गीत सुनारैए
एहन गवम ले देखलौ कहियो
बातिके मडुडू
दिनके माँडी तंग करैए
आँउ यौ याव थेनाग डी ताम

२

सेरा
मन लोगए कबितौ
लैठोक रियाह



प्रतहू जेन हिक गवन अछि
काज करैत कान आरि देह थाकि गेन
भास करैक
नेछि ले अछि
रौंठी भेली, अप्पन मासुव गेली
असगव अंगनामे नीक ले नलैए
होगत प्रतहू तँ
एक हाथ सेरा कबितए
रूदा एगो रातक डब नलैए
प्रतहूक टर्न देख ठेनमे
अली सेरासँ छित हवागए
पढ़न-लिखन कनियाँ सभ गेन
आदव सकोव सभ रिमवि गेन
आठ रोजेमे, स्रति क२ उठैए
छूला अंगना सभ, अहिना पढ़न-ए
के कबए सम्भव-भैसुवक गवदा
बीत-बेराजक उठ रिंए गवदा
एकव देखनी कबए, सभ कनियाँ
अ ले नागए नलदि, माउसकेँ रैदरि याँ
ए पढ़न लिखनसँ घास-छिनगी नीक
मल होगए कबितो रौंठाक रिआह
प्रतहू जेन हिक गवन अछि ।

३

रव रिंकाय नगणमे
रवक लेठ ले प्रुडू यो रौरु
मावा माँडक जेना दाम रैदए
कनीको पढ़न-लिखन बहन तँ



रौंठारौंठा अप्पन मोंड सीठैए

नङ्करीरौंठाक थेत रिकागए

देखु जमाणा तान ठोकेए

दूकाक डिमांड अछि,

पाग सन कबीजमा

निथन-पढनमे सभसँ तेज

पँचामे पाँट रौंठ

अठामे आठ रौंठ

दसमामे दस रौंठ नङ्का फेन

एहना नङ्का नगनमे रिक गेन

रबक लेठ ले प्छु यो रौरू

मावा माँड जेना दाम रँद-ए ।

ए बचोपब अपन मतिर ggajendra@videha.com पब पठाउ ।



गगनचन्द्र झा

आखूक रौंठी

कवाँठेक किनासमे ओ

एथल-एथल किछु नरौं प्छुब सिथनक अछि मागत ।

अकाम दिस पएव उठा कइ जखन ओ किक् मारीत ड़ेक,

तँ कनेज झँहमे आरि जागत अछि ।

जे कही अकाममे त्रुब ल भइ जाग ।

पवस्रवारैँ गोदइ ी रौंठा कइ

सनातन धर्मक बक्सा कबएरौंठा ओ अकाम,

आरौं जर्जब भइ गेन ड़ेक ।



नरै जमाणाक कवाठैसँ-

मजगुत रँगन पएबक छोटछिला अगातसँ,

क२ सकैत अछि ओकर लोकमान ।

तल जर्जरे...

झुदा आगयो ओ तनन अछि कतेको लोकनिक दुप्पार रँगि क२ ।

ए आश्रित सबक फाधसँ-

आरि सकैत छैक रूँकस ।

मौना सकैत अछि हुँका लोकनिक फाधसँ,

नर अँकबक डिम्ब ।

मेकन जा सकैत अछि कतेको राजनैतिक रोटी-

महिना मशेजिकबाक नामापर ।

रोटी-रोटीक मनातनराद-

हिना सकैत अछि तथाकथित समाजिक अरधाकारै ।

तैओ-

ओकर ए तबहक आरौसकें देखि क२

आश्रित लोगत जी तम, मोनक कसु कोहमे ।

जे आर ए नपुंसक हूँकाकसँ,

छोटकावा पारिक ग्व सीथि लेनक अछि ओ ।

कवाठैक किनासमे...

(भानुचन्द्र मा, २००५)

ए बचोपब अपन मतिर ggajendra@videha.com पर पठाओ ।

बिदेह बुतन एक मिथिला कवि संगीत



१. ज्योति मा टोपरी २. राजेश्वर मिश्र (द्वितीय मिथिला) ३. उमेश
मंडल (मिथिलाक रसपति/ मिथिलाक जीर-जन्तु/ मिथिलाक जिहगी)





१.



जाति सा टोपरी



२.



बाजनाथ मिश्र

चित्रमय मिथिला स्नागड लो

चित्रमय मिथिला (<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>)

३.



उमेश मंडल

मिथिलाक रत्नपति स्नागड लो

मिथिलाक ज़ीर-जुड़ु स्नागड लो

मिथिलाक जिनगी स्नागड लो

मिथिलाक रत्नपति/ मिथिलाक ज़ीर जुड़ु/ मिथिलाक जिनगी

(<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>)

ए बच्चापन अपन मतिर ggajendra@videha.com पब पठाउ ।

बिदेह नूतन अंक गद्य-पद्य भावती

१. मोहनदास (दीर्घकथा) लेखक: उदय शंकर (मूल हिन्दीसँ मैथिलीमे अनुवाद रिनीत उंगेल)

मोहनदास (मैथिली-देवनागरी)



मोहनदास (मैथिली-मिथिलासुब)

मोहनदास (मैथिली-ब्रैल)

२. छिन्नमस्ता- एता खेतमक हिन्दी उगनामक सुनीदा मा द्वारा मैथिली अक्षराद

छिन्नमस्ता

३. कनकमणि दीक्षित (मुम लपानीस मैथिली अक्षराद सीमती कपी धीक आ सी धीरेंद्र प्रेमर्षि)

उपता रेंडक देने-भ्रम

४. तुकाराम बागा शैलक कोकशी उगनामक मैथिली अक्षराद डा. शिबू कृपाव सिंह द्वारा
पाथलो

रौनार्ग प्रते



अमित मिश्र

हाथी लाले लेख आ

एक जंगलमे पक्षीत हाथी
थानी मदिखल पक्षक भाथी
एक रेंव रेंकवी केनके ब्रत
भोजनमे एले हाथी मस्त
भोजनमे आनक पलोठा
था बहले टाटि-टाटि गुठा
अष्टा खतम आनू निमिठन
पेठ एखल आनो ले भवन
घामे-पमोले रेंकवी काले
थानी पेठ त भोजन जाले
अनुमे रेंकवी केनक प्राम
धन्य प्रत ! आर दियो रिबाम
हाथी राजन "हम ले मानरो"
ओव खेरो, घरो न जेरो
काले रेंकवी, हाथी रेंजा क
थाग छै हाथी सुँद नटा क



এ বচনাগৰ অংশ মন্তব্য ggaj_endra@videha.com গৰ পঠাও ।

रैछा लोकनि द्वारा स्वर्गीय लोक

१. प्रातः काल अर्द्धदुर्धर्त (सूर्योदयक एक घण्टी पहिल) सर्वप्रथम अणन दुनु हाथ देखरौक चाली, आ अ लोक रैछरौक चाली ।

कवाग्रे रसते नक्षत्रीः कवमया सबस्रती ।

कवमुले हितो अँला प्रभाते कवदर्शनम् ॥

कवक आगाँ नक्षत्री रँसेत छथि, कवक मध्यमे सबस्रती, कवक मुनमे अँला हित छथि । तौबमे तहि द्वाले कवक दर्शन कवरौक थीक ।

२. संध्या काल दीप जेसरौक काल-

दीपमुले हितो अँला दीपमया जनार्दनः ।

दीपाग्रे शिखरः प्राकृतः संध्याज्यातिर्गमोऽस्तुते ॥

दीपक मुन भागमे अँला, दीपक मध्यभागमे जनार्दन (रिष्टु) आऽ दीपक अग्र भागमे शिखर हित छथि । हे संध्याज्याति ! अहाँकेँ नमस्कार ।

३. स्वतरौक काल-

वार्ग रुन्द हनुमस्तु रैणतेर्य बृकोदवम् ।

शेयले यः सारैर्यै दूःस्वप्नस्तु नष्टति ॥

जे सत दिन स्वतरौसँ पहिल वार्ग, रुमावस्त्रमी, हनुमान्, गरुड आऽ तीमक साका करैत छथि, हुनकर दूःस्वप्न नष्ट भऽ जागत छहि ।

४. नहरौक समय-

गर्ज्ज च यद्गले टेर गोदारवि सबस्रती ।

नर्मदे सिङ्गु कारेवि जनेऽसिन् सन्निधि रुक ॥

हे गर्गा, यद्गला, गोदारवी, सबस्रती, नर्मदा, सिङ्गु आऽ कारेवी धाव । एहि जनमे अणन साक्षिध्या दिअ ।

५. उतर्ब समेन्द्रश्च हिमाद्रश्चैव दक्षिणम् ।

रर्थ तत् भावत नाम भावती यत्र सन्ततिः ॥



उद्यमिक-रूपी सरदा परिपक्व होगत बहए । एरुं एमे सभ तबहै हमरा सभक कगाण होए । शत्रुक
रुद्धिक नाश होए आ चित्रक उदय होए ॥

मन्यारके कोण बनुक गछा कबरौक छाही तकव रनि एहि मनेमे कएन जेन अछि ।

एहिमे राचकबुध्तापमानङ्काव अछि ।

अथय-

ब्रह्म - बिद्या आदि प्राप्त परिपूर्ण अछि

बाह्य - देहमे

ब्रह्मरूपी-ब्रह्म बिद्याक तेजस हकत

आ जायता - उपेक्ष होए

बाह्यः - बाजा

गुरु - रीति सब रीति

अथवा - रीति चलेबास निपुण

अतिरूपी-शत्रुके तावत दय रीति

महाबल-पौरव बल रीति रीति

दोषी-कामना(दुख पूर्ण कबए रीति)

प्रेमरतिता-प्रेमरतिताः प्रेम-रति रा रीति रीतिता-प्रेम रीति नाशः - अशः - हवि

महिः - योद्धा ।

प्रवर्धित-रिपु - प्रवर्धित - रावहावके धावत कबए रीति रीति - मरी

जिह्व - शत्रुके जीतए रीति

वर्धितः - बल पब हिव

मन्त्रयो - उत्तम सभास

हराश - हरा जेतन



यजमान-बाजाक बाजामे

रीबो-मेनुके पवाजित कवरेना

मिकामे-मिकामे-मिचययकत कार्यामे

मः-हमर सभक

पञ्चम-मेघ

रयतु-रया होए

मनोर-उत्तम मन रना

उपदेशः-उपदेशः

पञ्चम-पाक

योगेश्वर-अनन्त नन्त करैक हेतु कएन गेल योगक बन्ध

मः-हमरा सभक हेतु

कम्पतम्-समर्थ होए

प्रिथिवीक अन्तराद- हे अन्तरा, हमर बाजामे अन्तरा नीक धार्मिक रिया रना, बाजन्त-रीब,तीव्रदाज, दुध दए रानी गाय, दोगर रना जन्त, उन्तमी नारी होथि । पञ्चम आरम्भकता पठना पब रया देथि, मन देन रना गाढ पाक, हम सभ संपत्ति अर्जित/संवर्धित करी ।

बिदेह नूतन अंक भाषापाक बचानेखन-

गणिशेकोय-मैथिली- / मैथिलीकोय-गणिशे- प्रोजेक्टकेँ आगु रेट 10, अपन स्वमार आ योगदान ज-
मेन द्वारा ggajendra@videha.com पब पठाउ ।

१.भावत आ म्पावक मैथिली भाषा-ऐतानिक लोकनि द्वारा रनाउव मन्क नैवी आ २.मैथिलीमे भाषा
सम्पादन पाठ्यक्रम

१.म्पाव आ भावतक मैथिली भाषा-ऐतानिक लोकनि द्वारा रनाउव मन्क नैवी

१.१. म्पावक मैथिली भाषा ऐतानिक लोकनि द्वारा रनाउव मन्क उठाव आ लेखन नैवी

(भाषाशास्त्री डा. बागारताव यादवक धारणाकेँ पूर्ण रूपसँ सन्त नन्त निर्धारित)



मैथिलीमे उँचाव तथै लेखन

१. पञ्चमाक्षर आ अक्षराव: पञ्चमाक्षरावुआत ७, ए३, १, न एरि म अरैत अछि । संयुत भायाक अक्षराव शिष्टक अक्षरमे जाहि रक्षक अक्षर बहैत अछि ओही रक्षक पञ्चमाक्षर अरैत अछि । जेना-

अई (क रक्षक बहरौक कावणे अक्षरमे ७ आएन अछि ।)

पअ (ट रक्षक बहरौक कावणे अक्षरमे ए३ आएन अछि ।)

खअ (ठ रक्षक बहरौक कावणे अक्षरमे १ आएन अछि ।)

मअ (त रक्षक बहरौक कावणे अक्षरमे न आएन अछि ।)

खअ (प रक्षक बहरौक कावणे अक्षरमे म आएन अछि ।)

उपग्राह्य रीत मैथिलीमे कम देखन जागत अछि । पञ्चमाक्षरक रीदनामे अरिकाशि जगहपव अक्षरावक प्रयोग देखन जागछ । जेना- अक, पट, खड, मरि, खंत आदि । राकवणरिद पडित गोरिन्द नाक कहरि डमि जे करअ, टरअ आ ठरअसँ पूर्ण अक्षराव निखन जाए तथा तरअ आ परअसँ पूर्ण पञ्चमाक्षर निखन जाए । जेना- अक, टटन, अँडा, अक्षु तथा कक्षण । अदा हिन्दीक निकट बहन आधुनिक लेखक एहि रीतकेँ नहि मालैत छथि । ओ लोकनि अक्षु आ कक्षणक जगहपव सेहो अँत आ कक्षण निथेत देखन जागत छथि ।

नरीन पछति किछु स्वरिधाजनक अरथु छैक । किछक तँ एहिमे समान आ स्थानक रीतत होगत छैक । अदा कतोक रैव हनुलेखन रा अदनामे अक्षरावक छोट सन रिन्दु स्पष्ट नहि भेनासँ अर्थक अर्थ होगत सेहो देखन जागत अछि । अक्षरावक प्रयोगमे उँचाव-दोषक सम्भारणा सेहो ततरै देखन जागत अछि । एतदर्थ कसँ न२ क२ परअ धरि पञ्चमाक्षरक प्रयोग कवरि छैत अछि । यसँ न२ क२ त्र धरिक अक्षरक सञ्च अक्षरावक प्रयोग कवरिमे कतहु कोना रिवाद नहि देखन जागछ ।

२. ठ आ ट : ठक उँचाव “व ह”काँ होगत अछि । अतः जतः “व ह”क उँचाव हो ओतः मात्र ठ निखन जाए । आन ठाम खाली ठ निखन जखरौक छली । जेना-

ठ = ठाकी, ठेकी, ठीठ, ठेँआ, ठसँ, ठेवी, ठाकनि, ठाँ आदि ।

ठ = गट १ग, रँठरँ, गठरँ, मठरँ, रँठरँ, साँठ, गाठ, बीठ, दाँठ, सीठ, पीठ आदि ।

उपग्राह्य शिष्ट, सभकेँ देखनासँ ज स्पष्ट होगत अछि जे साधारणतया शिष्टक शुक्रमे ठ आ मर तथै अक्षरमे ठ अरैत अछि । गह निगम ड आ डक सम्भर सेहो नागु होगत अछि ।

३. र आ रँ : मैथिलीमे “र”क उँचाव रँ कएन जागत अछि, अदा ओकरा रँ कएमे नहि निखन जखरौक छली । जेना- उँचाव : रँगनाथ, रिन्दा, नरँ, देरँता, रिष्ट, रँशि, रँदना आदि । एहि सभक स्थानपव फमि: रँगनाथ, रिन्दा, नर, देरता, रिष्ट, रँशि, रँदना निखरौक छली । साधारणतया र उँचावक लेन ओ प्रयोग कएन जागत अछि । जेना- ओकीन, ओजह आदि ।



४. य आ ज : कतहू-कतहू “य”क उच्चारण “ज”जकाँ करैत देखन जागत अछि, झुदा ओका ज नहि निखरौक छली । उच्चारणमे यहु, जदि, जझना, जुग, जारैत, जोगी, जदु, जम आदि कहन जाएरौना शैद, सबैकै फ़मनि: यहु, यदि, यझना, यग, यारत, योगी, यदु, यम निखरौक छली ।

३. ए आ य : मैथिलीक रतिनीमे ए आ य दुनु निखन जागत अछि ।

प्राचीन रतिनी- कएन, जाए, होयत, माए, भाए, गाए आदि ।

नरीन रतिनी- कयन, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि ।

सामान्यतया शैदक शुक्रमे ए मात्र अरैत अछि । जेना एहि, एना, एकव, एहन आदि । एहि शैद, सबैक स्थापन यहि, यना, यकव, यहन आदिक प्रयोग नहि करौक छली । यद्यपि मैथिलीभाषी थाक सहित किछु जातिमे शैदक आबन्तामे “ए”कै य कहि उच्चारण कएन जागत अछि ।

ए आ “य”क प्रयोगक सम्दर्भमे प्राचीन पञ्चतक अग्रमकाँ करै उग्यञ्ज मानि एहि पुस्तकमे ओकर प्रयोग कएन गेल अछि । किएक तँ दुनुक लेखनमे कोना सहजता आ दृक्कताक रीत नहि अछि । आ मैथिलीक सरिमाधारक उच्चारण-शैली यक अपेक्षा एम् रैसी निकट छैक । थाम क२ कएन, हएर आदि कतिपय शैदकै केन, हेर आदि कपमे कतहू-कतहू निखन जाएर सैहो “ए”क प्रयोगकै रैसी समीप प्रमाणीत करैत अछि ।

३. हि, हू तथा एकाव, ओकाव : मैथिलीक प्राचीन लेखन-पञ्चतकमे कोना रीतपव रैन दैत कान शैदक पाछाँ हि, हू नगाउन जागत छैक । जेना- हुनकहि, अगनहु, ओकवहु, तकौनहि, छेष्टहि, आनहु आदि । झुदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थापन एकाव एरै हुक स्थापन ओकावक प्रयोग करैत देखन जागत अछि । जेना- हुनके, अगला, तकौने, छेष्ट, आला आदि ।

१. य तथा थ : मैथिली भाषामे अधिकशित: यक उच्चारण थ होगत अछि । जेना- यडल (थडल), योडनी (थोडनी), यष्टेला (थष्टेला), वृथेने (वृथेने), सन्नाय (सन्नाथ) आदि ।

+ धनि-लाग : निम्नलिखित अवस्थामे शैदसँ धनि-लाग भ२ जागत अछि:

(क) फ़िवाव्ययी प्रत्य अग्रमे य रा ए वृत्त भ२ जागत अछि । ओहिमे सँ पहिल अक उच्चारण दीर्घ भ२ जागत अछि । ओकव आगाँ लाग-सूटक छिन रा रिकारी (/ २) नगाउन जागछ । जेना-

पुर्ण कप : पठए (पठय) गेनाह, कए (कय) जेन, उठए (उठय) पडतौक ।

अपुर्ण कप : पठ गेनाह, क जेन, उठ पडतौक ।

पठ२ गेनाह, क२ जेन, उठ२ पडतौक ।

(ख) पुरिवाव्ययी प्रत्य आस (आए) प्रत्यमे य (ए) वृत्त भ२ जागछ, झुदा लाग-सूटक रिकारी नहि नगाउन जागछ । जेना-

पुर्ण कप : थाए (य) गेन, पठाय (ए) देरै, नहाए (य) अनाह ।



अपूर्ण कण : था गेन, पाठा देरै, नहा अएनाह ।

(ग) स्त्री प्रत्यय एक उच्चारण क्रियापद, सङ्गा, ओ विशेषण तीनुमे वृथु भऽ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कण : दोसबि मारिनि छनि गेलि ।

अपूर्ण कण : दोसब मारिनि छनि गेल ।

(घ) वर्तमान प्रत्यय अन्तिम त वृथु भऽ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कण : गटेत अछि, रैजेत अछि, गरैत अछि ।

अपूर्ण कण : गटे अछि, रैजे अछि, गरै अछि ।

(ङ) क्रियापदक अस्माक एक, उँक, एँक तथा हीकमे वृथु भऽ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कण: छियोक, छियेक, छीक, छोक, छैक, अरितेक, होगक ।

अपूर्ण कण : छियो, छिये, छी, छो, छै, अरिते, होग ।

(च) क्रियापदीय प्रत्यय ह, हू तथा हकावक लोप भऽ जागत । जेना-

पूर्ण कण : छहि, कहवहि, कहवहूँ, गेनह, नहि ।

अपूर्ण कण : छनि, कहवनि, कहवौँ, गेनह, नग, नमि, ले ।

९. ध्वनि स्थानान्तरण : कोला-कोला स्वर-ध्वनि अणुना जगहसँ हटि कऽ दोसब ठाम छनि जागत अछि । थाम कऽ दान्न ग आ उँक सङ्ग्रहमे ग रात नागु होगत अछि । मैथिलीक वृथु भऽ गेल शब्दक मध्य रा अन्तमे जँ दान्न ग रा उँ आरै तँ ओकव ध्वनि स्थानान्तरित भऽ एक अक्षर आगाँ आरि जागत अछि । जेना- मेनि (मेगन), पानि (पागन), दानि (दागन), माष्टि (मागष्टि), काड (काडुड), मास (माडस) आदि । ह्रस्व तसेम शब्द, सभमे ग निश्चय नागु नहि होगत अछि । जेना- बमिकेँ बगम आ सुवागिकेँ सुवाडस नहि कहन जा सकैत अछि ।

१०. हनन्त () क प्रयोग : मैथिली भाषामे सामान्यतया हनन्त () क आरम्भिकता नहि होगत अछि । कावण जे शब्दक अन्तमे अ उच्चारण नहि होगत अछि । ह्रस्व सङ्कृत भाषासँ जहनाक तहिना मैथिलीमे आएन (तसेम) शब्द, सभमे हनन्त प्रयोग कएन जागत अछि । एहि पोथीमे सामान्यतया सम्पूर्ण शब्दकेँ मैथिली भाषा सङ्ग्रही निश्चय अनुसार हनन्तरिण बाखन गेल अछि । ह्रस्व आरम्भ सङ्ग्रही प्रयोजक लेन अन्तराक्षर स्थानक कतह-कतह हनन्त देन गेल अछि । प्रत्युत पोथीमे मैथिली लेखक प्राप्ति आ नरीन दुनु शैलीक सवन आ समीपन पक्ष सभकेँ समेटि कऽ रर्ष-रिगाम कएन गेल अछि । स्थान आ समयमे रचितक सम्बन्ध हन्त-लेखन तथा तर्कनीकी दृष्टिसँ सेहो सवन होरैरैना हिसारसँ रर्ष-रिगाम गिनाएन गेल अछि । वर्तमान समयमे मैथिली मातृभाषी पर्यन्तकेँ आन भाषाक माध्यमसँ मैथिलीक ज्ञान जेरे पडि बहन परिश्रममे लेखनमे सहजता तथा एककतापव धान देन गेल अछि । तखन मैथिली भाषाक मूल विशेषता सभ कथित नहि होगक, ताहू दिस लेखक-सङ्कट सचेत अछि । प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. बागारताव यादवक कहब छनि जे सवनताक अनुसन्धानमे एहन अनुशा किम्व ल आरै देरौक छी जे भाषाक विशेषता छहमे पडि जाए ।

-(भाषाशास्त्री डा. बागारताव यादवक वाक्याकेँ पूर्ण कणसँ सङ्ग नऽ निर्धारित)



१.२. मैथिली अकादमी, पटना द्वारा निर्धारित मैथिली लेखन-नैय

१. जे शब्द, मैथिली-साहित्यक प्राचीन कालसँ आग धरि जाहि र्थनामे प्रचलित अछि, से सामान्यतः तहि र्थनामे निखन जाय- उदाहरणार्थ-

ग्राह

एखन

ठाग

जकब, तकब

तनिकब

अछि

अग्राह

अखन, अखनि, एखन, अखनी

ठिगा, ठिना, ठागा

जेकब, तेकब

तिनकब। (रैकपिक कर्पे ग्राह)

अँड, अँहि, ए।

२. निम्नलिखित तीन प्रकारक कर्प रैकपिकतया अंगणान जाय: भ२ गेन, भ३ गेन रा भ४ गेन। जा बहन अछि, जाय बहन अछि, जअ बहन अछि। कब गेनाह, रा कबय गेनाह रा कबय गेनाह।

३. प्राचीन मैथिलीक 'ह' ध्वनिक स्थानमे 'न' निखन जाय सकैत अछि यथा कहननि रा कहनहि।

४. 'अ' तथा 'उ' ततय निखन जाय जत स्पष्टतः 'अग' तथा 'अउ' सदृश उच्चारण गच्छ हो। यथा- देखेत, डलेक, लोखा, लोह गवादि।

५. मैथिलीक निम्नलिखित शब्द एहि कर्पे प्रयुक्त होयत: जेह, सैह, गअह, उअह, लेह तथा दैह।

६. ह्रस्व अकारांत शब्दमे 'ग' के वृत्त कबसँ सामान्यतः अग्राह थिक। यथा- ग्राह देखि आरैह, मानिनि गेलि (मन्यय यात्रमे)।

७. स्वतंत्र रूप 'ए' रा 'य' प्राचीन मैथिलीक उच्चारण आदिमे तँ यथारत बाखन जाय, किंतु आधुनिक प्रयोगमे रैकपिक कर्पे 'ए' रा 'य' निखन जाय। यथा:- कयन रा कयन, अयनाह रा अयनाह, जाय रा जअ गवादि।

८. उच्चारणमे दु स्वरक बीच जे 'य' ध्वनि स्वतः आरि जागत अछि तकरा लेखमे स्थान रैकपिक कर्पे देन जाय। यथा- धीखा, अँटेखा, रिखाह, रा धीया, अँटेया, रियाह।

९. सांख्यिक स्वतंत्र स्वरक स्थान यथार्थतः 'अ' निखन जाय रा सांख्यिक स्वर। यथा:- मैअग, कनिअग, किवतमिअग रा मैअँ, कनिअँ, किवतमिअँ।

१०. कावकक रिक्तितक निम्नलिखित कर्प ग्राह:- हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे। 'मे' मे अन्वय



सरथी लज्जा थिक । ‘क’ क रैकल्पिक कग ‘केव’ बाखन जा सकैत अछि ।

११. पुरिकाणिक फ्रियापदक रौद ‘कय’ रा ‘कए’ अरय रैकल्पिक कर्णें नगाउन जा सकैत अछि । यथा:-
देथि कय रा देथि कए ।

१२. माँग, भाँग आदिक स्त्राणमे माँ, भाँ गलादि निखन जाय ।

१३. अई ‘न’ ओ अई ‘म’ क रैदना अन्वभाव नहि निखन जाय, किन्तु भाषाक स्वरिधार्थ अई ‘उ’ , ‘ए’,
तथा ‘ण’ क रैदना अन्वभावो निखन जा सकैत अछि । यथा:- अई, रा अँक, अउठन रा अँठन, कँठ रा
कँठ ।

१४. ठनत छि निश्चयतः नगाउन जाय, किन्तु रिभञ्जिक सँग अकारांत प्रयोग कएन जाय । यथा:-
लौगान्, किन्तु लौगानक ।

१५. सभ एकन कावक छि शेट्टमे सँठा क निखन जाय, हँठा क नहि, सँशङ्क रिभञ्जिक हेतु फवाक
निखन जाय, यथा यव पवक ।

१६. अन्वयामिकलै चन्द्रबिन्दु द्वावा राउ कयन जाय । पर्वतु ऋद्वक स्वरिधार्थ हि स्याण जठन मात्रापव
अन्वयवक प्रयोग चन्द्रबिन्दुक रैदना कयन जा सकैत अछि । यथा- हि केव रैदना हि ।

१७. पूर्ण विवाय पामीन (।) मुटित कयन जाय ।

१८. सगुत पद सँठा क निखन जाय, रा हागहणसँ जोडि क , हँठा क नहि ।

१९. निश्च तथा दिश्च शेट्टमे रिकारी (२) नहि नगाउन जाय ।

२०. अँक देरणागवी कगमे बाखन जाय ।

२१. किन्तु ध्वनिक स्त्रेव नरीन छि रैनरीउव जाय । जा अ नहि रैनव अछि तँरत एहि दुनु ध्वनिक रैदना
पुरिबत् अय/ आय/ अय/ आय/ आउ/ अउ निखन जाय । आकि ऐ रा ओ सँ राउ कएव जाय ।

ह.।- लौगिन्द मा ११/११/१३ लौकाणु अँकव ११/११/१३ सुबेन्द्र मा सुम ११/०१/१३

२. मैथिलीमे भाषा सप्तादन पाठ्यक्रम

२.१. उँचाका निर्दिने: (बौल्ल कएव कग ज्ञाह):-

दनु न क उँचाकामे दौतमे जीह सँठत- जेना रौजु नाय , ऋदा ण क उँचाकामे जीह मुर्धामे सँठत
(लै सँठैए तँ उँचाका दोय अछि)- जेना रौजु गणेशि । तानरा नेमे जीह तवुसँ , यमे मुर्धसिँ आ दनु
समे दौतसँ सँठत । निगोँ, सभ आ शोका रौजि क२ देखु । मैथिलीमे स लै रैदिक संस्कृत जकाँ थ
सेलो उँचवित कएव जागत अछि, जेना रयाँ, दोय । य अलको स्त्राणव ज जकाँ उँचवित होगत अछि
आ ण उ जकाँ (यथा संयोग आ गणेशि संज्ञा) आ

गउमे उँचवित होगत अछि । मैथिलीमे र क उँचाका रँ, ने क उँचाका स आ य क उँचाका ज
सेलो होगत अछि ।



ओहो द्रव्य ओ रोमीकान मैथिलीमे पहिल रोजन जागत अछि काका देरनागरीमे आ मिथिलाक्षरमे द्रव्य ओ अक्षरक पहिल लिखल जागत आ रोजनो जखनो छली । काका जे हिन्दीमे एकव दोषपूर्ण उँटाका होगत अछि (लिखत तँ पहिल जागत अछि द्रव्य रोजन रौदमे जागत अछि), से शिक्षा पद्धतिक दोषक काका हम सब ओकर उँटाका दोषपूर्ण ठगसँ क२ बहन छी ।

अछि- अ ग ड **अँ** (उँटाका)

छथि- छ ग थ - **छै** (उँटाका)

गहँ- ग हूँ ग ट (उँटाका)

आरौ अ आ ओ ए अँ ओ उँ अँ अः म अँ सब लेन माना सेहो अछि, द्रव्य अँमे अँ अँ ओ उँ अँ अः म कै संशुद्धि कगमे गगत कगमे प्रशुद्ध आ उँटावित कथन जागत अछि । जेना म कै वी कगमे उँटावित कवरौ । आ देखियो- अँ लेन देखिओ क प्रयोग अशुद्धि । द्रव्य देखिअँ लेन देखियो अशुद्धि । कूँ हूँ धवि अँ समितित लेनसँ कूँ हूँ रौलैत अछि, द्रव्य उँटाका कान हलुत शुद्ध शिष्टक अशुद्ध उँटाकाक प्रवृत्ति रौलैत अछि, द्रव्य हम जखन मलाजमे जूँ अशुद्ध रौलैत छी, तखना धुलका लोककै रौलैत स्वर्णरहि- मलाज२, रातुरमे ओ अँ शुद्ध जूँ = जूँ रौलैत छथि ।

होव तू अछि जूँ आँ ए१ क संशुद्ध द्रव्य गगत उँटाका होगत अछि- गा । ओहो अछि कूँ आँ य क संशुद्ध द्रव्य उँटाका होगत अछि छ । होव गैँ आँ व क संशुद्ध अछि छै (जेना छैगिक) आँ सँ आँ व क संशुद्ध अछि सँ (जेना सिस) । ए लेन त+व ।

उँटाकाक आँडियो फागत बिदेह आँकगिर <http://www.videha.co.in/> पब उँगावै अछि । होव कै / सँ / पब पुर अक्षरसँ सँ क२ लिख द्रव्य तँ / क२ लै क२ । अँमे सँ मे पहिल सँ क२ लिख आँ रौदरौना लै क२ । अँकक रौद छी लिख सँ क२ द्रव्य अँ छी छी लिख लै क२- जेना

छलै द्रव्य सब छी । होव उँ अँ म सँतम लिख- छँ म सँतम लै । यवरौमे रौना द्रव्य यवरौमे रावै प्रशुद्ध क२ ।

बहए-

बह द्रव्य सँके (उँटाका सँके-ए) ।

द्रव्य कथला कान बहए आँ बहै मे अर्थ भिन्नता सेहो, जेना मे कना जगहमे पाँकिंग कवरौक अशुद्ध बहै ओकरा । शुद्धागव गता नागत जे दुनूदुन नामाँ ओ उँगाव कगछँ हँसक पाँकिंगमे काज कबैत बहए ।

छलै, छलै मे सेहो अँ तबहक लेन । छलै क उँटाका छल-ए सेहो ।

सँयोगल- (उँटाका सँयोगल)

कै/ क२

कैव- क (

कैव क प्रयोग प्रथमे लै क२ , प्रथमे क२ सँके छी ।)

क (जेना बायक)

- बायक आँ सँगे (उँटाका बाय कै / बाय क२ सेहो)



सँ- स२ (उँटावा)

छन्दरिन्दु आ अक्षराव- अक्षरावमे कँठ धरिक प्रयोग होगत अछि रुद्रा छन्दरिन्दुमे ले। छन्दरिन्दुमे कलक एकावक सेहो उँटावा होगत अछि- जेना बागसँ- (उँटावा बाग स२) बागकँ- (उँटावा बाग क२/ बाग के सेहो)।

कँ जेना बागकँ तेन हिन्दीक को (बाग को)- बाग को= बागकँ

क जेना बागक तेन हिन्दीक का (बाग का) बाग का= बागक

क२ जेना जा क२ तेन हिन्दीक कव (जा कव) जा कव= जा क२

सँ तेन हिन्दीक से (बाग से) बाग से= बागसँ

स२ , त२ , त , केव (गद्यमे) एते टाक भेटे, सरलक प्रयोग अछि।

के दोसर अर्थ प्रशङ्क भ२ सकैए- जेना, के कहक ? रिभक्ति “क”क रँदना एकव प्रयोग अछि।

नहि, नहि, ले, नग, नँग, नगँ, नगँ ए सबक उँटावा आ लेखन - ले

ओह क रँदनामे ह जेना महर्गुर्ण (महर्गुर्ण ले) जतए अर्थ रँदनि जाए ओहि मात्र तीन अक्षरक संश्लेषक प्रयोग छै। सम्पति- उँटावा स स ग त (सम्पति ले- काका सही उँटावा आमागीसँ सम्पत्त ले)। रुद्रा सर्रोतिम (सर्रोतिम ले)।

बाह्रिय (बाह्रिय ले)

सकैए/ सकै (अर्थ परिवर्तन)

पोडिमे/ पोडि तेन/ पोडिमे तेन

पोडिमे/ पोडि/ (अर्थ परिवर्तन) पोडिमे/ पोडि

ओ लोकनि (हँ क२, ओ ये रिंकावी ले)

ओह ओहि

ओहमे/

ओहि मेवा ओही व२

जगैँ बैसैँ

गँतगँ

देखियोक/ (देखिओक ले- तहिना अ ये ज्ञान आ दीर्घक मात्राक प्रयोग अछि)

जकाँ / जेकाँ



तँग/ तँ

हलत / हत

नहि/ नहि/ नँग/ नग/ ले

सौंस/ सौंस

रेंच /

रेंच (सोबाउव)

गाए (गांग नहि), रुदा गांगक दुध (गांगक दुध ले ।)

बहलौ/ गहिलौ

हमलि/ अलि

सरें - सभ

सरेंक - सभक

धवि - तक

गग- रौत

रूसरें - समसरें

रूसलौ/ समसलौ/ रूसलहू - समसलहू

हमल अलि - हम सभ

आकि- आ कि

सकैड/ कलैड (गद्यमे प्रयोगक आरंभकता ले)

होअ/ होलि

जाअ (जानि ले, जेना देव जाअ) रुदा जाअ-रूसि (अर्थ परिवर्तन)

गअ/ जाअ

आड/ जाड/ आड/ जाड

मे, कै, मँ, गव (मिहँसँ सँ क२) तँ क२ व२ द२ (मिहँसँ लँ क२) रुदा दूँ रा रँसी रिभञ्जि सँग
बहनागव गहिल रिभञ्जि ठाँकै सँडु । जेना एमे सँ ।

एकठाँ , दूठाँ (रुदा क२ ठाँ)

रिंकावीक प्रयोग मिहँसँ अन्तमे, रीचमे अन्तरिक कर्ण ले । आकावाउ आ अन्तमे अ क रौद रिंकावीक
प्रयोग ले (जेना दिअ

, आ/ दिअ , आ, आ ले)



अपेक्षित प्रयोग विकास रचना कवय अर्थात् आ माव श्रृंखला तकनीकी युगताक परिचायक)-
उना विकास रचना क २ अर्थात् कल जागत अर्थात् आ रचना आ उचाव दू ठाम एकव लाग बहेत
अर्थात् बहि सकेत अर्थात् (उचाव लाग बहि अर्थात्) । दूदा अपेक्षित सैना अर्थात् गेमि
कसमे लागत अर्थात् आ श्रृंखला मेरेमे जतए एकव प्रयोग लागत अर्थात् जेना *raison d'être* एतए
सैना एकव उचाव बेजोव डेठव लागत अर्थात्, माल अपेक्षित अर्थात् अर्थात् ले दैत अर्थात् रवण जोडे
अर्थात्, से एकव प्रयोग विकास रचना देना तकनीकी कर्षे सैना अर्थात्) ।

अर्थात्, एहिमे/ एहिमे

अर्थात्, जहिमे

एहिमे/ अर्थात्/ अर्थात्

ले (ले नहि) मे (अर्थात् बहि)

तः

मे

दः

त (तः, त ले)

स (सः स ले)

गाढ तव

गाढ वग

सौमि अग

जो (जो go, कले जो do)

ते/तव जेना- ते दूधारे/ तगमे/ तगले

जे/जव जेना- जे कावण/ जगम/ जगले

ए/अव जेना- ए कावण/ एम/ अवग/ दूदा एकव एकठा थाम प्रयोग- नावति कतेक दिस कहत
बहेत अग

ले/वग जेना लेम/ वगले/ ले दूधारे

नह/ ले

गेलो/ लेलो/ लेव/ गेल/ लेव/ लेव

अग/ जहि/ जे



जहिया/ जाहिया/ जगिया/ जेहिया

एहि/ अहि/

अग (बालक अतम बाला / अ

अगड/ अडि/ अड

तग/ तहि/ ते/ ताहि

उहि/ उग

सीथि/ सीथ

जीरि/ जीरी/ जीरे

भलेही/ भवहि

ते/ तग/ तंग

जायरे/ जायरे

नग/ ने

डग/ डे

नहि/ ने/ नग

गग/ गे

डनि/ डनि ...

समय गेहदक संग जखन कोला रिभक्ति जूठे डे तखन समे जना समेगव गत्यादि । असगवमे दन्द
आ रिभक्ति जूठेल दन्दे जना दन्दे, दन्देमे गत्यादि ।

जग/ जाहि/

जे

जहिया/ जाहिया/ जगिया/ जेहिया

एहि/ अहि/ अग/ अ

अगड/ अडि/ अड

तग/ तहि/ ते/ ताहि

उहि/ उग

सीथि/ सीथ

जीरि/ जीरी/



५. रैवा रानी (श्रुतय), रानी (मूनी) ९

.

श्रीधर श्री

१०. शीयः शीयह

११. दुःखं दुःखं १

२. छल जल छव जल/छल जल

१३. देखिह देखिह, देखिह

१४.

देखिह देखिह/ देखिह

१३. छविह/ छविह छविह/ छविह/ छविह

१६. छविह/छविह छविह/छविह

१७. एथला

एथला

१४.

रैठानि रैठानि रैठानि

१९. उ/उ२(सरिगांग) उ

२०

उ (संयोजक) उ/उ२

२१. हांगि/हांगि हांगि/हांगि

२२.

जे जे/जे२ २३. न-बुद्ध न-बुद्ध

२४. कवहि/कवनि/कवनि

२५. तथनत/ तथन त

२६. जा

बल्ल/बल्ल बल्ल/बल्ल बल्ल

२७. निकन/निकन

वागव/ वागव रैलवा/ रैलवा वागव/ वागव निकन/रैलवा वागव



२४. उतय/ जतय जत/ उत/ जतय/ उतय

२५.

की कुवव जे कि कुवव जे

३०. जे जे/जे२

३१. कुदि / यदि(योग पावर) कुगद/यागद/कुद/याद/

यदि (योग)

३२. ओहो/ ओहो

३३.

हंस/ हंस हंस

३४. लो आकि दम/लो किरा दम/ लो रा दम

३५. सप्त-सप्त सप्त-सप्त

३६. छह/ सात छ/छ:/सात

३७.

की की/ की२ (दीर्घाकारणमे २ वर्जित)

३८. जराँ जराँ

३९. कवयताह/ कवयताह कवयताह

४०. दलान दिशि दलान दिशि/दलान दिस

४१.

. लोवाह गवाह/गवाह

४२. किछ आब किछ ओव/ किछ आब

४३. जाग छव जागत छव जाति छव/जेत छव

४४. गहुँटा छै जागत छव छै जाग छव गहुँटा/ छै जागत छव

४५.

जराँ (शरा)/ जराँ(शोजी)

४६. वय/ वय क/ क२/ वय क२ / व२ क२/ व२ क२

४७. व/व२ कय/

कय



४५. एथल / एथल / अथल / अथल

४६.

अथिल्ल अथिल्ल

५०. गलीव गलीव

५१.

धाव गाव कन्या धाव गाव कन्या/कन्या

५२. जेकाँ जेकाँ

जकाँ

५३. तहिला तहिला

५४. एकव अकव

५५. रैहिल रैहिलाग

५६. रैहिल रैहिलि

५७. रैहिल-रैहिलाग

रैहिल-रैहिल

५८. नहि/ ले

५९. कवरौ / कवरौय/ कवरौय

६०. तँ/ त २ तय/तय

६१. तैयावी ये जेठ-भाय/ते/ जेठ-भाय/भाय

६२. गितीये दू भाग/भाय/भाय

६३. अ पोथी दू भाग/भाय/भाय/ भाय/ भाय। यारत झरत

६४. माय ये / माय दू माय माय माय

६५. देहि/ दया दया/ दया/ दया/ दया/ दया/ दया

६६. द/ द/ द

६७. उ (संयोजक) उ२ (संयोजक)

६८. तका कय तकाय तकाय

६९. पोले (on foot) पोले कय/ केक

७०.



तहमे तहमे

११.

प्रतीक

१२.

रैछा कय कय / कय

१३. रैलगाय/रैलगाय

१४. लोवा

१५.

निका निका

१६.

तहमे

१७. गवरोवहि/ गवरोवहि/

गवरोवहि/ गवरोवहि

१८. रौब रौब

१९.

तेह तेह(अह)

२०. जे जे

२१.

. से/ से से/से

२२. एखका अखका

२३. उमिहव उमिहव

२४. सुख

/ सुखक सुख

२५. सखक सखक २६.

तुमि

२७. कवगयो/उ कवयो ल देवक /कवयो-कवगयो

२८. प्रीति



प्रयोग

१६. सगड़ १-साँछी

सगड़ १-साँछी

१७. गयल-गयल गेल-गेल

१८. देखबखौक

१९. देखबखौक

२०. वगी

२१. लो- लो - लोख

२२. ब्रूमव ब्रूमव

२३.

ब्रूमव (संशोधन अर्थमे)

२४. देख यल / खल / मे / मल

२५. तातिव

२६. अयलाय- अयलाय/ अयलाय/ अयलाय

२७. निम्न- निम्न

२८.

निम्न निम्न

२९. जल जल

३०.

जल (in different sense)-last word of sentence

३१. उत नव अयि जल

३२.

ल

३३. देख (play) -देख

३४. निमायत- निमायत

३५.

उत- उत



१०९

. गठ- गठ

११०. कनिए/ कनिये कनिये

१११. बाकस- बाकसे

११२. लोख/ लोख लोख

११३. अडवन्त-

उन्त

११४. बुँसवहि (different meaning - got understand)

११५. बुँसवहि/बुँसवनि/ बुँसवहि (understood himself)

११६. छवि- छवि/ छवि लाव

११७. ख्याय- ख्याय

११८.

मोस गौडवहि/ मोस गौडवनि/ मोस गौडवहि

११९. कैक- कैक- कैक

१२०.

वग वग

१२१. जखनाथ

१२२. जखनाथ जखनाथ- जखनाथ/

जखनाथ

१२३. लोखत

१२४.

गवरोवहि/ गवरोवनि गवरोवहि/ गवरोवनि

१२५.

टिखेट- (to test) टिखेट

१२६. कवखैय (willing to do) कवखैय

१२७. जेकवा- जेकवा

१२८. तैकवा- तैकवा



१२९.

बिदेसब झालमे/ बिदेसबे झालमे

१३०. कबरौयनहूँ/ कबरौएनहूँ/ कबरौनहूँ कबरौबौ

१३१.

हासिक (उछाका हासबक)

१३२. ओझन रजन आँससोच/ आँससोस कागज/ कागज/ कागज

१३३. आँस भाग/ आँस-भाग

१३४. निछ / निछाय/ निछा

१३५. नए/ ल

१३६. रैछ नए

(ल) निछ जाय

१३७. तखन ल (नए) कहेत अछि । कहे/ सुले/ देखे छव दूदा कहेत-कहेत/ सुलेत-सुलेत/ देखेत-देखेत

१३८.

कतेक लोटे/ कतक लोटे

१३९. कयाँज-धयाँज/ कयाँज- धयाँज

१४०

. वग वग

१४१. खेवाँज (for playing)

१४२.

डबिहा डबिग

१४३.

लोखत लोख

१४४. का कियो / केउ

१४५.

कमे (hair)

१४६.



कस (court -case)

१४१

. रैलगाथ/ रैलगाथ/ रैलगाथ

१४४. छलगाथ

१४५. कसरी कसरी

१४६. छलछल

१४७. कस कस

१४८. डूराँरै/ डूराँरै/ डूराँरै डूराँरै/ डूराँरै

१४९. एथलका/

थलका

१५०. कस/ कस (राकक अंतिम गेह)- वर

१५१. कलक/

कलक

१५२. गसरी गसरी

१५३

. बरदी बरदी

१५४. बरदी बरदी बरदी/बरदी

१५५. बरदी-बरदी

१५६

बरदी ल बरदी/ बरदी ल बरदी

१५७. बरदी / ल

१५८

बरदी बरदी

१५९. कलक/ कलक कलक

१६०. उमरिगब-उमरिगब उमरिगब

१६१. बरिगब

१६२. बरिगब/बरिगब बरिगब



547X VIDEHA

१७१. गग/गग

१७४.

क क

१७५. दवरैछा/ दवरैछा

११०. गी

११५.

धवि डर

११२.

धुवि छोट

११३. खोबरेक

११४. रैड

११३. रौ/ रू

११७. रौहि(गगमे गी)

१११. रौलि / रौहि

११४.

कवरौछा कवरौछा

११५. एकछा

१४०. कविता/ कवता

१४५.

गुँछा/ गुँछ

१४२. बाखनहि बखनहि/ बखन

१४३.

वगवहि वगवनि वागवहि

१४४.

गुनि (डछावा गुनि)

१४३. अछि (डछावा अछि)

१४७. एवनि लवनि



१५१. बिउल/ बिउल/

बिउल

१५२. कबरेउल/ कबरेउल/

कबरेउल/ कबरेउल

१५३. कबरेउल/ कबरेउल

१५४.

आदि/ कि

१५५. गुरु/

गुरु

१५६. रीती जवाग/ जवाग जवाग (आदि गगा)

१५७.

मे मे

१५८.

हो मे हो (हो मे हो बिउलमे ली क)

१५९. लय लय

१६०. श्रवण(spacious) लय

१६१. लयल/ लयल/ लयल/लयल/ लयल

१६२. लय लयल/ लय लयल/लय लयल

१६३. लय लय

२००. लयल लयल

२०१. लयल

२०२. लयल लयल

२०३.

लयल लयल

२०४. लयल/ लयल/ लयल

२०५. लयल/ लयल

२०६. लयल/ लयल/लयल लयल



२०१. किछ न किछ/

किछ ल किछ

२०४. घुमेनहूँ/ घुमाउ नहूँ/ घुमेनहूँ

२०५. एवाक/ अएवाक

२१०. अः/ अह

२११. नय/

नय (अर्थ-परिवर्तन) २१२ कबीर/ कलक

२१३. मरेलक/ मलक

२१४. गिला/ गिला

२१५. क/ क

२१६. जा/ जा

जा

२१७. आ/ आ

२१८. भ/ भ (अन्धकार कगी आतक)

२१९. निधय/ निधय

२२०

.लेनहय/ लेनहय

२२१. पहिब अकब ठा रीदक/ रीदक ठा

२२२. तहि/ तहि/ तहि/ तै

२२३. कहि/ कही

२२४. तै/ तै

तै / तै

२२५. नै/ नै/ नै/ नै/ नै

२२६. हे/ हे / एवाहै/

२२७. छै/ छै/ छै/ छै/ छै

२२८. दृष्टि/ दृष्टि

२२९. आ (come)/ आ (conjunction)



२३०.

थी (conjunct i on)/ थीर(come)

२३१. कला/ कोला/ कोना/ कना

२३२. गोदीह-गोदीह-गोदीह

२३३. लोदीह- लोदीह

२३४. केदीह- केदीह-केदीह/ केदीह

२३५. किड न किड- किड ल किड

२३६. केदीह- केदीह

२३७. थीर (come)- थी (conjunct i on-and)/ थी । थीर- थीर / थीरह- थीरह

२३८. लोदीह- लोदीह

२३९. गुदीह- गुदीह- गुदीह

२४०. एदीह- एदीह

२४१. लोदीह- लोदीह/ लोदीह

२४२. उ- बाग उ बाग रीह (conjunct i on), उर कहक (he said)/ उ

२४३. की लोदीह/ कोदीह लोदीह/ की हे । की लोदीह

२४४. दूदीह/ दूदीह

२४५.

. गोदीह/ गोदीह

२४६. लोदीह / लोदीह/ लोदीह/ लोदीह

२४७. लोदीह

/ लोदीह/ लोदीह

२४८. लोदीह/ लोदीह

२४९. लोदीह/ लोदीह

२५०. लोदीह/ लोदीह

२५१. कला/ कोला/ कोना/ कना

२५२. लोदीह/ लोदीह/ लोदीह/ लोदीह

२५३. लोदीह/ लोदीह/ लोदीह/ लोदीह



२३४. अः / अह

२३५. अलै/ जलप

२३६. लवनि/

लवह (अर्थ परिवर्तन)

२३७. लवहि/ कलवहि/ लवनि/

२३८. नय/ नय/ नयह (अर्थ परिवर्तन)

२३९. कनीक/ कलक/कनी-मनी

२४०. गलवहि गलवनि/ गलवगल/ गलवगलहि/ गलवगलनि/

२४१. निशय/ निशय

२४२. लेवह/लेवह/ लेवहयव

२४३. गलवि अकव कल ठा रीचमे कल ठ

२४४. आकावाभुमे रिकारीक प्रयोग उचित ले/ अपोद्धातक प्रयोग शान्ति तर्कनीक नृपताक गविद्याक
उकव रीचमे अरगल (रिकारी) क प्रयोग उचित

२४५. लव (गलमे आह) / -क/ क२/ ले

२४६. लेहि- लहि

२४७. ललै/ ललोये

२४८. ललैत/ ललैत

२४९. ललैत/ ललैत/

२५०. ललैत/ ललैत/ ललैत

२५१

. ललैत/ ललैत/ ललैत

२५२. लिखैरौक/ लिखैरौक/ लिखैरौक

२५३. गुरु/ गुरुह

२५४. गुरुह/ गुरुह

२५५. अलतह/ अलतह/ अलतह/ अलतह

२५६. जलहि/ जलहि/ जलहि/ जलहि

२५७. जलत/ जलत/ जलत/ जलत



२११. श्रीधर/ श्रीधर

२१२. कैक/ कथक

२१०. श्रीधर/ श्रीधर/ श्रीधर

२१५. ज्ञा/ ज्ञा/ ज्ञा (जाति ज्ञा नगरीह ।)

२१२. ब्रह्म/ ब्रह्म

२१३. कर्तृश्रीधर/ कर्तृश्रीधर

२१४. ताहि/ ते/ तथ

२१३. गायत्री/ गायत्री/ गायत्री

२१३. सके/ सक/ सक

२११. सेवा/सवा/ सवा (भात सवा गेन)

२११. कहेत बरी/देवेत बरी/ कहेत छरी/ कहे छरी- श्रीधर चलेत/ गहेत

(गहेत-गहेत श्रीधर कथला काय परिवर्तित) - श्रीधर ब्रह्म/ ब्रह्मेत (ब्रह्मे/ ब्रह्मे छी रुद्रा ब्रह्मेत-ब्रह्मेत)/ सकेत/ सके। कहेत/ कहे। दे/ देत। छेक/ छे। ब्रह्मे/ ब्रह्मेक। ब्रह्मा/ ब्रह्माक। विष्णु/ विष्णु। वातिक/ वातिक ब्रह्मे श्रीधर ब्रह्मेत केव श्रीधर-श्रीधर जगन्नाथ प्रयोग समीप श्रीधर। ब्रह्मेत-ब्रह्मेत श्रीधर ब्रह्म। रुद्रा ब्रह्मे छी।

२१२. दुःख/ दुःख

२१०. ते/ ते/ ते

२१५.

श्रीधर/ श्रीधर/ श्रीधर (श्रीधर श्रीधर श्रीधर श्रीधर)

२१२. त/ धरि

२१३. ग/ ते (meaning different - जगन्नाथ ग)

२१४. स/ श्री (रुद्रा द, न)

२१३. ३. (तीन श्रीधर मेन रुद्रा श्रीधर एक श्रीधर दोसरक उगयोग) श्रीधर रुद्रा श्रीधर श्रीधर। श्रीधर/ श्रीधर/ कर्ता/ कर्ता श्रीधर उ श्रीधर कोला श्रीधरता श्रीधरमे ले श्रीधर। श्रीधर

२१३. श्रीधर/ श्रीधर

२११. श्रीधर/श्रीधर/ श्रीधर/ श्रीधर (श्रीधर)

२११

. श्रीधर/ (श्रीधरश्रीधर)

२१२. श्रीधर/ श्रीधर



३००. अन्तर्बर्द्धिय/ अन्तर्बर्द्धीय

३०१. लय/ लय

३०२. वय/ वय

३०३. वली/ वली (

बेटी/ बेटी)

३०४. वग/ वग

३०५. ली/ ली

३०६. वय/ वय

३०७. वी (come)/ वी (and)

३०८. पञ्चाङ्ग/ पञ्चाङ्ग

३०९. २ केव रारहाव मेरु अन्तर्मे मात, यथासंभव रीटमे ले ।

३१०. कहे/ कहे

३११.

वय (वय)/ वय (वय) (meaning different)

३१२. वग/ वग

३१३. वग/ वग

३१४. वग/ वग

३१५. वग/ वग

३१६. वग/ वग

३१७. वय (meaning different - swallow)/ वय (वय)

३१८. वय/ वय

DATE-LIST (year - 2013-14)

(१४२५ फसवी मास)

Marriage Days:

Nov.2013- 18, 20, 24, 25, 28, 29

Dec.2013- 1, 4, 6, 8, 12, 13



January 2014- 19, 20, 22, 23, 24, 26, 31.

Feb.2014- 3, 5, 6, 9, 10, 17, 19, 24, 26, 27.

Mar ch 2014- 2, 3, 5, 7, 9.

April 2014- 16, 17, 18, 20, 21, 23, 24.

May 2014- 1, 2, 8, 9, 11, 12, 18, 19, 21, 25, 26, 28, 29, 30.

June 2014- 4, 5, 8, 9, 13, 18, 22, 25.

July 2014- 2, 3, 4, 6, 7.

Upanayana Days:

Febr uary 2014- 2, 4, 9, 10.

Mar ch 2014- 3, 5, 11, 12.

April 2014- 4, 9, 10.

June 2014- 2, 8, 9.

Dv i r agaman D i n:

November 2013- 18, 21, 22.

December 2013- 4, 6, 8, 9, 12, 13.

Febr uary 2014- 16, 17, 19, 20.

Mar ch 2014- 2, 3, 5, 9, 10, 12.

April 2014- 16, 17, 18, 20.

May 2014- 1, 2, 9, 11, 12.

Mundan D i n:

November 2013- 20, 22.

December 2013- 9, 12, 13.

January 2014- 16, 17.



February 2014 – 6, 10, 19, 20.

March 2014 – 5, 12.

April 2014 – 16.

May 2014 – 12, 30.

June 2014 – 2, 9, 30.

FESTIVALS OF MITHILA (2013–14)

Mauna Panchami – 27 July

Madhushravani – 9 August

Nag Panchami – 11 August

Raksha Bandhan – 21 Aug

Krishnastami – 28 August

Kushi Amavasya / Somvati Vrat – 5 September

Hartalika Teej – 8 September

Chauth Chandra – 8 September

Vishwakarma Pooja – 17 September

Anant Caturdashi – 18 Sep

Pitri Paksha begins – 20 Sep

Jimootavahan Vrat / Jitika – 27 Sep

Matri Navami – 28 Sep

Kalashstapan – 5 October

Belauti – 10 October

Patrika Ravesh – 11 October



Mahastami - 12 October

Maha Navami - 13 October

Vijaya Dashami - 14 October

Kojagar - 18 Oct

Dhanteras - 1 November

Diya bati, shyama pooja - 3 November

Annakoota/ Govardhana Pooja - 4 November

Bhratri dwitiya/ Chitrakoota Pooja - 5 November

Chhatthi - 8 November

Sama Pooja arambh - 9 November

Devottan Ekadashi - 13 November

ravi vratarambh - 17 November

Navanna parvan - 20 November

Kartik Poorni - Sama Visarjan - 2 December

Vivaha Panchmi - 7 December

Makar / Teela Sankranti - 14 Jan

Naraknavaranchaturdashi - 29 January

Basant Panchami / Saraswati Pooja - 4 February

Achha Saptmi - 6 February

Mahashivaratri - 27 February

Holika dahan - Fagua - 16 March

Holi - 17 March

Saptadash - 17 March



Var uni Trayodashi -28 Mar ch

Jur i shi t al -15 April

Ram Navami - 8 April

Ak shaya Tritiya-2 May

Janaki Navami - 8 May

Ravi Br at Ant - 11 May

Vat Savi tri -bar asai t - 28 May

Ganga Dashhar a-8 June

Har i vasar Vr at a- 9 July

Shr ee Guru Poor ni ma-12 Jul

VI DEHA MAI THI LI SAMSKRI T TUTOR

डॉ. अमर जी मा

ভর্তিহৰ: ভাষাশাস্ত্ৰীয় যোগদান

সংস্কৃতভাষায় ভাষাতত্ত্বচিন্তন বৈদিকানদের ভরতি। মন্বদন্ত্য রাক্ষুজংশি ভাষায়া: বিন্নিঃস্বকপাণা বিন্নেচনমন্তি। অগ্নিঃ কমে যাক্ষ্য নিরচনম্ পানিল: প্রপ্তি-প্রত্যন্ত বিন্নিঃস্বকপাণা পতঞ্জলে: চ ভাষাতত্ত্বনিদর্শনম্ প্রশিক্ষণং বর্তন্ত। ভর্তিহৰিণা: স্বকীয়ৈশ্চ গ্রন্থৈশ্চ শিষ্টতত্ত্বন্ত বিন্নিঃস্বকপাণা বিন্নেচনম্ স্পষ্টতয়া প্রামাণিকতয়া, সুস্পষ্টতয়া, বর্ণিতা: সন্তি। ভর্তিহৰিণা: বাক্যপদেভ্যে ভাষায়া: বিন্নেচনকমে পঞ্চম শিতের শিষ্টতত্ত্ব এৰ পৰ্য্যন্ততত্ত্বকপে স্থাপিত:। ভর্তিহৰিমতে শিষ্টতত্ত্বত: অপরস্বকপাণি প্রাপ্ত শিক্যতে। পাশ্চাত্যমদৰ্ভে বিন্নিতিতমে শিতে আধুনিকভাষাশাস্ত্ৰীয় জনক: মৌখ্যব: ভাষাশাস্ত্ৰীয় স্বত্বকপে সামাজিকসত্তারিষকমতানি প্রিতপাদন্ত। ভর্তিহৰি: দ্বিতীয়কালন্ত অখল: , নিবরয়: বাক্যস্পষ্টকন্ত সিদ্ধান্তন্ত প্রতিপাদন প্রতমন্তি। অগ্নিমতে: বাক্য পদম্, পদে বর্ণি:, বর্ণে খল্যনাম ভেদ কেরন ভাষাশিক্ষার্থ ভরতি ন তু বাক্যার্থরোধন। শাস্ত্রাসমকীমহোদয়: অপি সিন্ধৈকিক মন্তব্যম্ গ্রন্থ ভাষাশাস্ত্ৰীয় ক্ষুধাবিন্নেচরিষকপে 'বাক্যমের মন্ততে'। ভর্তিহৰি: বাচ: চত্বারিকপাণি পৰাপ্রতিমধ্যমারৈখ্যশিষ্ট বিন্নিঃস্বকপাণি কবোতি, কিন্তু পাশ্চাত্যবিদ্বান: বাচ: কাং ;লৌগজ্জহ পেরান ;স্পষ্টীচহ গতি মধ্যমা বৈখবী পয়ন্তমের সন্তি। ভর্তিহৰিমতে: সর্বে: সামাজিকরাগাবা: ভাষাশ্রিতা: সন্তি অপি চ ভাষাবহিতা সমাজে কোংশি প্রত্যন্তারবকা ন ভরিত শিক্যতে। মৌখ্যকমহোদয়: অপি ভর্তিহৰে: মতে আধুন ভাষায়া: সামাজিকপক্ষাণা মহতত্ত্ব প্রতিপাদন্তে। মৌখ্যকমহোদয়েশ্চ প্রতিপাদিতম্ যত ধ্বনিসমূহে বাক্যবিন্যাসে বা অর্থগ্রন্থ, অর্থনির্ধব, শৃঙ্খলশৃঙ্খলিচবাক্য জোকরবহবপ্রিতমের বর্তন্ত। আচার্যভর্তিহৰিণা অপি শিষ্টার্থমন্ত্য নিবা: সন্ত: স্বকীয়তে। তন্ত্যাত্তমাব শিষ্টার্থসর্ধ: কট ' বর্ততে। নিবসন্ত: সের অর্থরোধ: ভরতি অথথা তু শিষ্ট, কেরন ধ্বনিসমূহ: এর বর্ততে। পবন্ত আধুনিকভাষাশাস্ত্ৰবিচাবকা: কট-যাদৃষ্টিক মন্ত্য ;(Convent i onal Ar bi trary) ভেদ স্বকীয়তে।



आचार्य भर्तृहरिकृष्णः सर्वे त्वान् शिष्येण भासते । आप्त्निकभाषाशिक्षांश्चि सकेतक-सकेतितार्थ कणे
भर्तृहरः अर्थ सिद्धान्तः एव आधारकणे रर्तते । तन्मात्रास्मात् शिष्यः ध्वन्यामेकः (Acoustic) अर्थश्च
प्रत्ययामेकः रर्तते ।

टॉन्सकीमहोदयः अपि भाषातत्त्वानुसन्धानसन्दर्भे अर्थतत्त्वस्य महत्त्वं मन्यते ।

आचार्यः भर्तृहरिः भाषाशिक्षास्य स्वाभाविकप्रक्रियां निदर्शयति यत् अस्मिन् समाले सर्वे प्रियाकलापाः
शिद्धान्तिताः रर्तन्तु । अर्थ संस्कारः रानके पूर्वाहितकणे विद्यते । यतोहि अन्त्याभारे रानकः प्रथमतः
रर्तुं केन प्रकारेण प्रत्यये कर्तुं शक्यते तथा- रायोः उद्भिद्धवर्ण, कवचविद्यामादि ।
निष्कर्षतः भर्तृहरिप्रतिपादितस्य सूक्ष्मनिरीक्षणं अप्त्नांश्चि आधारकणे अवलम्बनीयं रर्तते ।

संदर्भ

1. भग्यद पञ्चपकारिणी सभा, अक्टोबेर १९९०
2. राजपदीय वृत्ति एव पद्धति सहितम्, के.ए.एस. अथर्व, पृष्ठा, १९६६
3. Sanssurre, F.D. : Course in General Linguistics
4. स. कुमार प्रबन्धः भारतीय आचार्यों का योगदान, नाग प्रकाश, दिल्ली, १९८५
5. अथर्व, के.ए.एस., भर्तृहरि, हि.प्र.- रामचन्द्र द्विवेदी, राजस्थान, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, प्रथम संस्करण, १९८१

1. उत द्वः पञ्चम ददर्श राट्कृत द्वः शृङ्खल शिष्येणाम् ।
उतो द्वौ तर्ग रिस्से, जायेर पञ्च उमेती स्वरासाः । । पृ. १०/७१/४
2. अनादिनिर्णयं त्वं शिष्येण यद्वक्तव्यम् । रा.प. १.१
3. तस्य प्रवृत्तितत्त्वज्ञानं त्वं शिष्येण यद्वक्तव्यम् । । रा.प. १.१२३
4. Language has an individual Aspects and Social Aspects; Saussure, F.D., Course in General Linguistics, P. ९.
5. पदे न र्णा विद्यन्ते रर्षेस्त्रयरा न च ।
राकात् पदनामार्थं प्रविरक्तो न कश्चन । । रा.प. १.७३
6. स. कुमार प्रबन्ध, भारतीय आचार्यों का योगदान, पृ. १२४
7. क. गतिकर्तृत्वात् लोके सर्वाः शिष्यरागप्रियाः । रा.प. १.११३
८. न सोऽस्ति प्रत्ययो लोके यः शिष्यरागमादृते । रा.प. १.११५
8. स. कुमार, प्रबन्ध, भारतीय आचार्यों का योगदान, पृ. १२०
9. निराः शिष्यार्थसंनिधः तन्मात्रा महर्षिभिः ।
१०. विषयव्याप्तापत्तिः शिष्यः नार्थः प्रतीयते ।
११. स तत्त्वयोर तेऽर्थानि अग्रहीता प्रकाशिकाः । । रा.प. १.५६
११. न सोऽस्ति प्रत्ययो लोके यः शिष्यरागमादृते ।
अन्वयिच्छति त्वान् सर्वे शिष्येण भासते । । रा.प. १.११३
१२. कुमार, प्रबन्ध, आचार्यों का योगदान, पृ. १२७
१३. गतिकर्तृत्वात् लोके सर्वा शिष्यरागप्रिया ।
या पूर्वाहित संस्कारो रानोऽपि प्रपद्यते । । रा.प. १.११५
- आद्य कवचविद्यामः प्राणशुद्धिसमीपम् ।
स्वाभावानुवर्तितं न निरा शिष्यभाषणम् ।



VI DEHA ARCHIVE

१.पत्रिकाक सबठो प्रवाण अंक ब्रैल-रिदेह & तिबूत आ देवनागरी कपमे Vi deha e journal's
all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

रिदेह अंकक ३०पत्रिकाक पहिल -

रिदेह & सँ आगाँक अंक ३०पत्रिकाक -

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-archive-part-i/>

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-archive-part-ii/>

२.मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/>

३.डियो संकलन आ मैथिली. Maithili Audio Downloads

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-audio/>

४.मैथिली वीडियो संकलन Maithili Videos

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-video/>

५. आधुनिक चित्रकला आ चित्र / चिनिता चित्रकला. Maithila Painting/ Modern Art and Photos

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>

रिदेहक एहि सब सहायोगी विकसित सेहो एक लेब जाई ।

६.रिदेह मैथिली क्विज :

<http://videhaquiz.blogspot.com/>

१.रिदेह मैथिली ज्ञानवृत्त एग्रीगेटर :

<http://videha-aggregator.blogspot.com/>

४.रिदेह मैथिली साहित्य अग्रजोमे अनुदित

<http://madhubani-art.blogspot.com/>

९.रिदेहक पुरि-कप "भावनसिक गाछ" :



<http://gajendrathakur.blogspot.com/>

१०. बिदेह गजेंद्र :

<http://videha123.blogspot.com/>

११. बिदेह हासन :

<http://videha123.wordpress.com/>

१२. बिदेह: सदेह : पहिल तिवहूता (मिथिला-सक) जानवृत (संस्करण)

<http://videha-sadehablogspot.com/>

१३. बिदेह:सैन: मैथिली सैनमे: पहिल सैन बिदेह द्वारा

<http://videha-braille.blogspot.com/>

१४. VI DEHA I ST MAITHILI FORTNIGHTLY EJOURNAL ARCHIVE

<http://videha-archiv.blogspot.com/>

१५. बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका बिदेह १४२ म अंक १५ नवम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ७१ अंक १४२)

<http://videha-pothi.blogspot.com/>

१६. बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका बिदेह १४२ म अंक १५ नवम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ७१ अंक १४२)

<http://videha-audio.blogspot.com/>

१७. बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका बिदेह १४२ म अंक १५ नवम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ७१ अंक १४२)

<http://videha-video.blogspot.com/>

१८. बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका बिदेह १४२ म अंक १५ नवम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ७१ अंक १४२)

<http://videha-paintings-photos.blogspot.com/>

१९. मैथिल और मिथिला (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय जानवृत)

<http://maithilaurmithila.blogspot.com/>

२०.श्रुति प्रकाश

<http://www.shrutipublication.com/>

२१. <http://groups.google.com/group/videha>



२२. <http://groups.yahoo.com/group/VIDEHA/>

२३. गजेन्द्र ठाकुर गडेह

<http://gajendratihakur123.blogspot.com>


२४. लषा कुठका

<http://mangan-khabas.blogspot.com/>

२५. बिदेह रेडियोकरिता आदिक पहिल पोडकास्ट साइट-मैथिली कथा:

<http://videha123radio.wordpress.com/>

२६.  Videha Radio

२७.  Join official Videha facebook group.

२८. बिदेह मैथिली बाँधे डमेर

<http://maithili-drama.blogspot.com/>

२९. समदिया

<http://esamaad.blogspot.com/>

३०. मैथिली फिल्म

<http://maithilifilms.blogspot.com/>

३१. अक्षरिहार आथर

<http://anchinharakharolkata.blogspot.com/>

३२. मैथिली हाकु

<http://maithili-haiku.blogspot.com/>

३३. मानक मैथिली

<http://manak-maithili.blogspot.com/>

३४. बिरुनि कथा

<http://vihani-katha.blogspot.in/>



३३. मैथिली कविता

<http://maithili-kavita.blogspot.in/>

३३. मैथिली कथा

<http://maithili-katha.blogspot.in/>

३१. मैथिली समालोचना

<http://maithili-samalochna.blogspot.in/>

महत्त्वपूर्ण सूचना: The Maithili pdf books are AVAILABLE FOR free PDF
DOWNLOAD AT

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<http://videha123.wordpress.com/>

<http://videha123.wordpress.com/about/>

ejournal बिदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका बिदेह १४२ ग अंक १५ नवम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ७१ अंक १४२)
547X VIDEHA



गङ्गाबिह संस्कृतम् ISSN 2229-



बिदेह:अदेह: २: ३: ४: ५: ६: ७: ८: ९: १० "बिदेह"क छिष्ट संस्करण: बिदेह-७-पत्रिका
(<http://www.videha.co.in/>) क छलन बचना समिति।

सम्पादक गजेन्द्र ठाकुर।

Details for purchase available at publisher's (print-version) site
<http://www.shruti-publication.com> or you may write to
shruti_publication@shruti-publication.com

बिदेह



मैथिली साहित्य आन्दोलन



(c) २००४-१३. सर्वाधिकार लेखकाधीन आ जतए लेखकक नाम नहि अछि ततए संपादकाधीन । बिदेह- प्रथम मैथिली पत्रिका आ-पत्रिका । ISSN 2229-547X VI DEHA संपादक: गजेन्द्र ठाकुर । सह-संपादक: उमेश मंडल । सहायक संपादक: मिर कमार सा, बाग बिवास साहू आ कल्याणी (मलाज कमार ठाकुर) । भाषा-संपादन: गजेन्द्र कमार सा आ पद्मीका विद्यानन्द सा । कला-संपादन: ज्योति सा चौधरी आ वसुंधरा मिश्रा । संपादक-लेख-अनुवाद: डा. जयंत कर्मा आ डा. राजेश्वरी कमार कर्मा । संपादक-नाटक-वैचारिक-चर्चा-लेख ठाकुर । संपादक-सूचना-संपर्क-समाद-पुनर्गठन आ विचार सा । संपादक-अनुवाद विभाग- विनोद उमेश ।

बचनाकाब अपन यौनिक आ अर्थकाशित बचना (जकर यौनिकताक संपूर्ण उतबदागिह लेखक गणक मध्य डहि) ggajendra@videha.com केँ मेन अटैचमेन्टक कगमो doc, .docx, .rtf आ .txt फार्मेटमे पठा सकैत छथि । बचनाक संग बचनाकाब अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन फोन कएन गेल फोटो पठैतह, से आशिा करैत छी । बचनाक अंतमे ठागग बहल, जे आ बचना यौनिक अछि, आ पहिल प्रकाशिक हेतु बिदेह (पत्रिका) आ पत्रिकालेँ देन जा बहल अछि । मेन प्राप्त होयबोक बाद यथार्थतम शीघ्र (सात दिनक भीतब) एकब प्रकाशिक अंकक सूचना देन जायत । 'बिदेह' प्रथम मैथिली पत्रिका आ पत्रिका अछि आ एमे मैथिली, संस्कृत आ अंग्रेजीमे मिथिला आ मैथिलीसँ संपर्कित बचना प्रकाशित कएन जायत अछि । एहि आ पत्रिकालेँ शीमति नक्का ठाकुर द्वारा मासक ०५ आ १३ तिथिलेँ आ प्रकाशित कएन जायत अछि ।

(c) 2004-13 सर्वाधिकार सुरक्षित । बिदेहमे प्रकाशित मन्त्रा बचना आ आर्काइवक सर्वाधिकार बचनाकाब आ संग्रहकर्ताक नगमे डहि । बचनाक अनुवाद आ पुनः प्रकाशित किंवा आर्काइवक उपयोगक अधिकार किनबोक हेतु ggajendra@videha.com पब संपर्क कक । एहि मागकेँ शीति सा ठाकुर, मधुमिका चौधरी आ वसुंधरा मिश्रा द्वारा डिजाइन कएन गेल ।



मिहिवकु

